PAGE(S)MISSING

NOT AVAILBLE

F.I. 1-4

: श्लोक ०

ऋषो मध्ये द्रुसे ब्रह्मान्यस्तोहरः २२ रुद्र१ कोत्रिभागेनोहर रुधैर्विरिंचुमे ३३ टीका त्रीपुरुष
ग प्रासादे कीजै: मध्ये प्रासाद महादत्त द्रस्थापयेः वाम भागे हरी स्थापिजे: दक्षिणे ब्रह्मा स्था
पजे: रुद्र के मुष कैका भाग २ कारयेत्: एक भाग छोउ अनेते छे हरी की दृष्टी राषीये: आरु महा
रुद्र का मुखके अर्ध ब्रह्मा राक्षीये: अने पार्वती राखीये: इती त्रीपुरुष: अथ भेद: श्लोक भेद
सील्पी धे प्रासादे एकस्य हस्ते युगांगुलं: अर्धगुलं पृथ्मा उया वत्यं चाशहस्त कानु: ३४ ·
एक द्वी त्री एणी वा हीनहीनो नपाद नीर्गमि: टीका अगथी प्रादनो आदी वरनो प्रमाण बोलै:
छे सीला उपरी भीट गज १ को प्रासाद भी अंगुल: ४ चार अंगुल अर्ध की वीधि गज गजा
प्रती गज: ५० ताई पचास गजने प्रासाद भीट अंगुल: २६ को होये भीट एक कीजै तथा २
कीजै तथा ३ भीट कीजै एक एक थाचईस हीन कीजै अने आपस्या उदा था असनु भाग च
उथुनार्गम कीजे: इति भिंद: अथ पुत्रप्रा दस्य समुसे दोच्चे कवीसती भाजीते: ३५ पंचा | मो
हीन व भाग तं पंच धा पाट मंट ओ त्री पंच कुं उरो धो द्वावीसत्पसनीर्गमे: ३६ प्रासाद समुस्त
नो उदो छे ते का भाग २२१ कीजे तीसा भाग: ५ तथा ६ तथा ७ तथा ८ तथा ९ समो पीटं कुंदो | कु
कीजै: अर्धोर्ध निर्गम कीजे: एमान ग्रथर्ले इक छेउ छे: पणी अती काटे तथा सुगममान के हे
से वास्त राज के वीषई बोल्यो छे प्रासादे चैके हस्ते स्यात् पीठ सुर्यागुले दयं धी रष्ट मात्रं धी।
कारे त्रिके ष्टा ठरा गुल: १ षधी शंदगुल पी ठस्ता सा देस्या चतु: करे पंच हस्ते सुरा ग रेपादो
पीठो छयो भ भवेत्: २ पंचोर्धतो वेदस हस्तकं: तो हस्तो चहस्त चतुरंगुलं द्विदशो द्वतो।
वीसती हुसाकतंक रं प्रती अंगुले पृधिसु क्रा: ऋहव द्वि शंत तनो ष्टधी हस्ते हस्ते गुलद्वय।
तदुर्द्धे मंगलं वृद्धीया वसंचा रुहस्तकं ४ पंच[illegible]ते प्रासादे सपा संच करं भवेत्: पंच
त:

५ मंत्राधीकंज्येष्टं त्रा रंत्रो नतुकंन्य सः ५ श्लोकः त्रीपंचभक्ते ... दुद्वी वी त्रासंच नीर्गमः ३६ कुया
लवाईसमा १२ धुं ~~कणी~~ दकी दत्रावस्त्रं त्रा कतुक्रमात जाम्यः कुंभक ७ णी ग्रासप १२।१०८ दीस्वत
ए ७ रानु २ स्थि २ पच ५ सार्द्धं ग्रासा ४ र्द्धदी चतुरस्त्री ३४ सनी गमातः सर्वेषांपीठमाधारंपी ठही
नविनात्राक्रमातु ३८ टीकाः पीटकानु दाका भाग ५३ कीजे स्यत भाग २२ निर्गमिका कीजे भा
द्द गु ७ कणीनुं भाग ७ ग्रासोटी वुदे भाग १२ गज थंनु दे भाग १० अश्वथर नु दे भागः ८ नर
२ थंनु दे। हवे नार्गम का भाग बोलेछेः भाग पजाउ बोथी कणी पाछोजो उतै भाग ... कणी थी ग्रास
पटीचकु ३ भाग ४ ग्रासोटी थी गज थर पाछो स्वू चुट ३ भागः ४ अश्वथर पाछो चो ड ३॥ लाग
३ नरथर पाछो चो अईलागः २ षुरो पाछो चोड ३ीसमस्तद्वीपीठ आघा २। पीठे पापे चीनास
नु पजैः इतिपीठ अथ प्रासादोदयः श्लोकः हस्तंदीपंचपैर्य हस्तांते प्रासादे तु मंडुपस्थयः सु
र्यांगुला प्रती करवृधीस्तीसतुकराचीथीः ३९ नवांगुलाञ्जाताईत मेवंछेयंतमुख्यः टीका प्रा।
सादको मंडोवराको वुदो कहेछेः प्रासाद गज १ थागज ५ सुधो वुदो कीजे गजप थी गज ३०
सुधो गज प्रत वुदो वधतो कीजे अंगुल १२ कीजे गज ३० थावुपरंत गज ५० तोई अंगुल ९ व
धतोजोयैः इतीमंडोवर वुदा वराउ अथ मंडोरः अथ मंडोवरनु खेधे वेदवे देउ भके १४४
पीठोर्द्धतोन्यसेत॥४०॥ पंच ५ नरव २० ष्ट ८ द्वीसार्द्ध २॥ विश्वाके ९ पंचत्रीशता ३५ तीथ १५
ष्ट ८ दश १० यस्वं ८ त्रैस्यार्द्धद्वी २॥ वीरश्वः १३ भाग के ४१ क्रमेण षुरकंकुंभ कलशांतरछेक
कंः कपोताली च मंची च जंघा कुंभी उभरणी तलः ४२ सीरपदी कपोताली मंतरंछाद मात्वरे
नुदसंत्रो नार्गतो वरी मार्गो दलवलसतः ४... टीका मंडोवर वीरा जैनो वुदो छेतो-हनो एकसो १४४
चुअतीस भाग कीजे पछे थर वीराउ कीजे पं... भाग षुरो ५ भाग २० कुंभो भाग ८ कलसो
भाग २॥ कंदः भाग ८ केवाल भाग ... भाग ३९ जंघा भाग ३५ दोडीयो भाग ९

भाग १७

... णी भाग ९ सीरावटी भाग ८ केवाल आला ... भाग १० छाजो निर्गमक
वालकी मुहस्त थापाणी तारचखुउकी ... दल ने भाग १६ साल मो अथ भीतः युगंसेना ष्टकोपंच
षउंश्रोत्रीलहा तजेसंधारे ष्टंत्रो... भीते दत्रांसे ... नुर नजे ४४ टीका इटमई प्रासाद कीये तः तु
दै भाग ४ भीत कीये पाषाणमे कीजे तदै भाग ५ पंच कीजेः दारु का ष्टसो प्रासाद कीजेः तदै
भाग ६ कीजे सावंधारा प्रासाद कीजेः तदै भाग ८ थुगाग्रा भीत कीजे अथ गर्भग्रहे। गर्भ्ये
गृहंपुगीमंवा भद्राढां नयतेंसु भंकुंभके न समाकुंभी। स्तंभनुदुमो साम्यतः ४५ भरण्या
भरणं शीर्ष कपोताली समं भवेतः खडछदस्य पटलं। कुर्यास दस्य पेदकं ४६ टीका यु
गाग्र प्रसाद को ग र्भगृह युगीग्र चतुरस्त्र तथा भद्र चुक्रकीजै प लाञ्छ यतन कीजै वास्ते।
राजे एक ... अंगुल ग ... त्रि ... विना सनं प्रसाद माहे गभारा राथांभा भागः २ राभ
रणा शीरा कहेछेः कुंभक कुंभक समाक भी टीकीजेः स्तंभ नुद्दे मायदो ठयोती ये समकीजेः भर।
णीसमो भरण कीजे कपोताला समो सत मथा लकीजे खड छजा रात लवाउतठे पठरो तलवाउ
कीजेः श्लोकः व हद्दे वालयेग र्भ व्यासासार्द्ध सपाद ... गर्भोदथस्या स दंततस्मी स्तवसु भा।
नीते ४६ एक १ सार्द्धसरः ५ द्वे २॥१ सार्द्धक्रमेण कुं... नः स्तंभोथ तरणयो शीर्ष पर्दधा।
च गारो टीका ४७ वह देवाल ... दतायारा गर्भगृहक हेछेग्र भग्रहजे आयुछे
स्थिरत था कीसवायो ... आवे ते कु ... रातले चाथी पात्रात लवाउतां ये
ागः ८ कीजे ... ग १॥ कीजे पाद नु पे दा दरीवुतथा ५ तथा ७
कीजेः अर्द्धोत ... कहे स्तेसु रागारे धीर तीर्थक लांगुलेः षोउ
संगुल या ... धप्त ... ते द्वि पु धा चा सता र्द्ध के द्वारउ
याईन ... मा एकत्री पंचा दीनवांग केहीन।

द्वा २ ७

६

नेष्टाधीकाश्रेष्टार [illegible] तुर्दचं [illegible] वृत्तः५ [illegible] देवानंसप्रसाखांतंनवालंहरीतद्रवे। द्वारेस्वप्र
थीतीहरानुन्यस्यपरिकरस्थीतान ५१ द्वारेदीर्घचतुर्थसेपारपालप्रकारयेत्ः टीकाः आ
टाआगेद्वारमानबोलइछईः प्रासादगज १ द्वारअंगुल १६ गज १ थीः गज ४ ताइअंगुल १६
सोलसोलकीवद्धीकीजेः गज ४ थईः अंगुल ६४ परिमीतिः गजः ४ थागज ८ पर्यंतअंगु
ल ३ तीनकीवृद्धीगजगज प्रतअंगुलतीनकीवृद्धीकीजेः अग थी ५० ताईअंगुलरीवृ
धीप्रासादगज १ द्वारअंगुल १६ नुदोकीजेप्रसादगज २ द्वारअंगुल ३२॥ प्रासादगज
३ द्वारअंगुल ४८ प्रासदेगज ४ द्वारअंगुल ६४ प्रासादगज ५ द्वारअंगुल ६७ प्रासा
दगज ६ द्वारअंगुल ७० प्रासादगज ७ द्वारअंगुल ७३ प्रासातगज ८ द्वारअंगुलः
७६ प्रासादगज ९ द्वारअंगुल ७९ प्रासादगज १० द्वारअंगुलः ८० प्रासादगज
११ द्वारअंगुल ८२ प्रासादगज १२ द्वारअंगुल ८६ प्रासादगज १४ द्वारअंगुल ८८
ईलीपरेगज ५० लगेंजाणवोद्धदाराभाग १६ अधीककीजेशाखारीकालवण छहें छे।
प्रासादपांचगज द्वारशाखायांचांगकीजेप्रासादएकअंगतदीद्वारशाखाएकअंग।
कीजेप्रासादअंगरधारसाखाइकीजेप्रासादअयधारसीखापंचंगुकीजेः प्रासादअंग ७
साषाअंग ७ प्रासादअंग ९ शाखाअंग ९ कीजैः प्रासादर्थकीवो जोअधीकीकीजे। प
णहीहीननहींकीजेः हरीनारायणतद्रः श्रीम [illegible] षाकीजेः अन्यदेवतावेसद
शाखापंचसाष्टातथात्री। साषाद्वारकीजेः [illegible] मयनुपजैधारसखा
कैवीषैप्रतिहारकीजे। आपआपणादीर्घ [illegible] कीजे अनेउर
रीकसोभाकीजेः श्लोकः अथनुदंबरम [illegible] पंबरसमग
जोकर्णतदर्धेस्यान्मंदारस्त्रिभीजीते [illegible] नाबोल

५टीका

छेमुलेकर्णप्रसादनावीहीस्यांकीफरचनुबरमंडजैबुषरकैः अर्धत्रीहीलोअंगुकणकीजैबुब
रकाभागत्रकीजेभाग १ मध्येमंदारभाग १ शाषतलभाग १ बिजीपाषतीकीशाषतेल
श्लोक मंडपेषुसमस्तेषुपीठतेरंगभुमिका ५२ टीका एमंडपमाहीआगणोपीठब
राबरकीजेः श्लोक द्वारव्याससमदीर्घेद्रद्वचंद्रस्यर्धनीर्गतः षुरकेणसमोसेधेस्त
त्रध्यससचंद्रद्वकः ५४ अर्धचंद्रनीकहीछेद्वाकोव्यासनेविविस्तारबराबरलांबोकी
जेः अनेअर्द्धचंद्रनीग्रभकीजे। तथाप्रासादमंडनेद्वारव्याससमंदीर्घनिर्गमंचतेर्धं
तेः द्वीभागमर्द्धचंद्रंचभानयोगगारीकाशंषयत्रसमायुक्तापद्माकारलंकृता। इर्ये द्व
प्रासादेदशाभक्तेघीत्रीवेधासाचंद्रयथा द्वलत्रीशोथपादेकोलेस्यानउर्धेसुकेना।
शाका ५५ टीका प्रासादकाभानकाभाग १० कीजेजोभागआवेतोसोभागकोली।
तथाभाग ३ कीजेतथाभाग ४ कीजेप्रासादकडतीसरेभागकोलीप्रासादउथें
भागकोलाकीजे। प्रासादकेअपेकोलीकीजे पछेएप्रकारेकीजे। इतिकोलीलष
णंः अयसीषंरछयसोद्धेप्रहारस्यातश्रृंगश्रृंगालीकारयेत्ः श्रृंगश्रृंगेचयः छ
धस्तेर्धश्रृंगाद्दबुहभं ५५ स्चीमायोगप्रमाणंतुसपादंलगमुछये। स्कंधस्याधीद
येघंटाश्रृंगमहत्ति। वालधो ५७ टीका देवीसीषरलक्षणकहेछे। इछाजाउपरेप्रहस्थो।
उजैतदे। श्रृंगकीविभक्तपाणितारकीश्रृंगकेविषेनीचीछजेलीकीजे। उर्द्धनुपरेछा।
जाकीजे। स्वकहीतांआपणाअंगथीसावायोकीजे। वुपरेकाधोटरै। अर्द्धघटाकम
लसारोकीजे। श्रृंगमोठतथानंनैः श्लोकः मूलकर्णरथादोवाप्येकद्धि। त्रिकमंन्य
सेत। निरधारेमुलभीत्तौ। संधारेभ्रमभीतीषु ५८ टीका हवेमूलकर्णअनेपउशार ८

४जै

७ माथ्या रारिथी षरी कही छे: मूलकर्णअनै पडरै क्रमतीन तीन कीजे: निरधार प्रासादरी
मूल भीती संधार प्रसाद रिसम भी तिने वृपरी ताइ कीजै: श्लोक: रेषा गर्भे समी सूत्रा।
विस्तीर्णा वीनस कटाकु ठ श्रृंगाणी भद्रै स्यु रेका दीतो नवतकं ५८ लुसांधो समसक्षा त्रा
त्रयो दशा: ६० टीका: प्रसादनो गर्भ ग्रहमहै रेषा मनसको ध्याये त्यारी रेषमाहे पडी कही
जे। गर्भ समी सूत्र भल्ला चिस्तीर्ण कहीयै: चउडी तेभल्ली: अने नु ठस्क गभद्र सु कत
था ९ नवताई कीयै: रषीना भाग र कीजे: अने भाग ९ सात भभा नु ठषीव रसु चा प
जै भाग १ रेवु घाउ इक्षिपरी नु रु शीव रस घल्ला रात्री जे: श्लोक। रेववामूल द सभ के
कुर्याम्लीन षउ शा कं रेखामुल्लस पाद कर्णभाने वात्री घरोदय: ६१ टीका रेषा विस्तर ये
ये मान आयो छे ते हना भाग ए ९ कीजे ते भाग ६ कंधोटराषजे। रेषारा मुल थी सका यो
लो वी कीजे: श्लोक: रेखोदये ष्ट भिर्भक्ते बुस्कंधाद्ध सदा भागी: केनु द्वत्री तीयगा साना।
लछ ना रेषी कान ती: ६२ टीका रेखा ना मुलका भाग ८ कीजे। स्कंधामा भाग सा त सात
७ कीजे: उर्द्धे त्रसती ये ग असे क बरेल्ला छमा कीजे: रेषा मुलस्या विस्तर स: प्रथ कु
सुत्रे श्वे तु गुणै पद्मके शासमाल्ली रख्या सपाद: शीषरोदय: ६३ स्कंधको संतरे सप्त भ
के ग्रीवा शाको दया सार्द्ध अमलसारस्या स पद्म छत्रे च सा द्वेत ५४ त्रिभाग बुर्च कलेशो कु
यो द्वौ भाग विस्तार ५५ टीका: रेखाको भेद कहे छे: रेखाना मुलजेमान रेषा सवायो आ
यो छे: तीतराती चतगणे त्र रफ्रोलो बुधे जे पृछे वृत्त त माउ जे क्र ने सवायो उदो आवे तट ७
क घाट को षसरो कीज पछै बाकी रहै ते भाग साते दीजे ए भाग १ त्रावा भाग १॥ त्राम
लसारो भाग १॥ पद्म पत्र त्र मलशारो सु यो भाग ३ कलस बु दे भाग रवी स्तर कीजे।
यत्र ल्ली रख्या छे: ज्येजो रेषावा मन मो को छ श्लोक। रेखा मुलैवृ दी स्न के: कोणको यो

धी भागी क भद्रं त्र्य सरथ सार्द्धौ स्कंधो ईनवसके: ५६ कोणेयुश्च गर्भे शो भ ई घंद्वां शात्य शोर
थो भवे तु: टीका: रेषा का पउरा कूण कहे छे रेषा मूल भाग १० भाग रकर्ण भाग १॥ पाटरो
भाग १॥ भद्र द्वकं घोट भाग ९ भागर कर्ण भाग २ पाटरो भाग २ भद्रार्द्ध एक भाग एंनव
त्रथ गरुउमा न थी भोज करु संयुढ च तुर्भुजा छत्र: त्र मृतकुभा २ करध ययु व्याज ल्ली
मूलना यकन छ तीपासोदय: गरुडो द्वमपुर न भेद त्र र्चनो भाग ९ करवा: तहवा भाग र
ग रुउ कुंभ मुतेना भेद गरुउ मान: ५ पुनर्भेद: त्रासनस्था मूर्ति: पुव भेद मुर्त्ति सुती ना वि
स्तार ना भाग ६ कीजे भाग ५ ऽ६ऽ१ कं १ जै गरुउ ना विस्ता रमान विस्तार द्वौ गुणो दय: ए
वंवे न तेय प्रमाणं जय भ ध्यतू वा मजा नु त ल्ड पदे दक्षणे जानो द्वमे वच: छत्रं च त्र मृत
कुभं भुज द्वये च ऊर्द्धगो: कर द्व पंच क लेव्यं तथावी रोचीतं ज: यद: भाग वा नृपृष्टे त्र ग्रे
वाम विशेषत: प्रासादने चतुर्थ शा प्रतीमा ना भाग ९ करवानु दामा पेतीवा भाग: ऽ५
ऽ६ऽ७ गरुडोदय: द्वय गुल्ल राधक यं गुह्य नां नीत नेत वा त्री वी धा वाहनो दय: पादयानु
क टीयाव द त्र्यायावा हनस्य द कुवा पो र्म पतेल प दे च दक्षीणे जान यदी परंया द पद्मा ग्र को
द्रवंय क्षो छो हकसं वु लंव ढा भभान सत युगे चतु पाद साउ ीयो ग्रीवा ग्रे त्रेता ई द्वापरे २
कीजे १ पश्चु समाने वा मनु गं: जल पदी सु खावहः दक्षणे त्रय पादो स.रे द्रु घानु चीतंत
दा १ त्रय पादं च दक्षिणे। उभयोन यु पादी कं दक्ष कुंचीत पादं न षह देय स नेमुख त्रग्र
पादमे वाग्रं चतीपद श्रृणु जे क्ष एं नु भयो कुंचीतं चैव षष्ट ए पदी का सन्मुखे: त्री जंघो।
सरेवारे चैव कथा त्ये सीह मासन: इती त्रासन भेद: प्रकार भेद ल्ली ग मान त्वष भमान:
ब्रह्मा विष्णु भागो छ य राय ल्लीगे सदा बुधे: ल्लीगो छय भागो र्द्ध य भाग ५ ते उवा भा
ग ३ सं एष भंडी यो: सं उशाड़ीन कन्या सत्र धीकज्ये ष्ट स्व यं भुर भंज वीदु मे मर क ते स

६ सप्तधांतेइलेः हद्रुश्चकोटे लिंगेनन्त्रधीकु नदीगणं भवती हलीगपरीधी प्रमाणै कर्तव्यं
वृषभरुचुपीटीका चसुडैयतः ततोछयं वृषभंभवतीपनेनः द्वाराधनुछयं षडंसपरीस
जेत् एवंतुवृषभंकायो नदो षो वास्तुकर्मणी नुछष टू भी भर्कं तत्रपादो स्यदीर्घतः सद्वाद्
नअष्ट वा त्रीवीधंदीर्घनच्या ते पीठचतुर्थो भागो त्रं वीस्तारं चतथैवचः दषस्यात्र कु
डीमोद्रके परायरेनकमोदकादत्रकुभादक्षणतो सुभंतद्रस्याचाष्टतो गुणधर्मरूपे
भक्त्यः एकंदोजयधारीवाजीमेषलधारीणः एवंचैवनरसरूपंसदग्रेनेदोरागणोइती
जयमध्यातू नदीष्टामाणः मुखोराशी व्ययंसप्पषष्टाः भागमाहरेतयनुशेषतीष्टते।
तत्र तचेचदोषजं नजोपीपृथव्या एस्तथातेजोवायुराकाशमेवचपंचतत्वेस्तथा। मृ
त्युरंतकालेप्रभेदीलपृथ्वीव्यापततेभुमी आयेचजलेदोषजं तजोपी अग्नीदोषस्यवायुना
व्याधीपीडयतेः आकाशेनुधसेसुन्यंपंचतत्वेमुदाहृतः एतत्संसोधयत्सा स्तवीस्वकर्मेसमु
ततः शेयुतंचतथाचैवनदानाथो पीचाष्टमासर्वसमयेतः शेषनाष्टनवमस्मतः एवंस्वय
संचालयंतुगद्राः नदाष्टायथुनभ्यंचतत्रमायग्रहमादीसेतुः सप्तोर्द्धस्थापयेद्रेखा पुनर्भिक्तो
नीसप्ताभीरेषाग्रेचरेक्षलीनत्रंचं २ मुदारयत्। कृतीकाद्याय भीसनेरीक्षेविस्तारत्रयमः बाष्ट
भक्तंशेषंच्ययमीश्रितंचत्र्यार्यारक्षवसुभक्तं भागेनथैवचस्वरविडालो वीउासेलोवीभवश्चे
वदतोकंतोः अधीष्टायकः आयसश्चेष्टंविषअंसकवीषमोचते: अत्रष्टयकेसमंनेष्ययंती
ताद्वनः सर्वक्षेत्रफलचासु। दोस्तंवसुभीभाजीतेस्वरस्थाआयामोश्व ततोश्वयेः वीस्तारतात
द्वावेसस्वजोनीमस्तथासभावीजोनीजाश्रुभाभास्युसर्व्यचिद्रेषुकुत्रचितः सर्वफलंचसा
रोशीवसुभीभजीतेः अधीयतोभवेशेषंः फलंभामीनुसारतः अथव्यंतरमीर्तिभेदाः
कंकत १ कालरवेताल ३ भैरवः ४ केरारी५ एवंमूर्तिप्रासादार्धमुर्तिनुदयः पुनद्वार

१०

भाग ३ करवातेहवाभागरभैरवा पुनः सप्तपंचनवएवअर्चामानपुनः द्वारअष्टंशाहीनंभु
तदेवंः नुद्दं दाद्वप्रमाणेनपदेनैकेनकारयेतुः प्रसादस्यसमंकार्यंपदमानवीपस्यतीः तेनै
वपदमानेनवषउत्रीपदंतरेवाहनेभेदअथवाहनभेदलिंगायामणेनआयामंवृषभवेत्
नुछचंवीछुनवेनतेयंसुषदंः हवचैवस्नमाणेनमयुरंचतथैवचः अर्चामानप्रमाणेनव्योमं
चविस्तरेणचनुसमादृष्टीदोषपीटमध्यस्थीतः पाददष्टी समुसेधनुरुनाभीस्तथैवचः विनु
कांतरसमुसेद्यपादोनजुछयणतः गजेइतिस्वरूपेणः अश्वरूपंतथैवचः कर्तव्यनात्रसं
देहप्रमाणमुभयेततः नुछयंकाथितंश्चैकशेषपीटमध्यस्थितः समवशारणकार्यं।
अर्चावसमंश्रुभंः चवीस्तारस्कुभंकारयेतुः प्रतनुद्वयेणोवतः समंसाष्टशेचसपाक्षंवा
सार्द्धवापीविशेषतः शेषपीटंचकर्तव्यंअर्द्धभागेसवर्तितंत्रीत्रीमलेश्चैवकर्तव्यंः प्राकारै
त्री। भिराष्टतंइतीसमोसरणवाहनप्रमाणः अथपारवतीमानः लिंगोदयचतुर्थशकुनः पा
रवसोदयः मुषलीमानः लिंगोदयंपंचधातत्वाः सपादत्रयपार्वतीः लिंगोदयषटभागं
पार्वतीचतुरंशकंः शीवभागत्रीधाकार्याद्वीभागंश्चैवनाहरीः चा द्वीपीतामहः नुमया
दयंचैवश्रुषदाकामदाः सुभाः प्रासादेप्रष्टीभीत्येवैरुद्रचक्रेयेदभवेतुविदूमेश्वतदालींगं
पार्वतीकथ्यतेअथः चंद्रकलाधारोदयं कर्तव्यंचसदाबुधैः एकद्वीत्रीचतुपंच। षटसप्त
ष्टमेवच अष्टभेदेनकर्तव्यंनुमादेवीसमुछयाः ब्रह्माविष्णुरुद्रयंमन्यतेअन्यदेवताःजे
इतीजयंमध्यातुपार्वतीमानः वापीलानामनअगेकनेमाहानाशीककरवाः ९ कुंभादीछ
द्यातंतः वातायनमंडनास्तभंपदेकरेअछाद्यानजीयतेः अथमंडपनिर्णयः मेवादीनं
प्रवाक्षामीमंडपासप्तवींशतीः भक्तीद्वारअग्नीवाभुमीकामंडंश्रयःतेषापदस्यसंस्था
नकर्तव्यंसास्त्रपारगोः एकभमंद्वीभुमंवागभेसुत्रनुसारतः छायाद्याउर्द्धपदंततयावे
पप्रसंयुतः जंघोर्द्धतथाकार्यातवाद्यापदलक्षणंः अथमंडप १३१ सीवनादासिव
५ १०

सीवरुपरुद्रः ११ परीवारसहीतकीजैः हरीनाविष्णु २४ रुपसहीतंगोपीसुतकरवानादः।
रती १२ अश्व ७ रवीपरावारयुक्तकरवाः सीहनादः १६ सोलसव्यालमहीकेसरीसुतक
रवामध्यनादद १२ मेघधरागएजी ३६ नलीनीविमानइद्रदवः १४ अष्टमंगपरीवारः
श्लोक ८ षोडशास्वसा १६ तीर्थंकरकरवापरीवार २४ एकद्वय २ त्रय ३ भुमीमंडप
यमत्तीवसासने ४ऽ रासीनाघंटती थीऽ१ कोमोदकुंभघंटाकपोतालीमतवारुणः
प्रबालोअत्र ८ मध्येनाहरयथारःऽ११ नुर्गद्वयः २ छाद्यचाः ३ऽ१ वर्तुल ६ अथपीट
वालरपत्रः ४ऽ१ सुवर्त्तुवाः कोपोताली ५ऽ१ वीपक्षद्वीपक्ष ६ नाम ६ घाटः ६ राजसेन
वीधीः अथवेदीचतुश्रीय अधकारीः २ पद्ममृणीलामीनेनः २ऽ ३ अथंस अष्यंकु
र्ध पक्षवाः ३ मानवली ४ अर्द्धछद्यकीयुक्तपयेनीः ५ जंघनाआकाराबंधनः धय
वेपक्षेकोलीः ६ मर्द्धबंधनयुक्तसारसाऽ ब्रह्मानीमध्येनु द्वैछादयकीयुक्तपयनीः ५
जंघनाआकाराबंधनाधयबध्नौपक्षकोलीः ६ मर्धबंधनयुक्तसारसाः ब्रह्मानी
मध्येकुर्धछादयकीजेसागरानामतीषटद्वीधीः इतीवेदीः अथप्रसादलक्षणये
नागरास्तस्युरनेकरुपाः स्तथंऽकेश्वास्मियुताघ्नेकैः वीभुस्वणीयाः नुरुश्टगश्रृंग
प्रत्यंगकेस्तेबहुभीस्तबंगो १॥ एकद्वीत्रीक्रमोहनारेः रवागभ्रासमुद्रवाः संकर्णदो
षदोप्रोक्तावीस्तीधनसोरव्या ॥१२॥ भईषुब्रह्मवीश्वीरामुतयोरथीकासुलः भद्र
यासकुलीष्टाधाः स्तत्रसीहसमन्वितोः ३१ऽ पीटोपीपेटचततोपाजयास्यामेनमे
रवलातेषुश्चकुछादयः कार्याधुयेस्तदलसंवीभक्तियुसरुपीचीतमंडपाट्या ४
नानावीतानेरीहछाद्धघंटाकुटैयुताः सवर्णारनेकैः लेनागराश्वगलशारेदंडद्वजा
घेकलशेयुताः स्यु इतीनागरः ८ पीतद्वथायेदलशंवीभक्त्यालतासश्रृंगकर्म
सन्वाभास्तु। ६। मेषेः नक्रेशोधपालेसमोतास्ताद्वद्रम्योकटकेरादतः स्युयेदी

११

घंटानारीकाद्या मनोत्ताप्रसादस्तेदीवीडालक्षीणीधाः इति द्राविडाः तेषुयानाचागरेरेखाश्चंगैस्त
रेस्मजेतुः एवंतुलतीनाकार्यारुचकद्युभवाबुधैः इतिलतीनाः यथंकुरुतेवंसभवस्तुहस्तवृद्धीक्रमे
णैवकुंभमीकाश्रुः तुर्गेसमेताद्लसविभक्तोतेभुमजाख्याः पुपुरभुषणाश्रीः इतिभूमीजाराभो
जेयतोः त्रिसुधापंनवीश्रुद्वौदेहामुद्रामाममहाकालमुदाहरतोः अथव्मनाकेशतत्तंवसेतीधन्य
प्रथअषजमानवीयो १३ मन्वतरमहश्रीणीकासावामेषयप्रलः तमुलं अवंतीकास्तानेवेश
एपंचभादीने २ऽनुषरेशचीभेदवतीथेपीसाचमोचनः सर्वत्रउलेभासाप्ता त्री।भिस्यानेवीसख
तःशः॥ श्रीविश्वकर्मामुवाचः अथतसंप्रवक्षामीग्रहदेवस्यलक्षणं। एकांगुलंभवेतश्रेष्टद्या
गुलंधननासनंः अंगुलंस्तायतेसिद्धीपाउास्यचतुरंगुलंः॥१॥ पंचगुलंतोवृद्धीस्यात् हानीषंगुलं
स्मृतं॥२॥ नवांगुलेपुत्रवृद्धिधनानीशदशांगुलेः एकादशांगुलंबिबसर्वकामफलप्रदः ऽऽ३ऽऽए
कहस्तमाणवीक्षातंः गहणुजपतीद्वीमताः अन्यथापीनकर्तव्ययद्विछेदान्मनाश्रियोः ४ तदर्धेनाः
वहस्तांतः हदकरतमादरोरुद्रागुला देशामत्रवृद्धीधर्मात्रवृद्धीदशः हसाकांतश्चादेकवृद्धीस्य।
सताद्धतकंः १ अदिस्र्चरव्यावैराजादीः २५ रुचकादीः २५ केसरादी २५ पुष्पादी २५ अकुंभकादी
२५ लि॰ पु॰ दी २५ श्रीद्वारादीः २५ पुर्णभद्रादी २५ सागरःफंसकादी २५ विमानादी ६४ मेरु
२० भमिज २५ नेकविधीः २५ विमानाः २५ शलिउः २५ वल्लभी २५ सीहावः २५ मेरु ९ भुव
नगिरः १४ नेलसः २१॥३२१॥ ॥श्रीगणेशायभारतीभ्यानमोनमः॥ अरुपंरुपमाकारंवि
श्वोरुपोजगत्प्रभुकेवलज्ञानमुर्तिश्चवीतरागोजिनेश्वरः॥१॥ द्वीभुजंचैकवक्रंचवंघपद्मा
सास्थितः लीयमानंपरंब्रह्मजैनमुर्तिजगंकुरः २ नीमानीगुणभाख्यातप्रयुक्तंवासुदेदीभिः
चतुर्वीशतीशाषभादैवर्द्धमानातंकस्तथाः ३॥ शेषरभादीपरिवारेदुःखवर्णसंकरः नसमे
गुलसंगुलसंख्याचः प्रतीमामानंकर्णी ४ नृपविष्टस्यदेवस्यनुद्वस्याप्रतीमोभवेतुः बिंबविधा
पयुदीधस्यापर्यंकासनदीसेतुः ५॥ वामेदक्षिणजंघैवसस्पथंकासनंश्रुभः दीवसोद्वैवार
वाकेघारनलंकभुजंद्वयंः॥६॥ श्रीवसाभीकयुक्तेछत्रादीपरिवारीनुः अन्योनंजानुस्कंधांते ११

म

१० तीर्थग्रस्तचेतिपातनात् ७॥ केशांतमेंचलयोर्मधासुत्रेका चतुरश्रकः नवतालं भवेद्यं तालस्य
द्वादशांगुलः ८॥ अंगुलानीतिकं वा याकीतुरुपस्य तस्य दीः कु दूमानमष्टोत्तरं सतं अजीतं विश्वकं
र्मणीः ९ कुद्दस्य प्रतिमामानं आशीनं च अतः अणे पंचताल शमशे धां च तुस्तालं च विस्तरं॥१
तालकं च विभक्तो दां अंगुलानं चतुर्दशाः तेनं गुल प्रमाणेन षट्पंचशशमुद्धितः॥११॥ विस्तरं
तत्प्रमाणेन विभजेयो धीचक्षणः॥१॥ अथैते अंगुलानां चयन्मानानुग्री वाहनभीगुस्यहस्त
केः १२ जानुजंघा तथा पादौ नवंगी स्थानकानिचः चतुः पंचेच उपंच उद्दी कुचे चतुर्दिशाः १४ च
तुस्त था स्नैच पुनराष्टौ क्रमेण तु इत्येते नु नवंगानी अंतस्या वानि वेवितुः १५ जैनो द्वमेमुखं जं
१८ घांगुलं चैव द्वी भंगयय द्वी चक्षुनः वेदांगुलको चनासीका पंचमांगुलः हेनुकं गुलं च चचोर
नुष्टशापाद मेवचः १८ अधारेश्वसपादं च सार्धांगुलवटी भवेत् त्रयंगुलं भवे ही वाः दूरय शा
मंगुलं १९ चतुर्देश स्तथा नाभो चतुर्गुल्य प्रतीकीर्तितः करं च तुरंगुलः अष्ट पादो प्रकीर्तितः २०
इत्येते कथितं चैवः षट्पंचाशा समुछ्यंः तस्याद्द्रकर्तव्यंः असनं मष्टमंगुलं २१ उष्यापडं
गुलं तं च केशंतो परितस्तथाः उच्छीतं च समाख्याता वीस्तरं च अथ श्रृणु २२ अं कं कं विस्त
रमानेनः अंगुलं नं दशा पंच च त्वारी द्वांगुलं मुदयंभवेतः २३ दूयंगुलं भ्रूमध्ये पुष्प वाणमा
हाकदैः चिबुकं गुला चात्वरी बटीरं च त्वा मेव च २४ ग्रवा दशांगुला ज्ञेया क्षोभनं त्रयमंगुलं
सार्द्धगुलो द्वयोष्टो च सार्द्ध गुलवटी भवेत् २६ कष्य बाह्यो प्रकर्तव्या द्वावीसतिमंगुलं चुध
करटी विस्तारमानं च अंगुलानां च षोडशाः २७ बहु पक्ष प्रमाणं च अंगुलानां अष्टादशाः
द्वादशांगुलमध्ये च स्तनगर्भो विधीयतेः २८ अष्टांगुल बाहु वीस्तारं शान्त अंगुल अघस्तथा
करतलं अष्टादशांगुलं दीर्घ चतत्र कारयेः २९ विस्तारं अष्टांगुलं तत्र मस्य स्यकं ३० अ ३५ १०
घसीका द्विलं ज्ञेया कटी स्य वाम दक्षणेः नवगुलं भवेत् हस्तः विस्तरं चाष्टमांगुलं ३१ चाष्टगु
लं भवेत् पादौ दीर्घं च दस पंच सः वीस्तरदीर्घं कथितं पीउश्चैव अथ श्रृणु ३२ अष्टावीस

१२ ६४०

तीअसीनः षोडसोगुल मृस्तकेः कणमासा त्रकर्तव्या पीडश्चैव दशांगुलं ३३ चतुरंगुल कणपी
डमुरं कुर्या द्वयंगुलः द्वादशांगुल शोभं च उदराग्रे श्चैव नीगमः ३४ समं सलस्त्र कर्तव्यं स्वरुपं लक्ष
न्वतं इत्येते थीतं चैव कर्तव्यं सर्वस्ता पारगैः ३४ पुर्वमाणप्रमाणं च कर्तव्यं विधिपूर्वकं अन्यूथा
चनकर्तव्यं दोषं शत्म नश्रये ३६ मानाधीकं न कर्तव्यं मानहीना न कारयेत् नपते थसुसा सौर्यंचे
वनं नसपातः ३७ नदोषोपथ भावे च शोल्मी होद्भवं ३८ धातुलेपो दीती मां अगमं च संस्कारैः काष्टपा
षाण निष्पनः संस्कारो न पुन पुनर्ते ३९ नषंगुला बाहना सादी ना भंगेषु नु क्रमातः जनं भंगे देसभं
गे स्यबधुलुष्ट धनक्षयः पीठदीना परिवारं विद्धं शातीयथा क्रमं जनवाहनं च स्यान्ही नासे भवतीनि
श्चितं ४१ आरंभे कंगुलं बुधि यावेदेकादशांगुला ग्रहेषु प्रतीमापुज्या उर्ध्व प्रासादजं पुनः ४२
प्रतीमा काष्टलेपाश्व दंतचीसय संग्रहे न्युनाधीकं शिर पवार रहीतानैव पुजयेतः ४३ रौद्रनी हती
कत्तरं अधीकं शल्पी संहरेतु ताशा द्वाव्य चीनं शयउ भीक्षा पतसो टरीः ४४ चत्रनासा च दुरवास
दुरवागोप दूभीस्यः नसानेत्रनाशाय स्य लासो भोगवजितः ४५ जायते प्रतीमा ती न्यावरीरा
वार्यधाती नंजंघाहीनाभवेतु राष्ट्र पुत्रमित्र विनाशानंः ४६ पाणीपाद विहीना च धनक्षयविधा
यनीः चीपीटा चान्तचीनसः लं च ख्ययोभवेतः ४७ अर्थहीन प्रतीमानी म्नावीताहे पुरधामुषीअ
थपा दाती दुरवानानी चाचापी विवेशनाः ४८ अन्याय पदलिप्पन्ना परवस्कः समुद्भवाः न्युना
धिकंगी प्रतिमा परिवारः शनानिशः ४९ प्रासादतुर्यको नीकं भागेन समाचा प्रतीमामातातुक्र
मायुक्त तेशा मिश्रयकिनाधीकंगुलाः ५० अथवासुदशांशेन हीनेश मधिकः शचः कार्यो प्रासा
द पादेन शील्पिभिः प्रतीमासदाः ५१ इतिहीनं तु आयं चप्रासादः पंच मेसकेः सर्वेषां मपीन्य
नानरत्नः स्फाटिकयो कपोरपीः ५२॥१ प्रवालश्चेति बिंबेषु शिल्पमानं यदिच्छयाः प्रासाद
गर्भगृहेद्दाद्द जीतीनः पंच धात्तत्रः ५३ यक्षपा प्रथमे भागेसर्वे देव द्वीयके जीनार्कस्कंदा त्रिस्मा
मा प्रतिमास्य त्तृतीयके ५४ ब्रह्मा च तुर्थभागस्य लींगभीनशो पंच मे तुर्द्धे च हस्वीरख्य नाही १२

११ तीर्यग्द्भिहात पः ५५ः दुःखदा स्तष्टा दृष्टी स्यनुद्वेयुश्वा कुलनार्सनी द्वारसाषाष्टभिभागे र
धः पंको द्वितीयकेः ५६ मुसाष्टमंच भागंचयो भागः स समंपुनः तस्यइसदामो भागेगुलं सतेन्ने
पातयेतः ५७ प्रासादप्रोतिमी दृष्टीः कर्तव्या सा स्त्रशी ल्पिभिः अवा रुपमी दंश्चैव कर्तव्या सास्त्र
शील्पिभिः ५८ परीकरस्य अथ श्रुणुः ५९ इति प्रतिमा द्ये प्रमाणेः जयोवाचः आसनानां चतु
र्द्वाासयनाचविशेषतः आसुनुक्रमयुक्तिस्येवक्षे परिकरादिकं ५९ सीहासनस्य कीमानं की
मानबाहुयुगलयोः कीमानं छत्रदत्तंच शीषदुदुः भीमानतः ६० एतत्सर्वप्रयत्नेन सादेन कथ
यत्वंजगसती: श्रीविश्वकर्मानुवाचः पुर्वमानोद्भवं कुर्यात् नुर्चा सर्वत्र शोभना ६१ यद्वर्णमुलप्र
तीमा परिकरे सुवर्णादयः वीवर्णादीमहादोषा भाग्यमानेसुसर्वतः ६२ शत्रोद्भवयोहो धुमरकेतः
स्फाटीकादीषुः नदोषो विवर्णमाकर्णे अर्कः परिकरादीकेः ६३ आसनं चंमतोवक्ष्ये नाथ्यगाव
क्षामी तन्छतआर्चा अद्वोरयंकार्या सीहासनओदीयकंः ६४ सर्चनीकणसंयुक्तो अगुलादीकस्य
छुयंनिर्गमंच द्वयं चैव उभयोवामदक्षिणेः ६५ द्वादशांगुलभवे दुपंदगुलं छपवीलथा। वेदंगु
लंमुपरीस्थकणकं चिथीकेस्तथाः ६६ नुदयंच समाख्यातः दीर्घंचिकथ्पतेबुधैः अदीसक्तीजी
नेद्रस्य आसने गर्भस्थितः ६७ सहजा कुलजाधीता पद्महस्तावेरप्रदा अर्कमानविधातव्यंःनुद
येदशांदशभवेतः ६८ गर्भमध्येविधातव्यं पामेचतंसुसोभनंच क्रं सुदर्सनं नामं अपमेक्ष
यकारकंः ६९ मृगश्रंगोलत्रधर्मदया देवीमगोपरीकुमदः शंखर्द्वस्य होगजो वामदक्षीणेः ७०
मद्रजासौद्भवेः कार्यं अंगुलदीकुवीस्तरं सिंधौरौद्र महाकोपं जावक्तो दोषरक्षणेः ७१ द्वाद
सांगुलविस्तारं चयः ७२ यक्षाचतुर्विंशति प्रोक्ता एकैकं परिकल्पना भुमुखं गजंचपनाधी
हस्तावरप्रदाः ७३ स्तसेमृणालसयुक्ता मकरे ग्रशारुपकैवीरालयक्षसोभादीचतुर्दिशा
गुलंक्रमातः ७४ पासासनवादनैर्युक्ताचतुर्विंशती कलशाशनाः धर्मोधृतासुभादेवीकाद्याक्र
मोद्भवः ७६ स्तंभेमृणालसंयुक्तेपूर्णादीविशालकैवीदुः। अग्रनकथितेचैव चामराधाराः अथ
श्रणुः ७७ इतिसीहासनः चामराधारमाथो वक्षे चामरेद्राइतिस्मृताः षष्टीमदोन्मकं कार्यंवा

१३

दीका भयमध्यतः प्रतिमास्कंदमुसेधापष्टाद्यदंतवादीका स्तंभेमृणालसंयुक्तापुर्वादीवीदी
विरालैविदुः ७९ जन्मस्थानं सभा प्रोक्तं परवतोमेद्रवासवेछत्रंचामररत्नंखनादहीरण्यागवेशं।
विदुः ८० चामरालंकारयुक्तेस्यमुरद्रागुणपर्वतः प्रल्हादोचक्रसमस्यचामराधारस्य उच्यतेः ८१
दृष्टीणेबाहुसंस्थानेः उपद्रोविष्णुनामतः उछ्रयंस्तनकाभीस्यतीलकं शंब्यालकैः ८२ मृक
रैस्यसोभाढ्योकर्तव्या वृत्तीभाननो॥ नुछ्रयंगुलपंचाशाविस्तरं द्वावीसतीः ८३ व्यालोपांगस।
हातंमंगुलषटमेवचः मूलनायकस्तनगर्भेदृष्टीस्यचामरेद्रकः ८४ नानाभरणशोभाढ्यानाना
नारत्नोप्रसाभीतं इदसंक्षणं वशाचामराधारकथ्यतेः ८५ इतिचारधरः दोलाक्षतोरणकाजंःन
नेकाकारसंयुतंमनेकाकारसंयुतंत्रीरथाकोद्भवंकाछत्रत्रयसमन्वीतंः ८६ असोकपत्रोद्भ।
वकार्यछत्रएवंदंदसमन्वीतः अलस्तेफणीमंउपाक्षतरसमुद्भवंः ८७ त्रीपंचफणसुपासंपास
ससनवस्तथाः अहीनकणनकर्तव्या अधीकंनैवदोषयेतः ८८ छत्रत्रयस्चनासाग्रेणचत्वारी
स्त्रोत्तिः भवेतुः नाशाभालंतयोमध्येः उकपालेवेधस्युतमः ८९ चतुरीशीसंगुलंदीर्घंनुदयं
पंचासदंगुलः घटीतेस्योर्द्धकर्तव्या सवेलक्षणसंयुताः ९० भामंडलंततोमध्येतिलकंवाम।
दाक्षिणे अंगुलंधादशांप्रोक्तं तीलकंविस्तरंभवेत् ९१ नुदयंषोडशाभीप्रोक्तंतीलकंतत्र
रुपकंःनुपरेछाद्यकीजे: याघटाकलशाभुषितः ९२ नासीकेस्थभीकाद्वोचमंकरंवामद
क्षणेगायतेतुंवराश्रेष्टं वसाराघोरवसेपतराः ९३ वाणीवशाषराप्रोक्तामध्यस्थानेइतिस्मृता
संवतरालोमा लाधारतीलकंयामदक्षिणेः ९४ अनंगोपारजातस्यदशांगुलेप्रमाणतः
मुलेकित्रयलोकेशाअग्रछत्रंद्वीलयकाः ९५ तृतीयंलिंगमाकारांग्रहादेवोच्चतुर्थकंः वाली
कनकदंडंचछत्रवृत्तंशीगुलः ९६ झलरीमणिमौक्तिकस्यकुर्द्वकलशांसदापकः नागोदेरा।
वीतिश्रेष्टानुभयोर्वामदक्षिणेः ९७ कलशंपल्लयेएलकैयुक्तेइछापत्रंचकारयेतुदीरणेद्रछ्रयं
कार्यंपुष्पजशोधृतंः ९८ छत्रदताधाररुद्राशंषपुर्णमदोद्भवाः तेकुर्वंतीमंगस्थानंदुदुभीः।
शंषमालीकं ९९ भामंडलततोकार्यः छत्रापोद्विविंशतीछत्रंदशांसोलेप्रोक्तंद्वितीयंवस्त्रमंगलं १३

१२ १०॥ ३॥ षउमंगलतृतीयेचतुर्थवेदमंगलंएवंरथीकेद्रकायंछत्राकारभेवेततः १३॥ टीका दे
हपरासर्वेजीनेद्रभक्तीवसलः वादीत्रेस्वमुसन्मानी संकत्राम्यंतीमालीकाः १०२॥ तामंडलकी
ण दिव्यतेजामस्तकीभुषीतं सिद्धीतीर्थकरासर्वेयाइतपयवस्थितः ४॥ दोलामस्तकेकल
शामुद्रारेख्याहारूपकः गजश्टंगाउशोभाढ्य अशोकपल्लवान्वीतः ५॥ कुंईदशाग्रहासर्वेत्रा
दिस्याद्यादक्षिणेपरः वौहस्याथोचक्रेएतमग्रहाधर्मश्रयतीचः ६ इति दोलापरिक्षा कर
लक्षणंसमसः जन्मस्थनेशुभंप्रोक्तं पत्रवेतोमेहवासवेढत्रचामरेशाषनादंदक्षीणंगवी
सावेदुः॥१॥ गर्भेयस्य जिनेद्रस्यसप्तमात्रंप्रसस्यतेः चंद्रादीत्यद्वयंदृष्टाल्की षीचगजसंस्थि
ताः २॥ मणिकौस्तुभयं टमेवचः ३ स्वस्तिक
श्रीवत्सस्तेषोमसयुग्मोभश्रूरकः नदीसरोवरदृष्टा चेदमातासरस्वती ॥४॥ द्वंद्वंषोडशना
मानीसुप्रसस्यतेः टीका चंद्र१ आदित्यः २ लक्ष्मी ३ गज ४ माणी ५ गो ६ सींह ७ वृष ८ वी
मान ९ चामर १ कलश ११ संपुटः १२ साथीउः १३ मसयुग्मगादीः १५ दावषोडशसमानी
इतिश्रीजयमध्ये विषपरायणः सुत्रधारसीव्यासंपूर्णः॥ टीका जगसालणवक्षेयइक्तंवि
श्वकर्मणा। मानोन्मानं प्रधानंचः टीकाः वीस्तारभागे ११ दीघेभागः १८ गभारोपद २ छउ
पुटीपछीमीउंचोभाग २ वीदूमाहेविचरेतेमाउवोअन्मेप
नसमंडपः अग्रेभागः १ चउकीभाग ३ नालीमंडपः अग्निनीरगमत्र उकीर २ निर्गमः एवं
भागः १८ श्लोके अष्टातुत्तंदीर्घहताचेसंक्रमोअयामत द्रः वीवरेचमेदनी॥ वीभागमा।
गेक्रमचेद्रयाणेमालकोलानशामनंवेष्टीअभं १ एकवीतानुभोपक्षे। एकोदसाग्र एष्टयो
सप्तावीशी द्वीशनाग्रेवी॥ गानांमतःपरः एकद्वित्रीचतुःपंचअंगहिनातथाधिकंः दीर्घटी १
काभागः २१ वीस्तारभागः ११ पुटीपदछाउने ७ सातमेप्रसादेकोगभेसुत्रः कोलीसुधा
भागः ८ जाणवो अंगीमंडपपुर्वपरिजाणकाः १ कर्णेस्याजा दहरीया आंगीसरणा
एकल्लाणवु॥ अष्टोत्तरशतंचैवक्षत्रेवापी। वीचाक्षणः प्राशादेमंडपाचैवः गुटेप्रासा

२४
२
दभागः कविलीयुक्ताअगीभागः ३ सुधोमंडपआगीभाग ३ नृत्याचौकी ५ नीर्गमदीर्घभागः १५
विस्तार भागः ९ भाग द्वी ६। कर्णेत्याज्यभागः पुटीनंआगीभाग वद्यावरवोभाग ३। ३ वामद
क्षिणेवधारवापुटीभागः ४ छाडिभागः २ प्रसादकोलीभायुक्तक्रमंडकेः भाग ३ गुढभाग
३। ३। मंडपरभागः १। चोकीमंडपवीस्तीरीभाग ३॥ भाग १। पषासिछेडीनेभाग। ३। ३ वा
मदीक्षीणमंडपकरवा॥ इतिसुत्रीका २ दीर्घेभागः १८ विस्तारभागः ८ भाग ६ कोर्णेता
ज्यंभाग १। १। आगीपाछीवद्यावोगुढमंडप वचउकीरीडीचीपापतीःजम भाग
६६ वधार २ वधारवाचाग ४॥ पुटीछामिभागः २॥ प्रासादकोलीयुक्तकरवोभाग ३
मंडपभाग ३ जवचउकीभाग ३ नृत्यपउपभाग ३ नालीमंडपदेस्छा आगीसरणं २। २
चतुदशभावइती ३३३ जीनं ४ दीर्घभाग १४ चीस्तारभागनव ९ भाग १० काणीत्याज्यपुटी
भाग ५ छांडिभाग २ वीद्रप्रसादकउलीसुधाकरवोभाग ३। गुढमंडपभाग ३ नृत्यआगे।
च भाग १ उकाइतिवेदुपीः देहस्वां आगीपद्मीः ५ दीर्घभाग १६ वीस्तारभागएकर्णेभागदृस्या
पुटीभाग ४ छदिणसादभागबीद्वामाहीकोलीसुधोमंडकेःपद्येभागः १ गुढमंडपछे
भाग २ छोझानीकउकी ११ निर्गमदेहस्वां आगीसुरणः॥१॥ इतिलजा॥६॥ एककीमया।
दरीखाद्वादसचैवः वीस्तदिषिपदकर्णविस्तारअलं रपालएयदःपदैकंलोपयेलकणी
नष्टभद्रोचगाचीभाजकप्ररपालयेपदः जगतीपंचरुपादेपादेः चत्येकरेः टीका कणवच
यस्मुतास्तथास्त्रेसुत्रचेदीकाः चतुराशीतिशताग्रेकोष्टानांचसंक्षेया ३ हस्तसारवासम
स्तेषुनष्टकर्णेसमुद्रवा। इतिउसलापचवीवलःशीदीर्घेभागः २० विस्तारीभागः ११
भाग १ कणीत्याज्यपुछीभागः॥ ५० त्याज्यभाग २। २। पुटीराषवाभागः २। २। पुणंती
रीपुणगोरासवाः भाग ७। ७। त्याज्यपछीभाग १। १। वामेदाक्षिणेराषवाचापछीअ १४

१३ ग्रीभागशा२ राखीनी भाग १।१ तीयांतीरी साज्य एवाज्य श्रेणी जाणवा पुछी पूढी भाग ४ छांडी
नी प्रसाद भाग बीहनाही केल्लीसुधो मांडवो पछी भाग ३ देहस्यो सरणु पः कोणी भाग २।२ राखवा
छिइतिटपदे पवावाकर्णेवव यात्ली दादरी टांकवाइतिः दीर्घ विस्तार भाग २९ करवो मध्ये भा
गः ५॥२५॥ क्षेत्रा प्रासाद भाग ५।५ मांही करतां भाग २५ क्षेत्र जाणवा। पछी गर्भसुत्रं चे तु
रीक्ष पछे भाग २ प्रासादरा आणंग धीरी। कर स्कंसुधी चउकी १० पछे पद २५ रो मंडप करवा
विकर्णव द्दपद २ लांयादीः पछीपद ८ पा चद्य चउकीः एवं चतुर्दिक्षुः मुलप्रसाद थकी वीणी
कगगगीपदं १६ उघाडा राखवा पछी वारल्ली पाखता पाखता सर्वद् हवी बाकी पद सर्वे च
तुकी टांकवीः चतमुखजाणवो भागः १०५।१०५ कर्णे त्याज्य दीर्घ भाग २९ विस्तार भाग
५७ कर्णभाग ३६ त्याज्य १ मध्ये नवक्षेत्र प्रसादप छीः २ आगी पाछी पदः २।२ चउकी प
छी भागः ३ मांडप भाग १ चउकी भाग ३ भाग मंडप आगी चउकी मंदसनधीः पछी मठ
पारी गर्भे पदः ५६। १६ कुघाडा लंबाई भाग ४ विस्तर इवा की सर्वपद देहस्या आगी टा
कवादीचे भागः १५ विस्तार भागः १५ मध्ये प्रापदप ददीर्घ विस्तार पदवीस्तार पद २ रीप
३ छपद २ मंडप पद २ चउकीकीणागती जाणवी। दीर्घपदः १३ विस्तार पदः १६ मध्ये पदः १
मध्ये पदः। विस्तार पदः पदपुठे। एकलगे वघागवाय दः ४।४। वामदक्षिणवीकणगती मुल
प्रासाद। रेगर्भविधारसां पछी पद १।१। गुढमंडप रंगती। वद्यारवा पछी। पछी थका प्रा
साद पद २ गर्भ पद १ वील्ली आगी पाछी पद ३ मंडप पछी पद २ मंडप चउकी एक निर्गम
पदः ५।५ पुणी ताज्य। सीराणो दीर्घ भाग १४ विस्तार भाग ९ भाग ९ भाग ११ आगले
पुणे २ छडवाः भाग ५५ गुढमंडपरे आणी। जीवद्यारव्य। पुटीथा पदः १४ प्रसादसरो
गर्भे पद ५ कोल्ली संबंधे ५ पद २२ पंचचकी १ गर्भ शारण एचउकी रस भवदीर्घ भागः

१ प्रासादवाकी चउकी सवटांकवी चवकी ११। विकर्णगतीः दीर्घपद १३

१५

२ ६
१४ विशतार भाग ९ पुवी भाग ५ उणे १ वृद्यारवो पुवीथवा ६ पद ६ प्रासादकाग भेसुत्रः
भाग १ कउल्लीसुघो भाग ३ गुढमंडप भागः २ चउकी भाग ३ नृत्यमंडपः चउकी एकचउर
सरणं चउरसदीर्घ भाग १५ त्रि०भाथः ११ पुटीपद ३ सरणु वेधार बाणंगे भागः ३।३। १
अणागे भगेनः ३ छाडवा भागः ४।४ आगी छडवाः पुथी कीयद ६ प्रासादरो गभ भाग १
कुल्ली भाग गुढमांडपा भाग ३ नवचउकी भाग ३ नृत्यमंडप चउकी १ नीगमसरणु १ स
तेविषमेः दीर्घ भाग ३३।१५ वीस्तार भाग ११ भाग एकेकोणे लाप्प भाग ५ पुटीसरणु १ वेधार
वो गुढमंडप पदः ४ विकर्णगतीदधारवां : पुटिथका पद ७ थकादसे गर्भे पद १ कोणा।
सुधो पद ३ गुढमंडप पद २ चउकी पद ३ नृत्यमंमपः चउकी १ निर्गमदीर्घ भाग २५ वी
स्तार भाग ११ पुटीपद २ आग्रे पद २ वृद्धीपद ४ लिंगल्लबायद्री चामदक्षणे साजप
द १ पुटी वृद्धी पद २ आदी पद २ वृधीपद ३ लगीलंबाझीवा मदक्षणे ताज्य पदः १।१ सा
मदक्षे नवः चोकयरी। गर्भे वधारवो वामदोक्षिणे ताज्य साज्य। घटिथवी पद ३ आगी प
पद २ मंडप आगी पद ३ मंडप आगी पद १ चउकी पद १ उघाडा । ६।१ प्रासादपद १ कवुल्लि
सुधीपद १ चउकीपद घांझा पद प्रासाद पद २ कउल्ली सुधीपदः ३ गुढमंडव० पद २ न
नवचउकी पद मंडप पद २ ६घि० मंडप पद २ चोकी पद ३ मंडप चउकी १ निर्गमः सरणं
२ दीर्घ भाग भाग ३३।१७ विस्तार भाग ९ पूटी पद ४ विकर्णगत्ती वधारवाः आगी पणी
इराः नवचुक्या रे गैवा मदक्षिणपद ११ वधारवा कोपा पद हवी आदी अनुत्तर २ गछइ
णी बीउ साज्य पुटीथी पद ५ प्रासाद पद १ कोल्लीसुधापद ३ नवचउकी पद ३ मंडप
द १ चउकी पद ३ मंडप आगी त्री चोक्या ते निर्गमा चउकी १ सरणु १ भद्रमे कंभ
व तु पृष्ठे द्वयो वामेच दक्षणे। पाया मेची ३ मुष्तन्न विस्तरे वीसमे वचः इति विचित्रः १५

दीर्घे भागः २५ वीस्तार भाग १ पुटी पद १ गर्भे वृद्धी पद १ गुढ मंडप वामदक्षिणे वृद्धी पद ४ नृत्य मंड
परे गर्भे वामदक्षीण वृधी० पुटीथी पद ७ सातमे प्रासाद गर्भ सुत्र पद १ कुतुली संयुक्तः पद ३ गु
ढ मंडप० द ३ नवचउकी पद ३ नवस्य मंडप पद १ चउकी पद १ चउकी ३ खंड पः आगी त्राच उकी
चउकी १ निर्गमः ॥ न मंडपे रे गर्भेः वामदक्षण नृत्य मंडप थकी पदः २॥२॥ चौडीनी पदः २
अष्टापद मंडप ककरवाः सरणं २।२ करवां दीर्घ भाग १७ वीस्तार भाग ११ नंदा ईसरणं ३३
आणं गीछा ठवाः वामी ४ आगी पाछी न छाउवाः पद ३ सरण १ पूगी वाघा रवु पूगी पद ५ प्रा
साद पद १ कउली युक्ता भाग ३ गुढ मंडप भाग ३ नवचउकी भाग ३ नृत्य मंडप आगी चउकी
३ करवी चउकी १ निर्गम करवीः द्वीसप्तत्यादीवाणे वंचि नु विंशती तो पीवाजीनालये भुक्ते दः
क्षः सहततजीम मंदिर दीर्घे भाग २५ विस्तार भाग ११ एव द्वुत्तर जीनालय दीर्घे भाग १७ वी
स्तारए ८ बावा वनजीनालयः इति की स्थि ग्रीगाती वांच्या रलीयीलं॥ ८०॥ श्री विश्वकर्मा य न
मः तेराज्यस्य मथो वक्षे प्रासादस वकामदंः यत्र ज्यस्तस्य मेहेसः वीक्षुस्य ब्रह्माः २ वी १ ए
कधी रंच तुर्द्वारंः द्वारं त्रयमथोऽस्रेतेः याम्योत्तरे तत्र खंस्तत्री द्वारं त्रिविधो द्भुतंः २ पुर्वापरद्वये
द्वारं दुषयेयाम्योत्तरे दोषये याम्योत्तरं एकद्वारिमाहं ३ः चतुर्द्वारं चतुर्दिसः २ पुर्वंतु भुक्ती द्वंद्वा
रं मुक्ति दंवरुणो द्भुतं। याम्योत्तर सिव द्वारं कृते दो षमहद्भयं ४ एक द्वारं माहंद्र चः अन्यथा दो
मुद्भवेत भद्रटत सर्व कल्याणं चतुर्द्वारं शीवालयं ५ चतुर्भाग समारभ्याः यावत्सुर्योत्तरं शात
भाग संक्षेती। वीक्षानाः फाल्गुना कर्णवास्यताः ६ अष्टोत्तरशतं भेदेः अंस वृद्धा भवती तेस
मं सौवीषमे कार्ये। नंत भेदैस्य फलना ७ प्रथमवैराज्यादी प्रासाद २५ संख्या टीपली खितं च
तुरस्त्रा भाग १६ कीयो भागः ४॥ गर्भ ग्रह भाग ९ भीती भाग १ मिति २ प्रासादस्य मुखकीजी।
द्वारा ग्रेस्चतुः कीकः सीह कर्ण युक्त कीजीः च्यान्हे द्वारे भुकनास करवा ऊपरी सिंधा विराजितं व
रबो चतुर्गुण कोरो स्तः रेखा लुवण करवाः स्कंध कोरांतरे भागः ७ करवा भाग १ ग्रीवा १ भाग १

आलसारोः भाग १ पदम छत्रः भाग ३ पंचगुणी जगतीः चतुर्मुख करवाये धर्मकारये हवा प्राकरी
तेः २१ स्वर्गज्य प्रमीः इतीवे वीज्यः १ भाग को चीराउः भाग १ कर्णी भाग १ भद्रा द्वीः तद्रेमुखः भद्र
की कीयो भागः भद्र निर्गम पालीत रयुक्त करवाः कर्णे श्रृंगः १ भद्रे श्रृंग रत्नी कर शिवायो की
जीः चतुर्गुण को साः घंटा कलश पुर्व प्रासाद रीकर वो भद्रे कथीको ३ उद्गम घाटा युक्त करवा। इ
तीनंदन रसनं दन इहलोकेः स्वगेवात्री दरो शाहः संदन प्रासाद मुख भद्र प्रति भद्र कीये ः स्थी क
उपरी सीह कर्णके थिमुलकणे रेश्रृंगे सीदक र्णकीयैः इति सीहः नामः देवानां तु प्रकर्तव्यं सीह
स्तद्रेव शाश्वती नुस्वं ती गिरयीनस्य। सौभाग्य धन पुत्रकैः। इति सीहः सीह प्रासाद सारी थोकी
जी। कर्णी पंचाक वीथ रा कीघेः ते श्रृंनं दन प्रासादः इति नंद ४ इति त्रंगात्रयः इतील भाग ६ चीरा
उ भाग १ कर्ण भागः ४॥ १ प्रतिरथे भाग १ निर्गमः ४ गभे कत्तौति द्रेश्रृंगः २।२। प्रतीरथे श्रृंग १ इ
ति मंदीरा ५ मांदीर को सुपभद्रेः ३ संगराः ३ कीजीः टोमलुप प्रासादः इति मलः ६ मल थरो रुप
भद्रे ३ रु श्रृंग त्री लोच छत्रनी प्रतीरथे तील ककीएजीः प्रत्यंग कीजी ते विमानं ः इति विमानः ७ भ
द्रश्रृंगः ३ कीजीः ते वीशालाः इति विसालाक्षाः विसालसो घो रूप अने व प्रतीरथे वीजो श्रृंग
ते सुभुषणः इति भुषणः ९ ॥ इति पंचगा पंचः भाग ८ रो वीरो जा कर्ण प्ररथ रथ भद्राये सु।
स्त एक कभाग प्रतीरथ भाग निर्गमः जलांतर वाः पंचांगो गभ चीस्तः कर्णे श्रृंग २ उपार तीलक
द्वो श्रृंग प्रतीरथ वेः उपर के ये श्रृंग १ भद्रे श्रृंग ३ मुलशीखर भाग ५ घंटा कलश युक्तः इति महे
द्र १० महेद्र प्रासाद केवी षे कर्ण श्रृंग ३ कीमे टाउन शीर्ष नाम ॥ ११ इति रत्न शीर्षः ११ रत्न शी षे प्रा
दरो रुप भद्रे उर श्रृंगः १ राज्य भाता लंब करवोः कर्ण बाजुः नु परी श्रृंग रकरवा ते सीत श्रृंग इ
ति सीत श्रृंगः माहादेव ने अती वल्लभ १२ शीत श्रृंग रो रुप तीलक छपरे थे श्रृंग ते भुधर इति
भुदरः १३ कुलेछाजा नु परी श्रृंग रतीलकः १ ते भुवन मंडनः १४ भुवन मंडन सारी वो अ
ने उपर थे श्रृंग रतीलक १ ते त्रीलोक्य वीजयः इति त्रैलोक्य वीजं कर्णे यत्रे लोक्य सारी शोभन द्रे
श्रृंग १ ते क्षीता भल्लभ १ इति क्षीताव ल्लभ १६ इति सप्तगाः सप्तः भागः १० वीराउः भाग १ कर्ण।

१५ भाग १ प्रतीरथ भाग १ रथ भाग १ उपरथ भाग १ भद्रार्द्धः कर्णे प्रतीरथे भद्रे शृंग कीजीरथो उ
परीथी तिलक प्रत्यंग रथ उपरी भद्रे मत्तालंब महीधर १७ महीधर रज्ञारी वो भद्रे शृंग ३ तेके ला
ज्ञा १८ लाडीनी रथे शृंग दीजी तु नवमालः इति नवमालः। १६ तथा भद्रे दीये तो गंधमादनः इति
गंधमादन २० भद्रे छाडीनी नुपरीथी शृंग दीजी ते सर्वांगसुंदरः इति सर्वांगसुंदरः २१ पुनर
पी भद्री दीये तो वीजमानंदः २२ इति जीयानंद भद्रे छोडीनी शृंग १ मालालंबक रेकर्णे छाज उ
परी शृंग २। २ दीये ते सर्वांगतीलकः २३ सर्वांगतीलक रोरूप भद्रे उरुशृंग अनेमात्तालंबयुक्त
करवो तो महाभोग। इति माही भोगः २४ कर्णे प्रतीरथे रथे उपरथे १ एककेश्रृंग दीजी तु मेरु
नामः इति मेरुः २५ इति नवांगान पसव एन मेरु प्रदक्षणा ३ दीये ते फल प्रापीवे राज्यादी प्रासादे
~~कीजीरथो उपरीथी तीलक प्रत्यंग रथ उपरी भद्रे मत्तालं~~ प्रासाद भुद्ध वे राज्य दीती काः स प्राप्त
० छाना मानी रूपनी वाणा कथयमीजथा तथ १ रुचक भद्र २ हंस ३ हंसोद्भवः ४ प्रतीहंसः ५ नंद्या
वर्त ६ हाराधर ७ वर्द्धमान ८ गीराकूट ९ श्रीवत्स १० त्रीकूट स्तथा ११ मुक्तकोण १२ गज १३ गरुडः
१४ त्रंस १५ भव १७ वीभव १८ पद्म १९ मालाधर २० वज्रकः २१ स्वस्तिक २२ शंकु २३ सदापंचय २४
उकरद्वला २५ इत्ये ते च समदीष्टा प्रासादी पंचवीषती लक्षणसु कं कथयत्र मीयेथ। विदिर सवा।
कथका १६ प्रासादे चतुरस्र रास्ता वः वभवजायम वीस्तराः पद्ममालाधरः द्वलजयजयामकरद्व
जाः वतोषलः वज्रकस्वस्तीक संकुकर्णे अष्टाभु एव २५ चतुरस्र क्षेत्र ना तीये राभागः ४ कीये एकेके
भाग भीभी शोष गर्भ ग्रहतीग्रे आगीसागरः नीनी। गर्भ भाग ३ वीसुर ते द्वा स्रोवच्यारस्त भावि भ्र
वीत कीर्ति श्रीखर सवायो कीलीच तुर्गण गर्भ १ आमलसारो भाग १ पद्मपत्र भाग ३ कलशः
इति रुचकः १ पुर्वरूप च्यारीषो रुपभद्रने कर्णग ध्येउदकले: २ कीये ते हंसा। इति हंसः हंसो १५
द्भवस्त दा नाम ब्रह्मणस्य सुखावहेः ९ इती हंसोद्भव यथा भद्रे तथा कर्ते कारयेन्नुदकं तेरं।
नीर्मिता भाग पादेन कर्णभद्रस्तंभ द्वय। इती हंसंहंच कः सुप्रा श्रीवाचः भद्रमानेन कारयेतुः
निर्गमष्ट कर्णेच सानंहे सवकामदंः इति नंदयः प्राग्रीवे तु पुनः रली दंकारयेत्तः वीधी पुर्वकेन १६

१७

यावर्तस्तथा नामक लक्ष्मं देवतालयंः इति नद्यावर्त कुक्षौ कर्णाली दमानेन सप्तै छदय विभूषि
तं धरघरस्तु वी त्येयो देवासुरस्य वल्लभः वीचरास्वरः एस्तो करीकान काढी छेती ते श्लोक एवं भा
गः १० को वी राउ भाग कर्ण भाग १॥ पढरोः भाग ३ भद्र शिखर पुर्वका पीरीः इति वर्द्धमानः क
र्णानुदाकालर कीये शोगीराकुटीः इति गीराकुटः कर्णे प्रतीरथो करवा श्रीयाणी नर त्रायु के इति
श्रीकुटक्षे द्वे इति श्रीकुटः कर्णे भद्रे कार्ये अष्टांगमलना शीक ते मुक्तकोणः इति मुक्तकोणः
प्रतीरथे बुध्ये भध्ये प्रष्टं नवत्तमालीवेन एवं विधेय कर्तव्यं स गजं सर्वकामदः। इति गर्जः वर्द्ध
मानस्य शोरुत्वाने पश्च दयालदा घितः शिखं कूदक ताकारं परिखा राज्य ग्रहाश्रयाः इति गरुड
सी हेन्र तीरथं कुर्यालं कसी हना स्तत उ स्यते चतुरस्री कथिता सर्वकामक फल प्रदाः इति हीनाम गि
रीकुटस्त्री कुटआयल वीसारे भाचवि भवस्त्री लिंग प्रासाद इति भवविभववर्द्ध द्विरष्टकर्ण
ढो॥ पसकेच भद्रे वीना द्विरष्ट भद्रविस्तीर्णे स भवेनु मालाधरः षोडशदल प्रासाद कीयते
भाः पद्मकः पुनर्भद्रे षोडशभद्रकाये मालाधरः इति पद्ममालाधरः अष्टकर्णे तु विज्ञेयं
ताः पंश्चेतु प्रतीरथकः स्वस्तीकेः प्रती भाद्रा एणी तयो अष्टशा सुत्रकेः इति वज्रकस्वस्तीक स
कुः पद्म प्रष्ट तातये मल कर द्वषे जंतु मालाधरः लक्षीना कथिता चैव प्रासादा पंचवीशतीः इ
तील तीन प्रसाद पंच विंशती संधारास्त तोवे प्रासादा सर्व तोल मंः शेषरे वी विद्याकारे
अउके भेव द्रसुं भुतिषतोः १ आद्यपंचां उकोज्ञेया केसरी नामनामतः स्तपतो चतुरो वृ
द्धीः यावदेको त्तरं शतं: दशहस्ताद घोनस्यातः प्रासादोत्तम संयुतः षटत्रंशत्त नरधारेः
व्याधलिंगे चतुरादयः पंचवीसती संधारा प्रयुक्त्या वस्त चेदिभी। अत्र महाना स्तये का
र्यभुद्दछे दषुना गराः अथ सांधार प्रासादः पंचवीसती रूप निर्णय लिष इछी प्र
थम गज १ आदीती दश लगीस भ्रमन कीजेः दस थकी ५० लगी सातं धारकु अप

१७

जेतथापीपी ३६ लगेनिरंधारकुपजेआधलगीकृतीयेरोकीये: अष्टदीकुसुर्यमसात्रा: पत्र
र्मभित्तिस्यभागत: संधारेषु प्रकर्तव्यं: भद्रचोद्रावीलोकनं १ मंडावराष्टमंत्रोत: हीनेभद्र
पुष्ठद्यकं १ चतुरश्री क्षेत्रराभाग ८ कीजी: भाग १ भीत्ती भाग १ भुमभाग १ भाद्वाबास्यछा
द: भाग २ कर्णभाग २ भद्रार्धकर्णसैंघसद्रनिर्गम: भद्रेपंचारथीककीये: चतुत्राकोणीच्या
षीसरी कीये: श्रीवत्सत्रीषरतेकेसरीनाम: ११ भाग १० रोवीराउभाग २ कार्णभाग १ भद्रा।
र्द्ध भाग १ कोर्ण १ भाग भद्रनिर्गम: भद्रमुखभद्रकीये: भद्रेउद्गमकीये। कर्णेषीषरा: ३३ टी।
श्रीवत्सशिखरतेसर्वतोभद्र प्रासादन इति सर्वतोभद्रनाम०॥ भागरकर्ण भाग॥१॥ भद्रा
र्द्धभागे १॥ कर्णभद्रमुखभद्रकीये: जीरथीके कीये इंटाकुटासंयुत: कर्णेष्टंग ८ श्रीवत्रात्री
षेरअडक: १३ तेनंदन प्रासाद: इभाग २ कर्णभाग १॥ कर्ण १॥ भाग १॥ भद्रार्द्ध भद्रेमुखभ
द्रकीयी भाग: भद्रनिर्गमकर्णे श्टंग २॥ भद्रश्टंग २ अगेरथीककीये। घंटाकुटसंयुक्तकीये
अंडक: १७ प्रासादनंदशाल: ४ भाग १ कर्णभाग १ पटराभाग १ भद्रार्द्ध भाग १ भद्रनिर्ग
म: कर्णश्टंग २ श्टंग २ श्रंग १ प्रतीरथाभद्रश्टग: १॥ अंडक २१ प्रासादनंदीस ५ भाग १२ वी
राउआग २ कर्णभाग २ प्रतीरथभाग २ प्रतीरथभाग २ भद्रार्द्ध भाग: भद्रार्द्ध निर्गम: भाग
१ भीतिभाग: १ भ्रम: भाग १ भीतीभाग: — भागत्रागर्भार्द्ध: श्टंग २ कर्णे: श्रंग २ भद्रे: श्टंग: १
२५ घटरोघटाकलशा: संयुक्तकीये: रथीककुद्रमसपुनकीये: अंडकै: तेमंदिर॥ द्वी चतुर्दसस
विस्तारं भाग १४ कोवाराउभागती त्रिभाग: भ्रमभाग १ भीतीभाग ४ गर्भोद्ध कर्णेक
१ श्टंग २ प्रतीरथेश्टंगैतीलक १ नंदीतिलक १ भद्रश्टंग ३ अंडक २६ छीतीव्द्रचोडी उअमनोद्भव: १५
अंडक २१ इती अमतोद्भव: ८ पुवेभाग: १४ तेपनरपीतलनपश्टंग ३॥ पटारेश्टंग: २॥ भ
द्रेश्टंग २ अंडक ३१ प्रासादहेमवान् १ हमवनकपसारीखो अतेत्रा द्रउरुश्टंग २ कीजीनंदी १६

तिलकपुन: कीजीअंडक ४१ प्रासादहेमकुट १० पूर्व: १४ तलखारीषोरुप: कर्णेश्टंग २ तीलक
१ पटरे २॥ भद्रेश्टंग ३ नंदीश्टंग १ तेकेलास प्रासाद: ११ माहादेवनी कीजी: केलासखेरुपअ।
नीकर्ण ३ त्रीजोश्टंग कीजीतु प्रथवायेय १२ तीलकभाग १६ भाग १ नंदीभाग २ भाग १ भद्रनिर्ग
म: कैनिर्गमे: भाग १ भीती: भाग २ भ्राम भाग १ भीति: भाग ४ गर्भार्द्ध श्टंग ३ कर्णेशिष
रसुयेविस्तर: १ नंदीतिलक: १ प्राच्यांगयुग्मभागश्टंगद्वयरये: नरुश्टंगभाग ६ कीये
वीस्तरनंदीश्टंग: १ उरुश्टंगभाग ४ कीजी ४ भद्रश्टंगभाग २ कीये: निर्गमभाग १ करवो।
भद्रश्टंग ३ प्रएककर्णे: पुतीरथे उदकंतरकरवो: अडक: प्रासादइंद्रनील: इतिइंद्रनील॥ इंपु
वीकिंदयोलेतलभाग: १६ तीयेउपरीपुनरभद: कर्णश्टंग १ तीलक १ कमे २ बीजोनंदीश्टं
ग २ भद्रनंदीश्टंगभाग ६ तलभाग ४ अनुजभाग २ भाग १ निर्गमअडक ३७ तेमहानील ३४
महानीलप्रसादरे: कर्णेशीगतिलकडारेटारकजेकर्मबीजी २ कीपुर्वलुरुप अंडक: १ ६२ प्रासाद
भुधर १५ तलभाग १८ भाग २ कर्णभाग १ नीदाभाग २: पढरेभागनीदीभाग १ भद्रनीभाग
२ भद्रार्द्ध भाग १ भद्रानिर्गमभाग २ भीतीभाग २ भ्रम: भाग १ भीति: भाग ४ गर्भार्द्ध: कर्णेश्टं
ग: २ तीलक १ उद्दंभदकर्णेश्टंग: २ तीलक १ त्रीखर भाग १२ नंदीलतिलक २। २ विबी भाग २
भागर प्रत्यांग: प्रतीरथेश्टंग ३ भाग ६ कुरुमंजीरीनदीतिलक: ७ उरुश्टंग भाग ४ नंदीश्टं
१ भाग ३ उरुमंजरी भाग २ भद्रश्टंग अर्द्धनीर्गम: भद्रेउरुश्टंग ४ श्टंग ८ प्रत्यांग अंडक ६४
प्रासादरत्नकुट १ ६ रत्नकुटरोरुपमलकर्णेत्रीजोबीषरोकीजी। तेवैडुर्यअंडक: १ ६८ प्रा।
साद १७ तलपचरुप भाग ८ कर्णेश्टंग २ तीलक १ त्रीषर भाग १२ नंदीतिलक २५ २ अन्यं
प्रतीरथेश्टंग ३ भाग ६ उरुमंजीरीनंदीतिलक उरुश्टंगभाग ४ भद्रनंदीश्टंग २ भाग २
उरुमंजरी भाग २ भद्र: श्टंग अर्द्धनिर्गम भद्रेउरुश्टंग ४ प्रत्यंग ८ अंडक: ७२ इति

पद्मरागप्रासादः १९ पद्मरागदो रुपमुलकर्णेश्रृंग २ कीजिते प्रासाद वज्रक २० इतिवज्रकः इ
द्रनीकीजीः तलभाग २० नंदी भाग १ नंदी भा २ प्रतीरथ भाग १॥ नंदी भाग १॥ नंदी भाग २ भाग २
भ्रमभाग २ भीतिभाग द्विगर्भा द्विकर्णेश्रृंग २ तीलकं १२ रथामनुवीसरनंदीश्रृंग १ तीलकः १
उपरी प्रत्यंगाः प्रतीश्रृंग कर्ण ३ उरुमंजरी भाग ७॥ नंदीश्रृंग १ तीलक १ उरुश्रृंग भाग भद्र
नंदीश्रृंग १ भाग ५ उरुमंजरीः भद्रश्रृंग भाग २ अर्द्ध निर्गम भद्र उरुश्रृंग ४ प्रत्यंग ८ अ
उक ८० प्रासाद मुकुटउज्वल २० मुकुटोज्वलरो रुप अने मुलकर्ण श्रृंग ३ दीये दुरो रावल
नमः अंडकः ८४ प्रासाद २१ नलपूर्वरुप भाग २ कर्णश्रृंग २ तिलक २ कुद्र प्रत्यंगः प्रतीकर्ण
श्रृंग ३ उरुमंजरी भाग ७ नंदी भाग १ रेखा भाग १४ चीस्ता रनंदीश्रृंग १ तीलक १ उरुश्रृंग
भाग द्विभद्र नंदीश्रृंग २ भाग ५ उरुमंजरीः भद्रश्रृंग भाग २ अर्द्ध निर्गमि भद्रे श्रृंग ४ प्रत्यं
ग ८ अंडक ८८ प्रासाद राजहंसः २२ प्रासाद गरुडः २३ भाग २ कर्णभाग २ प्रतीरथ भा
ग २ भद्रार्द्ध भाग १ निर्गमि भाग २ भीती भाग २ तीलक १ भाग १६ उरुमंजरी प्रातीथ श्रृंग २
उर्द्ध प्रत्यंग भाग २२ थश्रृंग ३ उरुमंजरी भाग ८ उपरवि श्रृंग २ उरुश्रृंग भाग द्विभद्र नं
दीश्रृंग १ भाग ४ उरुमंजरी भाग २ भद्रश्रृंग भद्रेश्रृंग १६ प्रत्यंग ८ अंडकः १६ प्रासाद वृ
षभध्वजः २४ वृषभध्वजरो मूलकर्णेश्रृंग ३ दीयते मेरुश्रृंगे अंडक १०१ प्रासाद मेरुप्रासा।
दब्रह्मा विष्णु निरुद्र स्त्रि पुरुषनी कीयी सर्व कांचनयामेः सुर्यन्यु एवं समादीकंः हीरे हीरण।
स्यगभस्य। हरीचंद्रो दीकं करः एतेषु कारये न्मेरुः मान्येषां च नः इती केसरायादी प्रासाद प
चवीशकीः श्री विश्वकर्मा उवाच ः अथ पुष्पकादी पुष्पक १ वीजय २ सुभद्र ३ नंद ४ वीशाल
५ पदुभाद ६ प्रातल ७ सीहळ सप्त ११ स्वभाव १२ सुवृद्धो १३ अमृतोद्भव १४ गदराज १५ सीधी।
कोरु १६ नंदीघोष १७ सुदंदन १८ रागण १९ वृहसाल २० हंस २१ सर्वंगसुदर २२ पुष्प २३

वीजय २४ मेरु २५ पंचवीशाद्वी मेप्राक्ताः प्रासाद पुष्पकादयः चीमान्य पुष्पक छेदः सवदे
व सुखावहा १ प्रथम केसरी प्रासाद केसरी दीनो तीण रुपी षीषराथ चंडक कीये त्री खरीवी
मान भेदकीजीः मत्तालंब कीजीते पुष्पक १ तलभाग १० रो वीराउ मुली ग्रीष रो घरा अंडक १
नंदन कीजी प्रीतीरथी कुटराउ कीयेः भद्रे उररु श्रृंग २ कीयेः पुष्पकेजु कु कीजीः पुर्वरुप षा
रीषु कीजी प्रतीरथे कूट राउ कीजी भद्रे उद्गम कीजी रेषामाल्यावल कार्येः बीषरादो १ स
ती विजय भद्रे उश्रृंग २ कीये पृष्पक युक्त कीजी पुर्वरुप सारिषु कीजी प्रतीरथे पंचउक षीष
रा कीये सीषर पर्वरुप सरीषोः इति सुभद्र ३ मुलकर्ण। केसरी दीयेः बाकी पुर्वसु पलो लवाः
इति लोकभद्र नंदने सारीषु रुप कीधो भद्रे उरुश्रृंग त्रीजो पुष्पसु पुतकीपेः इति श्रेधर २ः ५ श्री
विश्वकर्मा पुनमः अथ सरत रु प्रासाद तले भाग १२ तीयरा वीराउ भाग २ कर्ण भाग १॥ सुरत
रु प्रतीरथ भाग।१॥ त्रीखर एक अंकः चतुवीसलता संधयुताः प्रासाद सुरतरु १ तल
भाग ५ तीयरो वी विराउ भाग २ कर्णभाग १। पढरो भागः भद्रार्द्ध त्रीषर पूर्वलीपीरीकर खुं
प्रासाद श्रायानंदः २ तल भाग ५ भाग १ कर्ण भाग १ प्रतिरथः भाग भद्रार्द्ध कर्णश्रृंग १
भद्रे रथीके कीजीने सुरा ८ नंद २३ सुरानंद रे भद्र उरश्रृंग १ कीयेते नंदा क्ष ४ भद्रेश्रृंग २॥ की
येते नंदन ५ तल भाग ८ वीराउ भाग २ कर्ण भागः नंदा भाः पुनः नंदी भागः भद्रार्द्धः ३ ३ नी
गमकर्णी १ समनीगमः कर्णेश्रृंग २ की णी तालकः उपरीश्रृंग मूलकर्णे तालक १० त्रीजो भ
द्रे रथाक कीये ३ इति अमृतोद्भवः ६ तलकि भाग १० वीराउ केणे भाग २ कर्णी भागः कर्णी।
भागः भद्रा भागः कर्णेश्रृंग २ प्रतीरथे श्रृंग १ भद्रेश्रृंग ४ नदीतक उपरी प्रत्यंगः अंडक
४ ६ प्रासाद प्रध्वीलय ७ तलभाग १२ वीराउः कर्णे भाग २ कर्णी भाग प्रतीरथ भाग १ भक
र्णी भद्रार्द्ध १ प्रतीरथे कर्णेः सम निर्गमः भद्रा भाग १ निगम कर्णे श्रृंग २ पटवेर भद्रे द्विकर्णी

श्रृंग २ भद्रनंदी तिलकः कणी उपरी प्रसंग ३० ६२ प्रासाद वैडोये ८ तलभाग १४ तीयेरोवी रो
डः भाग २ कण कणी भाग १॥ प्रतीरथ कीणी भागः नंदी भाग १ कणी भाग १ भद्रद्रेः कणीश्रृंगः
तिलक १ कणी श्रृंतीलकः चपटरे श्रृंग २ कणीश्री तिलक २॥ वरीश्रृंग २॥ कणी मतीलवन भद्रे श्रृं
ग ४ प्रसंग १६ प्रासा मुकुटोजलः अंडक ७२ तलभाग २४ कोवीराउभाग २ कर्णभाग १ कणी
भाग १ कणीपडरो भाग २ पटरो भाग १ निर्गम कर्णीश्रृंग ४ श्रृंग २ कणी कणी भाग १ कणी भा
ग १ कणी भाग २ उरुश्रृंग २ कणीश्रृंग ३ पटरो श्रृंग १ तीलक १ कणी तिलक १ कणी तीलक २
कणी तिलक १ भद्रे श्रृंग ७ प्रसंग ३२ अंडक १५७ प्रासाद लक्ष्मीभूषण १० तलभाग २८
भाग २ कर्णभागः कणीश्रृंग २ पटरो भागा नंदी भाग १ नदी भागः नंदी भाग १ कर्णभाग २
पटरो भाग १ कणी भागः नंदी भागः नंदी भागः नंदी भाग नंदी भाग १ भद्रादे श्रृंग ३ कणी
श्रृंग २ प्रतीरथे श्रृंग ५ तिलक १ नंदीश्रृंग १ तीलक १ नंदीश्रृंग १ तीलक ल १ नंदीश्रृंग १ उ
लक कणीश्रृंगः २ श्रृंग २ पडरे श्रृंग १ तीलक ५ कणीश्रृंग १ तीलक १ कणीश्रृंग १ कणीश्रृंग
कणीश्रृंग १ चउथोकणी मा तालंबः दलेश्रृंगः ६८ श्रृंग ५६ कणी उरुश्रृंग ३२ प्रसंग ८
अंडक १५५ प्रासाद सर्वभूषण भद्रश्रृंगः १ अधीक भि तु भुवनमंडने १२ भुवनमंड
न प्रादेरे अंडक रेषा माहीषीषरा कोमी तीन २ कीजी उश्री रथः इतिश्री रथः १३ श्रीध
र प्रासादरे षीषरे २ भुमिथा तिथि पांच कीजी भद्रे रथी केदुम घंटा संयुत कीजीः प्रासा
द पुनः वर्धनं नामः इति पुदवर्धनः १४ अन्यु वर्द्धन रेकणी सर्वतो भद्र सुमनदकीये: इती
मंदारः १५ मंदार प्रादे रे श्रृंगे रेषा वीमान कीजी। इतिहीमवंतः १६ हीमवंत रा उपला षीषरा १९
नव उकवी मान कीजी। इतिराजहंसः १७ पुर्वविहीलो अमृतोद्भवः प्रा भाव कर्णश्रृंगा
नव उक कीजीः इतिमनेपम १८ पुर्वलो पृथ्वीजय चते हना षीषरा नवा उक कीजीनु सुख १९

लक्षना मः १९॥ २० मुकुटोज्वले नव उके कीयेतो मी द्वार्थ नामः २१ लक्ष्मी भूषणे नवा उक काकी
येतु इति प्रभः २२ सर्वांगिभूषणे नवाटक कीजे कुमाह कंतः २३ भुवनमंडन नव उक कीजी उपयराजः
२४ भुवन मउनसा सारा धोकाजीनु रेषकेलः किरादल सारी रवा पल्ले कीजीनु उरुश्रृंग विमान कीयी
प्रसंग वीमाव कीयेतेने प्रासादे २५ अंडक १००० इति सुरलरु प्रासादः पंचवीसती मत्रः अथमेरु
प्रासादः नागरेस्यु यंयत्क देस्य कर्तव्यः सर्वकामदः कर्णदीगचे पर्यलः। विभागा नों श्रीलं एक पी
सती प्रासादः मेरु मध्यासक मद्रवी कर्मयुक्तो विधालव्या प्रयुक्ता वासुवेदी भिः भाग ६ कणे।
कर्णश्रृंग वनंदन अंडक १२ भाग २ नंदीनदीश्रृंग २ श्रीवच्छ एकउक भाग ४ पटरो श्रृंग पंच
द्रके क्रमर नुघे भाग २ नंदीश्रृंग २ श्रीवच्छ एकडक भाग ६ पटरो श्रृंग षुनंदी क्रमतीन ३
भाग २ नंदीश्रृंग २ श्री क्रमर भागः ४ पटे २ श्रृंग २ पंच उक क्रम रख भाग २ नंदः श्रृंग २ श्री
वत्स क्रमर भागः ८ भद्रा ६ श्रृंग ५ भद्रे भाग ६ भद्रनी गम प्रसंगद्वात्रं रात्रा त्रा १ सम रत्न अंड
के सरव्य १५६ कणे ४०

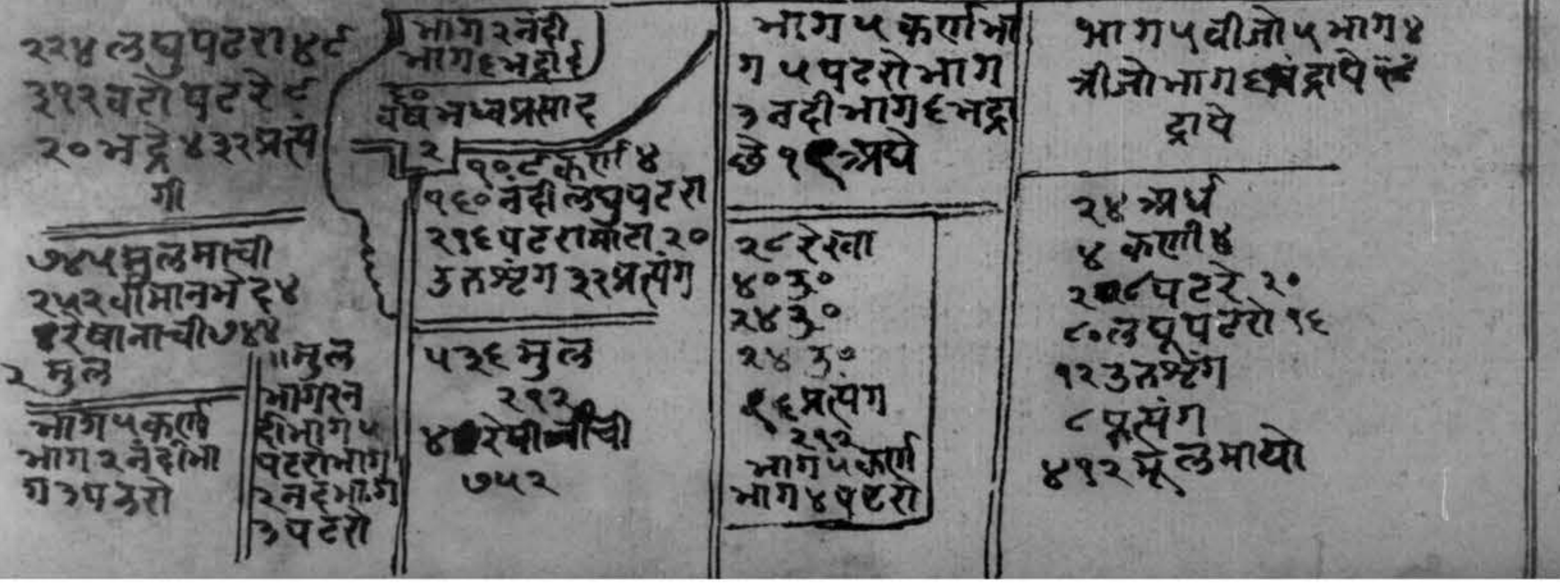

१८

तथाविमानभेदः
२८मूलरेषा
४० उरुश्रृंग द
४० उरुश्रृंग धि
२४ उरुश्रृंग त्रीजा
२४ उरु० चउ०
१६ प्रत्यंग
२५२
१००१ नाममेरु१
१२ वीमानभेद
५०४॥
कर्णे नंदन
पंचाउक १२ पीरीतिलक१
नंदनथर२

पंचउक १३ पीरीतिलक१
उरुश्रृंग ३
प्रत्यंग ८
२० रेषा
२४ श्रृंग उरुश्रृंग
२४ उरुश्रृंग
२४ प्रत्यंग
१२ प्रसाद गरुडर

कर्णे भाग ४ कर्णे पंचाउकर ५ प्र० पटरो भाग ५
पडरो पंचाउक १ बीजो० पटरो भाग ५ पटरो पं
चाउक १ ति १ भद्रार्धे भाग ४ भद्रे उरुश्रृंग ३ प्र० ग
उक १४० प्रासाद कैलाश ६ भाग २ कर्णे पंचाउक २ भा
ग २ पटरो पंचाउक २ भाग १ नंदी भाग ४ भद्रार्धे श्रृं
ग २ गंडक १२८ प्रसाद पंचमे वक्र ७ गंडक ७३

भाग ४ कर्णे कर्णे नवंडकर भाग १ नंदीनंदीतिलक१
भाग ४ पटरो पटरे नवंडक १ तीलक १ भाग १ नंदीतिलक समो
दय भाग ४ भद्रार्धे उरु० ४ प्रत्यंग ८

कर्णे पंचक २ पटरे पंचाउक १ तीलक १ नंदीतिलक १ उरुश्रृंग २
भद्रे गंडक ८९ प्रसाद मंदिर मेरु भाग २ कर्णे श्रृंडक ५२ भाग १ नं
दीपटर रथी भाग २ प्रतीरथ कसंवर्ण भाग १ भद्रार्धः भद्रे
गवाक्ष पंचभु वीमान रेखा कीये: इतिविमानमेरु ८ भाग
४ कर्णकेसरी १ तिलक नंदीतिलक ३० प्रलंग भाग २ कर्णतील
लक १ भाग १ नंदीतिलक भाग ४ भद्रार्धे भ० श्रृंग २ श्रृंडक ३२८ प्रसाद गंधमादन १८
१॥ ८०॥ ८॥ वेदिके स्थंडिले कुंडे वापी कूप तडागकोः भद्रासने भद्रपीठे दृषादे गण
ये ढुंध ॥१॥ ग्रहे रंभे तथा दुर्गे प्रासादे सहसंपतु मूठ मंडपमी त्रैस्या तु सिंहादे त्रितये

२ छत्ररंभेच पदासंने

तथा। राजलश्रये तथा ग्रामे प्रासादे वाप्यकुपके: एते मानादी कर्तव्यं सेघनागो पजायते ढ
दुर्गारंभो ग्रहारंभे, एलेसे हादी मरंभ्यो ग्रो घनागो स्फुटो भवेत्तु ४ वीद्या रंभो गयज्ञानंसी ले
ह हे स्थंडिले एले दोषादी कर्तव्य ग्रो घनागोपि जायते ५ ॥ समुत्त पाद साधे वापी द्वौ द्विगुणवि
स्तरं: अष्टपदस्य विस्तारं कथितं सुरेश्वरे १ आधाभु द्वार द्वारे स्य पीटे पीगे दय: समं मंडवरे न्
नाधिकं नरो भमे रवैराज्यादी आदी सर्वा कर्तव्यो च जीनेश्वरं मुलप्रासाद भुपती केवलीको
व्य जीनेश्वरे २ स्तनगर्भे दृष्टिसुत्रे: स्तत्रवानुद्वीनीयोयीतं ना भास्थाय दृष्टी दृष्टं नीयोयीत २
त्रीबीधं मानमवोक्तं ये ष्टम ध्यमकन्यसं: भद्रप्रासाद जेष्टे वै केवली कामध्यं मानयो: ३ गुढ
मंडपजलमध्ये पादे ना भास्य जीन दृष्टयो गुढ भद्रे च मध्यस्य त्री प्रमाणं नीयो यितं ४ अष्ट
पद पुनर्मेदु एमेरु स्थंडे समो स्थयं मेरुस्य जीन दृष्टीस्य षद्वी द्योच नियोजीतं ५ जलपदोले सुभ
द सुभे। दशाश भद्रवो सीहासनले सु भदाना नी स्थंचे वमा श्रीलं दृस्तनगर्भ दृष्टु सुत्रेनी योयि
तुः एषमालाक्षणमाख्यातं जगत्यांजीन मले: ७ गयाल को नो अष्ट भागं द्वीत अष्ट भाग
यो श्रसीयं अष्ट भागं [illegible] भाग भागेनं संपीको ८ द्वीभागं कणमीत्क भागे च
लय मेवच: वीस्तरस्य प्रमाणेन द्वा भागेन विधीयते १ मणी बंधनाकर्णीते गगारं कवीच क्षए
पुनरेव कोष्टां चलो कानां सुत्रलक्षणं २ वीस्तरश्च प्रमाणं च नंद घृद्वे न वीधीयते अष्टभागं समं
युक्त पंचकोलो पनः वीष्टीतं ४ कोलश्च अर्द्ध वीस्तारं टोचकोरु पसंयुतं-चीपीका रुणीते च व
सास्मा समसुत्रया ५ पुनरेव प्रवी क्षामी घरानं द्वार रहीनयो: कोलस्य अष्टमांसे स पंचके
ले सद्वारतं द्व प्रथमे च परानं घं च द्वीतीय त्रतियं तथा। स प्रभा गं भवे नो कं वृत्तानं व्रतसं
पुनं ७ अष्ट भाग भवे सुत्रे द्वतीयं न १ व भागिकं त्रतीय एका दस भागं एकैकं नु गत मोलस्य
स्ति ८ अथातें संप्रवक्षामी प्रासादे मंडपं षु च मंडपे स्तंभ गर्भेषु बाह्याते पृथक्सुत्र

२१

योश्ठ उदानीस्तद्देषुः समसुत्रं विच क्षणः हनं गेगेहीन गभेरुह्लाक उसक्रु स्व क्षस्च योतल्पद उ
द्वेपदांत नव भागा नीकारयेत् कृतीको भाग मेवं तु स्त भस्य षटभागीक ३ भर्णअर्द्धभाग तु भा
गमेकं तीयश्चीरं अर्द्धभाग तलो नचभागसार्द्धं भंपदीक ४ पुनरेव प्रवक्षामी सार्द्धं मंडप मुत्त मैर्द्ध
भागं गर्भेडदीया उनं भर्ण भवेत् ५ रथीषं चसार्द्धं भागं च संउहे पटमेव च करोटकं प्रवक्षामी उ
दाभलसमाणल ६ विस्तारार्द्धेन उदयसुत्र लक्षणसंयुतं पंच भागभुलाकाकणाट पंच सुत्रत
७ ददेरी नव भागं तु अष्ट भागं तु पकं नव भाग अर्द्धः पुर्वसदक्षीणी सर्व माहीतं : पुण्य कोटी
कोटिगुणं भवेतः छंदकश्लोक छे वीश्व कर्माय नमः वेदरीहं सये दाश्रे व दव तुग भसि स्थीतं
सुर्य भत्या फ्रमनष्टो बेश्र वसुयुग्मे गभी । थीया १ सतुरश्रं समक्षेत्रं : अष्ट भाग विभाजितः
कणस्य भाग सार्द्धं न्व भाग सार्द्धं च भागेकं प्रतीरथकं २ निर्गमे भागसार्द्धं त्व च्चानुग सार्द्धीधा
यते इद्र भाग त्रयं कीजीः नीर्गमे भाग सार्द्धीतं ३ भद्राये सुष चंद्र च । मत्तालं बायैत्र भद्रकेः सर्व
तोभद्रका शारीः सर्व तो भद्र तीलयं ४ तस्यो परे वुकर्तव्याः वेद भागे मुल मंजिरीः प्रतीरथे द्वयं
श्रृंगं च तुरुष्टं गतलष्ट लतष्ट भी ५ श्रीमेरुकं ६ कामाक्ष मेकोत्तर रालउके ८ इति मेरु प्रास
दभागः ८ श्रृंग १० द्व अथ चरमते निस्य जन्मलन्मेषु सास्वतः द्वद्वी श्रुन्यो कचे दाश्रे कणली
गर्भोभी स्याजबे परा भामे वसुभमे केरेः पालरीतु रामकेद्वी श्रुन्येकचै दाशो नातः मुलचतु
रष्टकः वर्णस्य भाग सार्द्धस्यंक र्णिका भाग सार्द्धं तं १ चानुग भामेमेकं चः १००५ नंदीका भाग म द्व
तः भद्रा भाग तायं ज्ञेयं नीगम भागभा भाग मर्द्धतः २ भद्राग्रे मुखभद्रं चः मात्तालं बत दीअतं 20
सर्वतोभद्र के शारी तृतीयं तिलदशा द्वकदापयेतुः ३ षट् भाग मुल मंजयचितु दिक्षु तते वा
चाकर्णे श्रृंग द्वयं तील कं ७ प्रत्यंग च तलोष्ट भी ४ प्रतीरथे द्वे श्रृंग च त्रतीयं तिलके इवंः उपरे उत
श्रृंगं वः भाग त्रय समन्वीतं पमंदी कार्य श्रृंग तीलकं भद्रले श्रृंग च त्रतीयं तिलको द्रवंः उप

22.

रीउरुश्रृंगं च मात्तलं बाय भद्रेषुः पद पुरे रम्येरजात्यं द्रार्द्धतारकः इति हिमत्री र्षमेरुप्रा
सादश्रेष्ठकः १२५ श्री विश्वकर्माय नमः अथात संप्रवक्षामीः प्रासादनतु सक्षणं : प्रास
दस्य प्रमाणं च ः ज्ञातव्यं मुलनासकं १ रथोरथनं दीच भद्राय भद्रमेव च : एते षु वासतो
ज्ञेयानी गमापीमुदादीकाः २५ भुमजानं विमानानं लटीनाद्रा विडास्तथाः नागराश्च
समाख्याताः वीराटाश्चैव मीश्रिकाः एतेषु रत्नानीः सिद्धास्य वंतरापरिः वर्ये एतु ष्ट
ष्टीकाभसंयुक्ता भीत्तिपादे प्रकल्पयेतु एने पुरो लजाज्ञेयाः चित्रर्मोर्भाशो भितिः तेस
भीतीः सस्भी नाप्रकर्तव्यः प्रासाद पंच मे ज्ञाकेः इति पुरकः दशापंचाधिकं चैवः कुं
भश्राग समोश्रयंः प्रवेशंच चतुर्भागः स्पंध पद्म पत्रै युतं २२ थीकाचित्रशोभाढो पत्र
मलाल भुवितंः स्कंधपदत्र वमाकीर्णा चित्रपत्रो पिशोभितः इति कुंभकः कलशाषट्
भागं च अर्द्ध कुर्द्धं च चीपिकावितं पंच भागं चैव मणी मौक्तिकं स पुर्ने ५ इति त्रिभागं
च तर पत्रकः वीचीय्यत्र पुष्पके युतंः एस्वं युक्तो प्रकर्तव्यंः कलशमानमोत्तमं ६ इति
कलशः कपोताली षट् भागाः कणसार्द्धं च भागिकंः भागार्द्ध मुखपदी चः द्विभागं
चगकारकं ७ कद्वसार्द्ध भागं तुः भागार्द्ध स्कंध मढिकाः कपोताली इदमानंः गगारकेसु
संयुतं ८ ॥ इति कपोतालिः मचिका षट् भागं तुः भागेकं च त्रय यत्रकंः मरुपं भागार्द्ध
न स्कंध सार्द्धसा पादिका १ युउनं च तथा केर्णः भाग पादे मुखपादिकाः स्कंध भाग पद्म
पादिकंः कीर्णकं पदके युतंः इति मचीद्वात्री : कृतीपदो थितानजपाश्चापिचित्र क्षचक्ष
णः कर्णेषु पीकपालाश्चः प्रासादेषु प्रदक्षणं ११ नादशोपश्च मुभद्रा अर्द्धकेस हदक्षि
णेः चंउनीयो तरेश्चैवः चात्तती ननशो भितं १२ इति घाउहमं चैकादशा भागंः त्रिभा
गं त्रस पादिका ः उहमं षट् सार्द्धं तु छाद्य केसार्धभागीकं : १२ धके साधे भागी कं

२१ विचित्रानेकरूपाणी निर्गमोद्गुनकर्तके: इतिडकुमः भार्लिकाषड्भागंच: चोर्द्धंचंत्रपत्रिका
कर्णभागमेकं: उभागस्कंधसकार्णिका: स्कंधभागद्वयं कुर्यात् स्कंधेचपटिकेयुतं: वांतरपत्र
तत्रमध्येकर्तव्यंचविचक्षणे १५ कणकंभागपादेन: चीपिकामृत्पवली: अशोकपल्लवैयुक्तं
भागपादोनकारयेत् १७ इतिभरणिकपोताली: षड्भागंपुवेमात्रकल्पितेः त्रिभागैचांत
रपत्रकर्तव्यंचविचक्षणे: इतिकपोताली: अंतरपत्रयुत: कुट्टछद्यंदीकुंभागं निर्गमंस
मसाधे: कक्षेभानात्रीकिभागेश्च: स्कंधएकैकर्युतं ० पुर्वस्कंधश्चतुर्भाग: द्वीभागंसा
रिलंबिनं: चीपिकाभागमेकेन: दीकुंभागंस्कंधनीनी निर्गमं २० कामरूपंभागमेक: चीपि
कासहपदिका: कर्णभागमेकंतु भागार्द्धंदउमेबच: त्रिभागंचभवेस्कंध: भागार्द्धंचोचर
पत्री: काकपाताला त्रिभासोगै: कर्णस्कंधचपाटिका: दलस्यशोडशोशोन: विश्रुतंश
लिलंलरं: उदकंतरचतुर्भाग: प्रवेशेच्चतुरंशकं: इतिछाद्य: ३३ पुनरवप्रवीक्षामी: पुर
कंसमभागिकं: कुंभकत्रयविंशास्या: कपोलश्चांसार्द्धकं: अंतरपात्रचतुर्भागं: नवंसा
धिकल्पोतिकामें: चीकादशांसार्द्धेषु: जंघास्थिचत्वारिंशातिः शो धित्वा कोनविंशत्याउ
दुच्चैकवकारयेत्: भरणीद्वारदशभागं: दशभागांकपोतिका: अंतरयंत्रेचतुर्भा
गं: षोडशो पुवछाद्यकी निर्गमं दशभागेश्च एततुल्ला लातु: शील्पाभी: अथालल
क्षणंवक्षे: छैलालांतरनिश्चयं: चाबहयस्तप्रमाणेन: विस्तारतनकतिः तावसंगु
लमानेन निर्गमं लसकारयेत्। निर्गमेपंचमासेन शालं नरस्य: क्षोभाता क्षो भद्र २१
र्द्धतं। ततावशात्तालयं मुलनाशिकं। द्वितीयफलनाकार्य: पादुनंचपवीश्रिता: अं
न्येचैवचभागेन: निर्गमंशांतफालना: यावतहस्तप्रमाणेन: पीठिमानंविधीयते २०
तावतअंगुलमाने स्तः फालनानंतु निर्गमं: अनगेषुसयाले गे: एवंकोअनगे

23

षुसा: थालंएवंकोणेषु: भापयेत् अथतलसंप्रतीक्षामी: भद्रार्द्धशीघरंतथा: भद्रार्द्धंततो
वसज्ञातव्यं तुलनाशिके: भद्रंतुद्वात्रीशातित्वंगकर्तव्यंचविचक्षणे: मुलनासिका द्वी
भागंत्री भागंचद्वितीयकं: वेदभागंत्रतीयंकेतु: भद्रार्द्धंचस्वतुदेशा: पंचमीफालनाका
र्या: रुपंगस्तदशंभवेत्: यावदस्तरुदानाशीकंप्रविक्षामि: भद्रार्द्धमष्टमेवच: प्रथ
मंचसुभीभागै: द्वीतीयंरुद्रसंख्यया: त्रतीयावसुभिभागै: चतुरस्रार्द्धमुलनाशीकं: पष्ठ
मंसप्तभिश्चैवफालनानामसंयुक्ता: इति सप्तनाशीकं: नवनाशीकप्रवीक्षामः भद्रार्द्धं
कंत्रिंशतिएकभागद्विभागेवा: वेदभागत्रतीयकं १ चतुर्थभागबाणेषु: पंचमंससत्रा
क्षता: षष्टमंभागनाणोस्य: सप्तमंरससंख्याष्टमंनवमंचैव: फालनामनामत: याव
तहस्तप्रमाणेन: विस्तारक्रयतेकटी: तावत्मुलपाटेषु: फालनाश्चैवनिर्गमि: अथवा
लोपयेयस्त: शिल्पदोषोश्चदुषितं: इतिनवनाशिकं: श्रीरामायनमः प्रसन्नवदनासौम्या
दृष्टीसुंदररुपिणी: सर्वाभरणसंपन्ना: स्यामवर्णद्विबाहुका: दुकुलकेवसना: पुस्पहस्ता
सातिमनोहरचतुरीष्यत्र: मध्येतुभल्लटंवोरु: पारवती स्थापनीयासुसंपन्ना: परिवारश
माकस्यापीद्विविधा ४२ स्त्रीभित्रेचीता भित्रीता थेद: संप्रामाता वहार्या: मनगराणवीद्वीय
तो: अक्षसुत्रशिवंदेवं: गणधाक्षकमंडलु: कृतीकंडद्वयंपार्श्वे: पारवलेसेहवानां: अक्ष
सुत्रपुस्तकंच ४ येमप्नकमडलुंचत्रुवक्त्रानुसावित्री: श्रोत्रायाणांग्रहेहीतं: श्रीविश्वक
र्मयिनम: वीमानुसागरद्धं पुष्पकेदीव्यभुबिता: वीमानपुष्पक: छाटाभागरेक्रमतो द्र
वा १ करस्यवीत्रीछाकानो: अलंकारेरुमावत्ता: कष्टयस्यप्रसादेन: विश्वेश्वरजगत्प्रभो
श्रीविश्वकर्मा उवाच: अथालसंप्रवीक्षामी: प्रासादानंलक्षणंवीभक्ती छंदपीका
र: प्रयुक्तं पुष्पकादिकं ३ पुष्पक: १ वीजय २ सुभद्र ३ त्रविवर्द्धन ४ श्रीधर ५ वीशालद्द 23

द्दईहुभा ७ उप्रस्य ८ गुरुड ९भ्यारावर्द्धनः १० सिंह ११ पद्मा १२ स्वाभाटा १३ शुभतो १४ अम
तोद्भव १५ अहिराजो १६ सीयकाम १७ नंदीघोप १८ सूनंदनं १९ तारागण २० हसाल २१ हदनकाहं
सं २२ सर्वांग सुंदर २३ ताीघ्य २४ वीजय २५ मेरु २६ पांचवी संद्रमे प्रोक्ताः प्रासाद पुष्पकान दय
वल्लभा भवे देवानां नागराची मान पुष्पकः १ वेदे हस्त तु वेदाश्र वेदवक्र भागे संस्थीतं रुपे।
भीत्या भ्रमन ष्टोः घोस्य व सु ३ युग्मो रुपसंभीतीकादे द दशाल भवे टाश्रेः वे द वादुस ली
भीत्या भ्रमन ष्टो कीली
नपीगयोः अपवशादी सुर्यस्य रीत्वा रारो घानु भीलिकाः चतुरं क्षेत्रकाये भाग ८ कीली
आगे आगे ६४ चीली भाग २ कर्णभाग २ भद्रार्द्ध भाग १ भद्रानिर्गम भाग ४ भागे ग्रहे भा।
ग १ भीति भाग १ भ्रम भाग १ भीतिपीठय पीठजंघोने घलो छाजो तीलगीनज्य रो मानकी।
येढ सलो प्रलस्तः भद्रो चंद्रवलोकनः कीजे मंडव अष्ट भास हीन छाजो कीजीलेये ५ उपरी स
वणा कीजि घंटाकुट सभीलः दोढीया अट द्भम कीजी पार उपरी श्रंग उदो दो दो कीये मखरा
नवंठके कीये ।। षिषरो दोढीया तक लील वेल्क कीजी रेषा मले भाग ६ तसा भाग ८ दोरेषा।
चीमान पंच भ्रम कीजी अर्द्ध दय थं दा कीजी लिय रा भाग ५ कीये कंठ १ अवा १ कुरा ल १ प
प्रवेक्षरो १ लीय कुपरी कालक्षरो स्थाप्य क्षारर्णव नो कुपनो भाद्रे मत लंब पुष्पकेर आकारे
मीलवारण छजेली घंटाः कुट बीजो त्री मीमात्रलंः बी इसा द्वीज कीजीः उरुश्रंग नो अकी
र कीजी। सुम ध्य मातालंब कीजीः इसो प्रसाद की द्वीत थ की पुष्पकी र्णः राज्य पां मी स्वर्गे
वा भुमी सासनेः इति पुष्पकः १ तल भाग १० रो वीरा उदय दाये १०० कीजे भाग १ भीति।
भाग १ भ्रम भाग ३ गर्भार्धे भाग २ कर्ण भाग १ पढरो भाग १ भद्रार्द्धनिर्गम भाग १ भद्रति २२
थो प्रतिरिलकर्ण नंदनं कीजीः १७ अंउक त्रीस्वरा विस्तार भाग ५ उदे १० त्रीसरताल्यो तलप
च भुमी अउक ६१ रेवा मध्ये कर्णे बीजो कर्म पंच उक षी षरी कीये पीतीरथ श्रीवत्स बी षरा २२
कीयेः अर्द्धदय घंटा भद्रे उरुश्रंग २ उरुश्रंग मध्ये मात्रालंब कीये पीठ थकी छजा नागर

मानयः इदं कारयेश्चैव प्रासादो विजयोद्भवः सल भे परसंल्लोकेः भोग भक्ती स्वर्गादीकं इ
ति विजयः विजयसा रिषु सलप प्रतीरथे केसरी दीयतो सुभद्र नाम कीजीः इती सुभद्रः सुभ
द्रनोनंद श्रीजो क्रम पाचे उडक षी षरो कीजे विस्तार भाग ७ कीये ते हवा भाग १ उदे कीये।
षी षरो त्रीस्वर विस्तारः भाद्रेग ६ उदे ७ कीजी मात्यात त्रीस्वर ६१ अंउक संयुत भद्रे मात
लंब उरुश्रंग नी परीक्रमयो गत्रोष पुर्वपरीजाणवो इतिनंदवेदचे दाष्टेः गर्भस्य रितु थं बि
केः द्वौ भीतीक्रमुग्मेकः मोक्रे चयाद भीति प्रकल्पये त ४ तल भाग १२ भाग २ कर्ण भाग नं
दी भाग १।। प्रतीरथ भाग १।। भद्रार्द्धः भाग १ भीति भाग २ भ्रम भाग ५ भीति भाग २ गु
र्भार्द्ध भाग १ निर्गम नाची कल्प इभ द्रंनंदीत्याज भद्रे चंद्रावलोकेन करवा भाग ४ भद्र
विस्तर भाग १ निर्गमः जालीउपरि घंटाकुट कीजी सीषर पुर्वत्तप कीये पी द्रुथ को छाजा
लगी नागर मानः वास्तुवेदने विषे द्रम कहीछेः द्वौ क्रमोक्रे क र्णपुः नंदनं सर्वतोद्भवं मु
लकर्णश्रंग २ क्रमेणं देनं प्रथमथ रेद्धितीये सर्वतो भद्रः प्रतीरथे सर्वता भद्रे त्रीष
रमात्य वंत भद्रे द्वी पुष्पकना नंग कार रुप प्रत्यंग पुष्पक की पी छाय घंटा अलंत्त त
कीये ० घंटाकलस मंडप अग्र जगत्यादी पुवोक्तो वीद्धी कीजी श्रीधरो यं समाख्यातः प्रा
सादेदेवतालयंः श्रीयानं दस्तुतानी त्यं कतुसंतानं वर्द्धन १ इति श्रीधरनो रुप अनेभद्रेनोत
पत्रीजो पुष्पक कीये ले विशालः इति विशाल ७ सुलक्षअइवे दश्च गर्भश्चारी तुराः वि
कोः पादो का भ्रम भीतिश्च द्वि भागं भीति बात्यंक भाग १४ वीरा उतीयरा भाग २
भीति भाग २ भ्रम भाग १ भीति भाग ३ गर्भार्द्ध १९ ६ कीये भाग २ कोणकर्ण भाग २
प्रतीरथ समदल भाग कणी भाग २ भद्रार्द्ध भाग १ निर्गम पाटो पपीठजंघा मेघ
लामात्मा छाद्यकं श्रृंकाघमे उपाघं च पुर्वमान विकल्पीतः कर्णश्रंग २ कीयीनंदनत्र

योहसांटकप्रतिरथेकर्णेतुलशीषरदशवीस्तारंत्रयोदशतुदेकीयेमाल्यमालमानंशीषरएक ष
ष्टाश्रंडकसंश्रुतउरुश्रृंगद्वयेकार्येपुष्पकीथीप्रत्संगेपुष्पककीजीघंटाकलशश्रुकाय पुर्वोपरिक
रवोः इति उडुपो ७ डुंडुभीरुपश्रनेभद्रेत्रीजोपुष्पककीयीः इतीप्रालः ८ पालनोरुप भद्रेत्रीजोपुष्पक
छीलेपरिस्यवारीश्रनिद्रवेभाग ५ विस्तर करेभा ३ निर्गमतीर्यउपरीसंवर्णकीजीएक गरुड मारव्या
तंकर्तव्यं विष्णुमंदिरेः प्रासाते विष्णुतालोके कुयावदी हूल संहलवोः इतीगरुड ९ पुनरेवतुभद्रेच
कुर्यात् वृहत्तो रुश्रृंगवीमानकः अग्रपुष्पकप्रसंगः संभवेचालवदनः पुर्वलोरुप अनेभद्रेमो।
टोरुश्रृंगकीजीः मध्येविमानकीजीः आगीउरुश्रृंग पुष्पकयेः प्रत्संग पुष्पपत्रैस्यः जन्मजन्मो
चभूतलेः अतस्ता भागीभुकारंः स्वर्गापवर्गकोद्रवं इतीवा० पुर्वलेपश्रनभद्रेमाशालकंकीजी
तोबीजोनुसीहनामः इतिसीह १२ पुर्वलेपप्रत्यगकुमदोद्रवं कीजीबीजालेप प्रसंभवः द्वीतीयो द्र
वप्रत्संगकुयोस्ठमादोद्रवाः पद्मसंभवस्तनीमामः कर्तव्यं परनेष्टिने इतीपद्मसंभव १३ पद्मसं
सस्यसंस्थीनेत्तरुपेतदवस्थिलेः कर्णेपतीरथचैवकमदधात्रीत्रयकंभद्रे उरुश्रृंगछाडेनेपुष्पक
बीचहुडेप्रत्संगपुष्पककीजीः बाकीकीपुर्वलोरुपः इतिश्रुभ्रकः १४ सुभद्रोरुप भद्रेपुष्पक
२ कीजीतुअमृतोद्रव इतीअमृतोद्रवः १५ तलभाग १६ भाग २ कर्णभाग १ कुणा १ भाग २ प्रतीरथभा
ग १ नंदीभाग नंदीभाग २ भद्रार्द्ध भाग २ भीति भाग १ भ्रम भाग १ भीति भाग ४ गर्भार्द्ध कर्णेश्रृंगमु
करराउक १२ प्रतीरायेकर्णेतुला भद्रे उरुश्रृंग २ वीमानभवप्रत्संगदीघ्यंन्त भेद शीषर भाग १०
वीस्तरत्रयोदशउदेमाल्यातीलशीषर ६१ अडकपीठदीछा घालनागरमाने गृहराजा स्तदा
नामकर्तव्यंः पुर्वदेवताके ठासोमद्रसोपमं गृदं जन्मेषुस्वलं ११ इतीग्रहराज १५ ग्रहराज्यनी
श्रृंगं मल्यातलं कीयेकुद्वैवीमानकीजीः प्रत्संगवीमानकीजीबाकी पुर्वरुपकीजीः इतिसिद्धिका
म १६ सिद्धिकामनोरुपः कर्णप्रतीरथत्रीजोः तीलककीयीतुनंदीघोषइतिनंदीघोष १७ त
लभाग १८ ईतेरोवीराडभाग ३ कर्णभाग २ प्रतीरथभाग २ रथभाग २ भद्रार्द्ध भाग २ भद्रानि २३

र्गमभाग २ भीतिभाग २ गर्भार्द्ध कर्णेमंदीरकीयै अं० २५ तउद्वैनंदनअं० १२ भाग वीस्तररेखा भा
ग १० माल्यातलशंमुद्रवा प्रतीरथेश्रृंग २ बीबीकीयीउपरथेश्रृंग २ भद्रपुष्पक ३ कीयीएवंवीयेय।
कर्तव्यंघंटाकलशसयुनकीय एवंवीध्येयकर्तव्यंः नान्मसातुसुनंदनः इतिसुनंदनः १८ वध
नुरुश्रृंगेपुष्पकछोतीठेवीमानकीयेतेताराणगणेः इतिताराणगणः १९ मालातलमोटाश्रृंगेती
येआगेवीमानकीयीनद्रूपप्रत्संगकीयेतोवहसालमाल्यातलंवृहतश्रृंगतस्यात्रेतुविमानकंः प्र
त्संगनद्रूपंकुयोत् वृहत्शालश्चैः उच्यते इति वृहत्सालं २० पुर्वलोकरुपतीयेरोकर्णेप्रतीरथेपुष्पक
कीयीनुहंसकर्णेप्रतीरथो द्वैच पुष्पकाः नीनुकारएतूब्रह्मणप्रयंनीस्यनाम्ना हंससस्त्रसंज्ञया इती हं
सः हंसाजोरुपकर्णेपुष्पक २२ कीयेतेसुंदराकर्णेपुष्पकाद्वयं कुयोसस्बोवसंतीः सुंदरंसर्वदेव
पुभंमंस्तंसर्वकामफलप्रदं इतीसर्वांगसुंदर २२ तलभाग २१ तीयरोवीराडभाग ४ कर्णभाग ३ प्र
तीरथभाग २ भद्रार्द्ध भाग ३ निर्गमभाग २ भीतिभाग २ भ्रमभाग २ भाग ४ गर्भार्द्ध कर्णेप्रथवीजयं
कुर्यात् मंदीरे प्रतीरर्थं कंघोर पुष्पकयुतंः भद्रप्रत्संगपुष्पकोद्रवं कर्णेप्रथवीजयः प्रवीरथेमंद
भद्रेपुष्पकाः २७२ कीयेप्रत्संगपुककीयीमुलरेखामाल्यातलदारस्ट भाग विस्तरपुष्पकविजयं
नामन्चसर्वदेवहीतात्मकं इति पुष्पकवीजय २३ पुर्वकेतपतीयेराउरुश्रृंगवडो। वीमानकी।
यीआगेपुष्पक २ कीयेप्रत्संगपुष्पकोद्रवंः मेरुस्यापीसमाख्यातात्केतव्यासर्वदेवताः मेरुमे
रायमंदीव्यंतेमेरु २५ वीमोनवृहोसश्रृंगपुष्पकोद्रवंः तारत्नमयादीकं एलेखंलभ्यतेपुष्पा
णांलस्तूमात्रातमोदिकं इतिपुष्पकाः हीप्रासादपंचवीशतीएकप्रासादनोसंचीरीछेतेकोइकमहे
तवीत्यारेयो ६० वीश्वकर्माउवाच्च येकेचित्समायामंवीभजेन्नेवभागिकंः स्वकार्यागुलमानेनः भा
गेचेद्वादशमंगुल ९ वातमष्टोत्तरप्रसाएवंगुलैमुष्टीले भजीनूनंवतोलस्यवीज्ञेयाः वीवहारंप्र
सीध्यतेः २ नवतालरथोवाहंः वेदगुलै कहूकस्तकंः द्वादसोत्रसेतरम्यातंः अर्चायोमंनुमंगुले ३
उत्मासमंगुलं प्रोक्तंः व्यागुलत्रीदउचच्यते ३ व्यातालुवजेद्रवाः व्याती भः परीपरिधोमस्ते
कक्रमः ४ ललाटाश्रंगुलं द्वयंः कुर्यान्नेत्रौद्विरगुलौः नेत्रसुत्रस्तकर्तव्यंनाशीकाचतुरगुल ५
गोवीकामेरुमेकंतुप्रामाणतेः ६ हनुकोसोद्वीगुलायामेवीस्तरेद्वीरंगुलाः गुलमर्द्धगुलाः प्रो

सुत्र

सुत्र २

२४ प्रोक्तं ग्रीवासार्द्धांगुलत्रयं ७ त्र्यंगुलसानसत्रं अर्द्धमुखं सीहीरं गूलाः द्वादशांगुलं भवेन्नाभी उ
दरेवी चतुरंगुलाः ८ वलीकाप्रयसंयुक्तं गुह्यं कुर्याष्टमंगुलं मेढ्रं पंदमाश्रो द्भवं वृषणौ वैश्वतुरंगुला ९
चतुर्विंशांगुलं जंघाः जानुस्याच्चतुरंगुलो नलका जंघसमा नीद्रवारव्यांगुलकस्य जानुमात्रतः।
१० उद्ध्यंकं थीलि चैवः नवतालमा त्तिकद्दकं: षट्त्रीसात्यत्र्यमध्येतु वीस्तरं स्फुसुसंप्रतं ११ चंद्रो
पमाकरलल्लाट वीस्तरं स्याष्टमंगुलं: आयामे द्व्यंगुलं नेत्रे विस्तरे अंगुलं यतं १२ नासा द्वैतु भवेन मात्रे।
द्वीमात्रं तु नेत्रांतरं १३ नीष्पवंशा दशो कुर्यात् पुटौ श्रोत्रं अर्द्धांगुलं शोल्पी नीच्योत्तितुल्या चैवीका त्रो चतुरं
गुलं १४ हनुका द्व्यंगुला यामे गंसुकस्य द्विगमा वृत्तौ त्वाद शांगुलवीस्तारक एमे कोकमंगुलं: १५ पार्श्वे
कर्णाद्विमात्रंच सुत्रतुल्यो न्नवं भौवत् अष्टांगुलपासम्यकर्णवेदाक्षीणादीकं १६ न्नकेशांतुरलयो
र्मध्ये परीहाणां षट्त्रीसांगुलं ग्रीवा अष्टांगुलाः प्रोक्तं परिणाहां चतुर्विंशती २७ स्तनो द्वैद्वाद
शांगुलाः कूक्षास्कंधं वैश्वाष्टमंगुलं करवस्याने प्रकाष्टा भ्यावोडशांगुल प्रकीर्तिता २८ दकोष्टमा
लीमधं च अष्टौ व दशमंगुलं: करस्तलमस प्रांगुलो भूकोपंचमध्यमांले स्तथा १९ तर्जनी चतु व
जवहीनाः त्रीजुवहीना द्वनामिकाः पंचजंघहीना च कार्या कनीष्टकं गुले २० अंगुष्टं चतुरांगुलं।
द्रवं करलब्धी द्वा परं द्वीउः पंचांगुलवीस्तीर्णं ततु कुर्यात् करलोत्तमं २१ अंगाष्ट अष्ट जंबो कलजें
नीषट जवं लरं: सप्त षट् पंचश्चैवम घामायाच कणीष्टकं २२ त्रीपुर्वाद्रवा सर्वेनीम्ना० प्रग्रसुजी
तापुर्वार्द्धेतुन रवास्य भागः निर्गत्तास्ततुसा द्धिके २३ अंगुष्ट द्विवंसार्द्धं पवो द्वैतु नखस मंतकुल
रेखांगुष्टच कर्तव्यं ध्यं मानुवर्तते २४ कनिष्टा तर्जनी पाच अयरवसमुद्रवोनुमध्यमा रेखा
येन रेखास्तद्दूर्द्धरात्त २५ मणीबंधत्री अंगुलोक्तं परीणाहं दशासार्द्धकं: गजहेस्तौ पुमोः चक्रेमनो
हराकारसंस्थितेः २६ कक्षयो सुक्षयं तसंचः दशस्यांगुल कीर्तितं: स्तनेगुह्यकमुनास्कंध कक्षयो।
मेकमंगुलं २७ नाभो द्वैषडंगुलेनः चतुर्दस्यांगुलमममध्यमः अष्टादनाभी सुत्रे तु सुगु
ले द्वीमुषायतं २८ एकादशांगुलो जंघा निम्ना अग्रसुवर्तनीः सप्तगुलं जानशीरं नलीकाग्र।
नीम्ना वृतां २९ चतुरंगुलल्य मुलै परीणाहं द्वादशोद्भवं षडंगुल पुर्वेपादै तर्जन्यां पुर्वभागी २४

कं ३० अंगुष्टजिसार्द्धेका तर्जनी श्वतुरंगुलाः अंगुष्टसार्द्धगुलोकं तर्जनीस्यात् दार्द्धकं ३२ अं
गुष्टो र्द्धसुत्रेण कुर्यो अग्रकनिष्टिकाः नाम्नातु कमेनुक्रमाः चतुर्थसंख्याविद्धीयते ॥३२॥ त्रिपर्वी
द्वषे श्रूर्ये अंगुष्टस्यद्वीपवो द्रवंः पर्वार्द्धेनु नरवा कुर्यासिमरत्तो नास्तः ये वीथी ३४ षडंगमूलपा
दृषि तौलिपार्ष्णातुमात्रिकाः पादस्तलतलपादेवाप्राकारे मध्ये तलं ३५ असतीगुलकंच
तंग्यं अर्ध अर्धमात्रावुभौ गुल्फसुत्रपरेभागे: आसनोपीठ वृधी कृत्तौ ३५ स्वधेन्नवती कार
युग्मो पृष्ठीमध्ये वसो द्रवा वैशाखी प्रान्तलपक्षो सर्ववंथवशो भन ६२ इति श्री सुत्रसंतानगु
णकीर्तिप्रकाशा द्वाकारे श्रीभुवनदेवाधीयेक्त अपराजीतपृछिये प्रतिमालक्षणविधी
द्वीसतायेचयेतु दशमः सुत्रः समाप्तः अथ रुचकादीः प्रथमभाग ४ तलवीराउभाग १
भीत्ति १ भाग १ बीजी भीती भाग २ गर्भग्रह एतलग्रागे चउकी १ कीयेभाग २ वीस्तर नि
र्गम भाग १० राघीराउ भाग १ कण भाग ६ भद्रा तीयमाही रो २ भागवो घुषभद्रकरवो पाण १ त
रनकीयेः २ लतीनजाती प्रसाद २५ अथ शिवनवमुर्त्तयः अतः परं प्रवक्षामीः शिवस्य प्र
तिमाशुभेः पावरो रु भुजस्कंधेः कौंचनाभीसमप्रभ १ घनीरुपस्मीसाध्या लचंद्रकील ज्व
राधरः चतुर्बाहास्त्रीनेत्रस्यः प्रथमयौवन २ चूटः हस्तोवषात्तुट अर्द्धलघद्वागचापठः
कूवीणपाणीः प्रसन्नामाहीरकेयुरभुषणः ३ कंटकं कटिसुत्रंच मंडलनागनी मीलं मेषलो
दरबांधं वापुडरीकाजनं बरः ४ दसहस्ताच्च बाहुर्वाः सर्वालंकारसंजूतं: दक्षिणेत्राक्षिश्व
लासीः गदप्रज्वालनागराः ५ वामेपिताकद्दुगं घंटकंच कपालकंः नागपासप्रसातुश्च
च्या प्रचमविरसीव ६ गदाश्रीपासमुक्तः सत्ने ष्टवाहमहेश्वरः असीनोवास्थितो वापी
वृषात्तूदो वृषध्वजः ७ नत्सवाद्यदींतुनर्तोपीगांशापुर्वकः नंद्यादिगणसंयुक्तः सुंदरव
त्तनीवेदीवितं ८ अमेषान गरेवा पीस्थापनीयो हितेविभा १ स्वघोवा मालयौ घोरे स्तत्यु
सष घडशानकः मत्तुयय श्ववीनयकर्णीक्ष स्तपोरकः १ स्वाकंटस्यमहादेवो रुद्रोने

२५ कारवुवेनारायणो वसुदेवो माधवो मधुसोदनः केसवो धीप्रसद्वाणो स्यापिता सुखदा स्त्रीकाः। मदसुदवीरसा उच क्षत्रियाणां फल हैत्री वीत्रके मोयामन श्रेवेवः स्यानो मर्चनश्रुभोः पुजीता श्रीधैस्या सार्याश्रु द्वाणां सरव दायीनी। चमक्ति इकंनंनुनं दस्य बरटस्य चः मेदै भी लेखा कीराला नं सुबीके न्नासुखावहः कुंभी कारवणी बस्या चक्रौ कालंदूनस्य च सर्वेषां प्रकृतीनां २ पद्मनाभस्ते भपुदः दामोदर स्त्वेकं दंडआसन्या न्नीस चारीणा हरीहर ही एणं गर्भावाराहं वामन स्तथा नारसिंहस्य संयुस्ये ज्यसर्ववर्णे त्रुखा प्रये वीष्टोरष्टा प्रतीहारा तू पूर्वादिक्रमतो वुधे वा मना। कारसुपास्ते कर्तव्या सर्वतः शुभाः तर्जनी रो चचक्रं च दंडः स्ता धातुयकरो चंडसकातितः सास्या पसाध्य तु प्रचंडकः धप्रसी षटकदाः सप्ता नुतमीतोयय विलोमतस्तु विजयो वाम प्रदक्षिण शीषयोः तर्जनी बाणाबाये च गदा स्त पुत्रे घाते का अपस्य वेवीयाः तास्या द्वम दक्षणे शाखायोः तर्जनी कमल शाखा गदाश्रयेस भद्रकः अपसवेन भद्रः स्या दयो सोमे प्रतीष्टीतो। सिद्ध राहणकंत्ती मंकुज गंतासौ दृयवीराना द्विः कोटीरं गदहर कुंडल तं दिसुत्रदीप्ती मुखीगीः लहस्तैर्वसुपात्र मजयुगलो दक्षौ वद्दती महा लक्ष्मी सालपरीचारीका परिवृत्ते कुवत सर्वार्थदं १ श्रुकुवर्णा जरामौली चतुर्हस्ता सरस्वतीः स्वेलपद्मलना सनाः नत्रकुंडलमंडीताय स्तोपर्यती निचारुमुक्ता हारा सुलोचनी वक्षानमक्षसुत्रस्य दक्षणे वासीके। करेपुस्तकं कुंडिका चापी त्रीनेत्रचारुरूपिणीः रुसा गतमुखी सर्वेमुनीभिः शेवताः वरावासु मभध्ये चतु देक्षूस्यापिनी याहिते विभीः अक्षसत्रं च कमलंः दर्पणं च कमंडल्ये
२५

२६ ताः १ तिथिहस्त तथा कुपेवापीसप्ते दशं वयः द्वीहस्त भवे इधीः याबा त्रये वीशतिः २० अरामेचतउगे वामहीसरे सुसास्वतः कीर्तिस्तंभ तथा हस्त पंचसप्तैव विंशती ३ इति कीर्तिस्तंभ पुभाणः कर्णादिकें विस्तरतो द्विकंवासी धुया नाशं समुपैति गेहं ह्यासन्वतं मुह्यीय दायेजं चैशं तनोहानि करं प्रदिष्टं १॥ ॥अथ कीर्तिस्तंभ मानके षावीनु पहता मताः कुपाकानुदस्ता॥१२॥ जाउ अंगल। ॥१२॥ पुष्पणीनु हस्त १३ जाउ अंगल १३ कुप नु हस्त १९ जाउ अंगल १५ वापीनुहस्त १७ जो उ अंगल तथा हस्त २१ जाउ अंगल २१ तउ ग नो हस्त २५ जाउ अंगल २५ दुर्गे। नो दस्त ३१ गलेने भाग ४ ध्वजादंड मदसरनो हस्त २७ जाउ तथत गसे जाउ दंड दीघे कीजैः तेने भाग ६ पाटलादीर्घ तेह नु अधे विस्तर तेह ने भागः ३ कीजाः॥ ध्वजदंड प्रमाणेन अष्टांशा विस्तारः॥ एप्रकाव मणेक वीस्तंभ प्रासादना ध्वजदंड थकी व मणो कीर्तिस्तंभ कीजे। तेने भाग कीजै। परलू पुर्ववत्। उपलु ध्वजदंडः

प्रासादविस्तार

मेघपेलो १ गदा १ शंख २ सींगा ३ लोटो ४ वरद ५ फल ६ गजरूढ	मेघबीजो २ उभे १ गदा २ ३ शंख ४ त्रीशुल ५ फल ६ वरद ७ लोटो ८ हंसरूढ	मेघत्रीजो ३ उभे १ उभे २ गदा ३ षडु ४ ष डग ५ मुद्गर ६ वर ७ फल ८ वाघरूढ
मेघचोथो ४ वज्र १ वज्र २ च क्र ३ सकती ४ वरद ५ फल ६ वा घरूढ	मेघपांचवो ५ अंकुश १ लोटो २ सरप ३ पास ४ वरद ५ संष ६ पाडोरूढ	मेघछठो ६ उभे १ लोटो २ शंख ३ गदा ४ गजरूढ
मेघसातमो ७ गदा १ पाश २ अंकुश ३ उभे ४ वरद ५ संष ६ गजरूढ	मेघआठमो ८ गदा १ पाश २ सकती ३ उदेभे ४ उभे ५ संष ६ गरुडरूढ	मेघनवमो ९ उभे १ उभे २ खडग ३ पास ४ कमल ५ षडु ६ उभे ७ शंख ८ गरुडरूढ
मेघदसमो १० गदा १ उभे २ चक्र ३ फरस ४ उभे ५ लोटो ६ गजरूढ	मेघअग्यारमो ११ उभे १ उभे २ फरसी ३ सगती ४ गदा ५ चक्र ६ उभे ७ संष ८ वाघरूढ	मेघबारमो १२ अंकुश १ पास २ चक्र ३ सक्ती ४ वरद ५ लोटो ६ हंसरूढ

इतिबारामेघमुर्त्तीलिख्यते॥
२५ २६

ध्वजा दंडोभवे भवे सोरो पीट पात्रं दनादि
कः दंत तल्का भे त्युगो वेणुर्वाः जर्वसंयुतः
१॥ दंडाग्रेकोकिलावोज्यास्ती स्त्रशास्ता सु
नाश्वलाः कोकिलास्वाऽऽसुसंयोजावे णु
टीरुजास्कृता॥२॥ दंडात्रवेणुय द्वीस्कधे
तिप्रसंगुलो खयोयथां तथैव योज्यास्या
द्ध्वज दंडमुखे वहं ३ ध्वज दंउग तायामेत्री
चतुर्भागसंमितः दैर्घ तस्य भवेत् व्यासं च
तुः पंच षडंगुलः तदग्रे ध्वज स्तंभात =३=
१८वा२०=३ तस्यत्री भाग पंचभागस स
भागोवा तस्योछ्रायः माद्यनंदीप्रतिष्टा।
थी मात्रा अंगुलः ष्टां गुल्स्याधः सुत्रधारः सुलोहंजः
विमानाभिमुखेयोज्ये स्तछीयं दंडमाध्यगः ५ काकिला।
नांधनतास्या द्वी त्रीचतुरंगुलः दशार्द्ध ति थिमात्रस्यासा
यामस्तदुपागतः षडदीद्वादशांतागुलीमुले प्रतिभवि
तुः कल्पा द्विरंड्कायोग्या रुपास्ता स्तुपयो द्रमो ७।
जीन सीहितायंत ध्वा सांलरगे गर्भे प्रसाएं युकशालि
षु वामानाभिमुखं धीमानुस्थापयेत्सुदंडयथा॥१
इति॥ ॥ अथात संप्रवक्षामि कीर्तिस्तंभमथा।
अवेः षुष्कएी स्वत्पतो पंचः त्रयोदशाह स्तं कीर्ति।

१०० ब्रह्मा १
८० अर्यम ४
१६८ मध्यको ८
२८० देव ३२
११२ राज
वाथा
४० मध्य
वाथ
एवंपद
१०००

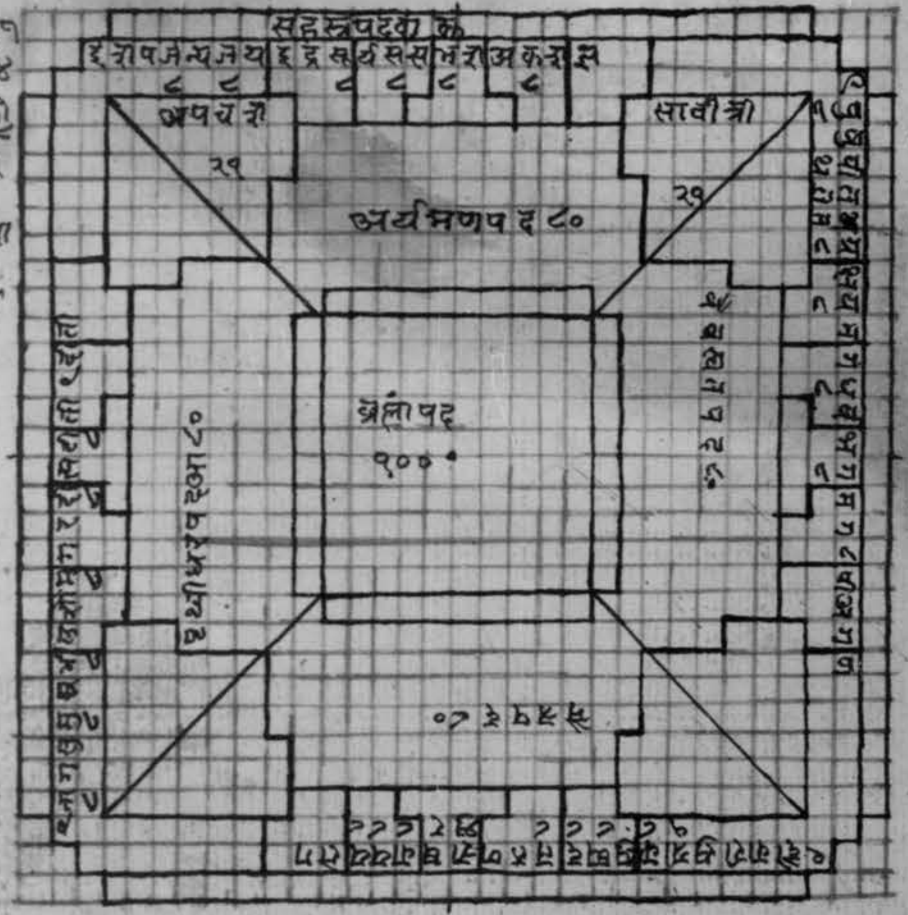

द्वात्रींशद्दंता प्रथुत्वे च दीर्घेः को
णेषुवर्ज्यः जीनसप्तभागः एत
स्यदानां कथित सहस्तैः क्षेत्रं च स
र्वे तममेववास्त ११ मध्ये ब्रह्मा पुज
नीयः शतस्तैः अयारीचारी शतभी
पदैवाजवीथ्या प्रात्कादेवा अर्यमा
द्याः असीत्या मध्ये कोणे ष्ठां त्री
तत्वाष्टषष्टाः २ कोणयो नं द
पादे सुराश्च ः त्रीवास्तुवाह्ये
वसुभागि नश्च वाधीच ब्रो
स्वरवीभाग युक्त सत्तंपदानं
कथितं मुनेंद्रैः दुर्गप्रतिष्टा
विषये निवेशे तथा महत्वा
सुचीकोटीहोमे ः मारोच रा
ष्ट्रनवदस्तलिंगेवास्तः सह
स्त्रेण पदैः प्रपुजाः ४॥ ॥
इतिराजवल्लभे उक्तं सहस्र
पदवास्तुः संपुर्णं॥ ॥

उदे भाग ३६ अथा

इतैनाविराउ । ल
रव्योछे: भाग ६
लिंगायकीजे: ।
भाग १ जेटाबंध
नकीजै भाग १२
मुखकीजै भाग
१ श्रीवाकीजे ए
वं भाग ३६ कीजै
भाग २० नीकोसा
राकीजै भाग ४
व लिंगमुखं: भा
ग १२ मुखमध्ये:
भाग ४ अथा

७ भाग परिधीसम

शिल्पावा सिद्ध: लिंगानी: हंसहं मपैटविस्तरं
विस्तारस्यसर्ववेदं: तुगकं तुगकाद्दं मथगोमु
खालमथ कंठनादकं ॥१॥ सुराणमत्ते लिंगा।
या मसमो दीर्घविस्तर: पीठिकासम: प्राण
लतुत्री भागेन चीघ्यु रोच्चाच पीठक: ॥१॥
ब्रह्मा संचतुरस्रं द्यो मध्ये अष्टास्रसर्ववेष्ट
व: पुजांग सुवर्तस्या पीठे द्वेत्रांकरस्य च: २ या
त्येकयाविधा कार्यान्येष्टमन्योन्यशंकर आ
ढ्ढेत्रौले दुमेकेचित्तु पीठपद्यष्टकीमये: ३ र
त्नलिंगं द्विधाख्यातं स्वपीठ धातुपीठजा ॥
रत्नपीठस्वयो निस्वस्य धातुजे धातुपीठकं:
॥४॥ इति पंचसूत्र शिवलिंगभेदं ॥ ॥

छाद्यांच भाग द्वयं अर्धं: सार्धभागं च पालवा: मोरडी सपादं कोर्य: भागमेकं लपायचं: १
खिषरे तिलकं कार्या: पाअचं वीरजये तु: अधीक थरे न कर्तव्ये नुन्यास्च हानी कृते: इति छा
जाउपर थरखोला तेनो वीरा उछाजु भाग: २॥ पालभाग ५॥ मोरडी भाग १॥ पाअचो भाग
१॥ अेसषरकेसरीदी कीजे जेने दीजे: पणतोरणादी कीजे: तेने उपर तीलक पाअचो वरदी
८ नी दीजो: तिलक फालना ६ अंग ५ फालना १० अंग ९ फालना १२ अंग १३ अवे वीराउेवचारी
कामकरजो: हीननुने: अधीक करे तो स्वामीजेपी साषरचे तेनो क्षयं धनना क्षय: ॥ ॥

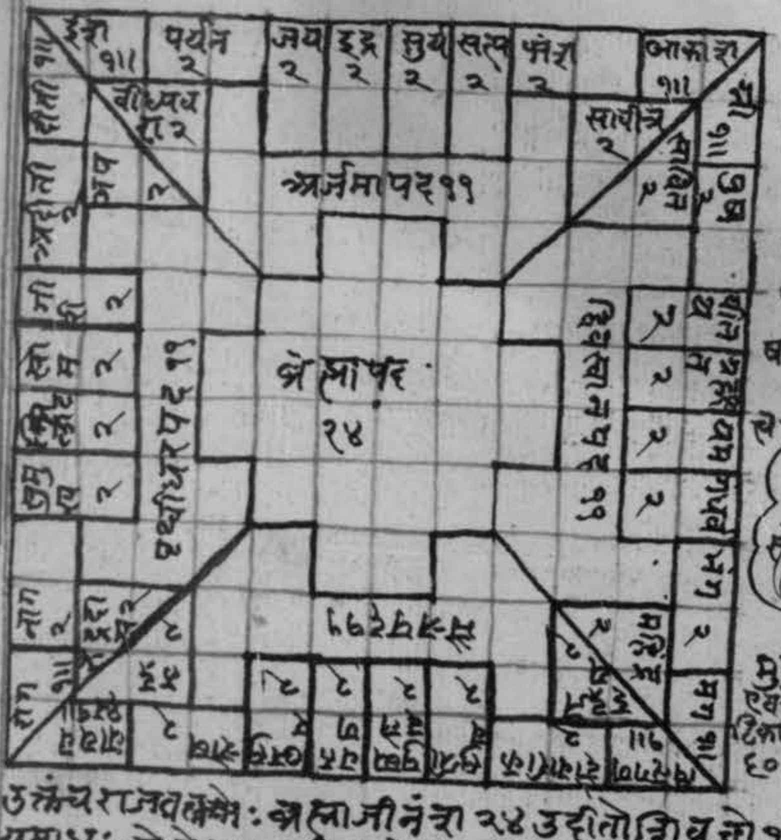

उक्तं च राजवल्लभे: ब्रह्माजी नंशा २४ उदीतो शिव तो ११
यमाध: कोणे पुसार्थ पदतो पितथैव चाष्टो रोवाद्वि
भागसमकार विभागको यं पूजा रथाश्व गृवाहनेकषु
यंत्रे ॥१॥ ॥ इति १४४ वास्तु संपुर्ण: ॐ

ईशानवीजेचरकीः वायव्येक्षराक्षसीः येकेआहीभैरव उत्तरः ७ अग्नोजीकाभैरव नैरुत्य ४ कालभैरव पश्चमे ५ करालभैरव वायव्य ६ भीमभैरव ७

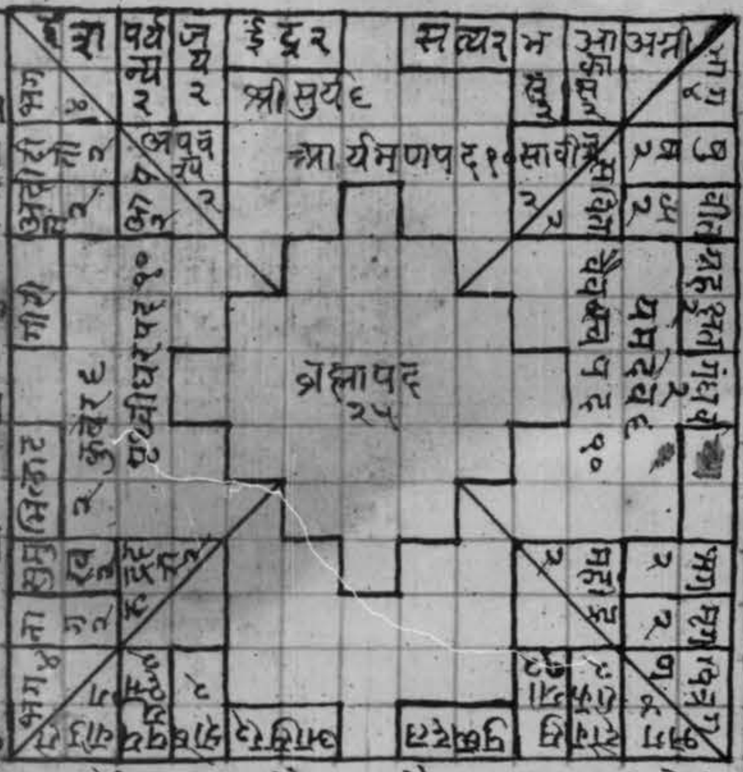

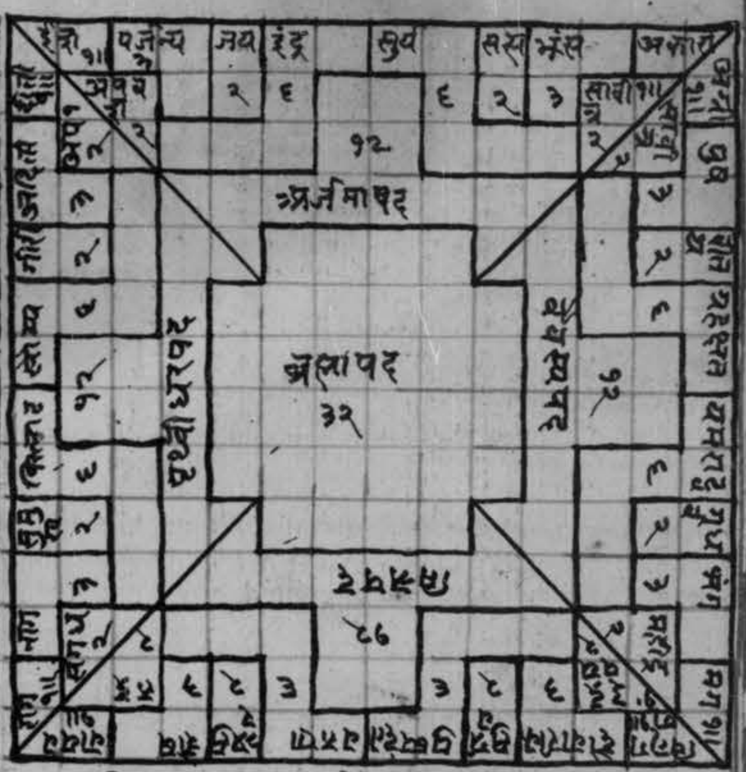

हेतुकभैरव पुर्वेः १। त्रिपुरभैरव २ नैरुत्यबीजपुतनादेवी वेतालभैरव दक्षणे॥ अग्निकोणे वाजविद्याराकेः २॥ यंत्रत्रयोदश्री १३ पदैरीपीपुजनीयः तस्यंच वीसती २५ रभोद रालो १० यमाद्याकोणे श्रुयो ४ मरगणा वहीके कलो श्री १६ मद्रात्रिकं रसविग्य २४ पदैर्द्वी गा ६५१ इतिराजवल्लभैया स्तु पद् १६९

द्वात्रीशत्कमलाश्रनो ३२ यममुखं स्वुसुय भागाः ४८ कमानु कोणेष्ठा सुराधीभागाः। १ धस्तहीतिवाजे पुत्रा धं १२ शकीअष्टो तमपदा २४ पुनधीपदीका १६ षष्ट भागानो ४८ अष्टौ सुरास्तेत्रेष्टणा ग्रीवचंद्रभागः १९६ सहीलेस्यदे चतानेकमातः॥१॥

स्क

२९ लगतोनाडीत्वभुक्तंनुमुच्यतेः १ इतीलसैल्लमादालत्राभुक्तमुलेजातसीश्रुः पीतापरीत्यजेतुउक्तंचःजेष्ट स्यघटिकाः पंचमुलाघाचसुनाटीकोः अकमीतिज्ञेयंः तत्रजातंश्री श्रुः त्यजेदीक्षीः स्यागोः रात्रौयांपीता अंस्य अष्टासमाः अष्टवर्षाणीमुखंनपश्येतुः नारदीयेपीः अभुक्तमुलजपुत्रं पुत्रीमपीः त्यजेतुः अ थपाष्टाष्टकंनीनरत्नमुखनचीलोकयेतः १ अत्रघटिकानां न्युनाधिकथनं दोषस्यामी द्वीकात्म्यत्वेकथ नार्थं ज्ञेयंः अथमुलाश्लेषाजातस्य चरणवस्येनकंफलमुपजातीकीयातः [illegible] अथान्येआचार्याप्रोचुः मुलस्यप्रथमासु घटिकाः शाकस्य ज्येष्ठाया अंतीमाः पंचनाडीकाः एवंउ भयोरंतरालेत्रयोदश घटीका अभुक्तसंज्ञयाः प्रोचुः पुनरन्येः ज्येष्ठास्य घटीका ६ ईच मुलाद्ये घटिकाद्वैकंः तयोरंतरगेतानाडीत्व भुक्तमुमुच्यतेः १ इतील स्कलमहालत्रो भुक्तमुलेजातसीश्रुः पीतापरित्यजेतु तुक्तंचः जेष्टस्यघटिकाः पंचमुलाघावसुनाटीकाः अकमीतिज्ञेयंः तत्रजातंश्री श्रुः अद्येपीतानोसमुपैतीमुलपादौ द्वितीयेजननीतृतीयेघनंचतुर्थेचश्रुभौ थशांत्यासर्वत्रस स्याद ७ हीभेविलोमः १ अस्यार्थः मुलप्रथमेचरणेजातस्य बालस्य पीतानासं प्रोप्रोतिः सा पत्रेमातरीः मीनृसष्टोः गोणस्तेनगोणमुख्ययोमुख्यकार्यसंप्रत्ययः इतिजननी पदप्रयोगः तृतीयेचरणे धननाशपतिः चतुर्थचरणे बालस्यशुभः अत्र विशेषो नारदेनोक्तः दीव्यजाति स्तुपितरः रात्रौतुजननीतथाः आत्मानंसंधयो हंतीनास्तिगंडोनिरामयः १ वसीष्टः मुलाद्य पादोयदीरात्रीभागेतदात्मनोनास्तीपीतुर्विनासः द्वीतीयोपादोदीनगोयदीस्यात्माता तुरलो पीतदास्तिदोषं १॥ अथोनंतरं शांत्यामुला ६ श्लेषाशांत्यानुचीतप्रासर्वत्रचरणाश्वतुष्टये पीशुभं अनिष्टफलनाशकं कल्याणंस्यातेः शास्त्रोक्तारीत्याघलुसुहाकोतेममीतंगंडसुते जातेसुतकोलेविचक्षणः कुर्याच्छोतीलब्लक्षेवालतृतीयप्यथवसंमाते। इतिकाल्यंच सिद्धनो क्तः गंडेतुविशेषः द्येषस्योपनुपेत्तयेः शोष्टास्तुसर्वस्मीनयीयनपीक्षत्रेजन्मतन्मनेक्षत्रेए वशांतीरीतिअवहारतीः अथा ६ द्दीभेविलोमइतिअश्लेषायामुलपादोकंपालंविलोम विपरीतंज्ञेयंमुलस्यप्रथमपादेपीटनाशामीलुकंसो ६ श्लेषाच्चतुर्थपादोमन्त्रस्यद्वितीय

अश्लेषाघटि ६०
फल १०
फुल २
पत्र १
शाषा ७
त्वचा १३
मुल १२
कंद ७
एवंघटि ६०

अश्लेषामनुष

अथ श्रीशु: ज्येष्टामुला अश्लेषासु जन्म: स्यात् तेषां गुण दोषादि विवर्णं लिख्यते ॥ यथा श्रीशु: अभुक्तमुलजं: सार्यनक्षत्रयोरपी अयमेव च मुख्य प्रकार: कस्य पादी बहुमुनिभि: संवादात् तु कस्य प: जेष्टांतां मुलयो रंतरायौं मुद्रव: श्रीशु अभुक्त ल अमुलजस्तया: श्ले षामुलयोरपीतोचसी ष्टोपी: भुजंगपो रंद्रपे श्मभानां तदगुणानां चयदंतरालय: अभुक्तमुलं प्रहरप्रमाणं स्यतत्सुतं तत्र भवस्तताच्चे तीपुन: वसीष्टो एकं द्वितीयं मेतजगो ज्येष्टस्या एकघटिका: मुला घटिका द्वयं मित्यर्थ: इंद्व सिष्टेनकेषाची त्मत मुक्तं यतस्त द्वाचये के चीद ४ इंद्व सिष्टेनके षाचीत्मत मुक्तं यतस्त द्वा कंथ: ज्येष्टस्य पाद घटिका मितमेव परे रतीप दोक्तेन द्वा कंच: ज्येष्टस्यपाद घटिका मितमेव कोचित् मुलस्य: ६ भुक्तम परे पुनेराभनंती: मुलाद्या पाद घटिका: द्वीतयेन साढूम ष्टौयम: परीहरे दीहजन्म भाजमीति: बृहस्पती स्तयकघटी प्रमाणकं जगो ज्ये ष्टांस्य: ६ द्वघटी मूलाधस्याद्वघटीमित्यर्थ: त्यागान्ता क्तो अथौन्ये आचार्यो प्रोचु: मुलस्य प्रथमाष्टघटीका री तस्य ज्येष्ठायां अंतीमा: पंचनडीका: ऐघंडभयोरंतरा ले: त्रयो दश घटिका अभुक्त संज्ञया: प्रोचु: पुनर न्ये: ज्येष्टास घटीका ६ मुलादौ घटिका द्वकं: तयोरं

पादे मातृ नास: सो स्तत: तृतीये अश्लेषा त्रतीये चरणे धननाशसो अश्लेषा द्वीतीयच रणे चतुर्थ चरणे शुभ मुक्तो न अश्लेषा प्रथमच रणे त्रयं: अत्रैव दुष्टिचारोस्ती गतं थ भुयस्त्वया न्ना स्मा भी । लिख्यते: अथके श्चिन्मुलदृक्षादी रूचार उक्ते: जपार्णवे: मुलस्तंभं त्वथ वासा खा पत्रं पुष्प फ लं सीषा मुनयो ६ नृ दशं १०रु द्र: ११ सुर्या १२ पंचा ५ षष्ट: ६ यो ४ त्रये: ३ ॥१॥ मुलेस्तु मुलना शास्यात्स्तंभे वंस विनाशनं त्वे: च्वीमातु भेवेत: त्को स: शिखौ यां मातुलस्य ॥२०॥ पत्रेशार १२ न्य वीजानीया पुष्पे १५ मंची पदं स्मृतं फल ४ च वी पुलाल्लक्ष्मी: शाखा स्या मल्पजी वितं अथ मु लपुरुषस्यांगे घटिन्यासस्तत्रैवं: मुलस्य घटिकान्यासो मुर्ध्निपंच ५ नयो भवेत्: मुखेस स ७ मृती पित्रो स्कंधे ४ दा महाबली ॥१॥ वाक्तो रष्टे ८ बलीबाणे स्ती स्त्रो ३ हस्सान्वीतो भवेत् । रुदे खे दा भुय मंत्री नाभौ द्वौ ब्र ह्मचीद्र घेत: २ ॥ गुह्ये २ ॥ दशा ६ तीकामास्या न्हानुनोपट ६ महा गती: पादयो षट् ६ मत्क स्याती त्युक्तं वानू कामसा सेने: ३ इती अथ मुलो दुल के नाया फलं थं मु लांग विभाग स्तत्रैव: चं लस्त्रो नाडीका: शीर्षे कुर्वती पुंश्चु नाशनं: मुखे घ टू धन हानी स्यात् कंदे ५ पंच हूनाग मः २ ॥ कोटीत्वं हृदयं पंच ५: बाव्होवीता गे मं पुन: वेदा: ४ पाण्यो दीया धर्मे वेदा ४ गुह्ये विकामीना: न्ये ष्टं मातुल नाशश्व: जंघयोर्युग ४।४ नाडिका: ज्येष्ट भ्रं शाविनाशं स्या ४ ध्वं लस्ता ४ जानु युग्मके ॥३॥ पादयो दश १० नाडिषु: तत्र वैधव्यमादीशेत अभुक्तं घटोकास्य मे क्तं न्याच्च सर्वथा ॥४॥ इति मुल प्रसुताया मुनी भि: फलपीरीतं ॥ अथा अश्लेषाजा तयो: पुत्र कन्ययोरं: गवी भागे फलं तत्र चैव: मुर्ध्नि पंच ५ सुराज्यानी मुखे मुनी ७ पितु: क्षय: नेत्रे घे २ जननी नाशे: ग्रीवायां त्रीषु लंपट: १ स्कंधे वेदा गुरु भक्तो । हस्तेयो रष्टौ बली भवेत् हृदये ११ का दशा भस्याती संजायते नर: स्त्रीयार्थ भ्रम घड्भिर्युदि नवत पोधन: पादे पंच द्वेतनं दंतीसा पादे ४ फलं क्रमात् ३ ॥ अथा अश्लेषा दृक्षोपी तत्रैवोक्तं फल पुष्पं दलं शाखा लगूता कं सार्थ

मुले

नाभौ
खो

५ चतुर्भुज

३० वचसर्प्यव हृस्तं द १॥सी क्षा २॥ टकँ स्वरवीष्य १३॥२ कसागराः १ नारीकास्तद्वेवाले फलं ज्ञेयं य
थाक्रमं श्री १० राज्य २ प्र ९ यहानी ७ मलिं छुधि ३ पितृत्त १२॥२ संक्षयः २ अयं विभागो नक्षत्रस्य।
षष्टीघ्रज्ञेयं इतिमुध्श्लेषापतघचक्षदीचीवर्लज्ञेयं लिखीतंगः॥ ॥अथरुपावतारवार्तिकं
लिख्यते विश्वकर्मा॥ चतुहस्त॥ त्रिनेत्र॥ चंद्रशेखर॥ अक्षसुत्र॥१॥ पुस्तक॥१॥ कमंडल १
कंबा॥ ॥कमलासनमुर्ति॥ चतुमुख॥ अक्षसुत्र॥ श्रुति॥ चतुर्मुख॥ चतुर्हस्त॥ अक्ष
सुत्र॥१॥ पुस्तक॥२॥ श्रुची॥३॥ कमंडल॥४॥ द्वापुरयुगनईविषईविशेषसेववी॥ श्री॥ ॥
पितामहमुर्ति॥ चतुर्हस्त॥ चतुमुख॥ कमंडल॥१॥ अक्षसुत्रं॥२॥ श्रुची॥३॥ पुस्तक॥४
त्रेतायुगनईविषईसेववीः॥ ॥ब्रह्मामुर्ति॥ चतुर्मुख॥ चतुर्हस्त॥ अक्षसुत्र॥१॥
श्रुची॥२॥ पुस्तक॥३॥ कमंडल॥ ॥सावित्रीमुर्ती॥ चतुमुख॥ चतुर्हस्त॥ अ
क्षसुत्र॥१॥ पुस्तक॥२॥ पद्म॥३॥ कमंडल॥४॥ ॥ऋगवेदमुर्ति॥ श्वेतवर्ण॥ द्विभु
ज॥ सारिभमुख॥ अक्षमाला॥१॥ पाणीपात्र॥२॥ ॥यजुर्वेदमुर्ति॥ पीतवर्ण
अजामुख॥ द्विभुज॥ अक्षसुत्र॥१॥ अंकुश॥२॥ ॥सामवेदमुर्ति॥ स्वेतवर्ण॥ म
र्कटमुख॥ द्विभुज॥ अक्षसुत्र॥१॥ षटवांग॥२॥ ॥नृत्यशास्त्रमुर्ति॥ मृगमु
ख॥ जटाधर॥ त्रिनेत्र॥ अक्षसुत्र॥१॥ त्रिशूळ॥२॥ ॥अथब्रह्मायतनेद्वा ॐ
रदेवता॥ गणेश॥ अग्नी॥ मातृस्थानदक्षणे॥ सहस्राक्षनैरुते॥ जलशाईप

32

श्चमे॥ पार्वतीरुद्र॥ वायव्य॥ ग्रहांचैव॥ उत्तरे॥ लक्ष्मीईशाने॥ पुर्वधरणीधर॥ डाडीकरवी ग
ब्रह्मानीस्वष्ट प्रतिहारमुर्ति॥ पुरुषाकार॥ मुगट॥ संकुच॥ पद्म॥१॥ मदोद्भव दंड॥१॥ अक्ष
॥२॥ कमल॥३॥ फल॥४॥ जयनाममुर्ति॥ अक्षसुत्र॥१॥ गदा॥२॥ षडु॥३॥ दंड॥४॥ ॥
विजयनाममुर्ति॥ चेटक॥१॥ दंड॥२॥ अक्ष॥३॥ गदा॥४॥ जगभद्रकमुर्ति॥ अक्ष॥१॥ पा
श॥२॥ अंकुश॥३॥ दंड॥४॥ ॥भवनाममुर्ति॥ दंड॥१॥ अंकुश॥२॥ पाश॥३॥ कमंल॥२
अक्ष॥३॥ पद्म॥४॥ जयदंड॥१॥ ३॥ कमल॥४॥ वीभव॥ ॥अथद्वादशसूर्यमुर्ति॥
कमलमाला॥१॥ कमंडल॥२॥ द्वीभुजे॥ पद्मसुधामीसोम॥१॥ त्रीशूळ॥२॥ त्रीनेत्र॥३॥ मि
त्रनामसुर्य॥ कमंडल॥१॥ अक्षमाला॥२॥ समता॥४॥ ॥सुर्य॥ त्रीशूल १॥ सुदर्शन॥
॥२॥ पद्महस्त॥ ॥भागसुर्य॥ त्रिशुल॥१॥ माला॥२॥ पद्मलांछन॥ ॥विश्वसुर्य॥ पद्म॥१
पद्म॥२॥ सुषानामसुर्यमुर्ति॥ गदा॥१॥ सुदर्शन॥२॥ ॥सावित्रसुर्यमुर्ति॥ सरूउ॥१॥
होभकलक॥२॥ ॥अष्टमुर्ति॥ द्विभुजेपद्मरुद्रासुर्यः॥ सुदर्शन॥१॥ पद्म॥२॥ वीयासूर्य॥ ॥
अथ द्वादशसुर्यनाम॥ द्विती॥१॥ मित्र॥२॥ अर्यमा॥३॥ अर्यमा ३॥ रुद्र॥४॥ वरुण॥५॥
सूर्याहाम्भग ७॥ वीवस्वान॥८॥ पुषा॥९॥ सविता॥१०॥ त्वष्टा॥११॥ विष्णु॥१२॥ ॥मंगल
मुर्तिः॥ मेषवाहन॥ चतुर्भुज॥ कुर्दशांगी॥१॥ त्रीशूळ॥२॥ रथुक॥ ॥बुधमुर्तिः
नीलवर्णः॥ चतुर्भुजः सीहवाहनः वरद॥१॥ षडंग॥२॥ खेटक॥३॥ गदा॥४॥ ॥

३ मं चंद्रमुर्तिरथवाहनस्मगायुलनद्विभुजेमरा १ पद्म २

33

३१ वृहस्पतिमुर्तिः पीतवर्णः ॥ चतुर्भुजः वरद ॥१॥ अक्षसुत्र ॥२॥ कमंडल ॥३॥ दंड ॥४॥ ॥ शु
क्रमुर्तिः ॥ स्वेतवर्णः ॥ चतुर्भुजः ॥ वरद ॥ १ ॥ अक्षसुत्र ॥ २ ॥ कमंडल ॥ ३ ॥ दंड ॥४॥ ॥ शनी
श्चरमुर्तिः ॥ नीलवर्णः ॥ गध्रवाहन ॥ चतुर्भुज ॥ वरद ॥१॥ बाण ॥२॥ धनुष ॥३॥ त्रिशूलः ॥४
राहुमुर्तिः ॥ सींहासनवाहनः ॥ करालवदनः ॥ चतुर्भुजः ॥ वरद ॥१॥ षडग ॥२॥ षेटक ॥३
त्रिशूल ॥४॥ केतुमुर्तिः ॥ धुम्रवर्णः ॥ गध्रवावाहनः ॥ वरद ॥१॥ गदाधरा ॥२॥ सर्वेग्रहा
कीरीटीन कार्या ॥ नवताल प्रमाणः ॥ रत्नकुंडलकेयुराहारा आभरणा कार्याः नवग्रहमुर्ति
॥ ॥ इंद्रमुर्तिः ॥ गजवाहनः ॥ सहस्राक्षः ॥ वरद ॥१॥ वज्र ॥२॥ अंकुश ॥३॥ कमंडल ॥
॥४॥ ॥ अग्निमुर्तिः ॥ मेषवाहनः ॥ ज्वालासमंडपं ॥ वरद ॥१॥ शांगी ॥२॥ मणीज ॥३॥ कं
मंडल ॥४॥ ॥ यममुर्तिः ॥ महीषवाहनः ॥ क्रष्णवर्णः ॥ लेषण ॥१ पुस्तक ॥२॥ कुर्कुट ॥३
दंड ॥४॥ ॥ नैरुत्यमूर्तिः ॥ श्वानवाहन ॥ दंष्ट्रा४करालः ॥ षडंगः ॥ षेटकः ॥ शक्तीः म
स्तक ॥ करालमुखं ॥ ॥ वरुणमुर्तिः ॥ मकरवाहन ॥ वरद ॥ पास पद्म कमंडलः ॥ पश्चि
मदिशीः ॥ ॥ वायुमुर्तिः ॥ मृगवाहन ॥ वरद ॥ ध्वजापताकाः कमंडल ॥ वायव्यदिशा ॥
धनदमुर्तिः ॥ गजवाहनः ॥ गदानिधीदंः ॥ इशानमुर्तिः ॥ वृषवाहनवर ॥ त्रिशूलः ॥ ना ३१
गेंद्रः ॥ वीजोरु कमंडल ॥ उत्तरदिशी स्वामी इशानदीशीस्वामिः ॥ ॥ अथनारायणादि
चतुर्थरं मुर्तिभेदः ॥ नारायण ॥१॥ केशव ॥२॥ माधव ॥३॥ मदसुदन ॥४॥ एमु

र्ती ब्राह्मणानी पुज्य ॥ मदसुदन १ ॥ विष्णु ॥२॥ एमुर्ती छत्रीनी पुज्य ॥ त्रिविक्रम ॥१॥ वामन ॥२॥ ए
मुर्ती वैश्यानी पुज्य ॥ श्रीधरमुर्तिसुद्रनीपुज्य ॥ रिषीकेश मुर्ति मोचीनी पुज्य ॥ छीपीनीः नटनी
भांउनीः भीलनीः कीरातनीः मेदनी पुज्या ॥ पद्मनाभमुर्ति ॥ कुंभारनीः घाणी आणि वैश्या
नीः लोहारनीः बरुमरनी पुज्यः ॥ दामोदरमुर्ति ॥ ब्रह्मचारी ॥ एकदंडीनी पुज्य ॥ हरहर हरि
रुपंगनारसिंह ॥ वामनवाराहः अनःपरंसर्ववर्णनी श्रेष्टः ॥ जेमुर्तिनुं अंगप्रत्यंग भागु हुइः
तेण द्रुटानी बीजी मुर्ति बेसारीइ ॥ नष आभरणमालाः आयुधः भागां हुइ तुते मुर्ति कुढा
डीइनाहीः ॥ ॥ अथ चवुविसमुर्तीना आयुध भेदः

शं च केशव प १ ग	सं प मदसुदन च २ ग	सं प संकर्षण ग ३ च	शं ग दामोदर प ४ च	शं च वासुदेव प ५ [illegible]	स ग प्रद्युम्न च ६ प	प स वीष्णु ग ७ च
च शं माधव ग ८ प	ग शं अनिरुध च ९ प	प स पुरुषोतम च १० ग	ग स अधोक्षज प ११ च	च स जनार्दन प १२ ग	ग प गोविंद च १३ सं	ग च त्रिवीक्रम प १४ शं
च ग श्रीधर प १५ शं	च प हृषीकेश ग १६ शं	प ग न्रसीह च १७ शं	प च अच्युत ग १८ सं	च ग वामन शं १९ प	प ग नारायण शं २० च	प च पद्मनाभ शं २१ ग
ग च उपेंद्र शं २२ प	च प हरी शं २३ ग	ग प क्रष्ण शं २४ च	दोय आयुधना भा			

गरुडमुर्ति मरकत मणीसमव
र्णः कोशिक समस्तशीकः चतु
र्भुज ४ वृत्तनेत्रं वृत्तमुखः गध्र
समउरुः ॥ जानुः चरणः पोषः २
करवाः हस्त ॥ २ ॥ अंजली जो
डी करवाउ २ ॥ ॥ नवतालमा
न करवुः हाथ २ ॥ छत्र पुर्णकुंभ
करवा ॥ ॥ किंचित लंबोदर कर
वुः सर्प आभरण भुषित करवुः श्रीभागवानपृष्टी
करवोः ॥ ॥ त्रीविक्रममुर्तिः ॥ अष्टबाहुनं दकः ॥ ग

३२ दा बाणः जीमणी हाथी करवा॥ शंष धनुष: चक्रः षेटकः एडावी हाथी करवी: दसताल
प्रमाण करवाः ४॥ वामनमुर्त्तिः॥ द्वीभुजः॥ विप्रमुर्त्तिः॥ कुंबाकार करवाः॥ मृगचर्म जिग्नो
पवीतः॥ कुंडली शीषा युक्तिः॥ छत्री कमंडल हाथें करवाः॥ सप्तताल प्रमाण करवाः॥ ॥
राममुर्त्तिः॥ द्विभुज करवाः॥ बाणधनुष करवुः॥ नवराहमुर्त्तिः॥ वाराह मुखः॥ गदापद्म
धरः॥ दाढाग्र पृथ्वी करवा॥ डावा कोपरी नील धरता पृथ्वी करवाः॥ जीमणु हाथ कटि
संस्थ करवु॥ एकपग कुर्म नियास करवुः॥ एकपग नागेंद्र नी माथां करवाः शेष चतुर्भु
ज हाथ २ जोड्या करवाः॥ हाथा २॥ उशीरा मुल जकरवा॥ कुर्ष हाथी॥ अथवा सुरूत करक
कर रवाः॥ महंकय तीक्ष्ण दंष्ट्रा थ्रो आनेत्रः स्तंब कर्ण करवा॥ ॥ सीहमुर्त्ति॥ रोद्र सिंहा मु
षनेत्रः॥ अष्टभुजाः॥ उछंग हरण्य कश्यपः। षडंगः। षेटकः॥ धरतु करवु॥ नीचा हा
थ २ चीदारता करवाः हाथ २ अंत्रमाल काढता करवाः॥ जीमणा हाथ २ चक्र कमल कर
वाः॥ वामहाथ २ उर्द्ध गदा शंष करवाः अग्र दक्षण पात्री प्रह्लादः ४ अथवा चातुर्बा
पात्री हुः। जीमणी चक्रः पात्री डावी शंखः॥ उर्द्ध जीमणी कमलः॥ उर्द्ध डावी गदा॥ ॥ जल
शाई मुर्त्तिः॥ जलमध्ये शेषनी उछंगी: शायन करता करवा॥ चतुर्भुज करवुः॥ एक
पग लक्ष्मीना हृदई करवुः॥ एकपग शेषनी उछंगी करवुः॥ एक हाथ जानु करवु ३२
एक हाथ नाभु करवुः एक हाथ कोटंगी करउः एक संतान मंजरी धरतु करवुः॥ ना ३

३४

भी कमलनी विष ब्रह्मा करवाः पासे बे दुमधु कैटभ करवाः आयुध पासे करवा॥ वै
कुंठमुर्त्तिः॥ गरुडासन करवा॥ अष्टबाहु करवाः॥ गदाः षडंगः बाणः चक्रः जीमणी
हाथे करवाः आगली जीमणी पुरुषकार न्रसिंह करवाः बीजी पासी श्री मुखाकारी
वाराह स्य करवा॥ ॥ वीरुपाक्ष मुर्त्तिः॥ वीश्वा [illegible] रुपा मुर्त्तिः वीस भुजः पाताका
संषः॥ हलः। वज्र॥ अंकुशः बाणः चक्रः लिंगः वरदः दक्षण हस्ती करवाः॥ प
ताकाः दंडः पाशः गदाः शारिंगः पद्मः पर्वतः कुमुदः अक्षमाला डावे हाथी करवा
हाथ २ जोगमुद्रा जोड्या करवी॥ गरुड वाहनः नारसिंहः वाराह मुखः॥ ॥ त्रै
लोक्य मोहनः॥ त्रैलोके ४ मोह मुर्त्तिनी चीधीः॥ सोलभुजः। गरुड वाहनः॥ गदा
चक्रः अंकुशः॥ बाणः शीगी॥ सुदर्शन॥ वरदः रुधितकरः शास्त्रः एदक्षण
आयुधः मोगरीः पाशः धनुषः पद्मः कमंडलः श्रृंगीः हाथ २ जोगमुद्री जोड्या
करवाः॥ नरनारसिंहः॥ सुकर स्त्री पीला मुष करवु॥ शक्ती २ तथा ८ शक्ती र
चीवी विष्णुनो अभिधान दीशीः दक्षणे पुंडरीकाक्षः पुर्वई नारायणः पश्चिम ई
गोविंदः उत्तरे मधुसुदनः ईशाने विष्णुः अग्ने ई जनार्दनः॥ नेरुत्ये पद्मनाभः
वायव्य ई माधवः केशव तथा वासुदेवः मध्यः संकर्षणः प्रद्युम्नः अनि
रुद्धः तथा जलशाई॥ अथ दशावतारः संजुक्त करीई सुकर आगलीथा

पाईः॥ ॥प्रतिहारमुर्तिः॥ वामणाकरवाः चतुर्भुजः तर्जनीः रषिः दंडः प्रदक्षणः चंडनामः अप
सव्यक्राायुधः ते प्रदक्षणः पद्मखडंगः खेडुः गदाः प्रदक्षणेः पद्म आदी देइचीलोकरीजयः अनेवि
जयथाइः तर्जनीः बाणः चापः गदा प्रदक्षणेः धातीः चीधाताः तर्जनीः पद्मः शंखः गदाः प्रदक्षणे
आयुधसधः आयुधयसर्वः सुभद्र अनइभः द्रदुईः॥ ॥सद्योजातमुर्तिः त्रिनेत्रः बालचंद्रमु
गुटः कुंडलः भरणः हथः २ वरदः जटा स्वेतवस्त्रलेयः॥ ॥मणीः रक्तवस्त्रः रातीजनोडीः
रक्तनेत्रः मोटीनासिकाः मोढुउरः मोटाबाहुः त्रिनेत्रः खडंगः खेटकधरता करवाः सेवाभ
रणकरवाः॥ ॥अघोरेश्वरमुर्तिः करालदंतः विकटमुखः शरपमस्तकः त्रीलोचनः
रुंडमालाः सापनाकुंडलः सर्पचीहारपास९ पुजनोईः चीबीनीमालाः आलशीनाफुलनु
वर्णः पीलीभमीः पीलीजटाः शशांकमुगुटः तक्षकः पुष्टीकनाने उर॥ अष्टभुजखडवां
गः कपालः खेटकः पाशः॥ वामअंगीकरवाः त्रीशूलफरशीखडवांगः दंडः एदक्षण
करवाः एमुर्तीजिहांपुजाइः तिहांवैरीनुनाशकरी॥ ॥तत्पुरुषमुर्तिः पीतांबरः पीतज
नोईः बीजोरुडावीहथी अक्षत्रजीमणीः॥ ॥ईशानमुर्तिः फटीकवर्णः चंद्रमुगुटः ज
टाः अक्षत्रीमुलः दक्षणेः कपालः वामेकरवाः॥ ॥मृत्युंजयमुर्तिः षटभुजः
रुंडमालाः व्याघ्रचर्मः सर्पभुषणः त्रीशुलः अक्षसुत्रः दक्षणभुजेः कपा
लः कुंडीपासः वामभुजेः हथः २ जोगमुद्रा॥ ॥वीजयमुर्तिः एकमुखः त्री
नेत्रः चतुर्भुजः त्रीसुलः कमलः हथ२ वरदः दीव्यरुपः मोडुनीलाडः शशांकः शे

35

खरः॥ ॥करणाक्षमुर्तिः॥ चतुर्भुजः शुक्लाक्षः द्वीनेत्रः हस्तद्वः४ यपुस्तकवरदः अक्षः
॥ अघोरेः पावकवर्णः खडंगः त्रीशूलः महाक्रोधधरः भयक्षल महाभयः श्रीकंठमुर्तिः वि
चित्रवस्त्रधरः यज्ञोपवीतः चतुर्बाहुः एकमुखः खडंगः चापः शरः खेटकः चंद्रमुकुटः स
र्वआभरणयुक्तः महादेवमुर्तिः चतुर्बाहुः त्रिनेत्रः दक्षणहथः २ अमृतपीता करवाः वामअ
क्षसुत्रः॥ महादेवुमा अर्धितः। एकादशमरुद्रः॥१॥ ॥सदासीवमुर्तिः॥ पंचवक्त्रः॥ त्रि
नेत्रः पद्मासनः॥ दसभुजः हाथः २ योगासनकरवाः अभयशंगीः त्रीशूलः खडवांगः
भुजंगमः अक्षसुत्रः डमरुः बीजोरुः डमयासहीतः शंकरकरवाः बीजोरुः त्रीशूल
दक्षणभुजे करवाः वामभुज आलिंगीलकरवुः बीजद्वीहाथेनागेंद्र करवुः उमानुहस्त
हरनोकाधीकरवुः बीजीहाथी दर्पणकरवुः नीचीवृषभकरवुः गणेशकरवुः भृंगीभीरमासन्न
त्यरुपीकरवुं॥ ॥कृष्णशंकरमुर्तिः॥ कृष्णशंकरएकदाकरवाः दक्षणांगे रुद्रः॥ वामांगेकृ
ष्णः॥ दक्षलेजटाभारः वामेमुकुटाः दक्षेकुंडलः वामेकरकुंडलः दक्षणे अक्षमालाः त्रीशू
लः वामेशंखः चक्रकरवा॥ ॥कृष्णकार्तिकएमुर्तीः कृष्णअनईः कार्तिकेयएकठांकर
वाः पद्मशंगीः खेटकः शंख॥ ॥गरुडध्वजमुर्तिः पद्मः शंखः ध्वजः चीह्नगरुडवाहनकर
वाः॥ ॥शिवनारायणः वामार्द्धनारायणः दक्षणार्द्धशिवकरवाः सर्वपापविनासनः हथर
कृष्णनामणीबहिरेखाशोभितकरवाः शंखचक्रः करवाः चक्रस्थानकीगदाः अथहाथ
अर्धरत्नकरवाः अथवाशंखदक्षणेकरवाः शेषकटीः अर्द्धभुषणः पीलवस्त्रचरणे

३४ मणीभूषितकरवाः दक्षणाईजटाभारकरवाः अर्द्धचंद्रनीलाडिः भुजंगहारबीहीरेषा
भुजंगकरवाः करे दक्षणेवरदः बीजहत्रीसुलः करवाः सर्पजनोईः मणीरत्नपगेनागभुषित
करवा॥ ॥हरीहरपितामहमुर्तिः एकईआसनीबेदीकरवाः हथ६ चतुर्मुखः अक्षसुत्रः त्री
शुलः गदाः दक्षणभुजीकरवाः कमंडलः षटवांगः चक्रः एवामभुजकरवा॥ ॥हरीहरपि।
तामहः चतुर्मुखः अष्टभुजः पद्महस्तदीवाकरः षटवांग त्रिशुलः चतुएकेकनीवाराः॥
रुद्रदक्षणेकरवाः कमंडलअक्षसुत्रः पितामहशंखः चक्रः हरीवाए विधीप्यारकर वीः
॥ ॥चंडभैरवमुर्तिः चतुर्मुखः हाथ६ करवाः कमंडलः अक्षसुत्रः हथ२॥ कमलः कम
लअर्द्धः हथ२ षडगः शंगीः शरः अंकुसः वरदः ए दक्षणेकरवाः षडवांगः षेटकः चापाः अ
थअभयः कपालवामहस्तः बाहीनीगजचर्मः बीहीनी रुंडमाला ः एवंचंडभैरवकरवा॥
॥ ॥वीसपाक्षमुर्तिः षोडशभुजः षडगः त्रीशुलः डमरुः अंकुशः सर्पः चक्रः ग
दाः अक्षसुत्रः दक्षणेकरवाः षेटकः षटवांगः शंगीः फरसीः तर्जनीघंटाः घाटाः कपा
लः वामेकुद्धीदीकरवाः॥ ॥त्र्यंबकमुर्तिः षोडशभुजः अथचक्रः डमरुः मोगराः शर
त्रीसुलः अंकुशः सर्पः शुष्याः दक्षणेः उर्द्धादीकराष्टकेः गदाः षटवांगः पात्रः कार्मुक
तर्जनीः घंटाः फरसीः परीशः वामेकरेवाः॥ ॥हरीहरमुर्ति॥ हरहरी एकाशकरवा ३४
दक्षणार्द्धेसदाशीवकरवाः वामार्द्धेहृषिकेसकरवाः श्वेतः नीलः आकृतीकरवाः व
रदः त्रीशुलः चक्रः कमलः एअनुक्रमीकरवाः दक्षणेपासीवषभकरवुः वाम

३५

मपासीगरुडकरवाः॥ एअदमसंकरनेभेदीकरीनेबत्रीमुर्तिः भेदीथाईः तेविशेषीदीपा
णचीकहुछी॥ ॥अथलिंगाद्दीकारः॥ आटलिंगाधातुः मयकरवाः सोनानु१ रुपानु२ तां
बानु३ कासानु४ पीतलनु५ तरुअनु६ सीसानु७ लोहनु८ एआटलींगाः एकअंगुलआदीदे
ईनी४ आटअंगुलः धातुमयलिंगकरवुः तेहनाअंगुलप्रतीनामः आवांमनोहरः श्रीमुख१
रुद्रतेज२ महोछव३ आनंद४ सुवक्षाक्षः५ श्रीभुज६ नंदीवर्द्धन७ एआटलिंगपणमी।
अनकरवुः आपपणीमात्रयोनीयुक्तकरवाः॥ ॥अथकाष्टलिंगानिः शोलअंगुलनी ४
मात्रइथकीहथः६ लगणकरवाः नवलिंगआनिशोलअंगुलः आदिदेइनीः १२८ एकसुं।
आगचीसलगणएकअंगुलनीवृद्धीकरवाः नवलिंगनामः॥ मकरंद१ मालीष्य२ पुष्क३
सीधार्थ४ दंडाध्य५ पौरव६ काम्य७ पुष्पक८ फलोद्भव९ एनवलिंगः॥ शवनीः श्रीसवी
असोकः शरसः षईरः शोपासुडीः आमलीः लिंबः रक्तांजनीः देवदारुः चापुः मद्दुडुः कग
रः अगरः मलीआगीरु॥ एतलावृक्षनालिंगकरवाः नीकंणः नीग्रथीः नकोटरूकरवी
डाळीनानकरवी॥ ॥अथपाषाणलिंगनी। एकहाथआदीदेईनीनवहाथलगणीकरवां॥
पाषाणनुलिंग॥ हथथी कुंडछुनकरवुः एकहथआदीदेईनी हेथनीचुथीचुयीभागीवधा
रवुः तेत्रीसलगईकरवाः नवहाथलीश्रीक्षयः॥ उद्भवः भवक्षयह॥ पापहरणाः पापा
रः तेजमहीतेजेमः परापरः महेश्वरः शेषरः शीवः शांतः मनोल्हादः करकरुद्रः तेजः सहांतेर
४ त्रसः वामदेवः अघोरेश्वरः॥ तत्पुरुषाः इशानमृत्युंजयः वीजयः कीरणाख्यः शास्त्रः
श्रीकंठः वसुवर्धनः पुंडरीकाः सुवक्राक्षः उमाहेश्वरः वीश्वेश्वरः त्रीनेत्रः त्र्यंबकः महाकालः
३५

३५ एनामः चारहाथनी प्रासादी एकहाथ नुलिंगज्ये एलिंग चीडुं अरोछत्री सें नवहाथ दुतु पांच आ
दी देइनीः ४५ नेच्यारलगण प्रसादी हाथनी संख्याः नेथी कुमधाम पंचमाश्रीः हाथ आदीदेइनी नव
स्यु दस्थलगण आदीदेइनीः ५४ लगण शिवालय हाथसंख्याः जाणवीः शोले अरो हाथः आदी देइ
नवहाथः लगण उत्तमः मध्यमः अधमः भाएजाणवुः भागे पंचाशनी जई उत्तमः नवांशा पंचः ४
भागमध्यमः ॥ गर्भाआ दुकन्यस जाणवुः उदयेः मोटीः लोहदीर्घः ४नाचुवीस भागे
नयाशलगण विस्तारी करवाः विस्तरनानवभागः सात आदे पितामह जाण वीभाग ८ नारा
यणभागे ७ महेश्वरः भाग ४ थुनी चुआलाम धोअ शाला वे धुवद्रम भाग पाठउ ने अर्द्दि
संकरः गर्भे अधीक ३५ शीवायतनाते मध्येभाग ८ नवलिंगकृइः जेष्ट मध्यम कनिष्ट त्रणीए
णीनेस्ते हनाः मंदिरः नगरः नगरमानकदंडग भ्यः ३६७ भाग दशांश द्वीवीउ भाग कहीइः म
ध्यमः अंशः उत्तमः श्रीरस्तु ॥

ऋषभनाथः १॥ पुर्वाषाढनक्षत्रेः २० धनरासी ९ साढिउवाहनः सुवर्णनुवर्ण	अजितनाथ २ रोहिणीनक्षत्रे ४ वर्षरासी २ हस्तीवाहन ३ सुवर्णइवर्ण ४	संभवनाथ ३ मृगसीरनक्षत्रेः ५ मिथुनरासीः ३ अश्ववाहनः सुवर्णनुवान ४	अभिनंदननाथ ४ पुनर्वसु नक्षत्रे ७ मिथुनरासी ३ वानरवीहनः सुवर्णनइवाणी	वृषचक्रनामाक्षे पास १ अक्ष २ बीजोरु ३ वरद ४ स्वेतवर्णः ५ वषरुढ ६	महानामयक्ष २ पास १ अंकुश २ उभय ३ वरद ४ शंष ५ चक्र ६ गदा ७ पाश ८
त्रीमुखनामायक्ष ३ फरसी १ अक्ष २ गदा ३ चक्र ४ शंष ५ वरद ६ रयामवर्णत्रीमुख	चतुराननामायक्ष ४ नाग ॥१॥ पाशः २ वज्र ३ अंकुश ४ हंसवाहन	चक्रेश्वरीः १ वज्र १ वज्र २ बीजोरु ३ उभय ४ पद्मासने ५ गरुड वाहने ६ स्वेतवर्ण	रोहिणी देवी २ संष १ चक्र २ उभय ३ वरद ४ लयरपाअसने ५ रथवाहने ६	प्रज्ञावेताः ३ उभय १ वरद २ फल ३ अर्द्धचक्र ४ फरसी ५ कमलासने	वज्रश्रृंखला ४ नाग १ पास २ अक्ष ३ वरद ४ सिंहवाहनः

वाः उदरवाहन

३२

सुमतीनाथ ५ माघानक्षत्र १० सीहरासी ५ क्रोंचवाहन सुवर्णवर्ण	प्रभाप्रभनाथ ६ चित्रानक्षे १४ कन्यारासी ६ कमललछन रक्तवर्ण	सुपार्श्वनाथ ७ वीसाषानक्षत्र १६ तुलाराशी ७ सुवर्णवर्णः स्वास्तिकलंछन	चंद्रप्रभनाथ ८ अनुराधानक्षत्र १७ वृश्चिकराशी ८ स्वेतवर्णः चंद्रलांछन	सुवीधीनाथ ९ मुळनक्षत्र १९ धनराशी ९ स्वेतवर्णः मगरवाहन	कुबेरनामायक्ष ५ सप्प १ फल २ सप्प १ वरद ४ गरुडवाहनः
कुशमाखनामायक्ष ६ गदा १ अक्षमाला मृगवाहन	मातंगनामायक्षु ७ गदा १ पास २ मेषवाहनः	वीजयनामायक्ष ८ फरसी १ पास २ उभय ३ वरद ४ कपोलवाहनः	अजितायक्ष ९ शक्ती १ अक्ष २ फल ३ वरद ४ कूर्मवाहनः	पुरुषदत्ता ५ वज्र १ चक्र २ फल ३ वरद ४ गजवाहनः	मनोवेगा ६ चंद्र १ शंष २ फल ३ वरद ४ अश्ववाहनः
कालिकाः ७ घंटा १ त्रिसुल २ फल ३ वरद ४ पद्मासनः वृषभवाहनः	शांतामालिनी ८ त्रिशुल १ पाश २ अंकुश ३ धनुष ४ बाण ५ चक्र ६ वरद ७ उभय ८ महीषवाहन	मीहकाली ९ वज्र १ मुद्गर २ फरसी ३ उभय ४ कूर्मवाहनः	शीतलनाथ १० पुर्वाषाढनक्षत्रे २० धनराशीः ९ सुवर्णवर्ण श्रीवत्सलांछन	श्रेयासनाथ ११ श्रवणनक्षत्रेः २२ मकरराशी १० सुवर्णवर्ण गेंडवाहनः	वासुपुज्यस्वामी १२ शतभीषानक्षत्रे २५ कुंभराशी ११ रक्तवर्णः महीषारुढः
वीमलनाथ १३ उत्तराभाद्रपदनक्षत्र २६ मीनराशी १२ सुवर्णवर्ण [illegible]वाहनः	अनंतनाथः १४ रेवतीनक्षत्र २८ मीनराशी १२ सुवर्णकवर्ण सीचाणवाहन	ब्रह्मानामायक्ष १० पास १ अंकुश २ उभय ३ वरद ४ चतुर्मुखः हंसवाहन	ईश्वरनामायक्ष ११ त्रीशुल १ अक्षर २ पास ३ वरद ४ वृषवाहनः	कुमारनामायक्ष १२ धनुष १ बाण २ फल ३ वरद ४ मोरवाहनः	षणमुखयक्ष १३ धनुष १ बाण २ फल ३ वरद ४ चक्र ५ चक्र ६ कमलवाहन
पातालनामायक्ष १४ पास १ अंकुश २ ध नुष ३ बाण ४ वर द ५ त्रीमुख ६ कमलवाहन	मानवीः १० पाश १ अंकुश २ फल ३ वरद ४ शुकरवाहन	गौरी ११ पाश १ अंकुश २ पद्म ३ वरद ४ मृगारुढ	गांधारीः १२॥ पद्म १ पद्म २ फल ३ वरद ४ मकरारुढः	वेरोधः १३ सर्प्प १ सर्प्प २ खड ग ३ षेटक ४ धनुष ५ बाण ६ गोहवाहनः करधृतापर्यंतः २	अनंतमातादेवी १४ धनुष १ बाण २ वरद ३ उभय ४ हंसरुढः

३६

धर्म्मनाथ १५ पुष्पनक्षत्रः ३८ कर्कराशी ४ सुवर्णवानी गजलांछन	शांतीनाथ १६ भरणीनक्षत्र ३२ मेषराशीः १ सुवर्णवानः मृगवाहनः	कुंथनाथ १७ कृत्तीकानक्षत्र ३ वृषराशी २ सुवर्णनईवान छागलांछन	अरनाथ १८ रेवतीनक्षत्र २८ मीनराशी १२ सुवर्णनईवानी नंदीलांछन	मल्लीनाथ १९ असवनीनक्षत्र १ मेषराशी १ नीलवर्णः कलशलांछनः	किन्नरनामायक्ष १५ वज्र १ अंकुश २ धनुष ३ वरद ४ फल ५ वरद ६ मच्छवाहन
गरुडनामायक्ष १६ पास १ अंकुश २ फल १ वरद ४ शुकवाहन	धननामायक्ष १७ पद्म १ उभय २ फल ३ वरद ४ शुकवाहन	क्षेत्रपालनामायक्ष १८ वज्र १ चक्र २ धनुष ३ बाण ४ फल ५ वरद ६ कमलवा हन	कुमारनामायक्ष १९ पाश १ अंकुश २ फल ३ वरद ४ चतुर्मुखः ५ सीहवाहनः	मानसी १५ त्रिशुल १ पास २ चक्र ३ डमर ४ फल ५ आप्रवाहनः	महामीनसी १६ शर १ शारंग २ वज्र ३ चक्र ४ गरुडवाहनः
जयादेवी १७ वज्र चक्र २ पाश ३ अंकुश ४ फल ५ वरद ६ शुक रारूढ	वीजयादेवी १८ वज्र १ चक्र २ फलसर्प ४ सीहरूढ	अप्राजितादेवी १९ षडग १ षेटक २ फल ३ वरद ४ अष्टपादः	मुनीसुव्रतस्वामी २० श्रवणनक्षत्र २३ मकररासी १० १५ कृष्णवर्णः कुर्मलांछनः	नमीनाथः २१ अस्विनीनक्षत्र १ मेषराशीः १ सुवर्णनईवान नीलोत्पलदल	श्रीनीमीनाथ २२ चित्रानक्षत्र १४ तुलाराशीः ७ श्यामवर्णः शंखलांछनः
श्रीपार्श्वनाथः २३ वीसाषानक्षत्र १६ तुलराशीः ७ नीलवर्णः फणीलांछनः	महावीरः २४ उत्तराफाल्गुन १३ कन्याराशी ६ सुवर्णवर्णः सीहवाहनः	वरुणनामायक्ष २० पाश १ अंकुश २ धनुष ३ बाण ४ सर्प ५ वज्र ६ चक्र ७ उभय ८	भृकुटीनामायक्ष २१ त्रिशूल १ शक्ती २ वज्र ३ वज्र ४ नीलोत्पलवाहन	गोमेधनामायक्ष २२ धनुष १ बाण २ फाउग ३ मुद्गर ४ फल ५ वरद ६ त्री मुखसर्पवाहन	धरणेंद्र २३ धनुष १ बाण २ फाउ ३ मुद्गर ४ वरद ५ फल ६ त्रीमु खसर्पवाहनः
मातंगयक्ष २४ फलो १ वरद २ गजवाहन	बहुरूपी २० षडग १ षेटक २ सर्प्यारूढ	चामुंडा २१ त्रीशुल १ षडग २ मुद्गर ३ पाश ४ व ज्र ५ चक्र ६ डमरु ७ अक्षमालः कमलवाहे ८ ने	अंबिका २२ फल १ वरद २ आम्रप्रवेण शोभाः यथमान वाहनस्यसीहे	पद्मावती २३ पाश १ अंकुश २ पद्मवरद ४ पद्मासनः कुर्कुटवाहनः	सीद्धायका २४ पुस्तक १ उभय २ भद्रासनरूढ

३६

38

६०॥ ॐनमः॥ श्रीविश्वकर्मउवाच॥ ॥अरूपंरूपमाकारं विश्वरूपंजगत्प्रभुः केवलंज्ञानमूर्ति
श्वः वीतरागोजिनेश्वरः॥१॥ द्विभुजंचैकवक्त्रंचः बद्धपद्मासनस्थितः जीयमानंपरंब्रह्मः जैनमू
र्तिजगद्गुरुः॥२॥ नामानीगुणमाश्रतः प्रयुक्तंवासुदेवादिभिः चतुर्विंशतिरीषभादेः वर्द्धमानंतकस्त
था॥३॥ ऋषभादीपरीवारेः दुरकादीवर्णशंकरेः नसमाःगुलसंख्यचः प्रतीमामानकर्म्मणी॥४॥ उ
पविष्टपदेवक्षाः कुर्द्दस्याप्रतीमाभवेतुः द्वीविद्याजयदाप्रस्थाः पर्यंकासनमादीशोतः॥५॥ वा
मेदक्षणजंघोर्वाः उपर्यहिकरोपिचः दक्षणेवामजंघोर्वाः तत्पर्यकाशनेशुभं॥६॥ वसोर्द्धचा दे
र्वकिः ह्वानलकभुजद्वयंः श्रीवत्सलक्ष्मीकयुक्तेनः छात्रादीपरिवारितै॥७॥ अन्योन्यजानुस्कं
धांतं तिर्यक्सुत्रंनीपतीनातुः केशांचलयोर्मध्येः सुचेकाचतुरश्रकं॥ बांकी वीतुरूपंशांस
ही॥९॥ उर्द्धमानमष्टोत्तरस्तातः अजलंविश्वकर्माणाः उद्धोर्चाप्रतीमामानंः मासीनंचअथश्रृणु
॥१०॥ पंचतालंशमुत्रोर्धंः चतुस्तालंचविस्तरंः तालेकंचविभक्तादौः अंगुलानंचतुर्दशः॥११
तेनांगुलप्रमाणेनः षद्यांचाशमुच्छ्रितंः विस्तरंतत्प्रमाणेनः द्वीभजयेविचक्षणः॥१२॥ अ
ष्टेतेअंगुलानांचः यन्मानंयस्यकारयेतः आसीनंप्रतिमामानंः षद्यांचाशविभाजितः॥१३॥
भालंनाशाहनुग्रीवाः उनाभीगुह्यहस्तकेः जानुजंघास्तथापादेः नवांगास्यानिकानिच॥१४
चतुपंचचतुर्वन्हिः दीकुचैवचतुर्दशः चतुचतुस्तथानाभोः पुनराष्टोक्रमेणतः॥१५॥ इस्ते
तेनवांगानीः अंकस्थानानिपुर्वतः लयोर्द्धस्यमानाकंः उर्द्धत्रिहृास्वरूपकंः वर्तमं नाकथयो॥ अ
क्षमीः अंगुलानांयथाक्रमैः मुखंजक्षंगुलंचैवः द्विभुजयेविचक्षणः॥१७ वेदांगुलंललाटं
चः नाशीकापंचमंगुलंः हनुकांगुलचत्वारीः उष्टशापादमेवचः॥१८॥ अधरेचसपादंच
साद्धांगुलबदीभवेतः त्र्यंगुलभवेत्ग्रीवाः हृदयंदमंगुलं॥१९॥ चतुर्दस्यस्वधा॥

36

धर्मनाथ १५ पुष्यनक्षत्रः ३८ कर्करासी ४ सुवर्णवानी गजलांछन	शांतीनाथ १६ भरणीनक्षत्र ३२ मेषरासीः १ सुवर्णवानः मृगवाहनः	कुंथनाथ १७ कृतीकानक्षत्र ३ वृषरासी २ सुवर्णनईवान छागलांछन	अरनाथ १८ रेवतीनक्षत्र २८ मीनरासी १२ सुवर्णनईवानी नंदीकलांछन	मल्लीनाथ १९ असवनीनक्षत्र १ मेषरासी १ नीलवर्णः कलशलांछनः	किन्नरनामायक्ष १५ वज्र १ अंकुश २ धनुष ३ वरद ४ फल ५ वरद ६ मछवाहन
गरुडनामायक्ष १६ पास १ अंकुश २ फल १ वरद ४ शुकवाहन	धननामायक्ष १७ पद्म १ उभय २ फल ३ वरद ४ शुकवाहन	क्षेत्रपालनामायक्ष १८ वज्र १ चक्र धनुष ३ बाण ४ फल ५ वरद ६ कमलवा हन	कुमारनामायक्ष १९ पाश १ अंकुश २ फल ३ वरद ४ चतुर्मुखः ५ सीहवाहनः	मानसी १५ त्रिशुल १ पास २ चक्र ३ डमर ४ फल ५ व्याघ्रवाहनः	महामीनसी १६ सर १ सारंग २ वज्र ३ चक्र ४ गरुडवाहनः
जयादेवी १७ वज्र चक्र २ पाश ३ अंकुश ४ फल ५ वरद ६ शुक रासरूढ	वीजयादेवी १८ वज्र १ चक्र २ फल सर्प ४ सीहरूढ	अप्राजितादेवी १९ षडग १ खेटक २ फल ३ वरद ४ अष्टपादः	मुनीसुव्रतस्वामी २० श्रवणनक्षत्र २३ मकररासी १० १५ कृष्णवर्णः कुर्मलांछनः	नमीनाथः २१ अस्विनीनक्षत्र १ मेषरासीः १ सुवर्णनईवान नीलोत्पलदल	श्रीनीमीनाथ २२ चित्रानक्षत्र १४ तुल्यरासीः ७ नीलवर्णः संखलांछनः
श्रीपार्श्वनाथः २३ वीसाषानक्षत्र १६ तुलरासीः ७ नीलवर्णः फणीलांछनः	महावीरः २४ उत्तराफालगुन १३ कन्यारासी ६ सुवर्णवर्णः सीहवाहनः	वरुणनामायक्ष २० पाश १ अंकुश २ धनुष ३ बाण ४ सर्प ५ वज्र ६ चक्र ७ उभय ८	भृकुटीनामायक्ष २१ त्रिशूल १ शक्ती २ वज्र ३ वज्र ४ नीलोत्पलवाहन	गोमेधनामायक्ष २२ धनुष १ बाण २ फाउग ३ मुद्गर ४ फल ५ वरद ६ त्री मुखसर्पवाहन	धरणेंद्र २३ धनुष १ बाण २ फाउ ३ मुद्गर ४ वरद ५ फल ६ त्रीमु खसर्पवाहनः
मातंगयक्ष २४ फल १ वरद २ गजवाहन	बहुरूपी २० षडग १ खेटक २ सर्प्यारुढ	चामुंडा २१ त्रीशुल १ षडग २ मुद्गर ३ पाश ४ व ज्र ५ चक्र ६ डमरु ७ अक्षमालः कमलवाहे ८ न	अंबिका २२ फल १ वरद २ अन्नप्रवेण शोभाः यथमान वाहनस्यसीह	पद्मावती २३ पाश १ अंकुश २ पद्मवरद ४ पद्मासनः कुर्कुटवाहनः	सीद्धायका २४ पुस्तक १ उभय २ भद्रासनरूढ

६०॥ ॐनमः॥ श्रीविश्वकर्मउवाच॥ ॥ अरूपं रूपमाकारं विश्वरूपं जगत्प्रभुः केवलज्ञानमुर्ति
श्वः वीतरागोजिनेश्वरः॥ १॥ द्विभुजं चैकवक्त्रं चः बद्धपद्मासनस्थितः जीयमानं परं ब्रह्मः जैनमु
र्तिजगद्गुरुः॥ २॥ नामानीगुणमाश्रतः प्रयुक्तं वासुवेदिभिः चतुर्विंशतिरीषभादैः वर्द्धमानंतकस्त
था॥ ३॥ ऋषभादीपरीवारैः दुरकदीवर्णशंकरैः नसमागुलसंक्षचः प्रतीमामानकर्मणी॥ ४॥ उ
पविष्टपदेवक्षाः कुर्द्धस्याप्रतीमाभवेतुः द्वीविद्याजयदाप्रस्याः पर्यकासनमादीशेतः॥ ५॥ वा
मेदक्षणजंघोर्वाः उपर्यहिकरोपिचः दक्षणेवामजंघोर्वाः तत्पर्यकाशनंशुभं॥ ६॥ ऊर्ध्वसोर्द्धवा दे
विकः द्वानलंकभुजद्वयंः श्रीवत्सेक्षीकयुक्तेनः छत्रादीपरिवारितेः॥ ७॥ अन्यो ६न्यजानुस्कं
धांते तिर्यकुसुत्रंनीपतीनातुः केशांचलयोर्मध्येः सुचेका चतुरश्रकं वा कीचीतुरूपं शशांस
ही ९ उर्द्धमानमष्टोत्तरशतः अजते विश्वकर्मणा ः उद्भोर्ध्वप्रतीमामानंः मासीनंच अथश्रणु
॥ १०॥ पंचतालंशमुत्रोधंः चतुस्तालंच विस्तरंः तालेकंच विभक्तादौः अंगुलानंचतुर्दशः ११
॥ १०॥ तेनांगुलप्रमाणेनः षद्याचाशमुछ्रितंः विस्तरंतत्प्रमाणेनः द्वीभजयेविचक्षणः॥ १२॥ अ
ष्टेतेअंगुलानांचः यन्मानंयस्यकारयेत्ः आसीनंप्रतिमामानंः षद्यंचाशविभाजितः॥ १३॥
भालंनाशाहनुग्रीवाः उनाभीगुह्यहस्तकेः जानुजंघास्तथापादेः नवांगास्यानिक्रान्चि॥ १४
चतुपंचचतुर्वन्हिः दीकुचैवचतुर्दशः चतुचतुस्तथानाभोः पुनरास्टोक्रमेणतः॥ १५॥ इस्ये
तेनवांगानीः अंकस्यानानिपुर्वतःलयोर्द्धस्यमानाकंः उर्द्धाश्रद्वास्वरूपकंः वर्तन्नाकथयो।
जे तेनवांगानीः अंकस्यानानिपुर्वतःलयोर्द्धस्यमानाकं उर्द्धाश्रद्वास्वरूपकं वर्तन्नाकथयो।
क्षमीः अंगुलानांयथाक्रमैः मुखंजक्षंगुलंचैवः द्विभजयेविचक्षणः १७ वेदांगुलंललाटं
चः नाशीकापंचमंगुलंः हनुकांगुलचत्वारीः उष्टशापादमेवच॥ १८॥ अधरेचसपादंच
सार्द्धांगुलबरीभवेतः त्रयंगुल भवेत्ग्रीवाः हृदयं दमंगुलं॥ १९॥ चतुर्दस्यस्वधा।

पादपक्षप्रमाणंच: अंगुलानां अष्टादश: द्वादशांगुलमध्ये च: स्तनगर्भं विधीयते:

३७ नाभौ: चतुर्गुल्यं प्रकीर्तितां: करं च चतुरंगुल्यां: अष्टपादौ प्रकीर्तिता ॥२०॥ इत्येतेक थितं चैव।
षधंचासमुच्छ्रितं: तस्यार्द्ध प्रकर्कैं र्तव्यं: आशानं मष्टमंगुलं ॥२१॥ उष्णीक षडंगुलं तत्र: केशां
तो परिसस्तथा: उछ्रितं च मयाख्यातं: वीस्तारंच आत: श्र: २२ वक्त्रं विस्तारमानेन: अंगुलानां द
श पंचशा: भालील गुलं चाष्टे: नेत्रं चैवाष्ट मंगुलं ॥२३॥ नाशीकाग्रे मंगुलकं: फोरणो त्रयमंगु
लं: नेत्र अंगुल चत्वारी: द्वी अंगुमुदयं भवेत् ॥२४॥ द्वय गुलं भवो मध्ये: पुष्पबाणमदो कुटे
चं बुकी गुले च चत्वारी: बटीवीचा रिमेव च: ॥२५॥ ग्रयादस गुलं ज्ञेयं: क्षोभन त्रयमंगुलं
सार्द्ध अंगुल द्वयोष्टौ: सार्द्ध गुल वटी भवेत् ॥२६॥ कक्षा बाह्ये प्रकुर्तव्या: द्वावीशतीमंगुलं बु
ध: कटी विस्तारमानं च: अंगुलाणां च षोडस स्तनगर्भं विधीयते ॥२७॥ अष्टंगुल बाहु विस्तरं ।
सप्तांगुल अग्र: स्तथा: करतलं अष्टादशांगुल: दीर्घंतत्र करयेत् ॥२८॥ विस्तारं अष्टांगु
लं तत्र: शालकं चतुरंगुलं: बाहग्रे पंचांगुलं ज्ञेयं: षडंगुल तत्र मस्तकं ॥३०॥ षसीकाद्वीयं
गुल ज्ञेयं: कंठ श्च वाम दक्षिणे। नवांगुल भवेत्स्तौ: द्वीस्तरं चाष्टमंगुलं ॥३१॥ चाष्टांगुलं
च वेस्यादे: दीर्घदश पंच च: द्वीस्तारं मस्तके: कर्णनाशा गूलतथां: पीडं श्चैव दशांगुलं ॥३२
चतुरंगुलं कर्णपीठ: मुरं कुर्यात् द्वयंगुलं: द्वादशांगुल क्षोभं चे: उदराग्रे श्चैव नीग्रम: ॥३३॥
शमोसलंती कर्तव्यं: स्वरुपं लक्षणान्वितं: एषां युक्ती विधातव्यं: प्रतीमामाण कर्मणि: ॥३४॥
एकल्पेक थितं चैव: कर्तव्यं शास्त्रपारगा: पुर्वमानप्रमाणं च: कर्तव्यं विधीपुर्वकं ॥३५॥ अ
न्यथा च न कर्तव्यं: मानहीनं न कारयेत् ॥३६॥ क्रयते च बहवो दोषा: सिधी तत्र न जायते
३७॥ न दोषा जायमानस्य: शील्पदोषो महद्भयं: इति श्री प्रतिमा प्रमाण: समाप्त: ॥ सीधा
सनं अंगुल ॥ ८४॥ यक्ष अं० १४ सह अं० १२ हस्ती अं० १० थाभी अ० २ चामुंडानी मुरत्य: सप्प १

३६

वर आपतु: डमरु २ चक्र ३ वत ४ गदा ५ अंकुश ६ सर ७ त्रीशुल ८ कसी ९ चामुंडानी मुरत: सप्प १
घंटा २ अंगुलीय ३ तु ३ बाण ४ सक्ती मुमाथ ५ पास ६ शिव ७ शंष ८ कपाल ९ षपर १० चामुंडानी।
मुर्ति: सीघासन अंगुल: ८४ यक्ष अं० १४ सह अं० १२ हस्ती अं १० थांभी अं० २ पुन अं० २ देव
ती अं० ८ गजा अं० १० सीह अं० १२ यक्षणी ली अं० ५ इति संहासनका सगाउ उदी अं० ५० पाव
डी अं० ८ कासगायुजावी अं० ३० आसने स: २ मनाली आ अं० १० वीस्तार अं० २२ हथासुडी अं०
६ थाभी अं० २ इति कासीगीउ: छत्रु दुवीस्तर अं० ८४ अं० ६ मगरु अं० १६ तीलकउ अं० ५ मा
लाधरी अं० २० भामंडले: बीजीपासा एतलु उदी अं० ५ भामं उ अं० २२ अं० १० छत्रविस्तर।
अं० २० ननगमं अं० १२ वाजीत्री आ अं० १० हासली अं० ७ पानउ अं० बीह मुहाली काशीगीयु
स्तनगर्भ: द्वाष्टीछेत्र अं० २० विस्तारी अं० १० उदी अं० १२ निर्गम: इति छत्रु रामाननीबनुप
ग रीरनुमान: छ: एकांगुले भवेत् श्रेष्ठां: द्वी अंगुलधननाशनं: त्री अंगुले भवेत् वृधी: वर्जयेच्च
तुरांगुलं: १ पंचमांगुल भवेत् वृद्धी: उद्वेगं तु षडंगुलं द्वा: सप्तांगुले भवो वृद्धी: हीनं अष्टगु
लं सदा: २ नवांगुलं च पुत्रय: द्रव्य हीनं दशांगुलं: एकादशांगुलं बिंबस्या: सा द्वैका मार्थसिद्धीदं:
३ एतत्प्रमाण विक्षातं दुर्द्व प्रसादकं पुन: उर्द्ध दकु द्रव्यनाशाय: दुर्भिक्षाय कृशोदरी: जंघाहीनं
भवेत् भास्: आचार्यक ढिधातिना: अधोहीनानी दु:खाय: शल्पास्य भोग वर्जित: ५ वक्र
नाशा दारिद्र्य: करषीणे नृलोपमा: कणे लंछे कुलंयांति: ६ भालेन खमुखं चैव: वीशालेत्री
पदक्षयं: चतुरश्र भवेद्दीनं: नाभालंबे कुलक्षयं: लंबकाशीवियोगं च: सौम्य सर्वार्थसाध
कं ७ इति जयो वाच: ॥ श्री विश्वकर्मानुवाच: ॥ विश्वकर्माणोक्तं: चैत्यालये प्रतिमा स्थापना
नीर्णय विधी लीख्यते: ८ श्री पुर्वाचार्य उक्तं: नित्यं देवगृहस्थाने: गतव्यं पुर्णपाणी भी: विधेयं

३८ स्तत्र चातुर्य ज्ञाना भ्यासो ववेक गीः ॥१॥ अशस्त्र गुरु देवानां मर्धनं पुन्य तेसतीः रोगादिभिः पुनर्न
स्यात्तः यदीतन्न्यैव दोष कृतः ॥ २ ॥ कुप्रवृत्तीस्त्रिधात्यक्ताः दृत्तो तीश्च प्रदृक्षणाः देवस्या चा
त्रिधा हस्तः तं धायतः सिद्धीदं श्रुधी ॥ ३ ॥ अर्चा ग्रष्टि भीरयात्योः विश्वतीर्त्राथ भसुरः नी संस
र विकारश्वः या देव सततं तनः ॥ ४ ॥ उपवीष्टस्य देवस्योः द्रस्ये वा प्रतीमा भवेतः द्वीवधा वियुता
वस्थाः पर्यकासनिमादिमा ॥ ५ ॥ वामदक्षिण जंघोर्वोः स्तसर्या कासनं मत ॥ ६ देवस्या द्रस्य चा
र्चा स्यातुः जानुलंबु भुज द्वयः श्रीवत्सोह्मी घयुक्तो द्वेः छत्रा दीः परिवारितेः छत्रयत्र येच नारा
श्रोः तारी सद्वंति मंभवेतः नात्रा भालंत यो मध्योः कपाल वेध कं तु पुनः ॥ रक्षतीव्य परीवा
रेः दृषदाव लिंगं करः मत्रां मांगुल संखष्टा प्रतीमा मानकर्म णि ॥ ९ ॥ सुत्रं यानुद्वये तीयगः
दृथानाभो चकं बुकोः प्रतिमाया प्रतीत्रीरोः भवे दृष्ट दशांगुलः ॥ १० ॥ अन्येषां जानुस्के धा
तुः तीय गुरुत्र निपातितः केशांतीश्च यो तस्यां तोः स्तद्यैकाः चतुरश्रता ॥ ११ ॥ नवतालं भ
वेद्रूपं तालश्च द्वादशांगुलं अंगुलानि नकं वायः केतुरु पस्य तद्वही ॥ १२ ॥ उद्वस्थं प्र
तिमो मानं षट्पंचा सद्विभागतः ॥ १३ ॥ चतुः पंच चतुष्ट न्हीः सुयोद्वा द्वी जीनाश्चये ॥ जी
न ष्टथश्च मानीकाः उधे दूधे सुरूपके ॥ १४ ॥ भालनासा हनुग्रीवाः हन्या भी गुरुय मुल्के
जानुजंघा द्विचेत्येकः दशांक स्थान कानितुः ॥ १५ ॥ भालनासा हनुग्रीवाः उनो भीगुह्य
जानुचः अष्टो वासीन वीवस्यां कानां स्थाना नीपुव वतुः ॥ १६ ॥ अतीता ब्दशतयत स्यां ३८
तुः यच्च स्यापीत तरशलशलः आसीनं प्रतिमा मानं उदधातु लेप्यादी जं बीबं व्यंग संस्का

४०

र मुस्तिः काष्ट पाषाण निष्पतीः संस्कारा दू पुनर्नहीः ॥ १८ ॥ नरवांगुल्ली बाहुनाशोः द्रणं भं
गे व्यनिक्रमा तुः शत्रुभ्यो देश भंगश्चः बंधुकुल धनक्षयं ॥ १९ ॥ पीठ पान परीवारं ध्वत्रो
सतियथा क्रमंः गज वाहन भस्यानां नाशो भवती निश्चितं ॥ आनभे कां गुलु बी बः याव देकद
शांगुलं गृहेषु पुजे द्वीबंः उर्द्ध प्रासा द गं पुनः प्रतीमा काष्ट लेप रमः दंत त्रित्र य सा गृहो भमो
धी का परीवारं रहिता नैव पूजयेत् ॥ रौद्रीनी हंति कर्तार मधिकांगानु शिल्पिनां चः कृशा द्र
व्यविनाशायः दुर्भिक्षा कृशो दरीः २३ ॥ वक्र नाशा तीदुस्कयः ह्रस्वां गा क्षयकारणीः अने
त्रा नेत्र नाशायः स्वल्पास्या तु भोग वर्जितः ॥ २४ ॥ जायते प्रतीमा हीनं कटीराचार्य धाता
नीः जंघाहीन भवेद्भ्राता पुत्र मित्र विनाशीनी ॥ २५ ॥ पाणीपादा वीहीनां तु धन क्षय
विधायनीः चिर पुर्युषिता चातुः आहर्ता व्याय तस्ततः ॥ २६ ॥ अर्थहीन प्रतीमो तो नां चि
ता हेतु रधो मुखीः अधीप्रदा नरश्चनीः नीचो वस्या विदेशजे ॥ २७ ॥ अन्याय द्रव्य निष्पन्नाः
परवास्तु दलोद्भवाः हानांधी कांगी प्रतीमाः स्वयरोन्नती नाशनीः ॥ २८ ॥ प्रासाद रूयभाग
स्य समान प्रतीमा मतः उत्तमाया कृते शांतुः कार्यैको नाधी कं गुलः ॥ २९ ॥ अथवा स्व दशां
शेनः दीनस्याप्याधिकस्य चः कायो प्रासाद पादस्यः शाल्पीभीः प्रतिमा शुभाः ॥ ३० ॥ सर्वषां
मपि धातुनांः रत्न स्फाटिकयोरपीः प्रवाल स्य चबिब पुः चैत्य मानं पदृच्छाः ॥ ३१ ॥ प्रासादगर्भ
गेहार्धभीत्तीतः पंचधा कृतेः यक्षाद्या प्रथमे भागेः देवस्यर्वाद्यीयके ॥ ३२ ॥ जीनार्क स्कं
धकृष्णानां प्रतीमास्यु स्तनीयकेः ब्रह्मानु नर्य भागस्यः लिंग मासे स्यः योय मे ॥ ३३ ॥ द्रीया
द्रव्यनाशायः तीयत्र भोगाय दीनयः दुषदास्तर्य गृहस्थस्याः दधो मुखा कुलनाशीनी ॥ ३४ ॥

३५४

३८ द्वारशाषाष्ट भिर्भागेः रथपक्षौ द्वीतीयके: मुकुष्टविभागांचः यो भागसप्तमं भवेत्: ॥ ३५ ॥ तस्या
पीसप्तमे भागे: गजाशस्तत्र संभवेतुः प्रासादप्रतिमा दृष्टीः नेयो ज्यास्तत्र शील्पिभिः ॥ ३६ ॥ इति
श्रीप्रतिमा विचारः श्री विवेक विलसमध्ये नारदोवाच: कीविभागो ष्टीतावाप्ती: कीमेविस्तार
वर्तते: किमेहस्तौ कीमेपादौ: किमेवदनानरी क्षते ॥ १ ॥ विश्वकर्मोउवाच ॥ प्रासाद माने भवेतु दर्थाः द्वा
र माने विशेषतः: प्रमाणं कथ्यते पुर्वो: विभागेच अथ श्रुणु: प्रतिमा विस्तार मानेन: शृणुतेच तुरांश
कं: तत्रांशे प्रकुर्वीत: अंगुलानांच तुर्दश ३ तेनांगुल प्रमाणेन: षट्पंचाशस मुछयं: वीस्ता
रे तप्रमाणेन: कर्तव्यं सर्वकामदः मस्तकं प्रछूयं काय अष्टांगुल: प्रमाणेन: पादं गुष्टांगुलं प्रो
क्तो: करतुल्यं चतुरांगुलः ५ गुल्यं चतुरांगुलं चक्षुः तेन गर्भ चतुर्दशः हृदयं त्रयो दशांच के: केशां
तं चत्त त्रयदशः ६ ललाट चशे भागे: नासीकापंच मेवचे: अंगुल हो ष्टमध्ये च: अष्टांगुल महो
ष्टकः ७ मुहोष्टयद्दामध्ये: अंगुलीक प्रवेशायो: अर्द्धांगुल मध्यरोष्टो च: ह उबटीच द्विरांगु
लं: ८ एवं भवेत्षट् पंचम्यां: उछ्रयं च विशेषत: उत्तेषडांग स्तत्रः केशांतापरीस्थीतः ९ च अ
विस्तर मानांच: अंगुलानीच तुर्दश: ग्रीवा दशांगुलं प्रोक्तो: स्तनगर्भच द्वादशः १० कक्षव
त्यं प्रकुर्वीत: द्वावीशांग भे भावये त: कटी विस्तार मानं च: अंगुलानां षोडस: ॥ ११ ॥ बाहुं प
क्षौ प्रमाणं च ॥ अष्टादशां अंगुलस्तथा ॥ बाहौ विस्तारतः प्रासाः अष्टांगुलांच मुद्रकं
॥ १२ ॥ सप्तांगुल अग्रस्थाने: कर तुल्या अष्टादशः दीर्घलत्र प्रकर्तव्यं: चीस्तर अष्टांगुला
नीच ॥ १३ ॥ द्रुलकं चतुरो भाग: बाहुग्र चतुरांगुलं: मछेक सप्तासार्द्धच: घसीकाचा ३८
द्विरांगुलं ॥ १४ ॥ आसन अष्टाविशत्यां: षोडशांगुल मस्तके: कर्णनासाग्र कर्तव्यं क्षोचस ३९

४१

शांगुलं: १५ चतुर्द्दशांगुल कर्तव्यं: कुयो च द्वीशांगुलं: चक्षु चतुरांगुल प्रोक्तं: चलाग्र्य ग्रे द्वीशां
गुलं: १६ नासीका स्कंध भागे च: अग्रच सार्द्धमांगुलं: ललाटं हृबटीनेतु: क्षोभनं त्रय मांगुलं:
॥ १७ ॥ गल्वं दशांगुलं ज्ञेयं: शेषांलक्षण मेवच: श्रीवत्स पंचभागं च: त्रीभागं चोरास्तनं १८ नि
र्गमं त्रय भागं च: बदीबदी द्वय मेवच: कटी बाहुक्षणं पक्षौ: अंगुलं त्रय थीमता: ॥ १९ ॥ द
शापंच भसाद: अंगुलं पादमद्वयं इद्वी भागमुशायं च: विस्तरे द्वय मेवच: ॥ २० ॥ गर्भ
स्थान व भाप सो: हस्ताग्र द्वयमेव च ॥ द्वादशो स्थिता जंघा: अग्रेच पीष्टमेवचे ॥ २१ ॥ स्तथाग्रे
पंचयले न: चतुरांगुलमनाच: षोभीषड्भिर्भागै: वामपादेच मध्यकः ॥ २२ ॥ उलकोरे
लपुछे असयं रुमाकाश: विश्व तपं जगत्प्रभो: कशली ज्ञानमुर्तिच: वीतरागो जिनेश्वरा ॥
॥ २३ ॥ इति श्री प्रासाद प्रतिमा मान विचार सप्तमं पूर्णं ॥ ॥ सके १७१८ नळ नाम संवत्सरे मा
हे आषाढ वद्य द्वीतीया शुक्रवारे तद्दिने पुस्तकं वास्तुमंजरी समाप्तं ॥ ॥ गौड ज्ञातिः
मनीराम आत्मज केशवराम तस्य पुस्तकं ॥ ॥ ॥

४१

४० श्रीगणेशायनमः श्रीविश्वकर्माउवाच वृक्षार्णवशिवप्रोक्तं क्षीरार्णवततोहरिः हरोहरा
जटंश्रेष्ठं यथकारे प्रवर्तते १ प्रासादं देवरूपं ध्यायेत पादोपादशिलास्तस्य जंघापादोर्ध्वमुच्य
ते गर्भश्चैवोदरंज्ञेयं कटिश्चकटिमेखला २ स्तंभाश्चबाहवोज्ञेया घंटाजिह्वाप्रकीर्तिता दीपः
प्राणोस्यविज्ञेयो ह्यपानोजलनिर्गमः ३ ब्रह्मस्थानेयदेतत्र तन्नाभिःपरिकीर्तितः हृदयंपिंडि
काज्ञेया प्रतिमापुरुषस्मृतः ४ पादचारस्त्वहंकारो ज्योतिस्तच्चक्षुरुच्यते तदूर्ध्वंप्रकृतिस्त
स्य प्रतिमात्मास्मृतांबुधैः ५ तलकुंभादधोद्वारं तस्यप्रजननंस्मृतं शुकनासाभवेन्नासा गवा
क्षःकर्णउच्यते ६ कायपाली स्मृतःस्कंधो ग्रीवाचामलसारिका कलशस्तुशिरोज्ञेयं मज्जा
दिप्ररसंहितं ७ मेदश्चैववसुधांविद्या प्रलेपोमांसमुच्यते अस्थीनिचशिलास्तस्य स्नायुःकी
लादयस्मृता ८ चक्षुषीशिखरास्तस्य ध्वजाःकेशाःप्रकीर्तिता ९ एवंपुरुषरूपंतंध्यात्वाचम
नसासुधीः नागराद्राविडाश्चैव लतीनाक्षाविमानक मिश्रकश्चवराहश्च सांधारेभुम्मिजस्त
था १० वीमाननागरछंद विमानपुष्पकाथवी वल्लभीफंचताकारे सिंहालोकरथारुट ११ एता
चतुर्दशाक्षाता प्रासादानांतुजातय १२ मृतकाष्टअष्टकाशैल्य धातुरत्नंभवासुधी कुर्यास्त्व
शक्तिप्रासादं चतुर्वर्गफलंभवेत् १३ इतिप्रसादजातयः एकहस्तेतुप्रासादे शिलावेदां
गुलाभवेत् द्वित्र्यंगुलाभवेत्वृद्धि यावत्दशहस्तकं १४ दशार्द्धविंशपर्यंतं हस्तेहस्ते
कमंगुलं अर्द्धंगुलाभवेत्वृद्धि यावत्हस्तेशतार्द्धकं १५ त्रतीयांशेकृतंपिंडं स्तहा ४०
र्द्धंशोभमामकं पुष्करस्ययदाकारं शिलामध्येमलंकरं १६ लहरमच्छमंडूकं मक

रेग्रासमेवचः जलसर्पसमायुक्तं शिलामध्येमलंकृतं १७ नंदाभद्राजयारिक्ता अजितावापिराजिता
शुक्लांसोभागिनीचैव धरणीनवमीशिला १८ मध्येकुर्मयदातव्यं रक्तंलंकारसंयुतं हेमतपमयंकार्यं
दृढरूप्यमयंभवेत् १९ तत्सालाथंचमासेन कर्तव्यंकूर्ममुत्तमं सकलंकारसंयुक्तं दिव्यरूपोनपू
जिता २० वस्त्रवैडुर्यसंयुक्ता इंद्रनीलमणिस्तथाः पुष्करागंचमध्यंच प्रवालंपरिष्टितं २१ नंदापूरे
प्रदातव्यो शिलाशेषप्रादक्षणं धरणीमध्यसंस्थाप्या यथाकूर्मप्रयत्नतः २२ दिक्पालंदद्यात् दिव्य बलै
वस्त्रंचशल्पितं नालिकेरफलंदद्यात् भोजनेनसमान्वितं २३ इतिश्रीविश्वकर्माकृतेक्षीरार्णवेना
रदपृच्छतेशताग्रेकूर्मशिलानिवेशगृहेप्रथमोध्यायः १ श्रीविश्वकर्माउवाच एकहस्तेतुप्रासादे
न्यरंवेदांगुलंमतं हस्तादिपंचपर्यंतं वर्धरेकैकमंगुलं १ पादोनमंगुलावृद्धि यावत्शतार्द्धहस्तकं
शतार्द्धहस्तमानेन मकरेवृद्धिमंगुलं २ मोतिचुमुष्पकांचैव रहस्ताचचतुर्थकं त्रतीयंचतदर्द्धेन व
क्तव्यंतद्विचक्षणे ३ प्रथमंनिर्गकार्यं चतुर्थांशेमहामुनिः द्वितीयंत्रतियासेन तृतीयंचतदर्द्धेन
४ प्रथमंभिटसार्द्धेन पीडवर्णामिलोत्तम तस्यपीडस्यसार्द्धेन खरशिलाप्रिचमेवच ५ विशाक्षप्र
तिक्षण्यान्ये हन्यतेचवमांमहाः सहस्रंजलसंपूर्णं मुकरेखाविहन्यते ६ पूर्जलंप्रथमंमुरं तत्रयदा
प्रहद्दया तस्यमुर्द्धंचप्रासादं कर्तव्यंचमहामुने ७ इतिश्रीविश्वकर्माकृतेक्षीरार्णवेनारदप्रच्छते
शताग्रेद्वितीयोध्यायः २ श्रीविश्वकर्माउवाच एकहस्तेतुप्रासादे पीटवेदादशांगुला हस्ता
दिपंचपर्यंतं हस्तेहस्तेपंचांगुला १ पंचार्द्धेचदशंयावत् वृद्धिवेदांगुलाभवेत् दशार्द्धविंशपर्यंतं
हस्तेचेदांगुलात्रयं २ विंशार्द्धवह्निंशादिकेंमोगुलं ३ हस्तेहस्तेकमांगुलं ३ पंचमासेततोही
नं कंन्यसंशुभलक्षणं पंचमासाधिकंचैव ज्येष्ठंतंतद्विष्यते ४ दिवावापिमहायुक्तं प्रमाणं

४१

द्वयमेवच भ्यस्त्रयेणसंयुक्तं प्रमाणंद्वयमेवच ५ मिश्रकंपीटकर्तव्यं द्वाभ्यांवाचोर्द्धथोभवेत् अष्ट
कोत्रिमहायुक्तं प्रमाणद्वयमेवच ६ एवमादिमुनेकार्यं पीटभेदमुनीश्वरं उदयंकथितंपुर्वं निर्गमंतु
अतश्शृणु ७ पिंडसार्द्धंचवैराटं वैराटंचअतश्शृणु मंडोवरंवीशभागं षटभागंपिटमेवच ८ अर्द्धभा
गेत्रिभागेवा पीटंचैवनियोजयेत् स्थानमानश्चयाज्ञात्वा तत्रदोषोनविद्यते ९ इतित्रतीयोध्या
यः३ श्रीविश्वकर्माउवाच एकहस्तेतुप्रासादे त्रयस्त्रिंसांगुलोदयः द्विहस्तेमुदयंकार्यं द्वहस्तेसप्तमं
गुलं १ त्रिहस्तेचयदामानं दधिकंपंचमंगुलं चतुर्हस्तोदयंकार्यं मेकेणाधिकमंगुलं २ विस्तरस्यस
मंकार्यं पंचहस्तोदयंभवेत् षटहस्तोदयंकार्यं शून्यंचद्वयमंगुलं ३ उदयंसप्तहस्तेन शून्यंचसप्त
मंगुले अष्टहस्तोदयंकार्यं षोडशांगुलहीनकं ४ हिनमेकोनत्रिंसस्या प्रासादेहस्तमेवच दशहस्तो
दयंकार्यं अष्टहस्तेषमानतं ५ सपादंदशहस्तंच प्रासादेदशपंचके विंशहस्तोदयंमानं सार्द्धद्वादश
हस्तकं ६ पंचविंशोदयं‥ पादोनंदशपंचकं त्रिंशहस्तमहाप्रासे उदयंसप्तदशस्तथा ७ सपा
दमेकविंशत्तो पंचत्रिंशान्मुनिश्वरः व्योमवेदयदाहस्ते सार्द्धस्याटेकविंशति ८ चातुर्विंशतिपादा
नो पंचचत्वारहस्तके शतार्द्धचदयंमानं हस्तस्यात्पंचविंशति ९ अतोदयंचकर्तव्यं प्रथमंचषट्
साद्यकं यावत्समोदयोप्रासः तावन्मंडोवरंक्रमं १० तथाद्यंदग्धसंस्थाने द्वयोर्जंघाप्रकीर्तिता द
शजंघाभवेशेषा जावत्सार्द्धोदयंभवेत् ११ खटविद्यंखटकाद्यंच द्वयोमर्ध्यतरेमु॰ भरणीकोर्द्ध
भवेत्मपि छाद्योर्द्धंतंचमंचिका १२ पुनर्जंघाप्रदातव्या यावत्द्वादशसंख्यया १३ किंचित्किंचि
भवेत्नूनं कर्तव्यंभूमिकोछ्रयं शतार्द्धचमहामानं महामेलतथाद्धिकं १४ इतिश्रीविश्वकर्माकृते
क्षीरार्णवेनारदपृछते शताग्रेचतुर्थोध्यायः ४ श्रीविश्वकर्माउवाच एकहस्तेतुप्रासादे द्वारं
रंचषोडशांगुलां द्दद्वृद्धिप्रकर्तव्यं चतुर्हस्तयदाभवेत् १ वेदांगुलाभवेद्वृद्धि यावत्‌दशह

४१

४३

स्तकं हस्ताविंशतिमानेच हस्तेहस्तेद्वयंगुलं २ द्विअंगुलाभवेयावत् प्रासादेत्रिहस्तके अंगुलेकहस्त
तोवृद्धि यावत्पंचासहस्तकं ३ नागरंचमिदंद्वारं उक्तंक्षीरार्णवेमुनि दशमासेपदाहीनं द्वारंस्वर्गमनो
रमे ४ अधिकंदशमेप्राप्त प्रासादेपर्वताश्रके तावत्क्षेत्रंतरेशाला त्वमेर्वादिमुनिश्वरः ५ शिव
द्वारभवेज्येष्ट कंन्यसंचजिनालये मध्यस्थांसर्वदेवानां सर्वकल्याणकारकं ६ उत्तमंउदयार्द्धंन षाडो
नेमध्यमानकं कंन्यसंतत्रदानंच विस्तारंद्वारमेवचः ७ अशालाचयदाशाला यदाद्वारंचतिष्टति
नारदंसर्वदेवानां सर्वदेवेषुदुर्लभं ८ इतिश्रीविश्वकर्माकृते क्षीरार्णवेनारदपृछते शताग्रेपंचमो
ध्यायः ५ श्रीविश्वकर्माउवाच पीटोदयंभवेत्पूर्वं विभावंचअतःशृणु द्वादशभागकंकूंभं अर्द्ध
वाअर्द्धकारकं १ द्वयसार्द्धंभवत्कोणं भागार्द्धमुखपाट्टिका भागमेकंभवेत्कुंभं अर्द्धचकंदमेवच
२ भागोनंचभवेत्पीटं निर्गमंतत्प्रकीर्तितं तत्रस्कंधसमाकुर्या कर्णमालिप्रशोभिता ३ नव
भागंकर्नंपिडं प्रवेशोतत्रमेवच पिंडस्यनवधाकंस अंतरपत्रंद्विभागतः ४ पट्टिकंसार्द्धभागंच
निर्गमंचत्रिभागतः अर्द्धस्कंधभवेद्ग्राही कर्णचत्वारसार्द्धकं ५ षट्भागंनिर्गमंतत्र कर्णिकू
र्याद्विचक्षणः तस्यपदसमंकार्यं ग्रासपट्टिमछाद्यकं ६ पिंडंकूर्यात्रिभागेन निर्गमंत्रीणिमे
वच भागार्द्धमुखपादायं पादार्द्धभागमेवच ७ स्कंधस्केद्भवेत्मेकं छाद्यकंतत्रसिध्यति उ
परेग्रासपट्टीनां पदद्वादशमेवच ८ छादिकासार्द्धभागेन भागमेकंतथार्द्धकं पंचभागंभ
वेग्रासे भागेकउदरंभवेत् ९ सार्द्धतजाउकूंभंच निर्गमंद्वयमेवच नवभागग्रासपट्टि स
र्वकेवलधीमतान् १० सप्तभिजाउकुंभंच षट्भिस्तुकर्णालिका ११ पंचाभिग्रासपीटंच
निर्गमंक्रियतेबुधैः इमासर्वानिपीटंच सर्वदेवेषुनिर्मितं १२ नरपीटंद्वादशांभागं सर्व
मनोपरि[illegible] सार्द्धमध्यस्तासंस्थाने द्वयंसार्द्धचमुर्द्धतः १३ सप्तभागंनरंकार्यं मध्यस्या
द्वयं

४३

४२ नेमुनीश्वरः अधिकंदशभागार्द्ध भागमेकंतुपट्टिका १४ निर्गमंपटसार्द्धंच वायपट्टीचभागतः उपरी
मानवायस्य यस्ययट्टिच भागतः १५ पट्टसार्द्धंचनिष्क्रांता वायपट्टिचपूर्वतः तद्देमंआद्यपीठंच सर्व
तीनरसंयुतः १६ कर्त्तव्यसर्ववर्णानां नित्यंकल्याणकारकं उत्सार्यनरपीठंवा यःपट्टिमेववेसितं १७
अष्टादशभवेद्भागं कर्त्तव्यंशास्त्रपारगैः अथस्कंसपादोयं सपादंपट्टिकाबुधैः १८ वायपट्टिभ
वेद्भागं निर्गमंचादिभार्गवः गजंचत्वारिनीकाष्य पट्टिकात्रिणीमेवच १९ पिंडत्रिभागमुत्सेधं प
दमेवायुपट्टिका गजपीठोपरंदद्या नरपीठंचपूर्वकं २० गजस्वनरमध्याय अश्वपीठंत्रयोदशः
पादांत्रंगजसंस्थाने अर्द्धंचाउर्द्धमेवच २१ तत्रांतरहयोश्चैव वाम्यभितूपसप्तभी निर्गमंचद्वयंभा
गं द्वयंचयमिहोवच २२ हयवाद्यंधरापीठं द्वारद्वारंहयैर्युतां क्षीतिपत्येवकर्त्तव्यं वाजिपीठंचनन्य
था २३ इतिश्री विश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारदपृच्छते शतात्रेषष्टोध्यायः ६ श्रीविश्वकर्माउवाच
पुनरंभवद्रंधान्यं वरास्वमानककुरं वेसंचद्विधरंविधातु निर्गमेपिटमध्यता १ खुरकंपंचभागस्या
त् कुंभकंषट्विंशति मणिबंधप्रकर्त्तव्यं भागस्यादश पंचके २ त्रयोदस्योत्तरेभागे विभागंव
शोमुनिः खुरंडमतकाकारं कुंभांतेपल्कनाकृते ३ कलसंद्वादशंभागं अंतरंपत्रवेद्विभिः
भागेकःप्रतिकंदस्य आद्यकंदंचभागतः ४ द्येकेभागषट्कार्याणि निर्गमंषट्मेवच द्वाद
द्वि॰ शाश्वकपोतालिगर्नेर्हिच सार्द्धकं ५ कंदस्यभागमेकेन अथचैतत्समंभवेत् सुषपटंद्विभा
गंच शेषस्कंधप्रसिध्यति ६ अंतरंचद्विभागंवा द्वादशांविमलोत्तमं प्रवेशंचद्विसार्द्धंच कंद
सार्द्धंचपट्टिका ७ कर्णंचद्वयसार्द्धाभि पुंखपटिपदंभवेत् आद्यकंदंभवेद्भागं शेषंच
सर्वपट्टिका ८ पदषष्टविराजति लोपालायस्यनिर्गमं दिग्पालप्रथमंतस्य नच्छायाचप्र

दक्षिणे १३ रथेष्वउपधेश्चैव कुर्यादेयांगनामुनिः चिरीमग्रेमुनिंद्रश्च यदाधाराशिवाल
ये ११ स्वेताभागयता कुंभी अष्टमध्येचपल्लवा डमरंकंषट्भागं षट्भागंचतुकर्णिका १२
तथासवेप्रमाणंच नवधीक्रियतेमुनि अष्टोअष्टोद्वयोबाधे शेषंचपत्रपंत्रके १३ सप्तदंधा
कूर्कार्येच छंद्रिकोर्त्तित्रिणीमेवच १४ निर्गमंत्रिणकर्त्तव्या उद्गपीतोपरीतसां मुखभद्रंपुनःका
र्यं तावंतफासतिष्टति १५ उपरेपंचगर्भस्या द्वितैचिसासपट्टिका प्रवेशंसप्तभागानि कर्त्तव्यं
चसदाबुधे १६ भरणीद्वादशभागानां विषकाभागमेवच १७ पितुमैतत्समंकार्यं धासिकासार्द्धमे
वच उपरेपट्टिकेसौरा भागाभागविचक्षणं १८ रागयंदीभागमेकं शेषाचत्वारिसार्द्धनी पट्टि
कांचसप्तभागं प्रवेशोछाद्यषोडश १९ कपोतालीचकर्णाग्रे निर्गमंदशभागतः मणिकंदश
भागंच कुर्याधास्त्विसार्द्धकं २० कर्णेतुपंचभागानि कर्णेद्विसप्तमेवच कपोतालिस्चत्वारि
मध्यतेखंडछाद्यकं २१ इतिश्रीविश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारदपृच्छते शतात्रेसप्तमोध्यायः
७ श्रीविश्वकर्माउवाच धरंजतंश्रितंपूर्वं नागरेमेरमस्तके चत्वारस्यसितजंघा कुंभीका
नवभागतः १ मुपरेफलदाकार्यं भागषंट्विशेषतः २ मरकुपंचभागानी मध्येत्रीणिस्व
कर्णिका अद्वासिनंचरोप्यएयां जंघाकुर्यात्प्रदक्षिणे ३ प्रदिग्पालिरसंस्थाने शेषदेवेश्च
नोभमः तोल्कतरसमच्याने मुनीद्राय द्विसंस्थिता ४ उमंकारकपोतालि कपोतालिस्तथैव
च षट्छाद्यमितस्तेषां प्रहारंतस्यमुर्द्धतं ५ भागमेकोनविंशत्यां तद्विवारंअतश्रृणु अ
र्द्धंचदंतरंकार्यं भागार्द्धंचसमान्वितं ६ पट्टिकोसार्द्धभागंच कर्णिकापत्रमेवच उपरेभाग
चत्वारी छाद्यकोसर्वकामदां ७ कर्णउभायदंभाग शेषकंदशांगद्वयो कर्णउभायदा

कार्यं द्विभागं प्रतिकर्णयोः ८ घंटसान्नवमे प्रोक्तं पल्लवेन समाकुलं दलस्य ष्ट समासेन गर्भे
कुर्यात्तु भिटकं ९ तथा पदारकं वामं विकासर्वे च कामदं पूर्वोक्तोथ विभागश्च कर्त्तव्यं सर्वका
मदं १० द्वयालिशालिका ताजंघा पूर्वोक्तं च द्वयोर्द्वयं भरणियावत्पुर्वेण कपोतालियसंभवे
त् ११ पूर्वोक्तं च तथा छाद्य भागमेकं च कार्यता सद्यतेन्तृतिया भूमि त्रिदलं च यदा भवेत्
१२ पंचत्रिंशा भवेत् हस्तं प्रासादस्य दिकारयेत् भूमिचत्वारिदातव्या शृणुत्वेकाग्रतो मु
निः १३ कपोतालितया छाद्य पुनस्यक्ता प्रशोभितं मंचिका तत्र दातव्या भरणियावत्तु सत्त
के १४ भागहीना भवेजंघा भागहीनं च उद्गमं घरशोषं भवेत्पूर्वं प्रहारां भयदा भवेत् १५ अ
ष्टत्रिंशाकरं यावत् प्रासादं कारयेद्बुधः सर्वलक्षणसंयुक्तं पंचभूमिप्रदीयते १६ छाद्योर्द्धं च
भवेन्मंची जंघाव्योमयुगं भवेत् छरशोषं भवेत्पूर्वं प्रहारं भियदा भवेत् कुंभकादिप्रहारं तं
द्विभागं तत्र निश्चलं यदि पंद्याभवेकंध्वि सिलंशाहोत्तरं तथा १९ त्रयो जंघा विजानीयात् द्व
योत्साद्यावि राजिते तत्रोदयविभागं च चतुर्विंशालितत्रयं २०॥२४ उदयं ३ चतुर्जंघा द्व
योछाद्य तत्रछेदं अतः शृणु प्रथमे त्रतियंजंघा द्वितीया च कनी भवेत् २१ उनता आसनि
श्चैव पूर्वहीनं च भागतः अनुक्रमेण स्मायुक्ता द्वादशाजंघा मुत्तमं २२ आदिमध्यावसाने
न शानिज्ञानं च हेतवे तत्रैवमतधास्तत्र बहकर्म समाकुलं २३ इति श्री विश्वकर्माकृते क्षी
रार्णवे नारदपृच्छते शतागे अष्टमोध्यायः ८ श्री विश्वकर्मा उवाच स्तंभं च पंचसार्द्ध
वा भागार्द्धं निरणं भवेत् शिरं च भागमेकेन अयं भागप्रसादयं १ भाग अर्द्ध प्रयत्नेन क

र्त्तव्यं च तथोपरि यादशार्द्धकया स्वरुछं एवं च कथितो मया २ कुंभे च कुंभकार्यवा स्तंभे नैव क उद्गमे भर
णी भरणं युक्ता कपोतालितथा सिरं ३ छाद्यं च तत्समं दिर्घं चतुर्थं न कारयेत् सरसा तु भवे सार्द्ध अर्द्ध
उर्द्धं नसंशयः ४ उनछाद्यं तउछेद्यं पुनपुदं च नेत्समं यथोक्तं च विना छाद्ये पुनकूर्यादमुत्तमं ५ उदंबरं
ततो दृसे कुंभं तस्योदयं तयो तस्यार्द्धं नेत्र भागोनं पादोनारहतो तमं ६ खुरके अर्द्ध चतिद्रंच तस्योप
उदंबरं उदरार्द्धं त्रिभागोन पादोत्वेतामपादकं ७ उदंबरोकते कुंभी स्तंभं कृत्वा च पूर्वकं स्वाधारे स्व
निरंधारं कुंभीकं चमुदंबरं ८ द्वारविस्तारत्रतीयांसे वृत्तमंदारकस्तथा विस्तरं चतुरासेन पंचार्द्धेव
स्तथैव च ९ सारदोदयं च कार्यं दर्द्धभागं चमुत्तमं यंत्रस्च खलु संयुक्तो द्येकशा षयवा भवेत् १०
स्वधिभागं च कर्त्तव्यं कोणिकास्तंभमध्यते ११ खल्यशा खं भवेद्भागं त्रिशाषं षधिके मुने चतु
र्थंशांसपादे च द्वारपालकुतो दयं १२ पंचशाखाच गंधर्वा रूपशाखं तथैव च पुनः गंधर्वशाल्यशा
खा पंचशाखा विधीयते १३ यभयासी च शाखाय सार्द्धं चमीदशांवच सप्तशाखा त्रिशाखंवा संपु
टोनवशाखयो १४ सप्तशाखं विना खल्वं त्रिशाखल्वं च संयुतं कर्णिकाश्च संतापे नवशाखं च खल्वं
भवेत् १५ इति श्री विश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारदपृच्छते शतागे शाखाविभाग नवमोध्यायः
९ श्री विश्वकर्मा उवाच देवतां मुनिभिर्भागे पीठमतमथोच्यते पीठं भागमेक कुंभी सार्द्धभागं
च मध्यमे १ द्विभागं मुत्तमं चैव दोषापिट समुछयं यदी समं समत्कर्ण प्रतिमालक्षणान्वि
तं २ महेश्वरो स्वविस्नोश्च ब्रह्मा च चोत्तमं भवेत् इतिरे खोतोदेवानां कर्त्तव्यं स्यतधीमता ३
द्वारं चाष्टविभक्तं च त्रिधः भुक्तं च सप्तभि पीठं च भागमेकं च शोखं च प्रतिमा मुनि ४ सप्तभा
गं भवेद्द्वारं पंचभागात्रिधा कृत्ते द्विभागं प्रतिमामानं शोषं पीठं च उच्यते द्वारं षट्भागकं
ज्ञेयं त्रिधा यं च प्रकल्पयेत् पीठं च भागमेकं च द्विभागं प्रतिमं भवेत् ६ पीठ्यानयतो कं

च मुखस्थायंचकिद्कलं एकार्द्धंभवेतत्र अर्द्धांशनिश्चयंभवेत् ७ जलसैन्यप्रमाणेति वि
द्वारंचैवलंघयेत् ८ द्वारस्सस्वविस्तरार्द्धेन पादोनेवाविचक्षणे दलैकत्यंतदंस्थाने प्रमाणंतुत्रि
धापुनः ९ प्रसादं पंचमासेन लिंगकुर्यात्प्रजलंतत वेदविस्तादितपिटं भावस्तापीठमानकं १०
पद्मासननिपद्मार्चा द्वारविस्तारभागतः विस्तरागपदालक्ष्मी निकुलिसंबुधैमेवच ११ इति
श्रीविश्वकर्माकृते क्षीरार्णवेनारदपृच्छतेशताग्रेदशमोध्यायः १० श्रीविश्वकर्माउवाच
छूयंचत्रिंशतः द्वारं द्वारमानंविशेषत १ हरश्चदशमेभागे द्वादशेजलशायने मातरास्वयजा
ग्रासं पक्षश्चशेषसान्विते २ अष्टेदशेवकर्तव्यं उमारुद्रश्रियाहरिः विंशमेब्रह्मयुगंच ना
रदादिमुनीश्वरः ३ एकविंशेभवेलक्ष्मी चतुर्विंशेचसरस्वती पंचविंशाधनस्थानं षट्विंशेचं
द्रमेवच ४ ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रं सूर्यसप्तविंशति ततपरंचपदंशून्यं भूतप्रेतादिराक्षसं
५ द्वारेछूयंअष्टयुक्तं उर्द्धभागंपरित्यजेत् सप्तमाससमेभागे द्रष्टिस्थानंचभोगदं ६ उर्द्ध
दृष्टिद्रव्यनाशाय उर्द्धेचभोगहानिच सुखदासर्वकालेच समदृष्टिनसंशय ७ अष्टविंशति
भागानि गर्भगृहार्द्धभागतः प्रथमेचाक्षिवंसाप्प किंचित्दिशानिसाश्रितं ८ कर्णप्यअलि
केस्तत्रे विघ्नजागर्भेनसंस्थिता पादांगुलागर्भसुत्रं पदगर्भेचदेवता ९ द्वितीयोहीर्ण्यगर्भं
च नकुलीसंतृतीयके चतुर्थेचैवसावित्री रुद्रशाषाच्चपंचमे १० षट्मेचैवषट्चक्रं सप्त
मेचपितामहा अष्टमेवासुदेवंच नवमेचजर्द्दनं ११ दशमेविश्वरुपंच अग्निमेकादशेप
दे द्वादशेभास्करेचैव दुर्गाचिशास्त्रयोदशे १२ चतुर्दशेविघ्नराजं ग्रहाणंदशपंचके षोड
षांमातरादेवी गुणसप्तदशस्तथा १३ भैरवेचस्तदाग्रेच क्षेत्रपालंतथापरे विंशती ४४

विघ्नराजंच हनुमंतंमदाश्रतं १४ द्वावंशेभृंगवोरिंद्र इश्वरंचयदाधिके तयस्याग्रेचपदंशून्यं
भूतवैतालराक्षसे १५ विष्णुस्थानेक्षमादेवी विष्णुस्थानेसरस्वती सावित्रीसंधदेशेच लक्ष्मी
सर्वत्रदापयेत् १६ वीतरागंविघ्नराजं जेउक्ताजिनशासंने मात्तेमंडलमध्येच देवीमातसमस्तके
१७ पर्यंकासनउर्द्धंवा विहारूपालियावृतः विष्णुस्थात्नजलशाई वाराहीतस्यदेस्थिता १८
विष्णुरुपालिमागादि नवमेपदेकरीमूर्ति विष्णुस्थानेप्रदीयते १९ अर्द्धनारीस्वरंदेवे रुद्र
स्थानेप्रकल्पयेत् कक्षांतरेप्रभेदेच श्रियब्रह्माणिमाश्रिते २० श्रीविश्वकर्माउवाच अ
तपरंप्रविक्षामि भद्रार्द्धंचसरंतथा भद्रार्धचततोवृद्धि ज्ञातव्यंमूलनासिके १ भद्रंचत्रिं
शतीभागं कर्तव्यंतत्रलक्षणं मूलनासिकंद्विभागं भागंचद्वितीयायकं २ वेदभागंत्रतीय
कं चतुर्थंभद्रमेवच पंचमापरुनेकार्या उपागदृश्यतोभवेत् ३ यावतहंसप्रमाणेन विस्ता
रंक्रियतेकटि स्यावहंगुलमानस्थ फालनांतंचनिर्गमं ४ सस्तताश्चप्रदिक्षामि भद्रार्द्धंष
टमेवच प्रथमावसुभीर्भागो द्वितीयाश्च द्रसंक्षया ५ तृतीयांचमुनिर्भागं चतुसार्द्धमुलना
सेकं षट्मंसप्तमेचैव फलमानंतुमासष ६ सरवेधेप्रवक्षामि जायंतमूलनासिके कक्षां
तरेप्रभेदेच महाशेषंचराजदेत् ७ प्रथमंतत्रस्त्द्राणां गृहपक्षेयुगानिच शिवशक्तिस
वाष्टेच षोडस्यमनुपंचभी ८ जंघिपसत्रयोदशे षष्टेलानभयतेसुरा ९ इतिईश्वर
वेधः ईश्वरवेधेयदिश्चैव हन्यतेपशुबांधवा सानुकूलक्षयंमेव मवलेहन्यतेशतु ९
षट्वृक्षभवंमृत्यु राजदंडस्तथैवच अथवात्रीलिमरणं षट्मासेनसंशयः १० स्वर
वेधंयदाश्चैव कल्पतेषडभागिका तत्रनारीमहाव्याधि राष्ट्रभंगप्रजायते ११ दुर्भि

४५ क्षयापितद्वंशो राजमृत्यायनेयथा सामंतानिफलंयांति सालिनोमृयतेध्रुवं १२ अन्यकर्णेके
तुमोक्षो मोक्षोनास्तियुगांतरे पूजयान्लभतेदेवं सुप्रकीर्तिवराक्षमः १३ सोकम्पंचयशलस्य
विरोधस्यपिंडाज्ञातं नासगतिर्ष्टितीराग भृगुर्हविर्युमानतं १४ सपादवाक्षसार्द्धेन ततुस्तस्या
नमध्यते भत्तश्रष्टाविभक्तंच भागमेकेनकुंभीका १५ स्तंभयंचससार्द्धेन सार्द्धशेषेचदेशतः प
रेषष्टप्रदातव्या पादसार्द्धदियंभवेत् १६ अग्रमानंस्थितोरिक्षं पदमानेमनन्यथा कुंभेचकुंभिकोस्तास्था
उदंबरंस्तथैवच १७ स्तलेचउनमांतेच भरणीभरणंतदा कपोतालिशिरंताच पदंतुषट्च्छाद्यको १८
प्रासादेभयमेयत्र इदंमानंतुकथ्यते संक्रमेमहारिथीच स्तंभाशिखरजंघयो १९ पीठंचउद्गमंते
च शेषभूमिविराजिते प्रथमंषट्च्छाद्यंच अमेच्छाकासममम: २० द्वितीयात्रतीयाभूमि पाद
वोच्छाद्यकोसमो च्छाद्योध्यात्रतरतुमांचि पाददरसमंसमा २१ निर्दोषंतुभवेत्वास्तु याद्ययाधर्तु
याद्यके शंसारलभतेवर्धं वीर्यतंसर्वकामदं २२ श्रीविश्वकर्माउवाच उदंबरेस्तथास्यात रि
क्षिराजेश्रतश्रतश्रृणु उदंबरंचतावृक्षे कुंभकोतेतसोदरं १ तस्योर्द्धचत्रिभागेन स्तंभाचपाद
वर्जिते उत्कमोत्तमचत्वारो मश्रेष्ठंतचमध्यमं २ त्रतीयांसेकतंपीठं निर्गमंतत्समंभवेत् उद्ग
योजस्तद्वयंकार्यं मध्येमृणालभुषितं ३ द्वारविस्तारतृतीयामे व्रतमंसरकस्तथा उभयो
ग्रासद्वयंतस्य शाखासाषसमुस्थके ४ द्वारविस्तारचतुर्थांसे पंचमासेनधीमते शेषोदरं
चकर्तव्यं तस्यार्द्धभागविस्तरे ५ चतुर्थांशेसपादेन शाखस्वनिग्रहोत्तमः एकशाखंत्रिशा
खंवा पंचैतेनवभिस्मृतं ६ खुरकेउर्द्धचंद्रंच तस्योपरिउदंबरं उदंबरंत्रिभागेन पादूनेमध्यभु
मिकाः ७ शाखविस्तारयंमानं प्रमाणेअर्द्धचंद्रयो तस्यार्द्धनिर्गमंकार्यं स्तथामालंकितेबुधः
८ त्रिभिगमनेहंतव्यं ततोवृतंचभूमिकं गगारोदरयन्मानं प्रमाणेअर्द्धचंद्रयो ९ अभयो ४५

२९

टे करागेण वभुपंशेचपादका चिविकाकंदुसंयुक्तं शुभकाले मनोहरा १० श्रीविश्वकर्माकृते
क्षीरार्णवेनारदपृच्छतेज्ञाताग्रेएकादशमोध्यायः ११ श्रीविश्वकर्माउवाच किंअप्योषांचरा
ज्ञातीक्षकुर्यातीक्ष कबास्तिकेटिरोधस्तत्रवाराह आकाल्येमृत्युपंचक अर्हंमदकलंयाति कुंकस्त
लोकपीठतु १ प्रासादस्यनसांगस्य विस्तारोत्रेस्तथैवच षणमध्येतुदातव्यं मोत्रिकाद्यंप्रदक्षिणे
२ मूलनाशकत्रिसार्द्ध कर्तव्यचतदाग्रतं नवनासिकंभवेतस्य सार्द्धतेभद्रमत्रिधे ३ इतिश्री
विश्वकर्माकृतेक्षीरार्णवेज्ञाताग्रेद्वादशमोध्यायः १२ श्रीविश्वकर्माउवाच एकहस्तेतुप्रासादे
स्तंभंयाचतुरंगुलं द्विहस्तेअंगुलंसप्तः त्रिहस्तेनवमेवच १ ततोद्वादशहस्तानां हस्तेहस्तेद्वि
अंगुलं सपादंगुलवृद्धिस्यात् यावत्षोडशहस्तके २ तस्यार्द्धचशतार्द्धंच पादुनंमंगुलंभवेत्
अर्द्धगुलयदाशद्वि षष्टिहस्तेनशेसयः ३ तथाप्रासादविनायत्रं मंडपंचाथवेदिका तदाश्रा
यामयन्यानं कार्यकन्यतंतोगुनी ५ सभामंडपस्तंभानां प्रमाणंचअतश्रृणु दशमांस्याद्वा
दसांस्य चतुर्थंचविशेषतः ६ प्रमाणंतदविज्ञेयं पश्चातवृद्धिपुनःक्रमात् ज्येष्टकन्यसम
ध्येच अन्यसेश्रेष्टमेवच ७ सभामंडपयोर्यत्र वेदिकाश्चविशेषतः स्तंभंवाकन्यसेमान
कर्तव्यंशास्त्रपारगैः ८ इतिश्रीविश्वकर्माकृतेक्षीरार्णवेनारदपृच्छतेज्ञाताग्रेत्रयोद
शोध्यायः १३ श्रीविश्वकर्माउवाच द्विमुखीतत्रकर्तव्या त्रिमुखीचचतुर्मुखी स
र्वांदशसमोप्रेत प्रासादेमेरुमादयः १ इमांप्रेक्षवतीतेना परिध्मर्यत्रमनकधा ज्येष्ट
२ कन्यसमानंच कन्यसंश्रेष्टमेवचं सभायंमंडपेयत्र वेदिकावेदिकाच वेदिकाचवि
शेषतः स्तंभंचाकन्यस्येमान्ये कर्तव्यात्साशास्त्रपारगै तस्याग्रेचप्रयक्षांति गर्भगृ

३

२९

ह्रंचमानतः सपादंचार्यसार्द्धेन पुनस्तस्यास्च मध्यतः ४ स्तत्रअष्टांशभक्तंच भागमेकेनकुं
भिका स्तंभंचापंचसार्द्धेन सार्द्धंवाशिवकोदयं ५ यस्यांस्चप्रदातव्यं पदसार्द्धदियंभवेत् बा
ह्यभानंततोरिक्ष्म पद्मदामदमान्यथा ६ कुंभेकुंभकाज्ञात्वाच उदंबरंतथैवच स्तंभंतस्य
उद्गमंच पदंचषष्ठछाद्यके ७ प्रासादेप्रथमेयत्र इदंमानंचकन्यसे ८ संक्रमेचमहा
शिविः उदयंचअतःश्रृणु कुंभीउदंबरंतच स्तंभंशिरंचजंघयोः ९ पीठंचउद्गमानेच
शेषभूमिविराजिते प्रथमंषष्ठछाद्यंच उद्गमंचादिकासमं १० द्वितीयात्रतीयाभूमि
पदंवैपटवाद्यके छादिकिंचैपछाद्यंतो ततःपटोत्तरंसमं ११ निर्दोषिंतद्वावस्त्र पा
दपटंतछाद्यके शारज्ञालभावेत्वेधं वर्जितंसर्वकामदं १२ इतिश्रीविश्वकर्माकृतेक्षीरार्ण
वेनारदपृछतेशतागेचतुर्दशमोध्यायः १४ श्रीविश्वकर्माउवाच उदंबरंचततोद्वेसो कुंभी
कांतेतपोदयं तस्यार्द्धेत्रिभागेन तथावैपादवर्जितं उत्तमोत्तमंचत्वारो अष्टंचनवमध्यमं
२ वृत्तंस्वसेक्लंपीठं निर्गमंतत्समंभवेत् उभयोवक्षद्वयंच मध्यामृणालभूषितं ३ द्वार
विस्तारतृतीयामे वृतंमंदारकस्तथा उभयोश्रीसार्द्धयंच शेषशाखासमानका ४ द्वारविस्ता
रचतुर्थांशो पंचमासेनधीमता शाखोदयंचकर्तव्यं तस्यार्द्धेभागविस्तरे ५ चतुर्थांशोसपा
देन शाखानिर्गमचोत्तमं एकशाखंत्रिशाखंवा पंचैतेनवक्षिस्मृता ६ धुरकेअर्द्धचंद्रं
द्रंच तस्योसरिउदंबरं उदंबरार्द्धेत्रिभागेन पादोनंमध्यभूमिका ७ शाखाविस्तारज
न्मानं प्रमाणंअर्द्धचंद्रयो तस्यार्धनिर्गमंकार्यं तथामालिकितेवधः ८ त्रिभागंचहरे

८

तथं चततवृतंचभ्रामिकं गगारोदरमध्येच शंषपत्रविभूषितं ९ इतिश्रीविश्वकर्मा
कृतेक्षीरार्णवेनारदपृछतेशतागेपंचदशमोध्यायः १५ श्रीविश्वकर्माउवाच श्रीनारदउ
वाच प्रणपत्यमिदंवृक्षे यानभ्यंधरणंमनः कथयामिनसंदेहो शिखरंसर्वकामदं १
कस्मिन्कारिसमुत्पन्नो प्रासादाशिखरोत्तमः किंदलिचविभुक्तेन किमाश्रृंगेविभागतः २
किमेअष्टविभक्तंच स्तेषांस्कंधकिताभवेत् दशधास्कंधरेखाच कंधमोनकथाभवेत् ३ म
मवालंजरंस्तत्वा शास्त्रंकेनहेतवे केविभागेमृतोतत्वा कथितंममसंप्रदं ४ श्रीविश्वकर्मा
उवाच यत्वयापृछतोश्चैव श्रृणुत्वेकाग्रतोमुनिः शिखरांविविधाकारा मनेकाकारमुदितं
५ उक्तंदक्षामिश्रेष्टानां वेराज्यकुलसंभवेत् केशरादिविधिस्तेषा तथाक्षीरार्णवेस्मृते
६ दीपत्रमयुरेप्रोक्तं वस्यमेनफलेतथा शिखरोपस्करंविद्या द्विमानातत्यदेवता ७ वज्र
वैडुर्यमुक्तंच वाइंद्रमालिनूतिलं पुष्परागंचगोमेध प्रवालश्रिगभूषणं ८ तथाश्रृंगततं
विद्या अष्टभागंचलक्षणं केसरीसर्वतोभद्र नंदनस्यविशेष्यने ९ मंदिरोहेमकूटश्च कैला
सोभमृतोद्भवः श्रीवत्सोविजिदग्धैच अष्टधानंचवश्चलं १० नंदशालोहेमवांश्च नंदि
कोइंद्रनीलकं श्रावधाद्योमनोवाश्च दशधापरिदीयते ११ शेषायंकथितंचैव तथा
सविस्तरेश्रृणु षेत्रार्द्धेचभवेद्भद्र भद्रार्द्धेकर्णविस्तरं १२ कर्णार्द्धेनप्रयत्नेन कर्तव्यंभद्र
निर्गमं श्रीवृक्षंकर्णकंस्थाने भद्रेचरथकोत्तम १३ पारश्रृंगप्रदातव्यं सर्वकेसरिरचि
ता भद्रेश्रृंगप्रदातव्यं सर्वतोभद्रमानतः १४ कर्णकेसरिसर्वेन भद्रेश्रृंगचतु

र्पयेत् भद्रकर्णकनकूटं गवाक्षेमध्यप्रदापयेत् १५ उरश्रृंगंतथामध्ये सिखरंसर्वकामदं
अन्यश्रृंगेचसंस्थाने मंदिरंसौभ्रमानकं १६ कर्णश्रृंगद्वितीयंच श्रीवत्संसर्वकामदं सर्वभद्रं
उरश्रृंगं ममृतोद्भवसंज्ञकं १७ सर्वभद्रंचकर्णेषु भद्रेश्रृंगंततोष्टभिः हेमवर्णंचमिश्रा
ता हेमकूटंअतश्रृणु १८ कुर्मश्रृंगंप्रदातव्यं तथानव्यालउच्यते कर्णेतेगउकप्रोक्तं भद्रे
श्रृंगप्रदापयेत् १९ श्रृंगसंख्यानवांश्चैव महानीलेकमिश्रकं पुनश्रृंगलदाभद्रे भुधरे
मिश्रकान्विते २० कर्णेश्रृंगद्वितीयंच रत्नकुटंप्रनष्टकं एकाशीअंडकेश्चैव कर्णद्विती
यकेसरी २१ तथावक्षाभिक्षेत्रंच कर्णस्यपंचमासकं तस्याद्वेचद्वयंकार्यं शेषभद्रस्य
विस्तरं २२ भागभागेचनिष्क्रांते उर्द्धमानंअतश्रृणु कर्णेश्रृंगद्वयंकार्यं भद्रश्रृंगंचमेवच
२३ मध्येग्वाक्षप्रदातव्यं नंदनंसर्वकारकं भद्रेश्रृंगप्रदातव्यं नंदस्यालाभमनोहरः
२४ रथश्रृंगप्रदातव्यं उरश्रृंगंततेथोपरि मंदिरंचमयाख्याते श्रृंगस्याहंचविंशति
२५ कर्णेशश्चसर्वेषु रथकुटप्रदीयते अमृतोद्भवनामाक्षं वल्लभंसर्वदेवता २६ रथेश्रृं
गंप्रदातव्यं हेमकुटंसउच्यते मुखभद्रेश्रृंगमेकं कैलासंसर्वकामदं २७ कर्णेचनंद
नंसर्वे रथेश्रृंगंपरिसजेत् उरश्रृंगाष्टकर्तव्यं पृथ्वीचपंचमुत्तमं २८ इंद्रनीलंप्रसादं
च उरगाद्वादशास्तथा उरश्रृंगाचकर्तव्या रथेश्रृंगंप्रदापयेत् २९ महानीलंचविज्ञेयं स
र्वमनोर्थदायकं उरश्रृंगाष्टशेषेच भुधरस्तुचवल्लभे ३० केसरीसर्वतोभद्र कर्ण
स्थानेप्रदापयेत् रथश्रृंगद्वयंस्थाने विमानेचविचक्षणा ३१ उरश्रृंगाष्टकर्तव्या रथको
टयथाविधि तथावेदुर्यप्रासादा उरश्रृंगाभिद्वादशं ३२ भद्रेश्रृंगपरीतेज रथेश्रृंग

प्रदापयेत् पद्मरागंचनामाक्षं प्रासादंसर्वकामदं भद्रेश्रृंगप्रदातव्यं वज्रकर्मसुमुक्षका मुख
कोद्रूलप्राशादं उरश्रृंगार्कभूषिता ३४ तान्यथाजायतेप्राज्ञ आदिमधावसांतके अष्टधेदश
धाक्षेत्रं केसरीपंचविंशति ३५ तथाचमृक्ष्यकंज्ञात्वा त्रिविधंचविशेषत श्रृंगमेकंश्रंतथाचैक मि
श्रकेतिलकोत्तमा ३६ कर्णेतिलकप्रदातव्या रथंचतत्चकोत्तमा श्रृंगमध्येगतंश्रृंगे तन्मध्येशि
खरंभवेत् ३७ इतिश्रृतसर्वतोभद्र कर्णेतिलकद्वितीयकं तिलकंचश्रीवत्संच श्रीवत्संचतथोप
री ३८ माल्यतलंचकर्तव्यं उरश्रृंगेविभूषितं केसरीमिश्रकंविद्यात् तिलकंश्रृंगसमाकुला ३९
केसराजप्रयत्नेन यावत्कैलासमिश्रकं ४० तथारेखाविचारेण स्वस्तिराजश्रृणोत्तमं पंचष
डादिषड्चच विधवल्लानत्रिंशति ४१ षट्वारिकलाज्ञात्वा अंकवृद्धिक्रमेणतः महामर्मप्र
प्रयत्नेन षोडशांशेमुखोदरे ४२ तथारेखाद्वयंगुह्यं तत्रशाद्वंगुणक्रांते ततोव्रतंचभ्रामे
न द्विभागंकर्णविस्तरं ४४ रथसार्द्धंचविस्तारं भद्रात्रलियनिर्गमं हस्तमानेअंगुलेक विस्ता
रंचविचक्षणे ४५ षट्भागेस्कंधविस्तारं समाभिमलसायकं अर्द्धोदयंचकर्तव्यं द्रूर्द्धंचक
लसोपनं ४६ स्कंधोर्चैनविभागेन चतुर्भागचतुर्भवेत् प्रतिकर्णत्रयंकार्यं निष्फलेतत्स
मानकं ४७ तथामंगलसारीच विस्तारंचअतश्रृणु सप्तभागानुमध्येच चतुषष्टिवि
भाजिते ४८ द्वात्रिंशो उदयंकार्य ग्रीवाभागेचसप्तकं अंडकंभास्करंविद्यात् नवचंद्रा
विलोकितं ४९ षट्भागंवामलसारि चणीस्कानिअतश्रृणु अंडकंद्वादशभागे सप्त
किचंद्रकोधिकं ५० षट्भागामलसारिच चतुर्दशकलाशानं तपस्यास्कंधकंस्था
ने अंडिकोपषणादिषु ५१ अजिताइतिरंगाच सहितारात्क्षसास्तथा कालिकाकुंड
लीकाश्च स्वरूपातपसुंदरी ५२ चित्रविचित्राचैवस्वा तोतलीतरुणिस्तथा निचासरं

४८ सर्वरेषां सरचंद्रार्चिताउलि ५३ मंजरीवघिरा हूर्गा रिधिदा सिद्धिदायका धनदावरदा।
मोक्षं मोक्षदा पंचविंशति ५४ अजिताहूलिमाकारा त्रिखंडा इतिरिंगणी सहिता चतुखंडश्च
प खडान्वैवसागरा ५५ खडखडेभवेन्नाम ऋछयायुक्तसंकला संयुक्तास्कंधसंकर्णे शेषाया।
पंचविंशति ५६ त्रिखंडेषटकेलाष्ट चतुखंडोद्यकस्तथा तिथिकालाष्टचतु खंडेषट्ष
ष्टविंशति ५७ तथाभयप्रकारेण तत्रभेदं अतश्टणु त्रिखंडादिकलंपूर्वं अर्द्धभागंचेता
द्यकः ५८ त्रिखंडेनचतुसार्द्ध चतुखंडेमतीस्तथा पंचखंडादिभागेच पदोसिद्धत्रयोदशः ५९
तथातेनिप्रकारेण आदिमध्यावसानकं त्रिधिचारप्रजल्पेन शेष्यार्त्यापंचविंशति ६० पु
नस्तेनाविभुक्तेच नामनाश्रणतोरिषी जयविजयमेकैकं नामंपूर्वादिभाविलं ६१ जय
विजयादिपूर्वं इतिरंजियमस्मृता जया विजया त्रतीयाच विजयासप्तसागरा ६२ जय
विजयप्रकारेण संख्यार्यापंचविंशती अन्योन्यकथिताश्चैव श्रुकनाशंअतःश्टणु ६३
जघोर्द्धस्कंधपर्यतं विभक्तएकविंशती नंदत्रयोदशेमुर्धे प्रमाणंपंचधामतं ६५ कुमारौ
कविलद्रंच निर्घटोहिनिशास्चैचंद्रगोषचविज्ञेयं सकन्यापंचधामतं ६६ षणमेकंकुमा
रंच त्रिषणंत्रिकलद्रकं पंचसप्तनवंचैव द्विषणंलप्रकीर्तितं ६७ विमानंकारिवर्तते क
क्षमूर्द्धकनासिकं अष्टद्वादशचैवोक्तं नष्टकर्णीविशेषतः ६८ नष्टकर्णीजदामूर्द्धं नि
वाहंपरिकूमिके सर्वसिद्धसमायुक्ता फलसाद्धविशेषतः ६९ तथाभद्रविचारेण श्रृंगस्य
श्रृंगमेवच श्रृंगद्वायंप्रयत्नेन श्रृंगमेकंविचक्षणं ७० त्रिशालपंचकंप्रोक्तं सप्तानंचअ
तश्टणु अष्टमासेनवमासे दशमासेविशेषतः ७१ कलंविशनाशिकंरिक्षं चतुर्थांशं
चनिर्गमं श्रृंगमेकंचद्रद्वंच द्वयोमानंअतश्टणु ७३ द्वात्रिंशतःपदंकृत्वा द्विभागंम

५०

लनासिकं त्रिभागंद्वितीयश्चैव त्रतीयंयुगसंख्यया ७४ शेषभद्रस्यविस्तारं निक्रांतंचअतश्टे
णु उरश्रृंगेद्विधाकार्यं रथिकामध्यदापयेत् ७५ विभागेद्वितीयश्चैव त्रतीयंद्वयमेवच चतु
र्थेचविभागानि पंचमंचतुमेवचे ७६ शेषभद्रस्यविस्तारं निर्गमंचदशार्द्धतः सिद्धंतिसप्ता
शानि उरस्त्रिणिसुमस्तके ७७ घंटश्चअर्धशार्द्धच रथिकामध्यसंभवं चतुकुटसमायुक्तं
उरश्रृंगंतद्रद्वंत ७८ तथावाल्ठयराप्राप्त भंगभेदंविशेषतः द्वात्रिंशश्चपदंकार्यं चतुर्भिर्म
लनासिकं ७९ प्रतिरथंत्रयोभागं द्वितीयंद्वयमेवच द्विभागंस्वभद्रार्द्धच भागभागंच।
निर्गमं ८० त्रयोदशास्कंधभागो कर्तव्यंचप्रयत्नतः तथारथप्रभेदेन शेषभद्रप्रकीर्ति
तं ८१ वाल्ठेनरेचरजनी करेषांभेदस्वस्तथा ८२ तेनखंडकंत्यसुत्रं अमलंसततोभवेत्
८३ ग्रीवाखंडभवेसुत्रं संतानंचविशेषतः ८३ भारस्यशंकेलंकृत्वा पद्मोजलंचसंयुतं
श्रृंगकुटविमानंच भुमिकासर्वकामदं ८४ तथाल्ठास्यजयतंद्र द्रव्यप्रासादमासकं विश्व
कर्माक्तितेप्राप्त उदयंसार्द्धसंगुणं ८५ ततोवधाविभक्तंच। पिंडिद्विभागमेवच अंडकंसत्रयो
भाग ग्रीवायाभागमेवच ८६ मपडिकंकणीउक्तं भागमेकंचकारयेत् कलासारेत्रयोभा
गे भागेकंमस्तकोपदि ८७ ग्रीवायाशोभवेप्राप्त द्विभागंचविचक्षणं बडंद्विपत्नडीश्चैव च
तुर्भागानिमध्यतः ८८ शिवंचइश्वरःरूपं ध्यानमूर्तिविचक्षणं शिपाकर्णप्रदातव्या जि
नेकूर्याजिनेश्वरः तत्रैवसरतज्ञात्वा छंदभंगोनेविनद्यते उपरेश्रृंगमेकंच मेलछं
दमुनीश्वरः ९० फलस्यानेततोश्रृंग तिलकंकस्यमेतयं यत्रेमयूर्तथाकूटं हतमासुमु
नीश्वरः ९१ जगतीपीठकंज्ञात्वा प्रासादंलिंगमुत्तमं मुगदेस्तेशिरंरम्यं केर्तव्यंसविच
क्षणं ९२ लभ्यतेस्वर्गसंस्थानं जीवचंद्रार्कमोदनी मेरुशिखरंशादारम्या महामर्म

४८ अलश्टणु ९३ शंकरं कोमलंकारे अर्द्धमाधवमूर्द्धनः अर्धस्ते मुष्टिकं कार्यं हस्तहस्ते द्विमंगुलं
९४ अर्द्धभागे सप्तमासेन कलशात्रे ससाधयेत् तत्त्रिपरद्वयं भागं शेषं च मानसायकं ९५ स्कंध
स्थानेयवामूर्द्धं कंसप्तसंतद्रुसते तानि सर्वाणि दूषणि अशुभंकारकस्तथा ९६ तथा च नंतरे
दृष्टो दंडमानं अलश्टणु एकहस्ततु प्रासादे दंडयो द्वन्मंगुलं ९७ अर्द्धांगुलं भवेन्वृद्धि पंचविंश
तिहस्तके उदयं पादवृद्धिश्च तेन सतार्द्धमानके ९८ पिंडं च कथितेवत्स उदयं च अलश्टणु प्रासा
दकोणमाया दौ सप्तहस्तान मध्यते ९९ गर्भमानेच कर्तव्यं हस्तस्यात्यं च विंशती रेखामानं च
कर्तव्यं यावत्पंचाशहस्तकं १०० अष्टमासं पदहीनं कन्यसे शुभलक्षणं ज्येष्टं तद्वाव स्दंडं त
त्रशक्तिमयं कृतं १ तथा पंचप्रमाणंतु श्टणुत्वंकाश्यतो मुनिः समसर्वेयदादंडं तत्रशक्तिमयं
भूत सयेचविप्रमे प्रोक्तं शुभंतद्भवनेद्वयं कथं दंडसमुत्पन्ना कथं पर्वप्रमाणतः ३ कथं शिवमया
प्रोक्तं कथं शक्तिविनिर्द्दिशेत् ४ श्रीविश्वकर्मा उवाच कृत्वा जोगेश्वरी पुजा दंडी दारवसंश्रयेत्
महामहोसर्वार्थेन शिवशक्तिसमागतः ५ चतुषष्टीच योनिस्यं दंडहस्ते समागता त्रिकुलिसात्च
तयोश्च दंडकथानमुत्तमं कृत्वा प्रासादस्यापूजा दंडकाल्लंसदीयते ७ पुनयगिरिसमुत्पन्ना
दंडव्ययंस्मयोत्तमा तस्यार्द्ध पर्वमादाय विंशानक्रमतोत्तमा ८ अधोमुखं शिवं दंडं सन्मुखं
शक्तिमेवच मध्यपर्व भवेज्येष्टं अर्द्धउर्द्धं च कन्यसे ९ वंशानक्रमभवेकंच समसर्वेशकार्चितं
समसर्वेयदादंडं मध्यकूर्यात्विकंकणी १० जेष्टपूर्वे च मूर्तेनं वाधउर्द्धनकंन्यसे विषमपर्वजेदंडं
मध्यपर्वतुज्येष्टकं ११ अंकानुक्रमनाजाती वभुपक्षेच कन्यसं द्विनीमेकेच रूपेन चतुष्कं त
द्वितीयकं १२ एवमादि क्रमायुक्ति पदवे सर्वकामदं तथाचमुगुटमान अजथामेद्दं १३ दी
र्घंच षट्मासेन तदर्थे विस्तरेकृतः विस्तारस्त्रितीयंसेन पिंडं कुर्याद्विचक्षणं १४ त्रिभागं । ४
पतितभागितं

४९

सूर्यरश्मिनिरक्षता प्रलयंति सर्वपापानि

भागमित्युक्तं ततो वृत्तं च भूषितं संपं चक्र करोक्तं च कमलं च अतश्टणु ७॥१६ मध्यकलसं
कर्तव्यं दमालषोडशांशं अस्त्र त्रतीयांसेकृतं हीनं उभयोवामदक्षिणे ८॥१७ ध्वजादंड प्रमाणे
न विस्तारं मकटीसमं त्रतीयं च वषाग्रं च मणिबंधं च शोभितं ९॥१८ सुवर्णरेखायदा का
र्यं यत्रैलोके च मध्यतः १९ इति श्रीविश्वकर्मा कृते क्षीरार्णवे नारद पृच्छते शतात्रेशोडशो
ध्यायः १६ श्रीविश्वकर्मा उवाच भूमिभीतिप्रविक्षामि प्रासादमानं तं बुधः दश ह
स्तो भवेयावत् प्रासादभ्रमवाभवेत् १ दशोर्द्धं च विंशतं पादे भ्रममेकं च वाहिरि भ्रमभी
तिविभागानि श्टणुत्वं काश्यतो मुनी २ प्रासादशंभागा सार्द्धं मध्ये द्वितीयकं शेषं च भ्रमवि
स्तारं एकभ्रमसमान्वितं ३ इति एकभ्रमः द्विभ्रमं च प्रविक्षामि प्रथाशास्त्रेण संभवः चतु
विंशकृते क्षेत्रे द्वादशो लिंगपीटयो ५ चतुर्भीतिविभागानि शेषं च भ्रममुत्तमं स्तंभश्रेणियस्त
सूत्र भ्रमद्वयविराजिता कूणमध्ये प्रकर्तव्या मंडपा महतासया ७ इति भ्रमद्वयं बत्रिं
शकृते क्षेत्रे लिंगपीटे दशारवलं भिषष्टसार्द्धं च भ्रत्वारि चत्वारिभ्रमके प्रशं ८ चतुसार्द्धं
द्वितीयातु स्तंभयुक्तं न संशय एष विभक्तिमादाय भ्रमस्त्रीणि विराजितं ९ इति भ्रमत्रयं
यथा एवं विभागं च अष्टते शादशः शुभं १० सर्वभीति भवे भागं नागकं भ्रमणाद्वयं द्विभाग
द्विभ्रमम्ध्येष्टं शेषगर्भगृहं भवेत् ११ इतिवस्त्रत्रयक्षेत्रे षट्भागं लिंगपीटके भागेकं षट्
भीतीच भागाभागं भ्रमद्वय १२ स्तंभाश्रेणीयुतायेच भ्रमचत्वारि धीमतां मध्यवेक्षिकृते
क्षेत्रे संभूमं च नरोटकं १३ स्वायतेतद्भूमं पंच महामेरु प्रसिद्धये कवलीका भ्रमक्षाता
भाषितं विश्वकर्मणा १४ एकद्वित्रीद्वयोस्त्रीणी त्रतीये चतु पंचके मध्यवेदिसमायुक्तं भ्र

४९

मस्तेतालीलक्षणं १५ भ्रमस्वभ्रमयोमध्ये यदा भितिनिवेमितं संखयेतमरेप्राज्ञ क्रम
शाक्रमणालकं १६ सिवेचदेवताउक्ता अगसंस्थापुनःपुनः रोहिउक्ताग्रहासर्वे नत्सर्वभ्रम
मध्यते १७ भावाज्ञानुपसंयुक्ता गुणःपतिविधानिच निकूलिशेषरामाय स्वचक्रयमलंक
तिः १८ प्रवेक्षणंयदास्तूर्य सोम्यादिनवमेवच मध्यानेचप्रदातव्या पूजिताचसुखावहा
१९ स्तंभवंदंचखाद्यंच आनंदोप्रतिभैरवः मुक्तिउक्तायथादेव्या भ्रमस्थानेसुखावहा
२० अव्यासितिसहस्राणी राजाराखिसुखावहा आह्लणेभ्रमसंस्थाने पीसिष्टाद्य
प्रदक्षणे २१ इतिश्रीविश्वकर्माकृतेक्षीरार्णवेनारदपृछतेशताग्रेसप्तदशोध्यायः
१७ श्रीविश्वकर्माउवाच तत्स्वार्थेप्रयालेन कर्तव्याशुभमंडपा प्रासादेराजविस्मा
नं वापीकुंउतउाकुपा १ तत्रैवमंडपीकार्या राजिराजश्रृणोत्तमं प्रासादाग्रेमयारस्मा
पाठपस्यानेनेकधा २ प्रगादिविजयाचाद्यं मंडपासचउच्यते ३ कन्यसंचततोहिनं
द्विगुणंनैवकारयेत् जगातिमंडपेप्राज्ञ ग्रस्तदोषपरित्यजेत् ४ प्रथममंडपेचार्द्व द्विती
याभूललक्षणा वसुनाथमसीघंटा कर्तव्यासर्वकामदा ५ चतुरश्रीलकास्तेया भद्रजाभ
द्रसंयुता प्रतिरथेवर्द्धमानंच अष्टांसेचमष्टांसका ६ अष्टांसेचभवेत्कर्णे सस्विकास्तंभ
विद्युच भकारेप्रासादसमे शस्यतेशुभकर्मसु ७ एकादशैचकर्तव्या द्वादशेचविशेष
तः स्तंभस्यविस्तरंकार्यं प्रमाणंचविधिस्मृता ८ नरपीतस्यचार्द्धेन उक्तिरंगस्यमस्त
के कलायंच दशार्धानि भागकं राजसेनकं ९ वेदिकाचद्विभागानि भागार्द्धवशातेभ ५०

वेत् १० शिरंचभागमेकेन पटश्चसार्द्धभागकं कन्यसंचमयक्षानं मध्यमंचश्रतश्रृणु ११
नरपीठंसखोर्द्धेन भरणियावत्मस्तके भागार्द्धदशसार्द्धास्ती ज्येष्ठमानविधीयते १३ नरस्था
भरणंचैव सार्द्धभागसमुछया दंडछाद्यंद्विनामाच निर्गमंचविनिर्देशेत् १४ भागार्द्धचकपो
तालि पाजकेमंडपशुभं भागाद्यंपदविस्तारं ततोरतंचभ्रामितं १५ तदपविस्तरार्द्धेन षट्
षष्टिचविभाजिते कर्णदर्वरिकाकार्या सप्तभागप्रमाणना १६ रूपकंचचतुभागं शोपमोच
विद्याधरिगयालुषट्भागेच पल्वणंसार्द्धमेवच १७ पंचभागभवेत्कालं चतुसार्द्धचतुस्तथा
एवंतुकारयंजेनि वितानिकिसुसंडितं १८ पुष्पकोथचतुष्कष्टी भद्रादशाचस्तंभके पुष्पा
दोहयदश्चैव मंडपसप्तविंशति १९ श्रीराणंचसमुर्ताना मंडपापंचविंशति भीतिद्वास्य
भागेन भूमिकामंडपोत्सकं २० तेषांषष्टस्यसंस्थाने कर्तव्यंचसादाबुधे एकभूम्यांच
गर्भस्य २१ दूर्ध्वपंचपदानंच वैपमसंभवंजया जघाकार्यासतायेच नवधापदलक्ष
णं २२ जंघोछोद्यसमोदंच षोडशांसमथोर्द्धते उत्तरंगोत्तसूत्रेण बाह्यषष्टनशंशाय २३
गर्भछाद्यतुल्यभरणा सारवोत्सेसस्योर्द्धयेत् तत्रक्षेत्रस्यमित्युक्तं बाह्यपादंनसंशाय २४
मंडपाये मंडपाग्रेद्वितीयासं युग्मपदेपदाभवेत् द्वारंचाभिग्रमंयत्र द्वारपदंनसंशायः २५
द्वारासापश्चिभागंच वछवेशविधीयते नदोषोप्रशमाक्षाता भालनेदेनजोजयेत्
२६ अनिंदास्यैवजिंस्वे समसूत्रानुसारतः बाह्यजिंदंचकर्तव्यं किंचित्मूलाधिकंशु
भं २७ गर्भसूत्रानुसारेण मध्यदेवप्यचतुर्धिका मेरुमंदिरकंजास वनयेश्रंगमेवच

२८ इंद्रनीलोपद्मरागश्च महापद्मस्तथापरः कीर्तिपताय पुर्णाक्ष शतशृंगोश्वरवल्लभः
२९ स्यांतिदेहोमुनामेको सूर्यस्तथा प्रजायते वर्द्दतेश्चैव विस्तेया त्रैलोक्यविजयस्तथा ३०
प्रासादयातथाकार्या वर्णकास्यो सरित्तथा निगुंढाग्रेप्रियातश्च तस्याग्रे निस्यमंडपा
राजद्वारे प्रतोल्याच्च वापिद्वारार्यमेवच ३१ त्रिदशाराजगत्याग्रे जगतीद्वारकाविदु इत्युक्तं सर्व
संस्थाने मंडपामेरुमादिवं ३२ लक्षणेनसमायुक्तं केउयामिसभासभा चतुरश्रीकृते
क्षेत्रे अष्टधाप्रतिभाजिते ३३ द्विभागंतु भवेन्मध्ये चतुष्टेशारिनोधरा अलिंदेभाग
ताकार्य द्वादशास्तंभमास्मृता ३४ द्वितीयंविंशतीसर्वे रष्टाविंशत्रतीयके भद्रंतु भारूक
रंकामं षट्भागंतु विस्तारकं ३५ प्रतिरथंचतुर्भागं विस्तारंचद्विभागया ३६ श्रीविश्व
कर्मा उवाच नवभाग भवेजंघा छाद्ययेवस्तथापरे ज्येष्टमिनमिदं प्रोक्तं कर्तव्यंच सदा बु
धे १ स्तथाजगतिकोष्टेच इमेकोविंशसस्यते पंचविंशमुखंद्रस्य त्रयमानंविधीयते २
ततोकाष्टंतमध्येच आयामेकेतुविस्तरे कोस्यवेदिचयेमुर वामायतंच विंशति ३ त्रयक्रो
ष्टंतरेस्त्रष्ट त्रयभद्रेसषोडशः षोडशंसि द्वाचभ्रय यष्टोद्वित्रीयुतीपदं ४ भद्रभवेन
ष्पेश्यंति त्रीणिकष्पांतअष्टमं लछंच प्रविष्टभद्रं भद्रेजिनालयेमुने ५ देवालयेच
तालस्यं लोके चैतालमस्यच प्रकृतेचपुनर्भीति पषजातिचतुर्मुखे ६ घरस्थाने
विशेषेण सारवास्तंभेनिरंतरे नवाङ्कर्वतिसर्वाणि नित्यकुर्वतिमेसदा ७ प्रासा
दंमानुतंगाश्च विनमंची जिनालया छंदनायगरमादाय सर्वछाद्यानमेश्रितः ८ ५१

बिनपीठविराधंतेतो मंडोवरविशेषता चतुर्मुखेवदालक्या पुत्रदग्धेचतुर्मुखे ९ इतिमा
तंगप्रासाद प्रादापक्षेत्समक्षावेदे प्रतिमाद्दिचसंस्थाने जिणमालवेवर्द्दयेवामपक्षेचस्तदष्ट।
ष्टेरंगमंडपे १० पंचविंशतिविस्तारं अष्टाविंशतिमुखकं भागेकल्पयेतत्व चतुर्सीती
जिनालयं ११ विंशतिशतितेप्रष्टे चत्वारस्यमुखायते जिणमालस्तदानाम सर्वकल्याण
कारणी १२ द्वादस्यविस्तरस्त्रास्य अष्टायांशनिमध्यतो ज्येष्टमध्यकनिष्टंवा अर्चामानंच
सर्वतः १३ हिनेहीनेप्रकर्तव्ये अधिकेचजनक्षयं रेखामानंभवेत्सर्वं सर्वकामायकारणी
१४ द्वारे पृष्टेच्चतुर्भुक्तं भागमेकंपरित्यजेत् सप्तमंससमाभागे देवदृष्टिनिजोजयेत् १६
उर्द्द्दृष्टिद्रव्यनाशाय अधिस्तेभोगहीनतो रेखादृष्टजिदालयं बहुमूर्तिविवर्द्धनं १७
आर्चायपरस्तंभंच पीठमंडोवरंस्तथा वाल्मीलेखयेयत्र फलंवज्रीयतेसुखी १८ इ
ति श्रीविश्वकर्माकृते क्षीरार्णवेनारदपृच्छते शताग्रे अष्टादशोध्यायः ॥११८ श्रीनार
दोवाच सरग्रेदिव्यलोकेच माहृवांछानमुत्तमे अन्यत्रंकिंवसिष्टंच कथितंममसांप्रतं १ जाव
तसप्तपाताल ब्रह्माडंनिजसंखया चातुर्मुखेनिजविस्तीर्णे कथितंपरमेवच २ श्रीविश्वकर्मा
उवाच क्षीरार्णवेसमुत्पन्नं प्रासादांचमनेकधा नमध्येकतमंश्रेष्टं श्रेणिच्चातुर्मुखंशुभं ३
चतुश्रीकृतक्षेत्रेण सर्वक्षेत्रानुसाध्यत निर्गमावेदिकैर्युक्तं त्रियोबिपदविस्तरं आयामषट्
विंशति निरधारंविचक्षणं सरधनवकोष्टानि ब्रह्मस्थानेविचक्षण ५ पंचमध्यारये
तुकोष्टाम मानंत्रिसार्द्धचमध्यत त्रिपदेकंन्यसंभवेत साप्रतंभवेछयेत् ६ किंचिद्वाज
मप्रतोद्वेय पदचत्वारितोग्रहो कष्टंतथैवचितारि साथतेस्थानमानकं ७ ततोपंचमंम

५२ ध्मेद्रा त्रारभ्रनेंकोष्टके षोउशोचजदाहस्तो कर्णेतनवकोष्टकि ८ तस्यो र्द्धषटत्रिंशोतं सरथंपंच
विशती कर्णेतपंचविसत्या सिलार्द्धहस्तमानये ९ तथाचनवकोष्टेन ब्रह्मस्थाने प्रजल्पत नचैकाच
तस्क्षेत्रे सप्तधाकर्णविस्तरं १० द्विपदंसमसुत्रेण कर्णकोसदाअनेग चतुरोभागनिर्ग्रमंच समंभ
तेलचर्चच ११ नंदिभागद्वयकार्य समंनिकासमवेच शेषभद्रंचविस्तरं त्रयंनिकालवर्तने १२ तथा
बाणभ्रमतेनं पदपंचपदस्तथा मंदरस्थापितेकर्णे सर्वतोभद्रचतुर्मुखं १३ नंदाकेसरादिया
भद्रद्वारंचभीमता गवाक्षपरिचेष्टितं इतिकांतो रणेयाता अनंतपादयेनकेर्णे मदिचउलमोपरी
तिलकंपतिविप्राज्ञ उरप्रत्यांगभूषणं १५ कर्णेकेसरिश्रेव लीलाकरथकोपरि मंजलिमूलिरेषा
व भद्रभूस्त्रंगभूषितं १६ पंचचत्वारियोभागं उरश्रंगातिद्वादसा प्रत्यंगास्तंभचहेच ति
लकंसर्वदापयेत् १७ अर्मास्वांषितरागानि तिलकंत्रिभवनस्यच के योभिस्तुयेयतंत चंद्रसा
लेचातुर्मुखे १८ इतिचंद्रसालाब्रह्मलोके प्रासाद भाग १ अंद्रके ६ कर्णीका ८ पर ३८ तिलके
७२ प्रासाद १८ तथापीठंसविस्तारं चत्वारोमंडपेर्युक्तं क्षणमेकेभवेतकर्णे प्रतिकर्णेतथेवच
१९ कर्णेचसपादत्रिकोंतं अनुग्रेभद्रमंडप भद्रत्रीणिपंप्राज्ञा क्षणमेकं तु निर्गमं २० नीवं ण
द्वारविशेषेण अनंगभ्रहश्रजुतां क्षणयंचैवविस्तारं जयलत्रयमंडपा २१ चत्वारिकर्णेवेदि
त्रीणित्रीणिभवामच अष्टाविंसतिमहाद्वारि अष्टस्थानेतलश्रणु २२ त्रीणीत्रीणिअष्टास्था
ने चतुर्विंशतिधामलं चंद्रायणाचसिधंति बावनवमनोहरः २३ थरयुक्ताश्वप्रासादा चंद्रा
यणनामिमृत्स चंद्रवक्तस्वनामानि विभागसिघरंसहं २४ एततोसेनुमधेत चातुरस्रंकर्ण
वर्जितं हसबिजीणअचौसी उकसीशर्णवेशुभे २५ बावमासोनभद्रायु बासटित्रीणके
र्णेका महासेनाजगतिनां विचित्रविधिभूषणं सिधाश्वसिंहद्वारणंच भुर्ववेसेभव ५२

54

तथां तेनलग्नेत्रयोदस्यो चत्वारिसमुखायते २७ सिधद्वारेपरानुमुषे चतुस्थानेशुभंभवेत्
असीतिचतुरस्त्रेण चंद्रायाणाचसिधते २८ सिधद्वारेविचारेण ब्रह्मस्थानेदिलशुभ प्रासादेन क
रोष्टेन बाणमेकंप्रदक्षिण २९ श्रीमध्रषवर्णपंच मेघनादेनुपंचके त्रिकेनालिसरिश्रेव नवधेघाभ
तायच ३० ब्रह्मस्थानेत्रयोयहे निर्ग्रमंबिसेषत मंत्रयोमंडपानमध्य षणंदासेच प्रदायएते ३१
मंडपेनालिनाव्यसे क्षणमेकेनबास्थले निर्गभावेदिकाबाधि अहुचयोपिवेदिका ३२ सेयांप्रस्त
रश्चातसर्वे सर्वलंकारसंयुता नाममाभातुरंगानां सर्वस्यालकर्णे मुत्तमं ३३ सोभासानिचवि
क्षामि तथाकर्णेबल्लीशुभा प्रसादंब्रह्मसत्रेण सरथंमतकोष्टके ३४ त्रिसहंश्रमाकेर्णे
कवलिरथशुक्तके चातुर्मुखगताचंद्रा सभामाविलागता ३५ गखाक्षेता छंदमरम्य गर्भमंडप
सरैनलयोहोई सोसहोपुणेकजेण ३७ मत्यपरिध्पवेष्ट शिवेदिचे ईश्राहिदे पदअर्धचतु युजे
मुखेपत होयबोचने ३८ षयदृष्टसितिस्त्रीणि कोष्टकात्यामविस्तरे अबजीतीप्रयतेनेनवे
काश्रधारितत्रय ३९ ब्रह्मानेलसंस्थाप्य पंचविसचतुर्मुखे त्रियंचसप्रसंधारं प्रासादंरथसं
युतं ४० शतकोष्टालनमध्ये मेधानाउचातुर्दिसे रथयुक्ताशुप्रासार वेदियुक्तास्वमंडपा
४१ क्षेत्रंपायामुखोदीवं जागसप्रादसकोष्टकं चतुश्रेषोउसास्तंभा दिव्यशव्यात्यमुत्तर
भे चतुर्मुखेमुक्तिकरेनिरंतरे ४२ द्वेषुमिरचिता युगिमेपानां स्यंछंदसोतिवर्णनिरंतरं च
तुर्दसेस्तंभमुखे मंडितशुभं सहीसकार्य मुषक्तिप्रादायुमि ४३ बहुलरिजिनान्यंसेनालि
मंडप जिनविरचिताभ्यामंत्रमेसक्तं तेषुशल्मभाश्रेरक्तिकारको सदापदतस्वलेस्वइभि
रं ४४ प्रासादभेदंचैश्रायां मंषिस्तरे शुभाभागे कुंभबेलकेर्णे पच्यासी सिमंतद्वयंभवेत्

48

५२ ४५ युक्तिषाद्यप्रकर्तव्यं चतुकोष्ट मवमध्य्य जलांतरगतंद्वार वेदिकामुषमंडिल चंद्रेष्टिषा
चसंस्थाने नवभागभद्राचा स्त मध्यासंभागमेकेन चातुर्दसबिवस्थिते ४७ त्रीलिंग्लिभवेचेदा
स्थापदेवनानाभव षोडसविनवाच्युमुच्यते चातुमुषिजहालिचे ४८ पदेकंषोडपटंच मध्यसबे
दमुषेइलि कांतोरणैयुतं भव रविरेखाविराजितं ४९ ज्ञालिमंडपसंयुक्ता द्वेत्रिभुग्यसमाकुल
व द्वेकातरनिपटेश्च पंक्तिसोपानसंचय ५० मेघानादेचसंयुक्ता द्वैश्रमृदामेचंश्रितं मंदलैमंडिता ना
भाति इल्लिकाकुसमाल्लीका ५१ पुनप्रासादविधिपुर्वा नारदश्रृणुसांप्रतं सचमायश्रमचेव दु
ष्प्रदानधिकस्तथा ५२ तस्यदिव्यलोकेमं पुनक्षीराणवेश्रुभे क्षेत्रंमंदेगतिप्राप्त नेवस्वित्रीति
मानुषे ५३ स्तथास्वेवेधेरहिताश्च सिंधद्वारंप्रतिष्ठितं प्रासादश्रुभसंदेन मुलद्वारेचमंडपे
५४ पंचसप्तजहाहस्त सिंधद्वारंसर्वतं सप्तमंतत्रकार्यंच स्यंदद्वारेचमंडपे ५५ एकतंद्याभबे
घते प्रासादस्यचतुर्मुख स्तथाश्रमस्य निर्वाणं द्वायोजघानिषेतकं ५६ तत्कुर्यातप्रजता
नेन त्रिवद्वारंविसेषत पुष्परागस्वसर्वेभ्य सर्वबस्तप्रजायते ५७ मिश्रबधंप्रकर्तव्यं सिंधना
दस्तथावचा सर्वेमेघस्ततोद्दक्षे उक्तप्रासादमुत्तमं ५८ पूर्वेपश्चमेचेव उत्तरेदक्षणेतथा सर्व
त्रमेघनादंच तवपुण्यंसागरोपमं ५९ प्रासादछंदेनमंडपं चतुरोदिसउन्नत द्रवेद्वास्त
द्रष्य लोकस्ययंश्चचेतत ६० अष्टहस्तेभवेतादौ जावतदसपंचकं श्रमोदपंचकेतव्यं घोज
याद्विभूविकां ६१ एकभूमिस्वद्वयोयत्र भूमिर्जघाविधिक्रमात मयाप्रोक्तसाक्षात चैका
दौ भास्करंभास्करंतकं ६२ स्तथापिदस्ततोरिषि मीनमंडोवरंणश्रृणु क्षीरसागरमुत्तमं
प्रासादस्यचतुर्मुखं ६३ षटभागभवेद्वीटं पंचभागत्तृतीयकं भागभागेच निक्रांता
त्रिपदेचत्रितीयकं ६४ सप्ताभिजाडकुंभंच त्रयोदस्यकेर्णलिका द्वादसस्य छितह ५४

५५

स्ती हयतस्यसमुत्रिधा ६५ स्तथानिक्रांताविक्षात द्विपदंबिटमेवच द्वितीयततसमंकार्यं
पादमेकंप्रतीयकं ६६ वसुभिजाडयकुंभंच केर्णलिकाषटमेवच गजाचत्वारिभागानि त्रयदं
सार्द्धतुरंगमा ६७ द्विपदंनरपीटंच सिरेपटिस्वचमेकतः द्वेहयाचगजासार्द्धं ऊपटीग्रसंपूजितं
६८ तथामंडोवरंप्रृछे षुरकंद्विपदंभवेत कुंभकंपंचसार्द्धंच कलसंत्रिपदंभुभं ६९ अ॰तप
रंपदमेकंच कपोतालित्रयोपदं मंचिकात्रयसार्द्धाय जंघैकदेसपंचके ७० लोकपालादितल
स्व इतिआनंदपूरितं देवानात्तसुत्रंभव नृत्यबाद्यिचसंयुतं ७१ नालस्यतांडवाचेव नालेच
विसेषत आयुधंवाहनेयुक्तं नृत्यकुर्वंतिदेवता ७२ ऊर्ध्वबजिनमवनेच त्रोषस्य चतुर्मुखो
इद्रतादृप्रकुर्वंति टाणसव्यपुरावृते ७३ अर्धबाणकरंजतं नृत्यमानादिपुस्तकं अर्द्धंदष्टिवि
सेषेन द्वामभानपलस्तलं ७४ षटभुजोअष्टभुजा स्तत्रिमानद्विसंयुतं तालमानसमाक्षात ले
नृत्यटोषोडसांकुलि ७५ पटसहीतिअभिदाण अपसव्यमाहृतं वामहस्तंचकेर्णते दक्षेजान
पदस्तलं ७६ दक्षणेपान्यधक्का धाद्विप्राबामसंयुत अर्द्धेकिस्यविमलिन्यो यमादिविणे
मरीष्यतं ७७ नैरुतेक्षेत्रपालस्व जसटामततोपरि अर्द्धहितलंजोते उत्तानंनृत्यकारकं ७८
परवृतंचवरुणंच सिरदंडकरंभवेत अधोदृष्टिप्रजनेन हृदयेवामहस्तकं ७९ बान्सैवेतालप
विक्षे पुनस्तामंडव्यकांचन भ्रमरियंचाविसेषेण बस्तहस्तविसेषत ८० कुबेरजाधया
लीला गणइंद्रादिकोतमा ग्राताचमृदलाहस्ते करकेसिरिभूषिता ८१ ईशानेईश्वरंरम्यं
भूजाष्टस्यसंयुता उत्तयश्रीब्रतकुर्णा वामहस्तेतुकारणे ८२ इतिश्रीविश्वकर्माकृते क्षीरा
र्णवेनारदपृछतेशताग्रेसर्वसारमथनंनाम एकोनविंशोध्यायः १९ श्रीविश्वकर्मा
उवाच प्रतिपत्स्मिदंपृछे जानुभ्यांधरणीगतः प्रासादेदेवताउक्ता कथितंपरमेश्वरः

१ ब्राह्मणाश्च त्वयाकथिता विप्रुश्चकथितास्तव रुद्रश्चवीतरागश्च ममेश्रुत्वा पुनः पुनः।
२ त्वत्वां चतुर्मुखंदेव रुद्रस्तेवातरागमत् तत्सर्वंममसांप्रत्यो कथितं परमेश्वरः ३ विश्वकर्मा
उवाच येउक्ताच्यस्यदेवस्य प्रासादाश्चमथश्रृणु जातिभेदैसमायुक्ता विशेषेणचतुर्मुखः ४
प्रथमेस्वर्गखंडेच उक्तकैलासमंडनः सद्योवामस्तथाघोर तत्पुरुषस्थानमेवच ५ लिंगपं
चमुखःप्राज्ञः प्रसादस्यचतुर्मुखः जितेंद्रस्याद्विशेषेण द्वारिकाद्यामथोपिवा ६ विमुखंचै
कवक्त्रस्य प्रासादंकारयेत्बुधः वाणलिंगशुभस्थाने हरिस्थानेच संगमे ७ त्रयसांनिध्यः
संस्थाने तथावैस्वामिकार्तिके त्रयद्वारं प्रकर्तव्यं चंद्रार्कस्वपितामहः ८ पश्चिमेकं द्विकिश्चैव।
स्वामिनंत्रयमेवच द्वारहीनंचप्रासादं बुधिकगूदवेवकारितः ९ द्वारस्थानेकृता भाला चतु
र्दिक्षुविवस्थिता ब्रह्मास्थानेचसंस्थाप्य योगध्यानेप्रवर्तते १० नारदोवाच द्वारविनाथसं
युक्ता एकद्वीत्रीचतुर्थकं कथितादेवउक्ताच्च छंदरूपंचकथ्यते ११ विश्वकर्मा उवाच एकद्वा
रंसुनेकाश्च द्विमुखंत्रिमुखंश्रृणु चतुर्मुखंविशेषेण श्रृणुत्वेकायतोरिवि १२ कैलासश्चि
खरंरम्या रम्याप्रासादयुग्मुखं सद्योवामस्तथाघोर रम्याहंचमुखोशिवं १३ चतुरश्रीकृते
क्षेत्रे त्रिंशधाप्रतिभाजिते कर्णभागचतुष्केन प्रतिकर्णतथैवच १४ निर्गमंपंचभागानि
भद्रंभागचतुर्दशः पदत्वत्वारिनिकोता मुषभद्रंषड्भागतः १५ तथानिर्गमवेदीच षड्
पदंमंडपान्वितं प्रासादंब्रह्मकोटेन षटनंदसिताग्रतः १६ कर्णभागत्रयंकार्यं प्रतिक
र्णतदाद्वतः निर्गमंततुसमंकार्यं भद्रंचेपंचभागतः १७ रथमानेभवेत् कुली विस्ता
रंभद्रमानतः चतुर्दिक्षुभवेद्वारं भद्रस्थानेविभूषितं १८ प्रासादाछंदतो त्वाज्ञ सत्व ५४

ग्रंस्तंभवर्जितं कपोताल्लीचकर्णांते छाद्यर्वथमघालिका १९ तस्यार्धेभवन्मंत्री पुनर्जं
घाविवस्थिता जंघोर्धेकपोताल्लीच पृष्टचाद्यंतथोपरि २० पुनर्द्वारिप्रकर्तव्यं निरंधारंवि
वर्जितं छादनोर्द्धेकपोताल्ली छाद्यंचविशेषतः २१ तत्तुछंदमयारम्यातं उर्ध्वमानमतश्रृ
णु कर्णेकर्णेचकैलासं रथेरथेअमृतोद्भवं २२ पुनःक्रमृतदद्यात् रथस्येनदत्तालिकं तथा
कर्णेचसंस्थाप्य रथेतिलकंचतुत्तमं २३ मंजर्यामुलरेखाच सरतराष्ट्रविंशति प्रतिकर्णे
उरुश्रृंग श्रृंगस्याष्टचविंशति २४ मध्यश्रृंगेचविंशत्सा अथःश्रृंगेत्रयोदश मध्यश्रृंगेच
प्रत्यंगे समश्रृंगाविधीयते २५ इतिरुद्रतांडवप्रसादे भाग १४ अंडक १०७३ तिलक ८
नारदोवाच किंपीटमंडोवराकंचकथ्युक्तिच इआणंचनवसप्तपंचमंडितं २६ किंद्वारंचवरश्रेष्ट
चंद्रस्थानेतथोतम कथंवामदक्षिणंऽकथंच कामेवाग्रपृष्टकं २७ विश्वकर्मा उवाच एकभिदं
द्विभिदंच त्रयभिदंविशेषतः तथावैजाड्यकुंभंच अष्टभागोश्रयंभवेत् २८ खरभागंकर्ण
माल्लीच वसुभागग्रासपट्टीका नवभागंवृषपीठंच वसुभिःनरपीटयोः २९ उदयार्द्वेप्रय
त्नेन त्रिभागास्तत्रमध्यत द्विधाकुर्वतिभेरेषि निर्गमत्रिविधोत्तमा ३० पीटमानंमया
ख्यातं मंडोवरमतंश्रृणु पुरकंचद्विभिर्भागं कुंभकंससमेवच ३१ कलसंत्रिभागमुछेदं
भागेनंचांतरपत्रकं कपोतालिविभागानि अर्द्धेचांतरालया ३२ मंचिकायाविभागानि
जंघापंचदशोत्तमा उद्गमंपंचभागभागेश्च भरणीभागत्रयंभवेत् ३३ अर्धचांतरपु
त्रंच शिरापाटीचतुर्भवेत् तेषांचतुर्मुखानांच प्रसादेछादनंशुभं ३४ कपोताल्लीत्र
योभागं भाल्लीवैत्रीणिमेवच षट्वाद्यंयुगेभागं प्रहारंवेदसंज्ञकः ३५ मंडोवरंकथि

तोप्राज्ञः सिंहद्वारस्य तन्शृणु प्रासादस्य दसाहन्य ताद्दशंमंडपो तमः ३६ चतुर्मुखं शिवंसंस्थु
स्थाने सिंहद्वारंतु पश्चिमे दक्षिणे जिनभुवनेच सिंहद्वारं विवर्जितं ३७ हिंडोलकंपश्चिमेभा
गे मेघनाचापि मंडिते समायतनंचकर्तव्यं शेषंचसर्वकामदं ३८ प्रासादपंचगुणीकृत्य च
टगुणीच विशेषतः समाष्टगुणी प्राज्ञः सुखायतनंच सिद्धिती ३९ तथनंतरंवक्ष्ये दंकलिंगमहा
मुनिः कृत्वाचातुर्मुखश्रेष्ठ तद्विचारंप्रथश्टणु ४० प्रथम्यानुसातो ब्रह्मा विष्णुचतस्यमूर्ध्व
तः तृतीयाभूमिकारखिं लिंगकुर्याचतुर्मुखः ४१ एकलिंगस्वयंज्ञात्वा अन्यत्रेनीमधारकः
स्वर्गस्थान स्वयंलिंगं पूजिताच सुरेश्वरा ४२ स्वामिश्टणुभुसागृह्य प्रासादंनिर्मितंतथा
हस्तमानंततोभूत्वा कोष्ठोनांतुसंख्यया ४३ मथाकोष्ठप्रमाणेन तृतीयास्येचपातयेत् घसता
न्याद्दिकंकार्यं सर्वक्षेत्रेनकोष्टकं ४४ नचकोष्ठानमध्येच प्रासादंकारयेबुधः सावधाराणि
यंत्राणी तांश्चगानियानिच ४५ ततकथितंयदाश्रेष्ठं क्षेत्रांतद्वादस्योतमं द्विभागमुलकर्णंच
प्रतिकर्णंतदाद्वितः ४६ शेषंभद्रस्यविस्तारे पादूनांनिर्गमंभवेत् तुंगंसमदलंकृत्वा स्वरूपा
लक्षणान्वितं ४७ षोडशांशप्रकर्तव्यं विस्तरं उदकांतरं शोभनंत्रिगुणंवक्ष्ये सिखदनंनियो
जयेत् ४८ भूमस्थानेकृतावेदा भूमिसिद्धंनिवेसितं स्तंभगर्भेस्थितंपूर्वं तोरणेनमलंकृतं
४९ चतुर्मुखाश्च प्रासादा मितभेदःप्रतःश्टणु कृतायुगेब्रह्ममूर्तिश्च दोपयेयुत्तरामुखा ५०
सर्वाभरणसंयुक्ता शेषमूर्तिप्रदक्षिणे उत्तरेणकृतेदीर्घ सेषकृस्तप्रदक्षिणे अथ्यासीतुस
हस्राणी ऋषिरूपमुनेऊर्ध्वी ५१ नवांशांषंभवेद्वारं ऋषिरूपसमाकुलं धात्रचित्रविचि
त्राद्यं ग्रहरूपेणसंयुतं ५२ उपर्युपरिभूमीनां सव्यावर्तप्रदक्षिणे नापसव्येनकर्तव्यंद्वा

रं धितिद्वारकोतमः चतुश्चगोपिसंयुक्ताविष्णुनागेनसंयुतः ५४ स्थावतैन्मूर्तिनेदेत ऋषिराजश्टणोतमः
द्रष्टस्ते उत्तराश्चेच कर्तव्यकमलासनः ५५ तस्योन्मुपरिभूम्या
रमारोपणानिच ५६ तस्याः द्वितीयाश्चभूम्यां वासुदेवतथोतरे भद्दे पितामहोप्राश्च उत्तरेसं
करेक्षणेतथा ५५ दक्षिणाद्विविरंचेन पद्मनो भक्षिवापरे पश्चाईकृतेब्रह्मा तस्याईकृष्णदेवता
५७ चतुसहस्त्रगोपिसंयुक्ते परिकरे परिवर्तते नारदस्तंबराद्यंच भ्रमंतंचप्रदक्षिणे ५८ इलि
कातोरणेर्युक्तं अस्तंभाचविभूषितं सप्तसाषीभवेद्वारं रूपंगोपांगनावरं ५९ एवंविष्णुभा
गोक्तं रुद्रभागंततोपरि तृतीयाभूमिकामध्ये लिंगकुर्याचतुर्मुखे ६० द्वादशागोरिकान्मुर्ति
स्तांकुर्यात्प्रदक्षिणे सायुधावाहनैर्युक्तं अर्द्धासनस्तांबुधौ ६१ भूमेकांमंडोवरांते सिषाचसिष
राइते जटाधारीमुनेकाश्च रुद्रसावागनिर्मितां ६२ त्रिरात्रंमेकांसीत्श्चग्रेच सिषरंचसर्वकामदं
द्वात्रिंशतीतिलकानि एकलिंगानिनिर्मितां चत्वारोहंसयुक्ताच गरुडांचतुरोदिशा वृषभंचत्वारि
दातव्यं प्रासादे गरुड्रतांडव ६४ इतिरुद्रतांडवप्रासाद तथानंतरंवक्ष्येत प्रतिमामानतांबुधै
द्वारमानंभवेश्रेष्ठं रन्यथानिःफलंभवेत् ६५ देवतामुनीनीयात् पीठमीनवमेश्लत्वे पीठकंनाडभा
गोनां सार्द्धभागंचमानवं त्रिभागंउत्तमंतस्मा शेषंपीठसमुच्चयं इदंचब्रह्मसंस्थानो दृष्टिश्चसम
भाष्टकं ६७ माहेश्वरस्यविष्णोच ब्रह्मणेचोत्तमंभवेत् इत्परेषातुदेवोनां कर्तव्यंत्यनधामृतां
६८ तंशाब्रह्मणसूत्रेषु प्रासादंनवकोष्टको रेषाद्यांस्तंभगर्भंचि सप्तमंपंचविंशति ६९ भागं
भागंभवेत्संक्ति वेदिकाचत्रयोदशा चतुर्थंमुलद्वारेतु मंडपंसप्तमोत्तमं तस्यबाह्येद्विषणांते
पुनःपीठंनिवेशितं ब्रह्मभागोष्टमांशेन भागः ब्रह्मशिलांक्षपेत् ७१ यावत्सन्मुखंप्राज्ञ भ्र
मंतंचप्रदक्षिणे वेदिकासनपट्टंच कक्षासनकैर्युतं ७२ त्रिषणयुक्तिमानेच मूलपीठेन
फालनात् लकमानैश्चैकलिंगानि यतिस्थामम्रतोपरि ७३ द्विमुखास्तत्र प्रासादा चतुष्क
चीनिवेशितां शिवकृष्णेचयेउक्ता देवतामुनियासितं ७४ मंडपंमेघनादंच सिंहद्वारेप्र
दीयते भूमिकात्रयसंयुक्ता पांक्तिसोपानसंस्थिते ७५ पीतिःसार्द्धंचभोक्तव्यं इदृशांतेन

कारिते ज्येष्ठेश्चैकलिंगानि पीति सर्वत्र भुंजते ७६ एकलिंगे कृते यस्तु प्रासादस्य चतुर्मुखः
शक्रे भवेद्यावत् इंद्रलोकं च संश्रय ७७ कोटिद्रव्यप्रतिष्ठार्थे देकलिंगेच निर्मितो तत्रसो क्षमप्रभा
वेश्च नसोरव्यं दश्यकोटिभि ७८ तथा अनंतरं वक्ष्ये विस्तारं ज्येष्ठमेव च प्रासादे मंडपे युक्तं शिवलिंगं शृ
णुतां बुधे ७९ चत्वारि मंडपं कुर्यात् कर्णे कुर्यात् द्विदिका खाणां रेखा प्रकर्तव्या पीठबंधस्य चोपरे ८०
भ्रमं च द्विषणां तेच पुनः पीठं नियोजयेत् खणः यंत्रांतरा प्रासः युक्तिमान भुचिस्तरे ८१ आद्यथरं
जाड्यकुंभं कणीश्च आसं तमेव च इत्येव पीठबंधं च भ्रमते च प्रदक्षणे ८२ कुंभकलशकपोतालि राज
सेनं च वेदिका आसनपट्टं तथा कार्यं कक्षासनैर्विभूषिता ८३ एवमाद्यविस्थानं वेदिकानां प्रदक्ष
णे मध्यपंक्तिकृतादिषं लिंगानां च सुनेकधा ८४ कर्णप्रासादे चत्वारि द्विमुखा सर्वकामदा दक्षिणे
स्वोवोक्तो अर्चा वामे विष्णुप्रदीयते ८५ पीठिकां बंधसंयुक्तां लिंगं कुर्यात् प्रदक्षिणे तन्नशलं द्विमुखं कृता
न्नोघस्थानेन्न तश्शृणु ८६ पंचद्वलं रेखा कृते वामे दक्षणे तां निवेशितं शतसाहं जितपृष्ठे शतमेकं तथा
वो ८७ एवमादि मुनेकाश्चै लिंगं कुर्यात् प्रदक्षणे सहस्रायतसंयुक्तं देकलिंग नमाम्यहं तथाप्यच
तुः कर्णप्रासादाश्चैव निर्मिता तेषां तल्लमृद्धं वा शृणु त्वं च महामुनिः ८९ वृषभध्वजमीशान्ये आग्ने
यां गरुडध्वज नैऋत्यां हंसध्वजं च सिंहध्वज वायुरात्मके ९० तलविभक्तिमिति पूर्वे स्तव्या मूलप्र
सादतः रथमानं च धीमतां कर्णप्रासादेनां कर्णं तद्रूपं न समाणकं द्विभागं तच्च निर्मितं आनुगंतु
पदः साहं द्वितीयं भागमेव च ९२ भिर्गमं विस्तराद्धं न भद्रे कुर्याद्व्यवस्थितं गरुडध्वजशिखरं
स्वलं पंचलक्षणाधितं शुकनाशाद्वियं कार्यं विमानेर्विभ्रमोत्तम सिवदेतसमृद्धं च मुसेचविकृता
ते ९४ तलमेकं चतुस्थाने कर्णतलसमं भवेत् नंदिका भागमेकेन समसूत्रं विचक्षणः ९५
पदसाहं प्रतिकर्णं निर्गमं च समं भवेत् पदसाहं भवेद्भद्रं तेषां वक्ष्यामि तत्वतः ९६ द्वयसाहं
निक्रंता च भद्रं गवाक्षभूषितं शिखरं वृषभध्वजं रम्यं ईशान्ये सुरवल्लभे ९७ इतिवृ

षभप्रासादभागः अंडिक ९७ गरुडश्रृंग ९३ सिंहे ८९ सिंघे १०१ वृषतले भत्स्यथ गुरुडेहमचे
त इंद्रसंकुलतेयस्तु विष्णुतुल्यावितिर्यथा १०२ इदंप्रासादतारिषी सिंहद्वारं शृणु यद्वारंश्च ल
प्रासादं द्वयोतत्रापि सन्मुखं १०३ उत्तराभिमुखा द्वे च द्वयो दक्षिणसन्मुखं पंचतत्वेनैकेन क्षत्रा
छंदमेको प्रतिष्ठिता १०४ इति स्वर्गाणवि उक्ते वृक्षार्णवस्य शास्त्रात् एकलिंगाय तयमदा लिंगे ब्र
ह्मविष्णुशिवसंयोगात् १०५ इति श्रीविश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारदपृच्छते शताग्रे पंचतत्वा
रिंशतमोध्यायः २० श्रीविश्वकर्मा उवाच पुनस्याश्चैकलिंगानि ऋषिराज शृणोत्तमे द्वि
भ्रमं मूललिंगं स्यात् वेदिका सहसंयुतं १ ब्रह्मणा सिनिमध्येच कव्यालेउंबरायजं धातेच पुनः
पीठ सन्मुखं च प्रदक्षणे २ मंडपास्तत्र कर्तव्या उपर्युपरि भूमिकं ततसमाया चतुरो दक्षेत् मंडपाच्च
मनोहर ३ चतुर्मुखाश्चैव प्रासादा अर्धब्रह्म प्रतिष्ठितो उर्द्ध विष्णुलोकेन द्वारिकायां मनोहर
४ अष्टयासीति रेखैर्युक्ता ब्रह्मणा अर्धसंस्थिता तत्पृष्ठे न संस्थाने पंचवक्त्रं महेश्वरः ५ ब्र
ह्मभागं विष्णुभागं रुद्रं चतुर्मुखो तमं षोडशत्रैच सारोच्छं मध्येरुत्न प्रतिष्ठितं ६ ब्रह्मपृष्टे प्र
दातव्या विष्णुपृष्टे स्तथैव च सर्वतो रूपताऊर्यात् यावत् लिंगं चतुर्मुखं ७ स्वातश्च मानय
स्यंच शिषिराजशृणो मं चतुष्कं अष्टाश्रं वा वृतं तद्र प्रकीर्तितं ८ स्तुपस्तेपांच मात्रेन घा
तं कुर्याद्विचक्षणः षातश्चं पंचमात्रेन लिंगविस्तरतां बुध ९ त्रिगुणं खातोदयं कार्यं वृक्षा
कारं च मध्यतः खातं च लिंग माकारां लिखगखातपरस्परं १० पंचरत्नामध्ये स्थाप्यं यत्ना
त्यच विचक्षणः हेमरूप्यमयं पुष्पं पूजितेच महेश्वरः ११ जान्हवी वेलिकास्तत्र षातम
ध्ये प्रदीयते दीपहेममयं कार्यं षातमध्ये निवेशयत् १२ वज्रवैडुर्य सुक्तायंच इंद्रनी
लसुनीलकं यक्षराजं च गोमेदं प्रवालं च प्रदक्षणे १३ दिग्पाल बलि दद्यात् दानं द
द्यात् सर्वतः गुरुपूजा ततो कृत्वा सूत्रधारं विशेषतः १४ इत्येषां वास्तुमारोप्यं ततः प्रतिमायं

५७ नि ब्रह्मविष्णुयकेदेवा शृणुभेदामुनेकिधा १५ कमलासनक्रांतेपूर्वे दक्षिणेचपितामहः विरंच
पश्चिमेभागे उत्तरेब्राह्मणःप्रियां १६ उपर्युपरिक्रमीनां विष्णुरूपंअतःशृणु पूर्ववास्तुदेवेच
दक्ष्येसंदक्षिणोत्तमः १७ पश्चिमेपद्मनाभंच वारुणेअनिरुद्धतः दिशिपरवेष्टिताब्रह्मा विष्णु
गोपीचसंयुता १८ उपरिचातुर्मुखंलिंगं भवानन्येकसंयुता एकलिंगभवेत्तच स्वर्गास्थानेचशा
श्वतं १९ देवतामुनिजातीयात् पीठमानंमथोच्यते पीठकंनिउभागोनं सार्द्धभागमध्यमं द्विता
गंडउत्तमोत्तप्रासादेषांपीठसमुच्चयं २० द्वारंस्थानदर्पश्चैव दृष्टिदृष्टिप्रदीयते २१ माहेश्वर
श्चविष्णुश्च ब्रह्मणांचोत्तमंभवेत् इतरेषांतुदेवानां कर्तव्यंपुनर्धीमतां २२ चतुर्मुखेनलिंगे
न दृष्टिमानंअतःशृणु द्वाराद्दसार्द्धतश्चैव कुर्याद्दृष्टिचतुर्विधा धनदारायदाचैव कामदामो
क्षदाशुभा लिंगदृष्टिश्चकर्तव्या सकामाश्चफलप्रदा २४ तलमानभवेत्पूर्वे विभंजनप्रासा
दशा कर्णभागत्रयंकार्यं चातुर्गंचेनदाद्दतः २५ नदीभागेनमेकेन भद्रंभागत्रयंभवेत् स
भद्रलंचसर्वांगे भद्रपाद्दानमेवच २६ युसीदेवास्यसंस्थाने तमालंगर्भमध्यतः तःउदंबरेयं
दामध्ये पंक्तिसोपानसंचयं २७ पूर्वदक्षिणेचैव पश्चिमेउत्तरेस्तथा प्रासादेअनुराधाश्च
विनाभाग्येनलभ्यते २८ तथाश्चपीठमानोक्तं शृणुवक्ष्यामिसांप्रतं प्रासादजद्दमासेन
पीठंकुर्याद्विचक्षणे २९ तदश्चर्याविभजेत्प्राज्ञः भागसप्ततानःवक्षिये भिद्दश्वादादशाभागं
दशाभिर्तोउयकुंडकं ३० कर्णसहाश्चविज्ञेयो दशाभिःग्रासपट्टिका तत्समंदृषपीठेच तव
भिःनरपीठकं ३१ निर्गमंउदयार्द्धेन युक्तायुक्तांचधामतो उत्तानवेदौनतेकार्यं हस्तहस्ते
द्वयोजलं ३२ तथाश्चफलनाकार्यं पणमानेविचक्षणः गर्भद्वांषडंशोनां षणज्येष्ठं
विधायते ३३ कन्येशोषनकर्तव्यं अष्टांशात्रवसिदति षणमेकंभ्रमंततु प्रासादस्यप्र ५७

५८

दक्षिणे ३४ मंडपंविस्तरंकार्यं पासादस्यप्रमाणतः द्वादशांशसमायुक्तं मंडपेकन्यसोनि
च ३५ तथाश्चद्वारेण प्रमाणंचअतःशृणु संभ्रमंमंडपकार्यं पणसंत्स्चविस्तरे ३६ मध्यमं
आष्टकंयत्र गटूचीचस्तथोपरि पुनःपट्टांचरिष्टांसे ततःकुर्यात्करोटकं ३७ पुनरभ्रमसस्था
ने अष्टांशंचप्रदीयते गयालिकाछादनेकृत्वा मध्येपद्दयदाभवेत् ३८ भ्रमतीछाद्यकीकृत्वा
परजंघासबंधनै गयालिकातस्यमध्ये सलग्नंचप्रदक्षिणे ३९ मूलमंडोवरस्थाने यथापी
ठोपरिस्तथा पुरकंषट्भागंच कुंभकंत्रयविंशति ४० कलशंवसुभागंस्यात् अंतरंत्रयमे
वच कपोताली ततोअष्ट भविका नवमेकृता ४१ अष्टचत्वारिंताजंघा उहमद्वादशोभवेत् भ
रणीअष्टभिर्भागा शिरःशाष्टीचद्वादशा ४२ करमानंवसुभागंच परमेछादनंशुभं ततोभ्रम
गतेबाह्ये उद्गमातंशिरांतकं ४३ तत्शिरेसमतोयाति भ्रमंतंचप्रदक्षिणे भ्रमितेछादकीकृत्वा
तात्वीकुर्यात्मदक्षिणे ४४ उपरिकोणटकाद्यंच शिरस्थंभसपटके दाश्रवंचसीकृत्वाच परस्थो
लेसमाकुलं ४५ द्वारकवलीस्यामे परेभद्रलीप्रदक्षिणे शिरावटीकरमाद्यं थरेचथरसंक्रमे
४६ ततोकुंभेयदारूपं बाल्याणपाव्यजसंभवं जंघाघायादिगपालीच नृत्यमानेसुखावहा
४७ लाम्यतांडवतत्रवैतालंध्यविशेषत इदंताघसमायुक्तं दिगपालश्चतुर्मुखे ४८ चारि
मर्ग्रमुनीद्राणां कर्तव्यंचसदाबुधैः चामरढालयदाकार्या दिगपालसोभयान्विच ४९ इंद्र
अग्नयमश्चैव भैरववरुणस्तथा वायुकोबेरईशश्च पूर्वाद्यंचप्रदक्षिणे ५० घृताचिर्निमेनि
कासाचरंभावेण्य वतीपुष्पवतीरम्या क्षणाक्षितिर्भवति स्वर्गलोकंचातुर्मुखेइंद्रकुवेरपसेवा
५१ धोश्राविलिसहमंजघोषा प्रयोगिनीसहस्त्रकलांचरम्यां दक्षिणाक्षितिर्भवति स्वर्ग
लोकंचातुर्मुखे अग्निकुरंतिसेवा ५२ महाबलीनाटकीनृत्यधारी प्रयोगिनीसप्रियानयुक्ता

५८

क्षणाक्षितिर्भवतिस्वर्गलोके चातुर्मुखेधर्मउरतिस्यसेवा ५३ सकामसहिताक्तविकामसुंद
री कर्पुरकांतीचसर्वकलाइनी क्षणाक्षितिर्भवतिस्वर्लोकेचातुर्मुखंभैरयनित्यसेवती ५४
लीलावतीअर्वशीचगंगा चर्याविचिर्याद्विवासरटालया क्षणाक्षितिर्भवातिस्वर्गलोके चातु
र्मुखेवर्णकुरंतिससेवा ५५ पताकिनीचविपुलास्फुरांगिवेलाउलीभयतास्वभाविनी क्षणक्षि।
तिर्भवतिस्वर्गलोकं चातुर्मुखेवायुकुरतिःससेवा ५६ एरावतीचंदनचीरपंगा श्रियानिधा।
निधानादयोदयोकुंभधारिणी क्षणाक्षितिस्वर्गलोकांत्वानमुखेधनदेर्नित्यसेवति ५७ गंगानु
रंगिमदनाचत्रास्या छुरीधरंतीस्वजनास्वरूपा क्षणाक्षितिर्भवातिस्वर्गलोकं चातुर्मुखेईश्वरंत्रो
तुरतिससेवा ५८ तथानंतरप्रासाद शिखरंसर्वकामदं पृथ्वीजयत्रतेकणी अमृतोद्भवचानु
गे ५९ नेरहीतिलकप्रदातव्या त्रयद्वंनेप्रथमक्रमं द्वितीये अनुगेयत्र कर्णस्यापरिहायति ६०
मंदिरंअनगःस्थाने तिलकेपरिविमानके कर्मस्यद्वितयंगम्यं तृतीयेच अतःश्रृणु ६१ कर्ण।
स्थानेप्रदातव्यं द्वितीयेचानुगेयदि अनुगेनंदत्र्यालंच भद्रकर्णिनतां भवेत् ६२ मंडोवरंच
सर्वांगे अचलस्तेसर्वतोदिशि भद्रेगवाक्षकर्तव्या द्वारेद्वारेचकारयेत् ६३ त्रयःकर्मपरिकु
र्यात् शुकुनासांचतुरोदिशि रेखाकर्णेप्रदातव्या विमानरुद्रस्यदेवता ६४ मध्येवेदासमीरेघा
पटस्यांतेविचक्षणः उरुश्रृंगद्वयंकार्यं विमानेचमनेकदा ६५ उमासहितरुद्रस्य विमानो
सुत्रदीयते पंचदंडकृतेतत्रे चेकलिंगेमहामुनिः ६६ प्रत्यांगाष्टकर्तव्या विमानेनिजसंच।
यः यताधारीतदस्योरप्या विमारुद्रस्यतेबुधः ६७ एदवेत्र्यपरंकार्यं सर्वमानार्थदायकं
विष्णुतल्याभवेतंच स्वर्गस्थानेसदाभवेत् ६८ इतित्रैलोक्यविजयप्रासाद भाग १४ अंड
क १५५७ तिलक ८ तदागर्भश्रमध्येच रिविगजश्रृणोतमः वेदिकातोरणंकृत्वा चतुर्दि ५८

क्षुनिवस्थितः ६९ देवछंदालयामध्ये भातेवितायतेतथा लिंगाकारभवेमातं द्वारस्चतृतीया
शके ७० तदर्धेलिंगमानंच मुखचत्वारितांबुधे ब्रह्मदृष्टेतथादृष्टे मध्येश्चत्वारिमालया ७१
सुर्यकांतेश्चदातव्या चतुर्दिक्षुविवस्थिता सुवर्णादिपकंकार्यं वातिसवार्णतांबुधे ७२ हेम
रूपमयंपुष्पं लिंगश्चपूजनंकृतिः असंदलिगस्तथानाम पातमध्येप्रदीयते ७३ महामहोत्स
वंकार्यं महादानप्रदीयते आचार्यसूत्रधारश्च येकवस्त्रेणपूजिता ७४ तथानंतरप्रासाद ब्र
ह्मणस्यापनंकृतं परिकरेणसमायुक्तो परिपूर्णचभावितं ७५ उपरीविष्णुभागेन यदपूर्वप्र
दीयते गर्भग्रहपरष्टोत्रां जलपट्टप्रदक्षणे ७६ तदागोदागसर्वं नदातव्यप्रदक्षणे वंसवीणा
समायुक्ता वीणाबंधधारिणा ७७ परिकरेणयुक्तात त्रविष्णुलोकंचरयध्यति ततोमुपर्य
भूम्यां लिंगचातुर्मुखोत्तम ७८ भवान्याद्धपर्यतं गर्भस्थलसमाकुलं यावतमंडोवरंतत्र उ
दयंचभतश्रृणु कुंभकादिमहारांतं कृत्वासाद्वदियांशुभो ८० दशांकेचदशेयावत् कर्तव्यंत
त्रधामतो पादनांद्विगुणांकार्यं यावमंचासहस्रकः ८१ एकजंघाद्विजंघाच त्रिचतुष्कंचमेकच
यावतद्वादशजंघाच प्रासादेनिर्मितांबुधे ८२ ततदामंडपंकार्यं क्रमतंचप्रदक्षणे सप्तमा।
मंडपार्या इतिकातोरणेयुता ८३ पंचवेदीचकल्पांते षणांतेरविनसंज्ञायः मंडपामध्यतोप्रासा
अष्टस्तभविशेषत कुंभीस्तंभस्यरंगडंदीसीरसदशाम्यके ८४ ततस्सर्वदृत्तिमाकारं पुनर्जंघाप्र
दीयते बाह्यपट्टेचरशोत्रा चोडशाद्विगुणेकृतं ८५ दृतोपरिकर्णादद्यात् गयालिकांजंघात
के मध्येकरोटकंदद्यात् सर्वलक्षणसंयुते ८६ विष्णुभागेतलप्रासः मंडपेचतुरोदिशि सार्द्ध
भूमिसमायुक्तो पुनद्वारश्चसन्मुखा ८७ तदावृद्धिःमतपूर्वं मेघनादप्रदक्षणे त्रयोभू।
मिसमायुक्ता पुनःद्वारश्चसन्मुखा ८८ कर्तव्यासाचतुर्मुखारेकश्चमंडपंतरेलिंगं कु

५८ पीत्पुनःपुनः ८९ तेलिंगंचबभ्रूपक्षे मासादोद्विमुखोत्तमा ब्रह्मविष्णुश्चतद्रश्च उक्ताश्च
प्रतिष्ठिते ९० युक्तिस्यपंक्तिनेर्युक्ते विचरंतिप्रदक्षणे कोटीश्वरःसमायुक्ता देकलिंगश्चशोभि
ता ९१ दिक्षादिक्षुप्रकर्तव्या मंडपासप्तविंशति तोरणंचतुरोदक्ष विशेषइतिभूषणः ९२
चतुर्मुखेनलिंगेन दिकूसहस्त्रंचकन्यसं तत्संख्यासमशोभत्वा कोटीश्वरमहामुनिः ९३ ए
कधासमतांपीठं द्विधातमचिकासमं त्रिधाव्रधोदयेप्राप्तप्रासादस्यप्रदक्षणे ९४ तेनयः
प्रमाणेन जगतीतत्समोदयः एकधाप्रासादपक्षे द्विधानूचतुरानूमंडप ९५ त्रिधापंचेचा
ईतनेन पीठस्थानंप्रदक्षणे एकधागर्भदेकेन द्विधातेभ्रमसंयुतं त्रिभागेवेदिकैर्युक्तं प्रासाद
स्यचतुर्मुखं ९६ भ्रमेकंबाधिभिश्चैव त्रिभ्रमंवाविशेषतः ब्रह्मास्थानेभसंस्थाप्य प्रासा
दिनिचतुर्मुखः ९७ गर्भंचवेदिकावाथ भ्रमेकंवाकदाचिनः आयातनेवमिदंकार्यं प्रादोंदं
सादंचविधापुनः ९८ गर्भंचवेदिकावाथ भ्रमेकंवाकदाचिनः त्रिभूमिपंचभिःप्रोक्ता स
प्तश्चवनभिस्तथा ब्रह्मस्थानेसदारम्य स्वर्गप्रासादशास्मृता चतुर्मुखाएवप्रासादा यक्ति
कूयश्चिनुर्मुखा देकलिकल्पवरंपति आयाततेनचतुर्मुखः २०० त्रिभूमिम्लसंस्थाप्या
भ्रमेकंतुप्रदक्षणे पंचसप्तयदाप्रोक्ता आयातनेनत्रभूमिका १ ब्रह्माचातुर्मुखंकार्यं वि
ष्णुकुर्याद्विशेषतः रुद्रचातुर्मुखोभूत्वाश्च प्रासादापुनर्देतवे २ शक्तिस्याद्विशेषित प्रा
सादानिचतुर्मुखा तेषांमंत्रनमस्कारं ज्ञायतेचविचक्षणः ३ चत्वारोकुलयोन्या प्रकटा
चत्वारिमाखिल प्रागुप्तेनसंयोगा निर्मितासाचतुर्मुखे ४ एकेकेईछतेरम्यं राष्टसर्वव ५८
शंकुत तेषांचातुर्मुखंकार्यं शक्तिस्थानंविशेषतः ५ वाभवेयत्रदेसेन प्रासादस्याच
तुर्मुखः तदायांतिफलोयाति जयतनस्याते ६ यद्रहेनोपिसंतानं यदेशेनोचतुर्मुखः ५८

४१ ४ णाश्चत्वया कथिता विद्मुश्चकथितातव

येउयेनोपिजंत्रश्च तत्सर्वंनिष्फलंभवेत् ७ यथादिनविनासूर्यं सशांकसांवरीविना यतत्रेनप्रासादंन
देशंभोचतुर्मुखः १०८ इतिश्रीविश्वकर्माकृतेदृक्षार्णवेयतयतत्त्वर्णावेशताग्रेषट्चत्वारिंशत
मोस्त्राध्यायः २१ नारदोवाच प्रणयनंपृच्छेजानुभ्यां धरणीशतः प्रासादेदेवताउक्ता कथि
तंपरमेश्वरः १ ब्रह्मेतरुद्रश्चवीतरागश्च ममेश्रुत्वापुनःपुनः २ तेषांचातुर्मुखंदेव रुद्रस्तेवीतरागवत्
तत्संवर्गमसंप्रत्यो कथितंपरमेश्वरः ३ विश्वकर्मा उवाच येउक्तायस्यदेवश्च प्रासादाचत्रतश्शृणु
जातिभेदसमायुक्ता विशेषेणचतुर्मुख ४ प्रथमेस्वर्गखंडेच उक्तकैलासमंडल सघावामस्तथात्वो
र तत्पुरुषस्थानमेवच ५ लिंगपंचमुखःप्राह्नः प्रासादस्याचतुर्मुखः जितेंद्रस्याविशेषेन द्वारिका
यामथोपिवा ६ त्रिमुखेचैकचत्रश्च प्रासादंकारयेद्बुधः बाणलिंगेश्रुभस्थाने हरिस्थानेचसंगमे त्र
यशक्तिश्चसंस्थाने तथावेस्वामिकार्तिके त्रयद्वारंप्रकर्तव्यं श्वांद्रार्कश्चपितामह ८ पंक्तिमेकंद्विभिः
श्चैवभ्रामितंत्रयमेवच द्वारहीनंचप्रासादं बुद्धदेवेचकारकः ९ द्वारस्थानेकृतात्माला चतुर्दिक्षुवि
ता ब्रह्मस्थानेचसंस्थाप्ययोगध्यानंप्रवर्तते १० नारदोवाच द्वारविनावायसंयुक्ता एकद्वित्रीचतुर्थकं
कथितोदेवउक्ताच कंदरूपंचकथ्यते ११ विश्वकर्मा उवाच एकद्वारमुखेकाश्च द्विमुखंत्रिमुखंश्रृ
णु चतुर्मुखंविशेषेण श्रृणुतेकाग्रतोरिधि १२ कैलासशिखरं रम्या प्रासादयुग्मखं सद्योवाम
स्तथाघोर रम्यात्वंचमुखाशिव १३ चतुरःस्त्रीकृतेक्षेत्रे विरोधाप्रतिभाजिते कर्णभागचतुष्के
ण प्रतिकर्णतथैवच १४ निर्गमेपंचभागानि भद्रंभागचतुर्दश पदचत्वरतिःक्रांता मुखभद्रं
षड्भागतः १५ तथानिर्गमवेदानां षट्पदंमनुपाश्रितं प्रासादंभ्रमकोष्ठेन सहनेदेशताग्र
तः १६ कर्णभागत्रयंकार्यं प्रतिकर्णतदाद्वतः निर्गमंतत्समंकार्यं भद्रंवैपंचभागतः १७ रथा
मानेभावतुल्यं विस्तारंभद्रमानतः चतुर्द्दशभवद्वारं भद्रस्थानेविभूषितं १८ प्रासाद
छायेप्राप्त सलग्नंविवर्जितं १९ कपोतालीचकर्णाते छाद्यनिर्वाथगपालकः २१ तमोद्भंभ
४१

केयंचे पुनर्जंघाविवास्थितः जंघोर्ध्वेकपोताली च पुटस्छाद्यतथोपरि २० पुनर्द्दारंप्रकर्त्तव्यानिराधा
रेविवर्जिते छाद्यनोर्द्धकपोताल्ली जायेच विशेषतः २१ तलछंदमयास्याते उध्वमानेतथाश्रृणु कर्ण
कर्णेचकैलास रथेर्द्धेअमृतोद्भवं २२ पुनःकर्णमृतंदद्यात् रथेस्तेनंदिशालिक तथाकर्णेचसंस्थाप्य
रथेतिलकंचउत्तमं २३ मंडोवर्थमूलरेषाच सरतराष्टविंशति प्रतिकर्णेउरश्रृंगश्रृंगस्यासंचविंश
तिः २४ मध्येश्रृंगेकविंशत्या अथश्रृंगेत्रयोदश मध्यश्रृंगोविधायते २५ इतितद्रुताउवप्रासाद
भाग १४ अंडिक १०७ नारदोवाच कंपीठंमंडोवरंकंकिंयुक्तिंचेईआय नवसप्तपंचमंडितं
२६ किंद्वारंचवरंश्रेष्टं चेद्रस्थानेतचोत्तमः किंधामदक्षिणग्रहके २७ श्रीविश्वकर्मोवाच
एकभिर्द्दद्विभिर्द्दंच त्रयभिर्द्दंविशेषतः तथावैजाग्रकुंभंच अष्टभागोछ्यंभवेत् २८ षड्भा
गंकर्णेभाल्लि चवसुभिग्रासपट्टिका नवभागरूपपीठं चवसुभिनरपीठकंपीठयो उदयार्द्धे प्रयत्ने
न त्रिभागास्तत्रमध्यता द्विधातुर्वमेरेषि निर्गमंत्रिविधात्तमः २९ पीठमानमयास्याते मंडोव
रंअतश्रृणु षुरकंचद्विभिर्भागं कुंभकंसप्तमेवंच ३० कलसंविभागमुच्छेयं भागेकांतरमत्र
कं कपोतालीत्रिभागेन अर्दग्रंचंतरालकं ३१ मंचिकायांत्रिभागानि जंघापंचदशोत्तमा उद्गमंपं
भागाश्च भरणीभागत्रयंभवेत् ३२ अर्द्धचांतरपत्रंच शिरापट्टिचतुर्भवेत् त्तेषांचतुर्मुखा
नांच प्रासादेछादनंशुभं ३३ कपोताल्लीत्रयोभागो मल्लावेत्राणिमेवच षुटछाद्ययुगंभागं
प्रहारंवेदसंज्ञकं ३४ मंडोवरंकथितोप्राज्ञ सिंहद्वारंअतश्रृणु प्रादनंदशाद्दस्य तादशोमंड
पोत्तमं ३५ चतुर्मुखेशिवस्स्थाने सिंहद्वारंतुपश्चिमे भागेमेघनादाख्यमंडिता समायंच कं
र्त्तव्यं शेषंचसर्वभामरं ३७ प्रासादःपंचगुणाक्रमस वं गुणीचविशेषतः सप्राष्टगुणीप्राज्ञं मु
खायतंचसिंहति ३८ तथानंतरंवक्ष्ये दिव्यलोकमहामुनिः रम्यस्थानेवरश्रेष्ट प्रासादस्याचतु
र्मुख ३९ रवतेशुभनंदेन शुभज्ञातिमनोहरः शुभजिनेंद्रचत्वारि शुभदिक्षेनदक्षपते ४०
चतुरश्रीकृतेक्षेत्रे समस्त्रिंशतिभाजिते पंचभागयतंयाज्ञं प्रतिकर्णेचपंचभिः ४१ निर्गमंष

५ दक्षिणेजिनभुवनेसिंहद्वारंचवर्जितं ३६ हिंडोलकंपश्चिमे

टभागंतु भद्रंसप्रासादस्योत्तमा निष्कासपंचभिःप्राज्ञः मुखभद्रंसप्तमेवच ४२ वेदिकाल्तत्रकर्त्तव्या
मंडपाग्रेविचक्षण त्रिषुस्थानेइदंमानं सिंहद्वारंचतुर्थकं ४३ प्रासादंब्रह्मसूत्रेच कर्णभागत्र
योभवेत् प्रतिकर्णपदसार्द्ध भागेकंभद्रनंदिका ४४ निर्गमंसमदलंकार्या षड्भागंभद्रमेवस्तरः
तत्रस्थानेभवेद्द्वारं ग्रासविस्तरसंयुतं ४५ समास्त्राभवेत्क्षेत्रं स्तायतेचतुस्त्रिंशति षड्भागंकर्ण
विस्तारंस्थापयेअमृतोद्भवं ४६ चानुगंत्रिपदंत्तेयं शालभंमंदिरस्तःभं भद्रनंदीद्विभागानिनंदस्तास्य
मूर्द्दतः ४७ कर्णेपररथश्रृंगं रथेनंदीमनुक्रमं द्वारार्द्धंभवेद्द्वारंच गवाक्षैपरवेष्टितं ४८ कर्णेनंद
नेचसारो सरतरंतस्यमूर्द्दतः गर्भमध्येभवेद्वेदी रेषाषट्सप्तमाश्रितं ४९ षड्भमूलरेषाच
उरश्रृंगेचपंचभिः हीनेचैकोतरःप्रोक्ता श्रृंगप्रत्यांगभाषितं ५० रथेनंदीवरस्थाने तिलकंचविं
शेषतं उरश्रृंगेचप्रत्यांगे वास्तिकानिपुरतात्मनेः तथानंतरवक्ष कुर्यागर्भगृहोत्तमः छंदाल्लका
रसंयुक्तोमानोन्मानःसंयुतं ५२ उन्हाश्चदिव्यलोकेन शास्त्रदृष्टेनसर्वदा उदंबरस्यसंस्थाप्य कर्ण
सूत्रेविचक्षणः ५३ कवल्यांरथनदीच भद्रवेषारसाषया भद्रनंदीतथापृष्ठे मदलैर्मंडितंशुभं
५४ पदोदयंतुजंघांते दादाचत्वारितांमुखे उपर्युपरिसंस्थाप्य भ्रमत्तेभरणिकोत्तमः ५५ तथा
नंतरंप्राज्ञ भ्रमममध्येचवेदिका स्तंभस्तंभेप्रकर्त्तव्या वीतरागामुनेकधा ५६ शिरंमस्योपरि
दद्यात् गउदीश्रलमंडितं ईल्लिकातोरणैर्युक्तं उभयोचामराढाल्लकौ ५७ परेपदप्रधानंच
पुष्पेदंतेचभ्रामितं गयालिकाछादनंपक्षेविवानंमध्यवेदिका ५८ स्तंभेस्तंभेप्रदातव्या नववे
धाच मस्तके उपर्युपरिभूमीनो छाद्यपट्टंसमंभवेत् ५९ सभ्रमेघोस्तथामेधागर्भमध्ये
चवेदिका उक्ताचसर्वकालेन दिव्यलोकेमहामुनिः ६० तेषांमंडोवरंवक्ष्ये मेरस्यश्रृतनाग
रः षुरकंचत्वारिभागानि कुंभकंचैकदशोछ्रिता ६१ कलसंषड्भागेन चांतरपत्रद्वयो
भवेत् कपोताल्लीषड्भागंच भागेकंचतराल्लय ६२ मंचिकाषड्भागेश्च परंजंघामनोरमा

एकोनविंशभागानि दिव्यलोकंचतुर्मुखे ६३ इंद्रादिदेवतासर्वे नित्यंकुर्वंतिमेसदा साधवंवाहने
५१ युक्तं षट्भुजाअष्टमेवच ६४ कास्यतांउवचैवेतालंविशेषतः अयुधभुजचत्वारि शेषेश्वतालमं
डितं ६५ नचैदाउद्गमेवस्य ग्रासपट्टीचसंयुतं षट्भागेछितांभरणी रूपपल्लवसंयुतं ६६ शिरप
ट्टसमायुक्तं वसुभागंविचक्षणः द्विपदःछादनंकृत्वा भ्रमंतेचप्रदक्षणे ६७ छादनोर्द्धकपोताली
विभागंपूर्णमेवच पदविंशोछितांजंघा कपोतालीचसप्तभिः ६८ द्विपदंचांतरपत्रंच वसुभिः घुं
टच्छाद्यकं तथापल्लवसंयुक्तं प्राकारंवसुभागतः ६९ त्रयस्कामाची पुनर्जंघा कपोतालीद्वयोभवे
त् परिछाद्यंप्रकर्तव्यं प्रहारंपूर्वमेवच ७० पीठपूर्वंप्रमोणेन उक्तंमंडोवरंभवेत् द्वारेद्वारंप्रकर्तव्यं उ
पर्यपरिभूमिकं ७१ इलिकातोरणैर्युतं गवाक्षमुखमंडितं संवरणालंकृतेर्युक्तं गजसिंहमनोहर ७२
तथायुक्तिप्रकर्तव्यं मूलछंदानुसारतः त्रिवटीभ्रमविस्तीर्णं शिखिराजश्रेष्ठोत्तम ७३ मूलप्रा
सादमानेन दिव्यलोकंयथाक्रमः अन्यछंदेनकर्तव्यं कृतेदोषमहद्भयं ७४ छंदालंकारसंयुक्तं
मानोन्मानसंयुतं इदृशंकारयेत्यस्तु सलभेचाक्षयंपदं ७५ त्रैलोक्यदीपकश्रेष्ठ कृतेचातु
र्मुखं शुभं स्वर्गादिपतवेस्वर्ण स्वछयापृथ्वीपति ७६ प्रसादछंदउक्तंच मंडपासर्वकामदं सिं
हद्वारेभवेशोभे नमेघस्वश्चमनोरमा ७८ तस्याग्रेमेघनादंच कोष्टकापंचविंशती नालीमंडप
तो विधिविस्तारेमेघमुत्तमः ७९ वेदीचत्वारितांवक्षे अधद्वाराग्रमंडपं वेदिकासनपट्टंचे उ
पर्युपरिपरिसंस्थितं ८० त्रैलोक्यदीपकेशिवि सिंहद्वारापराङ्मुखे मंडपंपुष्पखंडंच कर्तव्यंस
र्वकामदं ८१ त्रिमानंवामभागेन नक्षवाहृर्यमंडितं दक्षिणेदिव्यलोकेन तिलकत्रैलोक्यभूषण
८२ तस्यालेद्वौघणं तेनपदमेकोविराजितं तथाविटिविस्तीर्णं भ्रमंतंचप्रदक्षणे ८३ तस्या ५१
ग्रेमंडपंकार्यं नालिस्योपरिसंस्थितं आयामंदोघणंवक्षे जदयांद्वौघणंतिके घणमेकांतरे
बाह्ये मंडपंपादनिर्मितं निःकांतवेदिकारंभे अपस्यानेविभूषितं ८५ परिवारांहस्तानैर्यु २

43

क्तां पंक्तिसोपानसंचयं पंचसप्तनवछेद कन्यसमानमुत्तम ८६ चैकादस्यस्तयोर्दस्या तथांतेदश
पंचकं मध्यमणंनंचविज्ञेयं कल्याणंचकलौयुगे ८७ सहाददैवसोपानं एकोनविंशतीभवेत् ज्ये
ष्टमानभवेतंच एकविंशस्तथोत्तमः ८८ तथायुक्तिपरिणाहं आयामेविस्तरंशुभं कोष्टकानांवि
चारेण यथापूर्वंचभाषितं ८९ त्रयोविंशतिविस्तारं पदविंशमुखायुतं निर्गमाचेदिकायुक्तं चो
तुर्दिक्षुविवस्थितं ९० द्वौभागौलोकायेत् बामे द्वौभागंदक्षिणाश्रकं द्वौभागौलोपयेत् पृष्टःतः
तेनत्रीणिमुखायते ९१ रतानसंचयेप्राज्ञ चैईआकंप्रदक्षणे भद्रभद्रेच भेपक्षे षट्स्थानेषट्
भवेत् ९२ सिंहद्वारेस्थानेपंचपंचप्रदक्षणे सहास्यसहनवेस्यांते चैकेकंविदिशोभवेत् ९३ त्र
योदशाद्वयस्थाने द्वयमेकोनविंशति चतुषष्टीचैईजानंच प्रथमाननथोत्तमः ९४ तथापीठसा
धेश्च भ्रमंतंचप्रदक्षणे भागेकजाउयकुंभंच पाद्दूर्नवानकंभवेत् ९५ आसपदीभवेद्भागं ति
क्तांतउदयाद्र्दतः पीठंचैवतनागेद्र द्वयभीद्दनसंयुतं ९६ मंडोवरंसुदृढंकार्यं तथाभित्तटमेव
च पुरकंद्वयभागंच कुंभकंपंचमेवच ९७ कलसंत्रिभाग मुत्सेधं भागंचअंतरीलया कपोता
लीत्रिभागेन मंचिकात्रीतिमेवच ९८ त्रयोदशास्थितांजंघा उद्गमंयुगसंख्यया भरणीत्रीणि
पदंकृत्वा कपोतालीचपूर्वकं ९९ अंतरंवाद्द्भागेन चतुभिर्घुंटछाद्यकं प्रभारतेलमानेनस
पक्षंसर्वकामदं १०० आद्यप्रासादयादश्रं चइभाणप्रवर्तते रथेकर्णप्रवर्तते तद्भागेतलनि
र्मितं १०१ तदास्तुसर्वकल्याणं अन्यथानिःफलंभवेत् श्रृंगरेखाभवेत्तंच नामंत्रैलोक्यदीपिकः
१०२ प्रदीपापंक्तिसंस्थाने दीपमालानिदेशयेत् मेकोनत्रिंश आयामंत्रयस्त्रिंशमुखाय
तं १०३ सिंहद्वारप्रयत्नेन घणमेकंपरित्यजेत् दक्षिणेपृष्टकेबामे त्रीणित्रीणि पदंनिशोत्
४ चतुर्विंशभवेचैई पृष्टिकर्णप्रदापयेत् अष्टत्रिंशमुखायेत बहुलरीशुभदायकं १०५
निक्रांतपदमेकेन आयाद्वयमेवच भद्रपक्षेभवेसंच चतुःपंचमुपैर्भवेत् १०६ इतिश्री

43

५२ विश्वकर्माकृते वृक्षार्णवे नारदपृच्छते शताग्रे षट्चत्वारिंशतमोध्यायः २२ नारदोवाच स्वर्ग
स्थानार्चितं पूर्वं शिवस्थानं चतुर्मुखं जिनभुवन देवलोके ममत्वाम मुहुर्मुहुः १ पुनः किंचवि
शिष्टंच मानलोके महीतले उक्ताचतुर्मुखासर्वं कथितं मम सांप्रति २ श्रीविश्वकर्माउवाच उक्तं
मांौहं चमिचः ध्यंत्रे चतुर्मुखंचलक्षितं प्रासादां ब्रह्मसुत्रेस रथयुक्तेनं दयुक्तं प्रतिष्टेसाधलक्ष्मी
दीश्वमाति परिधामेउपातस्य वाग्रे कणे उत्रिभिः कर्णे षड्विर्यता वेदिका ३ तेषां युक्ति विधातेत्र
थुरे जमेंद्र पुर्णातरे द्वा कावोष्ट प्रमाणविवरे आयामकिस्तीर्णके उपासविरये आया मत्रिसंग
स्थलिकोष्टरि विधेयश्च अंतिमेधार चंतिमेघद्वारानिशिहाश्चिति ४ तथाग्रिमेधारचंतिसा
र्द्धनात्योपरिसंक्रमे। अधरः स्वभ्रमीकृते वद वेदी कक्षांतरे वर्तते ५ तावछावभ्रमतिचोई
चतुर्दिक्षु निर्मितो द्वौ कोष्टौ भ्रमणा रहित त्रिवीटस्कमे संचयं ६ प्रासाद पक्षे भ्रमवेदी उछाल
यं उत्तमं लग्नस्तंभज्यते भित्तित्यजे गापुटं उद्दमालये नरूप मुनेक चिते प्रासादानासन्मुखं
छादित्तिछानुरूपः प्रसिद्धमुर्वादिताराउल्ली ६ पत्रनास्तिरथोपरथनिःकांतमानेकवल्लीस
दानिर्मितागवाक्ष मदलोष्णं भस्यसहितैपट्टस्य घटीनद्धिरेस्य रेशापात्रिःशापे उपर्युपरिक्रम
के पुनरकपोताल्ली जंघाकपावाल्लीछाद्यके ७ मानतंगोविराजितः सादजिनेंद उक्ताश्रुभा
स्यावनगतीचती परधीलब्ध मानतंगारतांजातिवरारीकेंद्रविमानेमंजर्यरेखानिज श्रीम
द्भागवतश्चक्रयते अज्ञयपदंलभ्यते ८ चतुरश्रीकृते क्षेत्रे अष्टादशविराजिते कर्णेत्रि ५२
भागविस्तारं पल्लवीपदमेवच ९ निर्गमं तत्समं कार्यं प्रतिकर्णद्वयोभवेत् निःकां
तसमंवस्रो कर्णभागस्यविस्तरं १० निवेशंचसमंकुर्यात् भद्रभागद्वयोभवेत् नि

५४

र्गमं पदसार्द्धंच भधयोर्वाभिदक्षणे ११ नंदनंसर्वेनश्रृंगोरथोपरि नंदीश्रीवत्समेकैकं रथिकाभ
द्रभूषिता १२ रथेकर्णेपुनः कार्थं नवपंचपरिक्रमे कर्णीतिलकमप्रदातव्या कटकाएटिकः कमात्
१३ केसरीकर्णसंस्थारथेश्रीवत्सदापयेत् मंजरीमुलरेखाचषट्श्रृंगेतुला १४ उत्श्रृंगेप्रत्सो
गं भरभरामर्यकामुदा नानागेवेषयुक्ताच श्रृंगवत् पुरितांतरे १५ तिलकंचार्चशोक्तं मानतुंग
विराजितो तेषांलब्धमानंतं गेश्वरिखिराजश्रृंगोत्तम १६ दशाधातोयदाक्षेत्रं चेई आद्यमनिवेशि
तं मानतुंगश्चयदागं शिखरंसर्वकामदं १७ अन्यत्रांगलक तेष्वा प्रासादासादिसंयुता चेंद्रआ
णविशेषेण स्यकसंतापकारिता १८ यादशांश्रुलप्रासाद तांगजगतिक्रमं पूर्वपूर्वप्रमाणेनं कुबे
रंकुमुद्रवं १९ रथयुक्ते विभागंच समेश्रृंगसमाकुलं तथामंडोवरंरीखिरविभागंश्रृणुसांप्रतं २०
पुष्करंद्वयभागानि कुंभकंपंचमेवच कलशंत्रिभागमुत्सेधं अंतरंपंचदार्द्धत्रयतः २१ कपोता
लीभागेन मंचकास्तभवेशिखि चातुर्दिस्योछितांजंघा सार्द्धचत्वारिउद्गम २२ भरणीगुणविचा
रेण द्विपदंअर्धकपोतिका छादनंपदमेकेन कपोताल्लीचपूर्ववत् २३ अर्द्धचांतरपत्रंच चत्वारि
घुटचाद्यकं कन्यसंच भतः प्रोक्तं मध्यमानंचकथ्यते २४ भरणीमस्तकंशाला चतुर्भागशिरा
पट्टी छादनंकथ्यतपूर्वकपोताल्लीचसर्वतः २५ पुनःकपोताल्लीवित्रिभागेन अर्द्धचांतरालयं
घुरछाद्यंभवेत् पूर्वंमध्यमानंतुनिश्चयं २६ कपोताल्लीबक्रमध्ये जंघाभागनवस्तथा परेबा
त्यप्रधानेंच ज्येष्टमासंचसाध्यति २७ तथायुक्तेमितिकोष्टे आयामविस्तीर्णके सवेदीचत्र
योविंशो मुखायतंचविंशति २८ ततोकोष्टान् मध्यतन्चे इमेकोनविंशति पंचविंशमुखाइसे
क्रियमानंविधायते २९ त्रयोकक्षांतरेश्रेष्ट त्रयोभद्रेसषोडशः सिंहद्वारबभापक्षे द्वात्रि
मेवसिद्वति ३० भद्रपक्षोभवेत्स्थिणी कक्ष्यंतरेप्रवेशितं जिनालयवरश्रेष्ट सर्वक्षेत्रेचवाल
न ३१ दिग्पालतांडवंभद्यंलस्वलोके वेतालिश्चप्रकृतेन नृत्सकुर्याचतुर्मुखं ३२ थर
६४

५२

स्थानेविशेषेण शाखेस्तंभेनिरंतरं यावज्जीवालिसवीणी नृत्यंकुर्वंतिमेसदा ३३ प्रासादंमानतु
गाश्च दीपश्चित्राजिनालया छंदोनागरमादाय सर्वछंदानुमाश्रिता ३४ जिनपीठंचराज्येते मंदो
वरंचविशेषतः चातुर्मुखेचदातव्या पुनर्दद्यात्चतुर्मुखे ३५ इतिमत्स्यागप्रासादः जगतीःप्रदिषा
क्षेत्रे महावदेप्रदीपानी जसंस्थानेजिनमालाविवर्द्धिनी यंवामेपृष्ठे पक्षेतथापृष्ठे मंडपारंगपृ
शितो ३६ पंचविंशतिविस्तारं अष्टाविंशतिमुखायतं भागेलोपयेत्कर्णं चातुराशीतिजिनाल
यं ३७ विनावंसहकृतेपृष्ठे चत्वारिषमुखायतं भागेलोपयेत्कर्णं चातुराशीतिजिनालयं ३७
विंशतिविंशकृतेपृष्ठे चत्वारिषमुखायते जिह्ममालास्तदानाम सर्वकल्याणकारिणी ३८ द्वारी
श्चविस्तरंगृह्य अष्टमांशानमध्यमः ज्येष्ठमध्यमकानष्टे आर्चामानंचतुर्मुखे ३९ द्वारद्वा
रविस्तराद्दूंचा त्रिधाप्रकंत्रकारयेत् वीतरागोतथालक्ष्मी अर्चामानंचसर्वतः ४० हीनेहानि
प्रकुर्वंति अधिकेश्चजनक्षयं रेखामानेभवेदर्चा सर्वकामार्थकारिणी ४१ द्वारेछसप्तदृष्टधा
भक्तो ऊर्ध्वभागंपरित्यजेत् सप्तमासप्तमेभागेस्य दृष्टिस्थापयेबुधः ४२ उर्द्धदृष्टिद्रवनाशा
य अधःस्तभोगहानिकृत् रेषादृष्टियदाप्राप्त दानपुण्यविवर्द्धिनी ४३ अर्चायुक्तिथरस्त
भं पीठमडोवरस्तथा बालाग्रेलोपयेयत्र निःफलंतत्प्रजायते ४४ इतिश्रीविश्वकर्माकृतेवृ
क्षार्णवेशानात्रेसप्तादिशमोन्मतः २३ नारदोवाच स्वर्गेयदाव्यलोकेच माहवस्थानमुत्तमं
अन्यत्रकिंविशिष्टंच कथितंममसांप्रति १ यावत्सप्तपाताले ब्रह्मांडानिजसंख्या चातु
र्मुखेनिजविस्तीर्णं कथितंपरमेश्वर २ विश्वकर्माउवाच क्षीरार्णवेसमुत्पन्ना प्रासादाच
मुनेकदा तन्मध्येरत्नमश्रेष्ठ श्राणिचातुर्मुखंशुभं ३ चतुरस्रीकृतेक्षेत्रे सर्वक्षेत्रामममध्यतः
निर्गमावेदकैर्युक्तं त्रयत्रिंशपदविस्तर ४ आयामंषटविंशत्यं निराधारंचासिध्यति स र
थंनवकोष्टति ब्रह्मस्थानेविचक्षणा ५ पंचधाकोष्ठकंज्येष्ठं त्रिमाईश्चचमध्यमं त्रिपदंक
न्यसंवसे किंचदायामृतेगृहे ६ पदचत्वारिकोष्टकं उत्तमोत्तमं चत्वारि जायवेस्थानमा

नकं ७ दशपंचहस्तमध्ये सरथंनवकोष्टके षोडशैवयदाहस्ते कर्णतोनवकोष्टकैः ८ तस्योषट्
त्रिंशांतं सरथंपंचविंशति सकर्णपंचविंशत्या सनाईहस्तमानयोः ९ तथानवकोष्टकेन प्र ब्रह्म
स्थानेप्रयत्नतः चैकवनपदक्षेत्रे सप्तधाकेर्णविस्तरं १० द्विपदंसमसूत्रेण कर्णिकासर्वकामदा
अनंगचतुरोभागं निर्गमंचसमंभवेत् ११ नंदीभागाद्वयंकार्यं समंनिष्कासमेवच शोषंभद्रस्य विस्ता
रं त्रयःनिष्क्रांतवर्तंषे १२ तथाषट्प्रक्रमेतेन पदपंचदशस्तथा नंदनस्यस्थापयेत् कृष्णे सर्वतोभद्र
चानुगे १३ नंदीकेसरीदृद्यात् भद्रेद्वारंचधीमता गवाक्षपरिवेष्टिता इतिकातोरणैर्युक्ता १४ अ
.गदापयेत्कर्णे नंदीच उत्तमोपरि तिलकंपल्लवीप्राप्त वराप्रत्यांगभूषितं १५ कर्णकेसरीचैव
तिलकंरथकोपरे मंजरीमूलरेषाच षट्शृंगभूषितं १६ पंचेचत्वारित्रयोभावा उरशृंगानिद्वा
दश प्रत्यंगास्तभविष्यंति तिलकंसर्वदापयेत् १७ आर्चाश्चवीतरागानि तिलकंविभनस्यश्रृते
एकिभ्रतोर्णैर्युक्तं चंद्रस्योचतुर्मुखं १८ इतिचंद्रस्याख्यप्रासादः भाग ५१ अंडिका ६५ तिलक
७२ प्रासाद १ तथापीठस्य विस्तारं चत्वारोमंडपेयुक्तं षष्टमेकक्षवेत्कर्णं प्रतिकर्णतथैवच १९
कर्णसपादनिष्क्रांतं अनयेभद्रमंडपे भद्रंत्रीत्रिषणप्राप्तः षष्टमेकेननिर्गमः २० सिंहद्वारंविशे
षेण अंबगःसहस्तुलं षट्मपंचविस्तारं यावग्रहमंडपं २१ चत्वारिपुनर्वेदी त्रीणित्रीणिभया
निच अष्टाविंशसिंहद्वारे पृष्ठस्थाने आलश्रृणु २२ त्रीणित्रीणिअष्टस्थाने चतुर्विंशतिधीम
तां चंद्रआणंचसिधीती बावनंचमनोहर २३ रथयुक्ताचप्रासादा चंद्रआणाच सिध्यति चंद्र व
क्राश्चनामानि विभागंशिखरत्सदं २४ एतत्क्षेत्रांशमध्येच चतुरस्रकर्णवर्जितं बासठिजि
नआर्चानि उक्ताक्षीरार्णवेभुभे २५ बावनोसाईननेद्राच बासठिमणिकर्णिका महामीन
जगतीनां विचित्रेविधिभूषणे २६ तथाचसिंहद्वारेण बभूयक्षेनवस्तथा तेनलत्रयोदस
स्य चत्वारिंशोमुखायते २७ सिंहद्वारेपरान्मुखेच चतुस्थानेरयभवेत् अशीतिचतुरा
ग्रेन विद्रआणंचसिद्ध्यति २८ सिंहद्वाराविचारेण ब्रह्मस्थानादितःश्रृणु प्रासादानव

६५
६५

कोष्टेच शातामेकंप्रदक्षिणे २९ यस्यश्चनाधिषणाप्यचै मेघनादंतु पंचके त्रिकोमाप्रित्योपरिश्चैव
५४ नववेधाभद्राग्रतः ३० भ्रमस्यात्रयोपक्षे निर्गमंचविशेषतं त्रयो मंउपन्मध्ये षह्मवेचप्रयत्नतः ३१
मंडपेनालितोवक्षे षणामेके उबात्यतः निर्गमावेदिकाबात्ये अधचयोपिवेदिका ३२ तेषांप्रस्तोरभा
वेन सर्वालंकारसंयुती नामंजमातुरंगमी सोभाग्रिणीचविख्याता तथाकिरणोउलीसुभा प्रासादंब्रह्म
सूत्रेण सरथंनवकोष्टकं ३४ त्रिसंघाटसमीकर्णे कवलेरथसूत्रके चतुर्मुखामतावेढे सक्रमोभ्रमः
वर्जिता ३५ गृयानिकाछादनेरम्ये गर्भमंउपस्थंतरे अधःमंडोवरंःप्रास्तःनागरद्राविडाश्रृता ३६
तल्लंछनानुसारेण कवलीहीनंनकारयेत् अज्ञानंकुरुतेप्राज्ञ प्रासादंपूजवर्जितं ३७ असीस्तंभ
समाकीर्णे भ्रमंतेचप्रदक्षणे चतुर्विंशच्चेईआणं मध्यपंक्तिश्च दापयेत् ३८ त्रयोदशचतुष्कर्णे
वावनस्पर्शे शेषके मंडपाश्वाद्वयोमध्ये षणामेकोचसिध्यति ३९ अथपीठभवेचेई प्रासादं
ज्येष्टपीठके कर्णकक्षांतरे कृत्वा षट्चेईप्रदक्षिणे ४० इतिभद्रतारांउली भद्रंतुकोष्टकं वक्ष्ये
मुखभद्रेत्रीणिमेवच तस्यानेवेदिकारम्या सुभद्रासर्वकामदा ४१ इतिकर्णाउली बावनेबा
ह्यपरिधेन स्थंभकेमंडपद्वये वेदिकातस्याग्रेण पंक्तिसोपानसंचये ४२ बहुतरिश्चबात्ये
षुमंडपेमध्यवेदिका नालिमंडपमाख्याता वेदिकासेनमंडिता ४३ कर्णभागद्वयंकार्यं प्रति
कर्णद्वयमेवच समभागायतंभद्रं मुखभद्रंत्रीणिकारयेत् ४४ निष्कासंभागभागंच वेदिकामु
खमंडनं नालमंडपसौभाग्यं स्वरूपलक्षणान्वितं ४५ इतिसौभाग्यनी नववहषट्कोणे प्रा
सादारथजिनाचरिता तन्मध्येमेघनादास्तैस्य पतिजिष्णवराःश्रीमतेपुण्यसारे ४६ उत्का
जुई रयपंचभूई प्रदउदापगणणेसेई जिणाल्लयईसोलहापुण्यकालेन ४७ मंज्यपरिध्येवेदिमा
वेदी चेईआर्णांदी दपयँ दहदंड अहेच तुमुखे यनदो रवावन ४८ रेवषष्टसतत्रीणी कोष्टका
यामविस्तरे आवर्जितप्रयत्नेन चैत्याग्रेवासनत्रयं ४९ त्रयस्थानेचसंस्थाप्य पंचविंशच्च ६४

६६
तुर्मुखे त्रिपंचसप्तसंघाट प्रासादरथसंयुता ५० सितकोष्टमध्येच मेघनादश्चतुर्दिसे रथयुक्ता
च प्रासादा वेदीयुक्ताच मंडपा ५१ आक्षेत्रआयामविदीर्घयोगे समाहत्राकोष्टकरेच तुभ्रे वाउश्चास्तं
भद्रिश्चवात्य सुरतेमोचतुर्मुखेयु क्तिकरेनिरंतरे ५२ द्वेनुमिरच्चितामपि मेघनादा स्वछंदसातो
चरणाभिरंतरं चतुर्दशास्तंभुदं भवेतमेदं भ्यमेक्वद्वितीयतत्समेकं नृतीयकं ५३ वसुभिजाउकुंभं
च कणालिकाषट्मेवच गजचत्वारिभागानि यत्रसाईतुरंगमा ५४ द्विपदंनरपीठंच सिरेप
त द्वीश्चचमेकतं देहयाचगजाद्वेच पद्मीश्चसिरिपूजितः ५५ तथामंडोवरंवक्ष्ये षुरकंद्विपदंभवेत्
कुंभकंपंचसार्द्धंच कलशं त्रिपदंशुभं ५६ अंतरपदमेकंच कपोताली त्रयोन्यतो मंचिकात्रय
सार्द्धंच जंघापंचदशपंचकं ५७ लोकपालाश्चदिग्पाल आतिश्चानंदपूरिता तथावोवंगुनास्तत्र
नृत्यवादित्रिसंयुतं ५८ लास्यतांडवचैवबालंविशेषतः सायुधवाहनेयुक्तं नृत्यकुर्वंतिदेवता
५९ उत्सवेजिनभुवने विशेषेणाचतुर्मुखे इंद्रनाथमकुर्वंति वाणंसप्तवरावृते ६० अर्द्धवाण
करेयत्र नृत्यमानाहिहस्तकं अधोदृष्टिविशेषेण वामयानःपदस्तलं ६१ षट्भुजाष्टभुजाच
मुक्तिमांनादिसंयुता तालमान समाख्याता नृत्यतिशाउशोकला ६२ षट्हस्तश्चसहिता अ
श्विदायंअपसव्यतोवृतं वामहस्तंचकर्णनादक्षेयानपदस्तला ६३ दक्षपादेस्थलंकृत्वा द्विधा
वामांगसंयुतं अधोकरश्चविपुलो सोयमेदक्षेनिरीक्षते ६४ नैरुत्येवेत्रपालोच ठयमाणांत
तापरिं अधोहेमुतेयांते उत्तानांनृत्यकारकेः ६५ परावर्तचवत्रणें सिहद्वासेकरेभवेत् अधो
च दृष्टिप्रयत्नेन हृदयेवामहेस्तकं ६६ वायव्येनात्ययंवक्षे पुनस्तांडचश्चैव भ्रमरीयचविशे
षेण हस्तहेस्तंविशेषतः ६७ कुबेरंनाद्ययंतिदाःश्रयमाणांइंद्रादिकोत्तमः घृताचीमदेलाहं
स्ते करिकसरिभाविते ६८ ईशानेईश्वरस्यानुजाश्चष्टश्चसंयुता अभयप्राष्टजमुकीर्णवा
महस्तेचदृष्टियान् ६९ करेदक्षमतेरिदवामंयामेपदस्तलं मेनिकादक्षिणंप्राति भूतलेःप्र
६६

६४ तिधारिता ७० रंभा इंद्रस्य संयोगे दक्षयाते पदस्तलं वीणावा मकरे रम्या वीणावा दक्षरे पुरे ७१
अग्निदक्षे हंसहस्ते प्रावर्तस्याच अर्वसी तेनमृते पुनर्भावे देवतानृत्य कारिता ७२ यमास्त्रि त्वलोचना
स्त्री उक्ता ताल मंजरी रकं सिका नृत्यभावे समाख्याता कामेयाने पदस्तले ७३ सचीने तस्य संयोगो च
त्रपालका सुदक्षिणा त्रिवलीयस्त्र करेसा कंकणा तत्ये त्रपालके ७४ परमल्लो वा सप्तवामागे वरुण
देवसमाश्रृता मल्लाविसमायुक्ता वाणं रंभादिको द्वेवं ७५ नृत्यंति वायु देवंच मंयुक्तो घासदक्षि
ले वासु हस्ते सनायेति दक्षयाने पदस्तलं ७६ रंभादि देवकन्याचे दिग्पालासहसंयुता नृत्यंति त
द्रदेयात्ये त्रिनक्षुवनेच तुमुखे ७७ मेनिकाविसमात्यन्ये तदस्याना प्रदक्षणे जीलावती विधिस्थि
ताच सुंदरी सुस्तभाविनी ७८ हंसाउलीसर्वकला तथा कर्पूरमंजरी पद्मनी पद्मनेत्राच चित्रणीपुत्र
वल्लभा ७९ गोरीच गांधारीच देवशाखा मरीचिका चमृउली चंद्ररेखा सुगंधा शत्रुमर्दिनी ८० मा
ननीमानहंसेच स्वभावा भावचंद्रया सोकल्लाश्री ह्रिलिस्मृता ८१ माहवस्थान मुत्ताणी चतुर्विंश
द्य दक्षिणो स्वयंक्षीराणी वेभाक्त त्रिशोताल चतुर्मुखो ८२ तथाचमंघमालत्य रूपं भवति देवांगना
त्रयस्थाने भवेरंभा चतुस्थानेच मेनिका ८३ अर्वसी द्विविधा विस्तत्र मुतोचा पंचमेवच षडविधा
मंजुघोषाच चत्वारिच तिलोतमा ८४ विष्णुवशावतारंच तथा सप्तप्रजापतिः शिवंच पंचधा
प्रोक्तो तथा देवांगनानिच ८५ अलस्याच रुहा लीला विधिचत्ता समर्पणा सुंदरी हस्तयुक्ता
च सुक्त कंकयुता ८६ कर्णश्रृंगार रहिताश्चास हंसाकमललोचना गाथा उच्चार भणवाथ
सर्वकलाच अलश्रृणु ८७ तेसहभ्रू आणमध्ये घिघुघिघुजावंति परंपुरः बहिचतुर्मु।
खोदेवी पुरनृत्यंति भावनासहसात् ८८ मग्नभावा मल्लंस्ताना तथा कर्पूरमंजरी पद्म
हस्तेच तत् संगी पद्दपद्मच पद्मिनी ८९ चर्वरीबंधुयुक्ताच पद्मनेत्रा स उच्यते वामहस्ते
त्रिरेख्यातू नृत्यभावाच सत्रिणी ९० चित्रलपाल पुत्रंगी गोरीचासिहमारिल दक्ष ६५

हस्तशिरेरम्या गंधारीच नृत्यका ९१ गोलाचक्र सभृत्यांगी देवशास उच्यते धनुर्बाणसंधा
नश्च वामहष्टिमरीचिका ९२ सन्मुखीदृष्टिभावाच चंद्राउलीसलोचना दक्षिणा वसुयुताच
सकर्णताडपत्रिका ९३ ललाटे चंद्ररेखाच समानेविस्तरे सदा सगंधाच गंधारीच करयुक्ता
अतश्रृणु ९४ एकस्वर्गेश्व भवने नेवीयंदिव्य भवनेतिय माहवसुताले चातुर्मुखे घिराणवेउक्ते
९५ छुरीकार सुष्टत्यांगी सोभवेशत्रुमर्दिनी हारहस्ताच वृत्यांगी मानवीकलसुंदरी ९६ अ
पृष्ठापृष्टि मुखाश्च उपदीमानहंसिनी दक्षपादांच तुहांगी स्वभावादिकारः स्त्रिरे ९७ दक्षपा
दोयोगमुद्रा भावशुद्धस्व नृत्यकी स्मृत्यो गीभवेत सकेल्लातथा वाक्यं अतः श्रृणु ९८ विश्व
कर्मणा वादत्वा कंज ईकोजाने ति शिल्पिनः तेनवास्तु वदिष्टंति आपदस्तेच तुरंगना ९९ मेन
काषडुखेदश्च वामबालिप दस्तलो अर्वसी कोइलेषडु प्रकारं देत्यकं भवेत् १०० उबभहस्ते
छुरीकारं उत्तानं दक्षपावयो घृताचीकार्य पंतीच यानयाने च संपटः १०१ तयोरवडुश्चवेसा।
धारो भ्रमरी आवर्तसंयुतौ मुजघोषाय सर्वांगी नृत्यकुर्वंति मेसदा २ गिरनडीकलस्य
क्तो नरस्त्रयुक्ता समोहनी लचीकः स्यमसंयुक्तो वदने नतिलोत्तमा ३ एतेषोजंस माख्याता
दिव्यस्थानीच तुर्मुखी ज्ञायत्ते सर्वलोकाच स्थलं देहाच महीतले ४ उद्गमं साद्वेच तारी स
रणीय त्रिपदं भवेत् उद्गमं कपिसंयुक्ता भरणी पल्लवैर्युता ५ त्रिरावटीच तुर्भागं त्रिरा पदं
समाकुलं छानपदमकेन क्रिसेमे पोतास्रीच पूर्वतः ६ त्रिपदं कपोतालिच अंतरं पदमे
धच पुटछाद्यं चतुर्भागं प्रहारं तत्समं भवेत् ७ छादनीन भवेन्मंची प्रमाणं पूर्वमेवच दि
कूभागो छित्ताजंघा भरणी पूर्वादिकूकेमा ८ कपोतालीच यो भागं पादमेकं चांतरं भवेत्
छाद्यकयने पूर्वं प्रहारानिचतुष्पदं ९ द्वादशीज्येष्टसंघाच भरणिको छेधमंचिका

५५

नववधावपुनर्जंघाच उद्गमंत्रयसाहितः ११० भरणीशिरावटिस्तत्र छाद्यंतेविशेषतः
कपोताले भवेद्देव घुंटवायंचमस्तके ११ छाद्यनेमं विस्तत्रषु पुनर्जंघाष्टभागिकं भरणी
कपोतालीच छाद्यंच प्रहारकः १२ तथागर्भमध्येच विस्तारं कवलिकोत्तमं दीर्घमानं स्ततो
रीयि शृणुत्वेकाग्रतोमुनिः १३ चित्राविचित्रांचैव तृतीयात्र भयचिताच रूपचित्रचतुर्दले
१४ षण्मेकंप्रासादं कवलीच भयाभयो कर्णांते षण्णास्तिकवजीषण्मेवच १५ पंचविस्ता
रप्रासादं कवलीत्रिवल्लीतके नालंघयस्तत्रमानं वषणांस हयतांस्वरे १६ प्रासादकर्णसुत्रे
ण स्तूपस्तूर्णविशेषतः सिंहशाखाखल्वशाखास्तेनस्तेननुंबरः १७ दशहस्तोत्तरेयत्र
चतुर्दस्ययथाभवेत मध्यस्तपनदातव्य वेदिकासर्वकामदा १८ दशांमांशेयदा मीति द्वा
दश्यानमध्यतः त्रिविधं भितिमानंच घष्ट मध्यकल्पकं १९ मध्यरूपप्रदातव्या भी
तिस्याषोडशांसिकं पंचमांशोनिराधारे भितिप्रासादशोभने १२० उपर्युपरिभ्रमानां
सषावर्तप्रदक्षिणे नापसव्येनकुर्वीत द्वारमारोपुणानिच २१ कर्ममध्येकृतंद्वारं पुनर्बिंबं
चस्थाप्यते नंदवस्त्राकृतेमध्ये शिखरंसर्वकामदं २२ शकुनांशंचतुपक्षे सर्वालंकारमाश्रि
ते द्विभूमिसंयुतास्तत्र त्रयोभूमिकृतेबुधः २३ एकभूमिद्वयोभूमि यावद्वादशभूमिकं
जंघावृद्धिक्रमायोग्यैकादौ भास्करांतिके २४ तथाअर्चाप्रमाणानी द्वारमानादिनिश्चले
विस्तारेण भवेत्तेषं षोडशांशेनमध्यमं २५ कन्यसं अष्टमांसेन अर्चामानंचतुर्मुखे
हीनाधिकं नकर्तव्यं कृतेदोषं अतः शृणु २६ अनादिअंगुलं चक्षेप अंगुलादियवर्द्ध
कं धनस्वजनसन्मानं हानंचक्षतेध्रुवं २७ आधिकेराक्षसेवंघात जिथादैत्या उपरक्रमः
कुलक्षयंकरंतत्र द्विपदेनचतुष्पदे २८ सर्वालंकारसंयुक्तं मनोन्मानसंयुतं इंद्रसंकुल

९८

तेयत्रैस्तत्कसलभेचाक्षयंपदं २९ तथायुक्तिश्चविख्यारि ऋद्धिएन शृणोत्तमः गर्भाद्वेषडंशोनं
षणैश्चैकंचतंभवेत १३० हस्तयुग्मदिकूधाप्रोक्तं कन्यसंसप्तभागतः यद्यमानेयदाशक्तिकिंचदधि
केसविस्तरं ३१ नवेषणांभवेयष्टौ कन्यशंषुद्धि षोडवा विस्तारंयुक्तिमत्याकु भद्रेरष्टांदशास्तथा
३२ प्रासादंत्रिषणांवक्ष्ये षणैकंभूममेवच मंडपंचभवेत्रीणी कुंचिदायित निर्गमे ३३ षण्मेकदंत
रंत मध्ये हस्ताविचक्षणः द्विभूमिंवेदिकाकार्या वयोदक्षविवक्षितो ३४ रंगश्चतस्यगाग्रेन सद्भूमी
विशेषतः षण्मायंचतकर्तव्यं मंत्रबालाणमंडपं ३५ तस्याग्रेद्वयोतस्याग्रेद्वयोभूमी वेदांकुर्याद्वि
चक्षणः चत्वारोनवभिःप्रातकृतानालिमग्रतः विस्तरंयुक्तिमाख्यातं निर्गमंश्रृणुतांमुनिः भ्रे
ह्यमूलमगाडिनालिद्वारंचषोडशा ३६ त्रयोदस्तेत्रयोपक्षे भद्रांतेविचक्षणः निर्गमंभागमेके लि
स्तंभंचत्रयोदशा ३७ मुखभद्रमूलसंस्थाने निर्गमंभागतः भवेत रेफालयेत्प्रास चतुर्दिक्ष्वविधीय
तां ३८ पुनश्च इंद्रसमार भंयषबूनं देभ्रदक्षणे चत्वारोमूलयुक्ताच अष्टौतेचमहाश्वराः ३९ एवंदी
समायुक्ता सारव्यामष्टोत्तरशाते तम्पोद्विपुनर्घष्टौ प्रमाणेंच अतश्रृणु ४० त्यक्तानालिपुनःयुक्ति
श्रुणित्वेकाग्रतांमुनिः मेघनादस्याग्रे मंडपश्चक्षणांतरे ४१ षष्टांतरे पुनर्दद्या संभ्रमामं
डपोत्तमा समोसर्णकृतेमध्ये अर्चामूलस्यन्यूयतः ४२ मंडपस्यतरेयावत मंडपाशानिभूमि
च समोकर्णचिदातव्य सन्मुखाच्चमहाधरः ४३ एवंमाचतुरोदक्षा कारयस्याद्विचक्षणः मंड
पाच्चतुरोदक्षा कारयंस्याद्विचक्षणः यावतमष्टोत्तरंशाले ४४ द्वितीयामहाधरामध्ये समोसृ
र्णेच यावत द्वयोमध्यंचकर्तव्यं समोसर्णमहामुनिः ४५ तेनमानेभवेयुक्ति मुनिविधोध
रैर्युतः नतेषांदोषदास्तत्र युक्तियेष्टनसंशयः १४२ महाधराद्वितीयपंक्ती प्रदक्षणेन
स्राष्टिमदीयते भ्रमतेच जिनालयः सितरिसयभवेसंख्य १४२ इतिश्री विश्वकर्माक्ते

१

५७

ते क्षीरार्णवयुते दृक्षार्णेवेनारद पृछ्छते शाताग्रे समच्चत्वारिंशतिमो न्मतः   आध्याय: २४
नारदोवाच किंभुवनंनकर्तव्यं किंचआधिकं नकारयेत् मुक्तिमंडपमानंच कथितंपरमेश्वरः
१ हीनाधिकंकथं भूत किमेदो मुखगुणं भवेत् महामर्मेनचतुष्टो ममेश्रूत्वा पुनः पुनः २ श्री
विश्वकर्माउवाच प्रासादस्य समंकुर्या मंडपं जेष्टमेवच कन्यसंज्ञायादेन मध्यमं सार्द्धउच्यते
३ मध्यमाचततो हीनं द्विगुणं नैवकारयेत् आज्ञानंकुरुतेयस्तु प्रस्तदोषं भविस्यते ४ इति
पताक प्रासाद भाग १० अंडिकं ३२१ तिलक ८ दीपकादिच तुःसप्तायतवेत्रे मंडपा तिजुसं
युता प्रासादंब्रह्मसूत्रेण सावधारा प्रतिष्टितं २४ चतुः त्रिंशाश्च षेत्रेना कर्णभाग षट् भ
वेत् चानुगं त्रिपदं ज्ञेयं निर्गामे विस्तरंसमं २५ नंदिभाग द्वयंकार्यं तथारनिर्गतमेवं त्रीण भ
द्रस्यविस्तारं तथा कवलीचित्रिका २६ निकासं कुलिकास्तत्र कर्णमध्ये उदुंबरं मध्येस्तुपंक्ति
ताथं भावेदिका सर्वकामदा २७ रेखाचे धार्यतत्तत्र भ्रमस्तंभा विभूषिता इलिकातोरणेयु
क्ता मदलैर्मंडिताःशुभा २८ पताकशिखरंपूर्वं भद्रेश्टंगंच द्वादशं केसरीनंदिका प्रासाद भा
ग ३४ अंडिक ३६३ तिलक ८ आश्रिनयद्वीपका कुलक्षीरार्णवहंसजाति तथायुक्तिमिति
माणिं श्रृणुवक्ष्यामि सांप्रतं सिंहद्वारविशेषेण शिषिशजश्रृणोत्तमा ३० प्रासादाग्रे ध्रियंते
नमिश्र भेवमनोहर अष्टस्तंभा विद्याद्र् कोणसरणं तत्र प्रदक्षणे ३१ अष्टेते तोरणेरम्या
अष्टगउदीविभूषिता अष्टविकर्णकर्णेच भद्रेपट्टंच षोडश ३२ मध्ये वृतंच भ्राम्यंतेपु
नः वृत्तंच प्रदक्षणे कणाद दरिकास्तत्र रूपकंठंचमस्तके ३३ गयालिका उरगास्तत्र मध्य
मंडपवेष्टेतं हंसजातसमारम्य वज्रकंठकरोटकं ३४ जिनेंद्रायतने उक्ता पुष्पकंठवि
धानकं विवधादेवांगनारम्य युक्तइंद्रशुभेस्वरा ३५ तस्याग्रेमेघनादंच चतुष्कापरि

५८

वेष्टितं तत्प्रमाणेन विद्यंते मंडपंवालिभूषितं ३६ भालीमंडपस्याग्रे कुर्याच्चत्वारिवेदिका हस्तिनी
रमणंक्रत्वा पंक्तित्रयोपानसंचरा ३७ अथाभ्रत्रधारायमंडपश्टणुसांप्रतं आयातं भ्रमरम्यंवेदिकोश्र
यमध्यतं ३८ मंडपारंग विस्तेया विज्ञाता सर्वकामदा नालिरंगयदामध्ये षणमेकं विस्वध्यये ३९ निर्गमावे
दिकाग्रेण हस्तिनीरमणंकितः विनापूरंचकर्तव्यं पंक्तिसोपानसंचयं ४० नालिश्च मंडपंप्रास्त षण
मेकं परित्यजेत् भद्रसंख्याद्वयस्थाने चेईआष्टमप्रतिष्टिते ४१ कक्षांतरेगतास्तत्र त्रिविदिःकक्षांत
रेसदा द्वारेद्वारेवेदिकाद्व अष्टकर्णप्रजायते ४२ तथासर्वषणंप्राप्त वामेपकोनविंशति तेयःविशे
क्तलेदीर्घे कोष्टकानो विशेषितः ४३ कक्षांतरिगतः पंचसमस्तत्रेतुपंचकः पंचकक्षांतरेरम्या सिंह
द्वारोभयानिच ४४ एततूपंक्तियुक्तमाक्ष्यांता दीपचित्रासरप्रियाः चतुर्मुखंचसांधारा सर्वमानात
मेभवेत् ४५ कुलिकामंडपासर्वे युक्तिकोमनुक्रमे दशपंचोत्तरेहस्ते नेवकुर्वंतिनारद ४६ प्रासा
दभागमानेन अर्चाभाग षट्स्तथा पंचचत्वारिकर्तव्या ज्येष्टमध्यमकन्यकः ४७ निरंधारेपुसां
धारे मुखकेनचतुर्मुखे सर्वत्रपूजिताअर्चा सर्वाकामार्थदायका ४८ नारदोवाच किंचिभागोस्थि
ताअर्चा किमेविस्तारवर्तते किमेहस्तकिमेपाद किमेवदृनोनिरीक्षते ४९ विश्वकर्माउवाच प्रासाद
मानेभवेअर्चा द्वारमानेविशेषितः प्रमाणंकथितेपूर्वं विभागंच अथश्रृणु ५० प्रतिमाविस्तरमा
नेन गृह्यतेचचतुरांशके तत्रोंशे प्रकुर्वंति अंगुलोनिचतुर्दश ५१ तेनांगुलप्रमाणेन षट्पंचा
छमुच्छ्रेयं विस्तरंतप्रमाणेन कर्तव्यसर्वकामदं ५२ मस्तरकोच्छ्रयंकार्यं अष्टांगुलप्रमाणतः
पादोमष्टंगुलंप्रोक्तं करतुल्यंचतुरांगुलं ५३ गुल्फंचतुरंगुलं वक्ष्ये तनगर्भंचतुर्दशः हृदयंच
त्रयोदशंच केशांतंचत्रयोदशः ५४ ललाटंचतुरोभागं नासिकापंचमेवच अंगुलंहोष्टम
ध्येच अर्द्धांगुलहोष्टकं ५५ वश्रहोष्टयदामध्ये अंगुलीकोप्रवेशयो अर्धांगुलधरोष्टा
दर्वटीचद्विरंगुलं ५६ एवंचाष्टपंचाशंप उछ्र्यंविशेषतः उष्णीकंषडांशतत्रकेस्तातंपरिस्थितं
५७

५८

वक्षं विस्तरमानेंच अंगुलानांचतुर्दश ग्रीवादशांगुलंप्रोक्तं स्तनगर्भंचद्वादश ५८ कक्षबा
ह्यप्रकर्तव्यं द्वाविंशांगुलंभवेत् कटिविस्तरमानेच अंगुलानांचषोडश ५९ बाह्यपक्षप्रमाणंच
अष्टादशांगुलस्तथा बाहुविष विस्तरतःप्राज्ञः अष्टांगुलमूर्द्धकं ६० सप्तांगुलअधःस्था
ने अष्टादशकरतुल्यं दार्यतत्रकारयेत् विस्तरंअष्टांगुलंनिच ६१ जाडकंचतुरोभागं बाहुये
चतुरांगुलं मच्छकंसप्तसाईच धत्रिकाचद्विरंगुलं ६२ आसनेअष्टविंशत्यां षोडशांगुलमस्त
के कर्णनासाग्रकर्तव्यं शोभयेचदशांगुलं ६३ चतुर्दशांगुलंकर्तव्यं मुखंकुर्याद्विरांगुला चक्षु
चतुरंगुलंप्रोक्तं विस्तारेणचाद्विरांगुलं ६४ नासिकास्कंदभागंच अग्रंतस्माद्धमंगुलं ललाटंहृ
दयीनोच्च शोभानत्रयमंगुलं ६५ गल्वांदशांगुलंज्ञेयं त्रोषंचकर्णमस्तके श्रीवत्संपंचभागंचे
त्रिभागंविस्तरालंजः ६६ निर्गमंचत्रयोभागंच हृबहीद्वयमेवच कटिबाहुषणवस्ते पंगुली
द्वयभीमता ६७ दशपंचभवेत्पादं अंगुलंष्पउमेद्वियं छिद्रद्विभागमुच्छेधं विस्तरद्वयमेवचे
 ६८ गर्भस्थानबंभोपृष्ठे हस्ताग्रंद्वयमेवच द्वांशोछितांजंघा अग्रेच अष्टमेयच ६९ स्तथाग्रे
प्रयत्नेन चतुरांगुलमानेपृष्ठे भानंषट्भिभागंवा मपादंचमध्यकं ७० अतःपंतःपमाकारं
विम्बंतत्पृजगत्प्रभो केवलंज्ञानमूर्तिश्च वीतरागोजिनेश्वरः ७१ तथाचतुर्मुखाग्रेच द्वारपालं
अतःशृणु प्रथमेपूर्वभागेश्च चंद्रार्धंचप्रदक्षणे ७२ फलदंडअधःसर्वं वज्रंच ऊर्ध्वहस्तके
अंकुशगजसंस्थाने इंद्रोइंद्रजयोभवेत् ७३ द्वौवस्तसहितश्च दंडमयोपसर्वकं पाहेंद्रोविज
पश्चिमा विशमास्यधरणेंद्रो प्रपकः ७५ वामदक्षनिदिश्चैव अंकुशंगजसंश्रिवो सना
भोदंडभिश्चैव उत्तरेषांदिशास्तदा ७६ तथाजिनालयंकथितं जगतिस्याकुलघस्यचीव
हलरिहतमोर्यालिप्रमाणंचअतःशृणु ७७ त्रिवदिःस्याष्टमारांच पंचनाशाचमयत्नेः पादे
क्षणाविचारेण भ्रमणंशालिषणोत्तम ७८ थायुक्तमितिक्षेत्रंकोष्टकानांचसप्तादश त

ठाकं

द्विभागंचगृत्यंच कर्णभागद्वयोभवेत् ७९ प्रतिकर्णंद्विभागंच त्रिभालंचमस्तके चतुर्मलाकंच
कर्तव्यं द्वित्रीणिमतावरी ८० सप्तदशाद्वयस्थाने द्वयमेकोनविंशति द्वितीयेअग्रसंस्थाने द्वि
पंचतत्रयमध्यतः ८१ देव्यदेहास्तेदानाम उक्तंक्षीरार्णवेसदा इतिसंकुलतेयस्तु दिव्यलोकेसग
सगच्छती ८२ इंद्रोउलीतत्रसंस्थाने विजयंसर्वकामदा सर्वलिंकारसयुक्ता दिधिराजोशृणोत
मः ८३ दशहस्तोभवेत्पादो विंशहस्तायथोत्तमाः षणत्रयंचप्रासादां मंडपंचत्रयमेवच ८४ अ
धःमानंभवेत्वंच मध्यमानेअतःशृणु त्रिषणंकेदसंस्थाने मंडपंपंचमध्यतः ८५ महामर्मविंशेषे
ण सिंहद्वारादिसिक्रमात् ज्येष्टमध्यकनिष्टंदि शिमानेत्रिधामतं ८६ प्रासादत्रिषणवृक्ष्ये मंडपंस
प्तमेवच ज्येष्टमानंभवेत्तत्र सिंहद्वारंचवारणे ८७ ज्येष्टंशाकस्यशांकत्वा कन्यसेज्येष्टमेवच
पूर्वेउत्तरेश्चैवा स्थूलमानंचकन्यसी ८८ वारणेचमहाभेदा उक्तंक्षीरार्णवेसदा मंडपंस्थूलं
ज्येष्टंच जगतीस्थूलंचकन्यकं ८९ मंडपीठक्रमीच अधः ऊर्ध्वंअतःशृणु द्विषणंतरेनूनं
उपर्युपरिक्रमिकं ९० तथायुक्तिस्वविस्तीर्णं सिंहद्वाराभयानिच बहुक्षरीजिनालंच सर्वका
र्याणिसिद्धाति ९१ तथाचशकुनाशाय कुर्याचतुर्मुखेषु भो द्विभक्तिभागेभेदंच दिधिराजशृणो
त्तम ९२ नंदीस्तंभंचसंस्थाप्य द्वारेद्वारेचवेदिकं द्वारस्थानेक्रांतद्वारं छायामानेमतोछयं ९३
नंदीस्तंभंचसंस्थाप्य द्वारेद्वारेचवेदिके द्वारस्थानेक्रांतेद्वारं छायामानेमतोछयं ९४ जालिकोस्तंभे
संस्थाने भद्रयुक्तायथाक्रमः वेदिकोपरिवेदीनां दंडछाद्यापरिस्तथा ९५ कर्णमध्येक्रांतद्वारं
गवाक्षंपरिवेष्टितं पटछाद्योदरेरम्या सुकनाशंस्ततमूर्द्धतः ९५ द्विषणंत्रिषणंचैव त्रिपंचस
प्ततांलिकं रुचकारेसमुद्भूतं पंक्तिकुर्याद्विचक्षणः ९६ सिंहावलोकेनांसर्वं सिंहकर्णविभू
षणं स्थंभिका भद्रसंस्थाने शकुनाशेश्च मुखोत्तमा ९७ गजसिंहेविशालेश्च मुखेश्चवि
क्रताननै भद्रीविकर्णसंस्थाने स्तथासिंहमहाबलाः ९८ सिंहद्वारेविशेषेणषण

८९ मेकमतो धिकं जपो नामं च कर्तव्यं जय कुर्वंति मे सदा ९९ रेवंतो नागपत्राच छरीकारं विशेष
तः लोष्य स्थाने प्रकर्तव्यं श्रृंगकूटो रूपत्रा कुमाशं सिघ रस्थाने स्तथायुक्तिश्चातः श्रृणु २०० पु
नः क्षीरार्णवो मध्ये रम्यस्थाने प्रवर्तते एकोनविंशतिविस्तारं रेकविंशमुखायते १ ज्येष्ठमध्यमक
निष्ठं कोष्टकानां च संख्यया त्रिपदं कर्णसंस्थाप्य द्विपदं चानुगोलमं २ द्वितीयं तत्समं कार्यं त्रिभिश्चै
ईमलं कृतं ३ इति विश्वकर्माकृतेनारदपृच्छते दृष्टार्णवे ज्ञानाग्रे पंचनालिंशीत न्मलः ॥ विश्वक २९
र्मोउवाच तथा क्षीरार्णवस्थाने द्विशिमिस्यान्यगोचरे श्रृणु लंच नहारी षि उन्मतं सर्वदामुखं
१ सर्वपुण्याधिकं पुण्यं वंदिते श्रृणु ते सदा स्तोमे का ग्रतो मूलो रिषिराजश्रृणो ममः २ चतु
रस्त्रीकृते क्षेत्रे चतुर्विंशविभाजते तथा सहा द्वारे भागे महामर्म प्रकासिति ३ भद्रं षडूभाग
प्राकं च तुर्यांशेन्च नंदिका द्विगुणं कर्णविस्तारं भद्रकर्णे च विभागतः ४ समदलं च निर्कोतपद्
नां भद्रमेव च सप्ता द्वाभवेद्भागं नक्षत्रं च विशेषतः ५ श्रृंगं चात्तवर्डलभं सप्ता द्वेशे चजित्रां के
भ्रूतभाग त्रिभाजिते तत्सेषं ततलं वियात पयकरं तप्रवर्तते ६ रिषि चातुर्मुखस्थाने आयुष्य हा
स्वयवर्तते ~~प्रत्येयं तत्रे तो वियाते~~ महामर्मपुनेकाश्च कथितं तव सांप्रति ७ नंदीशीलंकस्त कर्णे
श्रीवत्सं रथको परि श्रीवत्सकेसरिश्चैव दीपते कर्णमस्तके ८ शेषे कूटं तवंगानि भद्रं श्रृंगं च द्वादश
अधस्थान कृतं द्वारं भग्नसोपानकं भवेत् ९ द्वयो पाटा च द्वाराग्रे पटेकै वा विचक्षण शिरस्तं भय दर्शु
भी आसनः परो परिस्थितं १० माकृछदमधुस्थाने सप्त टंममैलवार्णकं षधली मध्यमानेन उ
नस्थायं उदंबर ११ अभ्रपटो परिस्तंभ श्रमस्तंभो परिस्तथा इलिकातोरणैर्युक्तं शाकुनासं च
तथोपरि १२ श्रमपरो परीभ्रम्या उभयोजं घामलं कृता छादने छादकी स्तत्र कोटनं श्रृंगभू ८९
षितं १३ प्रवरपानिज संयुक्ते चतुर्धारि ग्रमंडिता तदृशो पार्वणा प्रान हस्तनी सर्वकामदा
१४ समोसरणेन छेदेन प्रसादाप्यसंभवो अक्षय देव्य लोके श्च कर्तकरापकः सदा १५

९१

इति घप्रसंयं भवप्रासाद भाग ३४ उक्ते १७ प भ्रष्टयं भवय दापस्ते कर्तव्या युक्तेरुतमं १६ सर्णे
मेका तरिश्चैव कुर्या बलाणमंडपे षणांतरे च निकाला न देवेद्यात्च मग्रतः १७ ग्रयस्थाने इंद्रमानं
सिंहद्वारे श्रतश्रृणु सप्तमे मंडपं कार्यं पंचसर्णमुखीयते १८ विस्तरेणप्रपूर्णेचि गउद्वातोरणशुभं
द्विखानांतरे कुर्यात् मंडपं मेघनादके १९ तथा स्वर्णांतरे नाल्पं बलाणकश्च मर्दके तस्याग्रे नं
दवेदी च जंघावेवंति पूर्वकं २० त्रयविंशश्च विस्तारे पंचविंशमुखायते प्रासादो रनि चतुकर्णं न
वकोष्टे सप्तद्रकं २१ द्वाधरेश्चच त्वारो द्विमुखं सर्वकामदा प्रासाद प्रथमाकारं अरुग प्रसंग
मेवच २२ निर्गमा वेदिकामध्ये ग्रथामे विस्तरं श्रृणु त्रयत्रिंशतिविस्तारं षट्त्रिंशमुखायता
२३ द्विभागापचीम विस्तारं भद्रश्च वामदक्षिणे तथा चत्वारि तश्चैव उपरे वस्थाय ते ध्रुवं २४
३४ भवचेइतराग्रे न घनमेकं निवेशयोः प्रासादस्य स्तथाग्रेण मूलकर्णे तथोपरि २५ घ
द्स्थाने इंद्रमानं सिंहद्वारे श्रतश्रृणु त्रयतयेन संस्थाने चेई पंच नास्ति तः २६ प्रासादं त
स्यचाग्रेण त्रयचेइ तथा ग्रतः कर्णांतरे त्रयत्रेई नंदवेद्या तथोपरि २७ श्रमंतं कथितं सर्व
मध्यमानं अतश्रृणु प्रासादानि भ्रमसंस्थाने विस्तारतं सा प्रषीदति २८ अष्टं सारहिताश्चे
वघणमाने विधियते द्वादशांस्यायतां कुर्यात् मंडपस्त्रयमेव च २९ द्वयघणांतरे यावत्
कर्तव्या रंगमंडपः वर्णांतरे प्रदातव्या तथा बालन मंडपे ३० तस्याग्रे च कर्तव्या अधः स्थाने
ननारदः आयामेन घणपंच नंदवेदी प्रदीयते ३१ संधाराधितश्चैव सिंहद्वार अतश्रृणु
सप्तमं मंडपं कुर्यात् आयामे कर्णसप्तकं ३२ प्रासाद ब्रह्मसंस्थाने च मंउपं कर्णचत्वारिकं ज्येष्टप्र
णमेकं ज्येष्टमेवच अष्टंत्र पायितं तत्र तथा ष्टते ष्टमेवचे युक्तमानं भवेत् सर्वं षष्टमाने तथोत्तम
३४ तथा स्वमेघनादेन गर्भस्तत्र अतः श्रृणु ब्रह्मस्थाने निजः सर्वे प्रमाणं प्रघिसेते ३५ क
न्येष्टे नघणं पंचा घणमज्येष्टमेवच द्वयोच मंडपप्राज्ञा गर्भस्थान प्रमाणकं ३६ यत्रैसणेचि क

न्यष्टं एकज्येष्टप्रकीर्तितं मध्यमध्यांतरे कृत्वा शृंगं रंगबलाह्मकं तथा ३७ विस्तारेण घणांपंचत्रय
निक्रांतमेवच भागमेकं भवेज्येष्टं वेदिकानवसंचितं ३८ विस्तरंचमदीक्षातं ऊर्ध्वंचणतःशृणु
पटोदरंजलंधांते भूमांतंवप्रदक्षिणे ३९ तस्योदयेकृतेछायं कर्णप्रासादमेवच तेनमानेनविस्तारं
महाधरश्चप्रमाणतः ४० तत्रोदये कृतंचाय चेईआणप्रदक्षणे पीठविस्तारमाणेन शुभदंसर्वकामदं
४१ वेईछाद्योदरेपट्टं कर्मछाद्यैस्तथैवच तेनमानेनविस्तारं महाधरश्च२प्रमाणतः ४२ सिंहद्वारे
विशेषेण उदयंचअतःशृणु तथाद्वारान्यसंस्थाने मंडपाक्रमसंयुतः ४३ अष्टस्तंभेकृते गडदी
तोरणाष्टप्रदक्षणे तथाविकर्णपटश्च त्रयमूलंचोपरिस्तथा ४४ मध्येविकर्णभद्रंच समंकुर्या
द्विचक्षणः प्रतिपदद्वयंकुर्यात् भ्रमस्तंभनिविशेषतः ४५ तपश्चे रूपसंयुक्ते प्रतिपदेनछाद्यकी
त्वरीकरीनसंहते नन्नृत्यंतकर्णस्योपरि ४६ षोडश्या शेचकर्तव्याय नगायक्षस्तराहंसश्री आलमेष्टं
ते दिग्पालेचततोपरि ४७ मध्यमंडपसंस्थाने प्रतिपाटविशेषतः कृत्वाचजलमानस्ये विशेषेणस्य
संयुते ४८ षोडश्यांशेचतुःकर्णे नंद्यश्रीमस्तकेसदा नृत्यरूपंचमालश्च स्परिधीश्चअधःसंयुतेः
४९ जन्ममाहोत्सवंकृते शुपनोलरमेवच कणादरकेकास्तत्र सर्वालंकारसंयुतौ ५० रूपकंचक
र्तव्यं शादमध्येनिरूपितं गयालंकानथाकोलं त्रयंचसप्तमेवच ५१ वितानोपुलाकार नेकाचप्रद
 क्षणे मंडपापंचमासेन प्रमाणपरिकीर्तितं ५२ गयालंलेरहले कृते तत्र कोलकमलंचमध्यतः
हस्तसंपट्टतोरूपं भ्रमंतंचवितानके ५३ तथादेवांगनाकृत्वा अष्टद्वादशषोडश चतुर्षष्टि
कलायुक्ता स्तंभस्तंभेविराजिते ५४ तथान्यमेघनादंच रनेकाकारभूषितं रत्नाष्टताम्रहारे
षेनकेन क्षीरसागरे ५५ द्विसार्यकृताभूमि भिविभक्तिश्चअतःशृणु संक्षमेवेदिकायुक्तो
विमानोत्तमसादृकं ५६ इलिकातोरणैर्युक्तो विद्याधरीविशेषत चतुर्भुजगश्चमूर्ति

श्च महासिद्वाष्टसंयुतः ५७ षट्राशश्च विज्ञेय राशीस्याषट्त्रिंशति अष्टआयततामध्ये
भास्करादिग्रहाणिच ५८ इंद्रादिदेवतासर्वे नक्षत्रसप्तविंशति ध्यवाष्टंचकर्तव्यं नवताराच
रूपकं ४९ द्वादश्यमेघरूपंच जिनभुवनेसमागतः आनंदपूरितःसर्वे नृत्यंकुर्वंतुदेवता ६० मे
घनादश्चमाकारं लिंगरूपंचविचक्षणः चतुरस्रंचस्पष्टेन वृत्तंवेमस्तकेसदा ६१ पाताले दे
वतासर्वे धांगायक्षकिंनरा गजसिंहविरालैश्च मंडपापरिवेष्टिता ६२ षोडस्यांसंतथावृत्तं अ
ष्टांसंपरिस्थितं वेदिकासनपटेच पुनतस्तंभगमेवच ६३ कारोदश्चमध्येच विताने नविशेषतः
एतेभूपश्चसंस्थाने मेघनादेमलंकृते ६४ त्रिपंचसप्तछाद्यंच मेघनादेवितानकं नक्ष
त्रतारकासर्वे वितानेचमलंकृतं ६५ विद्याधराविशेषेण तथासुरांगनाशुभाः सर्वेनृत्यं
प्रकर्तव्यं प्राप्येकरोटकेसदा ६६ रागभागाकृतंदृत्तो वेदिकाचसुरासुरः आयाष्टंचमहासि
द्धि दिकूपालेनमिश्रिता ६७ अष्टांशेच प्रकर्तव्या पत्रगायक्षकिंनराः योयस्यभवनेऊक्तो तं
तस्योपिप्रदीयते ६८ उपर्युपरिभूमीचे द्यछपटोतरस्तथा मेघनादंचकर्तव्यं अन्यत्रउद्गमा
यते ६९ द्वादशहस्तोपरेप्रोत मेघनादचतुर्दशः सिंहद्वारेविशेषेण मेघनादंचज्येष्टकं ७०
उंनमो इंद्रोवाच पद्मपद्मचसमोस्वर्णं कल्याणतत्रमेवच रनेकधाशतबंधे कथितंपुण्यदी
पकं ७१ विश्वकर्माउवाच महाधरेश्चविज्ञेया द्वाराग्रेतथैवच स्तूरणाद्विविधाचाग्रे मंड
पांचसमंततः ७२ रंगमहाधरेमध्ये मंडपंसर्वकामदं सरणांतरेभवेत्तत्र रंगश्चवामद
क्षणे ७३ घणांतरेबलाणेश्च मंडपंचविचक्षणैः भ्रमवेदीसमायुक्तं सिंहद्वारेविशेषतः
७४ रत्नजंअंबुजंश्चैव कुलजंचंपकाणिवं तोरणानिजचत्वारी द्वारेद्वारिप्रतिष्ठितं ७५
रत्नजंसिंहसंस्थाने अंबुजंदक्षणावृतं बकुलंश्चोत्तरेस्थाने चंपकंचपरायणं ७६ कं

थितंवाक्यसंस्थाने मध्यस्थोंमतश्रृणु अर्चाअलयेसर्वे ऋषिराजश्रृणोत्तमे ७७ तथा
७१ समोसरणंच यूमानं परिकीर्तितं सिंहासनसमेकार्यं स्तंभिकासनमुत्तमं ७८ दृष्वाचवभूप
से सासनोचविशेषतः पंचभागस्तथाअर्था अष्टभागाश्चस्तंभिका ७९ भागेकंचशिरंक्रेरं
पदकंछाद्यपत्रिका पदंचत्वारिंसाद्वारि कर्तव्याचलयोदरं ८० मूलनासिकषडांशेन स्तंविकौ
बिंबमानयोः षट्षटश्चसेकेकेचातुर्विंशतिनालयं ८१ तृतीयांसेनकर्तव्यो वर्णार्याबिंबम
ध्यका परिकरेणसमायुक्तं उसलाल्तयमेवच ८२ पंचमांशेप्रमाहेन तिलकं बिंबमानकं स्तंभि
काचारमहालीच पुनर्मालधरंशुभं ८३ द्वारपालाश्चकर्तव्या निग्रहेस्तंभिकांतरे परिकरायुताः
अर्चामध्येसंस्थापिताध्रुवं ८४ मालाधरश्चकर्तव्या निग्रहेस्तंभिकांतरे परिकरायुताःअर्चाम
ध्येसंस्थापितेध्रुवं ८५ परिकरेवामदक्षिणे संवर्णाचेक्रतामूर्द्धे फास्यांकारश्चभूषितं ८६ ग
जसिंहवरालैश्च मकरैःकेतसंकुलैः अद्वोदयेचपातंने सवर्णासर्वकामदं ८७ पंचभागकृताअ
र्चा द्विभागंघातमेवच तद्विभागंगृहीत्वाच अष्टभागंविभाजिते ८८ चतुरश्रअष्टसार्द्धश्च
अष्टांशासार्द्धमेवच वृत्तसहसार्द्धनी उदयंच परिकीर्तितं ८९ चतुरश्चअष्टांशश्च वृत्तांशेच
विशेषतः वृक्षावलंमनेकाश्च बकुलैउतलापदिकं ९० नानावृक्षाजनामध्ये भ्रमंतेच
प्रदक्षणा एकद्वित्रीचतुपंच यत्रैचवाप्रदक्षणे ९१ तथाच परिमेष्टीका महामेश्चप्रवर्तते
समोसरणेचरमध्येच कपुरागरचंदनैः स्तनोतरेप्रदीयते ९२ पंचतोपरिसंस्थाप्य पं
चवर्णभवाक्षतिः सर्वांभोगीकृतामध्ये कर्पूरागुरतंदुनैः ९३ सर्वमांगल्यकुर्वीत पंचश
ब्दनिरंतरैः दानपुण्याकृताःसर्वे गुरुभक्तेसंपंचबलोत्तमे तथाअष्टांशाअर्हंचां मुद्रि
तेपरमेष्टिका ९४ नवकारेणमंत्रेण स्थाप्यताचप्रदक्षणे पुनःस्वाछादनंकृत्वा सूत्रधारे
समस्तके ९४ इंद्रंअग्नियमश्चैव नैरत्यवर्णमेवच वायुंचधनदश्चैव ईश्वरंचविशे

93
षतं ९६ वारिधाराप्रदीयते नानापुष्पेनपूजिते दिग्पालांश्चबहिर्दद्यात् ब्रह्मविष्णुनसंयुता
९७ वंदिनादीयतेदानं उत्तमाधममध्यमो भोजनेदेयतेसर्वं कर्मकारेनसंयुतं ९८ महामर्मप्र
यत्नेन विशेषेणचतुर्मुखे यदाआत्मस्वरूपेण प्रासादेपरिमेष्टिका ९९ अन्येषांसर्वयस्त्रांवि
शेषजनसासने षष्टिमध्येप्रदातव्यं पुरुषंप्रासादमुत्तमं १०० समोसरणेचसर्वेच तथाच्चा
तुर्मुखेनच तत्रसौम्यंभवेस्थानं यत्रैनोपरमेष्टिका १०१ विनादर्गस्तनांतेच दर्गयुक्तेश्रृत
श्रृणु तृतीयाप्राकारमध्ये स्थापितापरमेष्टिका १०२ जिनेंद्रस्यहृयाचार्य उपाध्यायसर्व
सास्तकच एतेमध्यास्थितंसर्वं त्रैलोक्यंसचराचरम् १०३ कोणेचदीपकंदद्यात् भद्रेकांतरवीस्त
था घातमध्येमहाश्रेष्ट स्थापयेपरमेष्टिका १०४ त्रिषुलोकाकंप्रासादा युक्ताशक्तिरणा
ढुली कुलंसीशार्णविश्रेष्टमालतीनलीनीसउसला १०५ छेदवृक्षार्णविप्राप्त देवलोकश्चगोत्रकं
सहजेचसेलराजेंद्र गतिश्चगणनायकं १०६ छंदानमानमध्येच मेरुमिश्रंगच्चनारदःकि
रणाउलीसंस्थानी तथायुक्तिप्रदायकः १०७ नालिमंडपवभूपक्षे प्रतिमहाधरोत्तमः भ्रम
तंषणमेकंच नालिस्थानेप्रदीयते सर्वपीठसमंकार्यं अधममध्यमज्येष्टयोः १०८ सर्वछंदानु
सारेण उदयविस्तरंतथा प्रासादक्षणेभवेत् पंचपंक्तिसोपानमेवचे १०९ हृयचातुरीकृता
मध्ये प्रासादांचतथापरे मंडपाश्चवभूपंक्ते सदाह्मकंचअंतरं ११० उदयंकवलेपट्टे छा
द्योदरस्यमेवच विस्तारंतेनमानेन कर्तव्यंशास्त्रपारगैः १११ महाधरश्चभूपक्षे मंडपां
मध्यतांश्रृणु समोसरणाष्टसंस्थाने दयमुक्ताच्चतुर्मुखे ११२ अन्यत्रनैवकर्तव्यं सासना
दृवभाषितं स्वर्गेपाताल मानुष्ये नैवदृश्यतिनारद ११३ स्तनस्तत्रेचकर्तव्यं घंटांतंचवि
शेषतः पंचभागत्रकर्तव्यं विस्तरंचत्रिभागतः ११४ रुद्रभागोछ्रयंकार्यं विस्तरेवद्मे
वच उदयाद्रेचकर्तव्यं विस्तरंचविशेषणः ११५ मूलनायकमीनेच समोसरणविशेष 93

तः अर्चामानंचकर्तव्यं त्रिचतुःपंचमांशके ११६ अष्टमांशेवकर्तव्यं जलपटांस्तथांतरं प्रति
वेदीकरहता यावदासध घटातकं ११७ सेषाछ्यययदंगुल्य विभागंकुलते पुनः प्रथमंदिकुभा
गंच दुर्गसैन्योविधीयते ११८ द्वितीयंवसुभिर्भागं तृतीयंषट्मेवच भीतिबंधकरिश्टंगं भागं
प्रवेष्यति ११९ जिनांशोविस्तरंकार्यं श्रतदुर्ध्वअनाम्भ्रणं नवभागप्रयत्नेन स्तंभिभागर्भमे
वच १२० कुंभिकाचत्रयोभागं नवभिस्तंभिकोत्तमः शिरंचत्रिपदंकार्यं किंकिलीतनभू
विता १२१ पट्टमेकादशचैव मध्येअर्चाप्रदीयते त्रिपदाछ्छ्यकीकृत्वा विस्तरेपदषोडश
१२२ भद्रंअष्टभिर्भागं निःक्रांतंद्वि सार्द्धकं सवर्णचकृतेमर्द्द घटिकानवपंचभिः १२३
गलसिंहप्रवर्तते उद्गमेनासिकंतथा कलशंत्रिपदंकार्यं चतुसार्द्धद्वयोभवेत् १२४ मयूरंमो
क्षकंचैव बिडालंमुषकंतथा मृगाव्याघ्रचसंयोगे नोहेतिनकुलोभवेत् १२५ इतिविश्व
कर्माकृते वृक्षार्णवे चतुशताग्रे अष्टातलंशमोध्यायः २६ नारदोवाच त्वंब्रह्मा त्वंवि
ष्णुस्त्वंरुद्रपुनःपुनः श्रिष्टकर्तात्वयंदेवं तव्वरणांप्रणमाम्यहं १ रागद्वेषद्विहीनोच अ
रिहंतंनमाम्यहं साअर्चाकथमानंच कथित्वंममसांप्रति २ आसनंकिंप्रमाणंच उदयंकथ
यंभवेत् परिकरस्यमानंच कथित्वंममसांप्रति ३ कलःस्थानेगृहीतांच आर्चामानंकृते पु
नः निजगामविशेषेण कथित्वंममसांप्रति ४ श्रीविश्वकर्मा उवाच नारदत्वंमहारिष
य त्वयापृछ्छते बुधः प्रमानंद्वारमानेन अन्यथानिःफलंभवेत् ५ अर्चाउमत्वभावे
न जिणवराद्वारप्रहृनोवीतरागश्च प्रासादेकृत्वानुपाषोदरे मध्यमानंच देवलोके मध्ये
नेवरससा अचितोअध मप्रामाणे जयंभवतिशाषोदरंतलंध्यते ६ आयंद्वारपी
पाहूनां अंतेशाषेदरिस्तथा विधाभक्तंचकर्तव्यं प्रमाणंचचतुर्विधं ७ पंचमात्र

त्रिभुलोक

प्रविद्वारं विस्तरार्द्धदलैकृतं त्रिविमानंचकर्तव्यं अर्चावानंमुखेसदा ८ गृहीनंतविभागंच
पुनःचातुर्थंशके अंगुलानांचकर्तव्यं विशेषेणचतुर्द्दशी ९ अंगुलांचसर्वांके षट्पंचाशमेव
च मस्तकंअष्टभागंच अंगुलंअष्टमेवच १० पादंअष्टांगुलंप्रोक्तं करतल्यंचतुरंगुलं गुल्यंच च
तुरंगुलंज्ञेयं स्तनगर्भंचतुर्दश ११ आसनंक्रियतेप्राज्ञ निर्गमंचत्रयोदश चउदशांगुलंविस्ता
रं ह्रादयंचत्रयोदश १२ चतुर्दशांगुलंप्रोक्तं विस्तारेषोडशांगुलं षडंगुलांच उद्गमीकं ललां
टंचतुरांगुलं १३ नासिकापंचसार्द्धंच अग्रंतुमार्द्धमेवच पंचांगुलंभवेत्च क्षाविस्तारंचत्रयमे
वच उपरेचत्रासितंयत्र भागेकंमध्यलोचनं १५ ललाटंहर्बरीश्चैव क्षोभयेत्त्रयमंगुलं पं
चांगुलंकृतेप्राज्ञा मुखचैवविस्तरस्यच १६ हर्बरीचद्वयसार्द्धा अधर्द्धंभागभागतं हेतन्यनि
मतिर्कातं गुष्टिगलंचमुसमं १७ श्रीवादशांगुलंप्रोक्तं कर्णक्षोनेदशांगुलं त्रियंसार्द्धंचविस्ता
रं भागभागंचनिर्गम १८ अष्टविंशांगुलंप्रोक्तं बहुगर्भंचधामतं अष्टभिबहुविस्तारं अ
ष्टसप्तप्रकोर्तितं रिदयंविस्तरंकार्यं द्वात्रिंशांगुलस्तथा षोडशैकटिविस्तार षणबद्धहृदय
सार्द्धकं २० श्रीवत्संगर्भिकर्तव्यं तनगर्भत्रयंगुलं तुल्या हृदयएकादशस्तथा २१ जोऊलकं
चतुरोभागं घासिकाभागभागतः वसुभिहस्तभिर्हस्तविस्ताके देवेदांगुलांभुभां २२ गर्भ
स्थानादिकंकयात् कराग्रंचनवांगुलं दशंपंचपदाग्रेवा उभयोवामदक्षणे २३ पंचांगुलप
दक्षो भतंचषडांगुलं अष्टसार्द्धंचकर्तव्यं विस्तारंचपदस्तलं २४ अंगुष्टंचविभागंच
अंगुलीषट्सर्वतः अंगुष्टोनिर्गमंकृत्वा अंगुलानांचतुर्दशः २५ अंगुष्टंहस्तकेकार्य
अंगुलंत्रयमेवच हिनस्थानेनकर्तव्यं शास्त्रहष्टेनकारयेत् २६ नाशाग्रेविलोकेन
मंडपाभ्यंतरेनच वीतरागश्चततोक्ता कर्तव्याद्दृष्टिरुत्तमा २७ किंवापायतेसंख्या

उदरंत्वष्टगुलं

७३ क्रिवीअर्चाद्भूते मुनिः वदनेच वेदेखाकी सूर्यबृहस्पतिसुरेश्वर २८ श्रीविश्वकर्माउवाच यदिपु
र्वपुराख्याते तनूपाते अंगुलोत्तमं आदिअर्चांभवे पूर्वेअंगुलं तेमुनिः २९ उदयेनविभागे
च उदयेसवितो भवेत् विस्तार विस्तरं ज्ञात्वा कर्तव्याचसदा बुधै ३० विकारे वेदवाक्यानि वेदवा
क्यं यथोदयं अस्मृयलक्ष्यलेतत्र कर्तकारापरावभ्रम् ३१ त्रिवेदेहूंतिविस्तारं नोदीर्घेवेदसंभवं नोमुखत
त्रसंस्थानो कर्तकारापकावभ्रम् ३२ अर्थिद्विशार्धगुलंकृत्वा परिकस्यप्रयत्नतः तत्रसीहासर्ववक्ष उ
द्वयंअस्विह्वलोमुनिः ३३ अर्द्धपीठोद्वयंकार्ये अंगुलंदशमेवच गजोरदयंप्रयत्नेन उहेचद्वादशां
गुला ३४ खचांगुलव्यादिकीयुक्तं उद्धपीचतुरंगुलं उदयंच महाख्याति विस्तरंचअतश्शृणु ३५
चतुर्दशंगुलेयक्ष गजंद्वादशांगुलं सिंघदशांगुलप्रोक्तं द्वौद्वौदशागुणंभवेत् ३६ वसुभिम
ध्यवेदीच मृणायुग्मप्रकीर्तिता निर्गमंचततोवक्ष्ये अंगुलंपंचमेबुधः ३७ कायस्वगोये कर्ष
पंचोशंचसू[illegible]त्तकं अष्टादशंचविस्तारं तत्रमध्ये अतःश्रृणु ३८ अष्टभिःअर्धसंस्थाने [illegible]यो
तो मेकेनविंशति सोर्धंचविलयंकार्यं इल्लिकोरणोत्तमः ३९ विस्तारंस्तंभिकागर्भकं मध्यमावेकाअ
तश्शृणु षडंगुलंचकर्तव्यं विरालीवदन्यगजं ४० रथिकाअंगुलद्वौ सेषंचमुनिविस्तरं नि हो
र्गमंचग्रासस्तत्र सर्वालंकारसंयुतं ४१ तिलकंदशांगुलंकार्यं तत्रबाह्यप्रकर्तव्यं पल्लवैषष्टमेव
च सार्णोसार्द्धंचनिर्गमं ४२ डमरंपल्लवेयुक्तं अंगुलानीचतुर्दश तस्यमध्येचकर्तव्यं पल्लवैष
ष्टमेवच तस्योर्द्ध्वेतिलककार्यं अंगुलानांचतुर्दश सर्वालंकारसंयुक्ता मकरेवामदक्षिणे ४४ त
न्मुखेतोरणंकार्यं कललैनेत्रिपंचमेवच केवलंज्ञानमूर्तिश्च अग्रेकुर्याद्विचक्षणो द्वौद्वौस्तंभि
काभयातन्मकरंउंगुलंकार्यंक्षोततंचतुरांगुलं मालाधराकृतेमध्ये उपरेगजमुत्तमा काम
ङलंचविस्तारं द्वाविंशत्यांगुलंबुधः ४६ चतुर्विंशोगदयंकार्यं मलानछेत्रवक्षेचा उदयंच ७३

७५

अतश्शृणु वरागद्धस्तरीकृत्वा अंगुलंषष्टमेवच ४७ द्वौद्वौछत्रप्राकारं उर्द्धेउनलोत्तमा सर्वछत्र
श्चविस्तारं अंगुलं विंशमेवच ४८ उपरेटंकधाराचैव अंगुलानिदशस्यच चत्वारोमणिबंधा।
श्चे द्वयो मखरेचपटिका ४९ मूलनायकबाहुगुलं कर्तव्यंपरिकरोत्तम सुरेचिस्तरं यत्रतं गर्भ
कायस्वर्गको ५० कायस्वर्गेयदाछत्रं उर्द्धयाप्रतिमासमं सर्वपरिकरस्यचाग्रे निर्गमंसार्द्धमंगु
लं ५१ तथातोरणतोवक्ष्ये प्रामाणांतअतश्शृणु सर्वपरिकारयन्माने गर्भस्तोरणस्तंभिका
५२ अष्टोत्तरी स्तंभिकागर्भे व्यासेमुदयमेवच द्वाविंशतिविस्तारं मध्येअंगुलधकंभवे
त् ५३ षडंगुलंनिर्गमंतत्र षड्विंबविशालका वामदक्षिणकर्तव्या स्वरूपार्द्धलक्षणान्विता
५४ निग्रहा निर्गमंकार्यं अंगुलानांतपंचभिः दिकुभिर्यक्षभद्रंच त्रीणित्रीणित्रिमाशिकं ५५
स्तंभिकात्रीणिकर्तव्या उभयोवामदक्षिणे पावटीदशभिप्रोक्ता जक्षद्वादशमेवच ५६ मेकादशंप
चकर्तव्यंश्चासांतं विचक्षणाः तस्योर्द्धदंगुलंत्रीणी पावटीच प्रयत्नतः ५७ कायस्वर्गंचकर्तव्यं प्रासांतंच
व्यचक्षणाः तस्योर्द्धदंगुलंत्रीणी पावटीचप्रयत्नतः ५८ कायोस्वर्गंचिकर्तव्यं उदयंमेकेनविंशति
लउपरेदंतरकार्थं चत्वारोछत्रकंभवेत् ५९ षट्भिचत्रविस्तारं झालरीचतुरांगुलं उपरीछत्र
द्वयंकार्यं देकैकंअंगुलीभवेत् ६० उपरेकालनेकार्यं तत्रभेदअतश्शृणु षट्भागंमुखभद्रंच
निर्गमंसार्द्धमेवच ६१ मूलंचनासिकंकार्यं द्वौद्वौमुभयोन्वितः संपवासंचकर्तव्यं सार्द्धंच
नवा निर्गमं ६२ तत्राबाह्ये प्रकर्तव्यं सार्द्धंसार्द्धंचनिर्गमं पुमरंपल्लवयुक्तं अंगुलानीचतुर्दश ६३
तस्यमध्येचकर्तव्यं पल्लवेषष्टमेवच तस्योर्द्धतिलककार्यं अंगुलानांचतुर्दश ६४ सर्वालंकार
संयुक्तो मकरेवामदक्षिणे ६५ तन्मुखेतोरणंकार्यं बललैनेत्रिपंचमेवच केवलंज्ञानमुर्तीच ७४
अग्रेकुर्याद्विचक्षणः २६६ इतिश्री विश्वकर्माकृते वृक्षार्णवेनारदपृच्छतेशातात्रेए

७५

कोनपंचसप्ततमोध्यायः २७   नारदोवाच त्वमेवब्रह्मात्वमेरुद्रस्त्राता विष्णुस्त्वंचस्वयंभवेत् स्व
यंत्वंचमहादेव विश्वकर्माजगत्पतिः १ यकेकेपर्वतस्थाने शिखिरंतस्योनविद्यते कार्यत्वमभसांप्र
त्ये मुखेकेवाचतुर्मुखे २ श्रीविश्वकर्माउवाच नतुसंकादितत्तोवक्ष्ये प्रासादाश्चतुरलक्षण अष्ट
दादशधाश्चैव द्वादशार्द्धंनकारयेत् ३ अष्टदाचत्रयंप्रोक्तं दशदापंचमेवच द्वादशेसप्तभिप्रोक्तं
प्रासादादशपंचभिः ४ संभ्रमान्निभ्रमाश्चैव मुखेकेवाचतुर्मुखे तांनामपदंप्रोक्तः शृणुतेकाश्य
तामुनिः ५ नपुरकंनर्मदश्चैव धनदोऽथहस्ततथा कामदामोक्षदाताच भुक्तिदामोक्षदायका
६ जयदाविजयदास्तत्र उत्पलाकमलोद्भवा मलिकटारुचिकूटाश्च रूपसर्वांगसुंदरः ७
चतुरश्रीकृतेक्षेत्रे अष्टदाप्रतिभाजिते प्रासादार्द्धभवेद्भद्रं तस्यार्द्धकर्णविस्तरं ८ निर्गमं
हस्तमानेन अंगुलैकंविचक्षण कर्णकृतोविभाजेच भद्रेरथिकोत्तम ९ उपरेघासनाकारं
द्वंद्वेतस्यमूर्द्धके समपर्वकृतंपीठं कलसंवेसर्वकामदं १० अद्धोदयेचकर्तव्यं प्रासादेच्यनुपुंस
केसपादंनर्मदप्रोक्तं धनदासार्धमेवच ११ पं अथातसंप्रवक्ष्यामि मंडपाषट्मेवच समंसा
पदसार्द्धंच मंडपेकारयेद्बुधः १२ मोदकंप्रवालोत्तगं वर्तुलंचसनिवर्तके द्विपुष्पंचसमायु
क्तं राजसेनंचषट्विधं १३ माननीमानवतीच पद्मिनीचपद्मावती सरसाःसागरावेदी
प्रमाणंषट्विधात्तमं १४ कुंभघटःकपोतालि मोदकानांनामउच्यते मत्तवारणसंयुक्तो
भवालंचसुखावहं १५ अंतरंपत्रतथाछाद्यांस्याय तेतुधीमतं मध्येचांतरपत्रंच द्विछाद्यो
नामवर्तुलो १६ अधस्थानेछतांपीठं उपरेचांतरपत्रकं तदूर्द्धंचकृतंनामउच्यते १७ च
तुष्कंचकपोतालीच कर्तव्याचसर्वकामदा द्विपक्षंनाममाख्यातं राजसेनंचषट्विधं
१८ वेदिकाचततोवक्ष्ये चतुरश्राधिकोदिका पत्रमृणालसंयुक्तो माननीमानमुत्तमं

१९ अष्टादशांचकर्तव्यं अधःऊर्ध्वंचपल्लवे मानवतीस्तदानाम कर्तव्यामानसंयुतो २० उ
ईर्द्धछकीयुक्तं पद्मनीनामउच्यते ताम्रधमाकारिकर्तव्या बंधनद्वयसंयुते २१ बंधनश्चबभू
पत्रे कर्णव्याकर्णमालिका   २२ वेदीपद्मावती
प्रोक्ता कर्तव्याहरिसंकरं स्वबलक्षणसंयुक्तं सर्वकामार्थसाधकः २३ मध्येबंधनैर्युक्तं कर्ण
मालिनीसानिच सारसानामसावेदा ब्रह्मणाचस्तप्रयालनी २४ सारसाश्चसमायुक्ता मध्येऊ
र्द्धंचछाद्यकी सागरानामसाख्याता कर्तव्याषट्वेदिका २५ आसनकूटकंचैव चातुरंचतृती
यकं आसनंत्रिविधंप्रोक्तं ज्येष्ठमध्यमकन्यसं २६ करवासंनमुचित्रंच विचित्रंतृतीयकं म च
त्तवारणकंवृत्तं त्रिविधंसर्वकामदं २७ मध्येचांतरपत्रांच कपोतालीकयान्वितं पुष्पवल्ली
समायुक्तं आसनपट्टंचनामत २८ घटमालीसमायुक्तं कूटकंनामउच्यते घटछाद्यंच
कर्तव्यं बंधनंद्वयसंयुतं २९ मध्येचांतरपत्रंच करभमानउच्यते ३० कमध्येपद्मपत्रंच
चाउरंत्रिविधोत्तमं विचित्रवसर्वकामदं द्वौपंक्तौपद्मपत्रंच विचित्रंत्रिविधोगतं ३१ पर्वतो
शिखरश्रृंग स्तंभानांमपिवर्जितं चतुरश्रंकृतंक्षेत्रे पर्वतरम्यासाष्टाशापर्वतोपमा ३२
ब्रलकर्णाचकर्तव्या सनामश्रृंगोत्तमा एतस्तंभाविचारेण कर्तव्याःशिल्पिभिसदा ३३ अंतः
परंप्रविक्ष्यामि मंडपानांयथाक्रमं नामषट्प्रमाणंच प्रयुक्तोदक्षराजय ३४ शावनोदोहरी
नादंच ब्रह्मनारदस्तथैवच रविनादोसिंहनाद षष्ठमोभिघनादयः ३५ चतुरश्रीकृतेक्षेत्रे
अष्टाष्टविभाजित्ते क्षेत्रार्द्धंभवेद्भद्रं भद्रार्द्धंकरणविस्तरं ३६ निकासंपदसार्द्धोनिचातुर्द्धि
शावीचतां छंदालंकारसंयुक्तो मानोन्मानसंयुतं ३७ द्वात्रिंशत्कृतस्तंभा मष्टांशप्रकी
र्तिताः झल्लिकातोरणैर्युक्तं दिकूविदिकूभूषितं ३८ अष्टाविंशोकृतस्तंभं शिवंचवितते
मुखं वीरालैविधिःकर्तव्यं स्वरूपालक्षणायुतं ३९ श्रृंगैवाथकृतस्तंभं बहुपुष्पैर

लंकृते कुंभिकाच कर्तव्या घंटापल्लववेष्टिता ४० स्तंभे निरंतरे र्येद्रा घंटापल्लमासिता पुष्पे
७५ प्रकर्णसंयुक्ता मणिउक्ता शिवालय ४१ शावयुग्मंच कर्तव्यं उदकांतरमध्यतः उभयं कूटसंस्थाने शि
वयुग्मंच कारयेत ४२ तापसे वेष्टिसंक्रुत्वा बाह्यस्थाने निरंतरेः भूषणार्थे प्रयत्नेन शिवहेवे
सुवल्लभः ४३ अष्टांशोयदंकंच क्षेत्रे कृत्वा विचक्षणः स्तंभे निरंतरेर्थद्रा शिवनादः स उच्यते २२
४४ चतुरस्त्रीकृते क्षेत्रे षोडशैर्विभाजिते कर्णः भागत्रयं कार्यं प्रतिरथं त्रयमेवच ४५ भद्रा
र्द्धहृयभागंतु कर्तव्यं सर्वकामदं भद्रे प्रतिरथे चैव त्रनिष्कांतं त्रयमेवच ४६ रथोपरथं कार्यं भ
द्रोयभद्रमेवच नंदिकाच प्रयत्नेन भेदकुर्यात्कदाचन ४७ स्तंभे निरंतरं युक्तं गोपीगवामगदाकि
धा गोलभोगैर्वरतरैर्युक्तं घटितेश्वरने किधा ४८ छेदिका अष्टमायास्च जोयशोवरुपोश्चते
आष्टांशो प्रकर्तव्यं चतुर्विंशाहरिस्तथा ४९ विद्याधरोभयपक्षे पुलदेश्च मालाधरः तदूर्ध्वेच
कर्तव्या नित्यं निचगोपांगना ५० मल्लसहिता हरिश्चैव भागसहितास्तथैवच षट्‌शालासेही
ताच नंदरागो महात्मनः ५१ चतुर्थं राजसेनंच वेदीकुर्यात पंचमे तृतीयासेनपट्टंच मतवारण
स उच्यते ५२ सवर्णभद्रसस्थाने हरीहरी स उच्यते हरीनादमंडपोक्ता चमत्सादिसर्वतोत्तम ५३
इतिहरीनाद चतुरस्त्रीकृते क्षेत्रे चतुर्विंशविभाजिते कर्णसार्द्धत्रयं ज्ञेयं प्रतिकर्णस्तथैवच ५४
चानुगत्रयभागंतु शालार्द्धद्वयमेवच त्रीणि त्रीणि त्रिषुस्थाने निःकासं परिकीर्तितं ५५ विष्णु
रूपाणि अग्रस्थाने ब्रह्मरूपं निवेशयेत अष्टांशो भद्रसंस्थाने चतुर्वेदाश्च स्थाप्यता ५६ अष्टां
शो अधितार्थस्य संक्रांतिकथ्यते पुनः मोरपादेव प्रदातव्यं उत्तरोदे प्रदक्षणे ५७ विद्याधरस्त
तस्तोव माल्लीवर मतोश्चते वितानै पद्मपत्रैश्च मिश्रकं छयते पुनः ५८ द्वितीयं राजसेनं
चवेदी कुर्यात तृतीयकः द्वितीयं वासनपट्टंच तथा तेमतवारण ५९ कूटघंटंच संस्थाने
भद्रस्थाने तथैवच ब्रह्मकंदंच मूर्तेच ब्रह्मनाद स उच्यते ६० इति ब्रह्मनाद च ७५:

७७

तुरस्त्रीकृते क्षेत्रे अष्टविंशंच विभाजिते कर्णभागचतुर्थंच पत्तिकर्णतथैवच ६१ चानु
गत्रयसार्द्धंच शालपंचप्रकीर्तितं सार्द्धत्रयपदंवत्स त्रयस्थानेषु निर्गमं ६२ स्तंभे निरंतरं युक्तं
महामर्मालिपीडयते जोयस्य मर्चयायुक्ता घटितेश्वरणीकदा ६३ दंडीसहितानि कमलानि क
रोटकं परिवेष्टितं थेरन्यासेषु जे देवा पुनः कुर्याद्वितीयते ६४ संक्रांति परित्यकंच रविरूपं निवे
सयेत रविनादमंडपोक्तंच कर्तव्या सर्वकामदा ६५ इति रविनादमंडपोक्तंच चतुरस्त्रीकृ
ते क्षेत्रे द्वाविंशः पदभाजिते पंचभागयतं भद्रं कर्णप्रतिकर्णंच तु भवेत ६६ प्रतिभद्रंचतु
ला भागं शालार्द्धं त्रिभिर्भागतः पदचत्वारिनिःक्रांता त्रिषुस्थाने स्वयंविधेः ६७ किंचित्न्यूनंप्र
कर्तव्यं प्रासादे मंडपस्यच वेदरूपभयोपक्षे सिंहेच विकृतेमुखं ६८ स्तंभंच पर्वतैर्युक्तं शिरालैश्च विभू
६९ षितं वर्द्धकंच सार्द्धमूर्द्धं षट्‌छाद्यं प्रकीर्तितं षट्‌छाद्यकर्णमूर्द्धं सिंहकुर्यात निरंतरं ७० रविरूपा
भयोपक्षे अयरूपोभयानिच सिंहरूपं प्रकर्तव्या केसरीमुखमंडिता ७१ असणपरिणाहंसोसि
हेचविकृतेमुखे रविकेतुंवभ्रूपक्षे विलैकीर्तिमुत्तमं ७२ वेदिकायदिभाव्यंते राजसेनस्थथोक्य
आसनपट्टंयदि भाव्यं मत्तवारणभाविते ७३ सवर्णभद्रंघटांचकलसं सिंहनादं स उच्यते ७४
इतिसिंहनादः चतुरस्त्रीकृते क्षेत्रे षट्‌त्रिंशविभाजिते पंचभागयतं कार्यं प्र

र्तंभावीतभयावह ७२ चतुस्त्रं ब्रह्मभागंतु विकृतस्यासमांशकं वृत्तंचकारयेत रुद्रं
स्तंभावीतभयावह ७३ चतुस्त्रं ब्रह्मभागंतु विकृतस्यासमांशकं विकर्णैर्द्वादशार्मेधा
मंडपंशुभलक्षणं ७४ विष्कुंस्कंधसंस्थाने अष्टांशो विधितेपुनः पूर्वमंडपसंस्थाप्य
द्विषवेदाविचारण ७५ विद्याश्च वभ्रूपक्षे अष्टमाया निवेशयेत पूर्वमंडपसंस्थाप्य

७७

ध्वजधूसमाकुलं ७६ भद्रभागस्कंदमर्द्धं कुर्यात्तेषट्खाद्यकं शालार्द्धअधसंस्थाने म
र्द्धरसंस्थितदेवता ७७ षट्त्रिंशराज्ञीचैवषट्रागसमाकुला सुद्धिबुधिसहीताथ नृत्यंतेगणना
यका ७८ नारदास्तंबराश्चैव वादित्रैविविधैस्तदा गीतज्ञानैसंयुक्ता नृत्यंतसर्वतोवता ७८ व
णामाराजसेनाच यद्दकुर्यातुपंचमी तृतीयचासनपट्टंच स्वयंवैमतवारणे ७९ सवर्णभवसं
स्थाने गणेशाख्यतेपुनः सिद्धिबुद्धिसंतिताश्च हस्तककुकमंडल ८० मयूरोधोविहंगाश्च
ये उक्तामेघमाज्ञया अन्येषासुराणामेव मेघनादेरलंकृत ८१ इतिमेघनाद मंडपलक्षणं
अथातसंप्रवक्ष्यामि भागसंख्याविधायते ज्येष्टमध्यमकनिष्टं त्रिविधंमानमुत्तमं ८२ नरपी
टस्यचोर्द्धन प्रथमभूमिजिहालकं कत्वाचमेकविंशत्या प्रमाणंचतदुच्यते ८३ द्विभागंराजसे
नेच वेदोवेदसमंयुतेः भागंचासनपट्टंच सपादद्वयकंमंदकं ८४ ग्रहसंख्याकृतेस्तंभे पादूनेभद्र
कंशाच शिरंचद्वयभागानि सपादद्वयपट्टकं ८५ पुनरेवंप्रयक्ष्यते भागसंख्यातमध्यंतं राजसे
नंततोभागं पादूनाद्वयवेदिका ८६ भागदेवासनपट्टंच मतवारणसार्द्धकं द्विभागंस्तंभमुच्छेदं भा
गार्द्धभरणीकोत्तमं ८७ शिरंचभागमेकेन सार्द्धपट्टंसमुच्चयं रुद्रभागविभक्तेच उत्तरंगोत्तकंयदि
८८ नरपीटंशत्रोर्द्धन घुंटचाद्यंसमुत्तकं कत्वाचदशसिद्धानी भागसंख्याविधीयते ८९ रा
जसेनंततोवत्स भागमेकंप्रकल्पयेत् वेदिकाद्वयेभागंच भागार्द्धचासनपटंच ९० पंचभागो
स्थितस्तंभं भद्रकंचार्द्धभागिकं शिरंचभागमेकेन सार्द्धपटसमुच्चयं ९१ देउछायेनुकर्त
व्यं भागार्द्धनततोछयं विस्तारंचचतुर्भाग लंबपदोदयंसमं ९२ द्वादशांसहितंस्तंभकुर्या
कर्णिवर्त्तिना कपोतालीद्विभागेन पट्टछाद्योपरास्थिते ९३ अतोर्द्धमंठपंवक्ष्ये अंतरंतत्रका
रयेत् व्यामार्द्धतवानृत्यं षड्भागंतत्रपानयेत् ९४ पूर्वोक्तभागमेकेन सार्द्धस्मात्पद
विस्तरं तत्रकेनसमायुक्तं स्तोतव्यंशात्यतेनच ९५ अतोर्द्धभ्रामयेद्दलं सत्रंचभ्रम

साधितं ९६ पठयोरभयोमध्ये विस्तारंपंचराछते विस्तारार्द्धनतत्रैव कर्त्तव्यंचततोछयं ९७
उछयेचेशालंकुर्याद्दष्टाविंशतिमिश्रितं भागंअतोवद्यरिकाकार्यभागवेवचतुर्दश ९८ काम
रूपंचभागेन भागपट्टंचधिधिका कर्णकंतुत्रिभिभागैर् भागैकंपटकायकं ९९ चतुर्भागेनतत्रो
र्द्ध ग्रासपट्टीततोसुमा पादनंकर्णमुछेदं सर्द्धंचांतरपत्रकं १०० चतुर्दशोचकर्तव्या भागेददि
रिकासुभा निर्गमंचततोवक्षेददरीकाचसुशोभन १ भागैकंकामरूपंच धिधिकाद्वयनिर्ग
तः सपादेस्तंभत्रिभिभागै कर्णकंतत्रकारयेत् २ स्कंधेचैवततःकार्यं सपादत्रयनिर्गतं द्वौ
द्वौभागंनिर्गमणंच प्रथमाबलिकास्तथा ३ निर्गमोभागउछेय भागत्रिभिश्चवत्रितीयंतु
निगुलेचतुकारयेत् उछतायद्विभागेन नद्दनंवतोधिकं ३ निर्गमंभाग ३ चतुर्थीचोत्रधाकार्या
सार्द्धविभागनिर्मिता निर्गमित्रयभागानि उछयेद्वयमेवच ४ दिग्भागंनिर्गमंकार्यं कलिका
चत्वारिप्रथमकं षोडशेकोणेद्वितीयं कर्तव्यंद्वादशोछये ५ अष्टकोणंतृतीयंच चतुकोणंचतुर्थ
कं द्विकोणंपंचमिप्रोक्तं सर्वशोपरिलंकृतं ६ उदयोनिर्गमेणैव दशभानिकारयेत् थरैःपंचभि
कुर्यात् भागानिउदयेनतु ९॥ भाग ५० निर्गमेभाग ५८ एकंचकारिद्भा ११८ निर्गमाभाग ९१
पंउछयाः॥ ॥इतिविश्वकर्माकृतेवृक्षार्णवेनारदपृछतेशातायेद्वितीयोन्मतः २८ श्रीवि
श्वकर्माउवाच एकहस्तेतुप्रासादे त्रयत्रिदंगुलोभवेत् दयं द्विहस्तेतुदयंकार्यं द्विहस्तसप्तमंगु
लं १ द्विहस्तेचयहामानं दधिकंपंचमंगुलं चतुहस्तोदयंकार्यं देकोनशतमंगुलं २ विस्तरस्यस
समंकार्यं पंचहोदयंभवेत् षट्हछयंकार्यन्यूनंवद्वयमंगुलं ३ विस्तरस्यसमंकार्यं पंचहोद
यंभवेत् उदयंसप्तहस्तेनौ न्यूनंचसप्तमंगुलं अष्टहस्तोदयंकार्यं अष्टहस्तप्रमाणतः
४ सपादंदशहस्तंच प्रासादेदशपंचके विंशहस्तोदयोमानं सार्द्धद्वादशहस्तके ५
त्रिंशहस्तमहाप्रास उदयसप्तादशस्तथा ७ सपादमेकोविंशत्या पंचत्रिंशमुनीश्वर

७७ ज्योवरेवयदा हस्तंसार्द्ध ३ सांत्मेकविंशति ८ चतुर्विंशतिपाहूने पंचचत्वारिहस्तके शातोद्वो
दयमानंच हस्तस्तस्यो त्याचविंशति ९ अस्योदयंचकर्तव्यं प्रथमंषट्छाद्यकं वत्समोदयेप्रा
सस्यामंडावरंकृतं १० तच्छाद्यंहूर्ध्वसंस्थाने द्वयोजंघाप्रकीर्तिता दशजंघाभवेत्सर्वे याहस्त
नाद्वोदियकवेत् ११ षट्विधंषुटछाद्यंच द्वयोर्भूम्यांभवांतरेमुनि भलिकार्द्धभवेत्संबी छे
योर्द्धनमंबुका १२ पुनर्जंघाप्रदातव्या यावद्दादशसंख्या किंचित् २ भवेत्वंकर्तव्यांभूमिको
छ्रयं १३ शाताद्वैचप्रमानंच महामेरेतथाधिकं इतिश्रीविश्वकर्माकृते क्षीरार्णवेनारदपृ
च्छतेशतोग्रे चतुर्थोध्यायः २९ नारदोवाच प्रणिपत्यमिदंपृच्छे जानुभ्यांधरणीगतः
कथयामिनसंदेहो शिखिरंसर्वकामदं १ कस्मिन्नामृस्यतंमन्ना प्रासादाशिखरोत्तमाः वरंदत्त
स्यविभक्तेन किंमशृंगोविभागये २ किमेअष्टाविभक्तिंच तेनस्कंधकलीभवेत् दशधास्कं
दरेखाच कंक्षमानंकृतोभवेत् ३ किमेवात्वंजरश्रुता सरलरंकेनहेतवे किंविभागेषुतोसन्ना
कथितंममसांप्रति ४ श्रीविश्वकर्माउवाच यत्वयोपृच्छतेरिषि. शृणुतेकाग्रतोमुनिः शि
राश्वविविधाकारा मनेकाकारिमुदत ५ उत्तमंदृष्टापूर्णवश्चेद वैराज्यकुलसंभवे केसरा
दिविधिस्तेषां तथाक्षीरार्णवोश्रुते ६ पत्रेमयूरेतथोक्तं कश्यमेनफलेतथा शिखरापस्त
रंवंद्या विमानाहत्यदेवता ७ वज्रवैडूर्यमुक्तांकं इंद्रनीलमुनीलकं पद्मरागंचगोमेधं प्रवा
लेशृंगभूषणं ८ तथाशृंगंतलंवंद्यो अष्टभागोविचक्षणः केसरीसर्वतोभद्र नंदनस्य।
विशेषतः ९ मंदरोहेमकूटेश्च कैलासअमृतोद्भवः श्रीवृक्षोपृथ्वीजयं अष्टधातचनि
श्चलं १० नंदशालोहेमवानंच नदीशोइंद्रनीलकं श्रीदत्तधोमुनेकांश्च दशधातपरिदी
यते ११ सक्षेपंकथितंचैव तथाचविस्तरंशृणु क्षेत्रार्द्धभवेद्रद्रं भद्रार्द्धकर्णविस्तरं १२ ७७५
कर्णादिप्रयत्नेन कर्तव्यंभद्रनिर्गमं श्रीवत्संकर्णसत्स्थाने भद्रेचरथिकोपरि १३ परेशृंग

७८

प्रदातव्यं केसरीशिषरार्चितं शिखिरभद्रेशृंगप्रदातव्यं सर्वतोभद्रमेवच १४ कर्णशृंगद्वयं
कार्यं नंदनेचत्रयोदश तथाचपंचविंशत्या श्रविराजाशृणोत्तमः १५ कर्णेकेसरीसर्वे भद्रे
शृंगचतुर्भवेत् भद्रेकर्णहातंकूटं गवाक्षंमध्यपादयेत् १६ उत्तशृंगंतजिदामध्ये शिखरंवैसर्व
कामदं उत्तशृंगचसंस्थाने मंदरस्याप्रमानके १७ कर्णेशृंगंद्वितीयंच श्रीवृक्षंसर्वकामदं
मुषभद्रेउत्तशृंगंच ममृतोद्भवसंज्ञकं १८ सर्वभद्रेचकर्णेच भद्रेशृंगंततोपूभिः हेमवर्णेचि
माख्याते हेमकूटअतःशृणु १९ कर्णेशृंगंततोद्भिः हेमवर्णेचमाख्याते प्रदातव्यंतथर्नंदशा
लउच्यते कर्णेतिरांउक्तंप्रोक्तं भद्रेशृंगंप्रदापयेत् २० शृंगवतोसनंचैव महानीलंच मिश्रकं
पुरशृंगतदाभद्रे भद्रदरोमिश्रकान्वितः २१ कर्णेशृंगंद्वितीयेच रत्नकूटंप्रनष्टकं एकासी
अंडिकंचैव कर्णेद्वितीयंचकेसरी २२ तथादशधाप्रतिष्ठेन्नं कर्णस्यपंचेनासिके तस्यार्द्धर
थकार्यंशेषंभद्रस्यविस्तरं २३ भागभागंचनिक्रांतं उद्गमानंअतःशृणु कर्णेशृंगद्वयंकार्यं
भद्रेशृंगमेकतः २४ मध्येगवाक्षप्रदातव्यं नंदनेसर्वकामदं भद्रेशृंगप्रदातव्यं नंदत्र्यालंम
नोहरं २५ रथेशृंगप्रदातव्यं उत्तशृंगंतथोपरि मंदिरंचमयाख्यातं शृंगस्यापंचविंशति २६
रथेशृंगप्रदातव्यं हेमकूटंसउच्यते मुषभद्रेशृंगमेकंच कैलासंसर्वकामदं २७ कर्णेनंदन
सर्वे रथेशृंगंपरित्यजेत् उत्तशृंगाष्टकर्तव्या पृथ्वीजंचउत्तमं २८ इंद्रनीलंचप्रासादं उत्तशृं
गास्मिद्वादश उत्तशृंगाचकर्तव्यं रथशृंगंप्रदापयेत् २९ महानीलंचविज्ञेयं सर्वमनोरथ
दायकं उत्तशृंगार्कसंयोगे भूधरंसुखवल्लभं ३० केसरीसर्वतोभद्र कर्णस्थानेप्रदापयेत् र
थेशृंगंचसंस्थाने विमानंचविचक्षणं ३१ उत्तशृंगाष्टकर्तव्या रथकूटोयथाविधि तथावैडूर्य
प्रस्यादृ गुरुशृंगाभिद्वादश ३२ भद्रेशृंगापरित्यज्य रथेशृंगंप्रदापयेत् पद्मरागंचनामास्ते
प्रासादंसर्वकामदं ३३ भद्रेशृंगप्रदातव्यं वज्रकोवज्रकर्माणि मुकुटोज्वलप्रासादं
पुरशृंगार्कभूषितं ३४ एतेत्रिसधाइतेप्राज्ञ आदिमध्यावसानके अष्टधादशधा

७८ षेत्रं केसरीपंचविंशति ३५ तथात्रिकंचज्ञात्वा त्रिविधंचविशेषतः शृंगमिश्रंतथालचकं म्यशृं
गोतिलकोत्तमं ३६ कर्णतिलप्रशस्तस्या रथंचरथकोत्तमा शृंगंमध्येगतंशृंगं ततमध्येशिखिरंभ
वेत् ३७ इतिमिश्रिकसर्वतोभद्रं कर्णतिलकंद्वितीयंच सर्वतोभद्रमिश्रकं कर्णतिलकमेकंच
श्रीवत्संचततोपरी ३८ मल्यातलंचकर्तव्यं उरुशृंगेविभूषितं केसरीमिश्रकंविद्या तिलकः
शृंगासमाकुलं ३९ तथास्वसर्वयत्राणां मिश्रकंसर्वकामदं केशराद्यंप्रयत्नेन यावत्केलासम
भवं ४० तथारेखाविचारेण शिखिराजभृणोत्तम पंचखंडादिषंडवृद्धि यावतमेकोनविंशति
४१ षंडवारिकाज्ञात्वा अंकवृद्धक्रमेणच महाममंप्रयत्नेन षोडशांशेमुखोदरे ४२
तथारेषाहृदयं गृत्तसत्रयसार्द्धगुणीकृतं ततोवृतभ्राम्ययेत् द्वेषांसर्वकामदा ४३ षट्स्येवि
मुच्यते रथेभद्रेचकर्णामिलं दशधात्तलेरेषाच द्विभागंकर्णविस्तरं ४४ रथसार्धविस्तारं भद्रा
र्द्धतप्रकीर्तितं निर्गमंहस्तमानेन अंगुलेकंविचक्षण ४५ वस्थसार्द्धविस्तारांगं स्कंधविस्तार
कंसमभिमलसारिकं जद्वोदयंचकर्तव्यं तदूर्द्धकलशोत्तमं ४६ स्कंधार्द्धेनविभागंच कर्णभाग
चतुर्भवेत् प्रतिकर्णत्रयंकार्यं निष्कांतंहस्तमानवं ४७ तथाएमलसारीच विस्तारंचअतःशृणु
सप्तभागनमध्येच चतुर्षष्टिविभाजिते ४८ द्वात्रिंशोर्द्धदयकार्यं [illegible] पंचोर्द्धं अंडकंमा
स्करंविद्या नवचंद्रविलोकनं ४९ षट्भागमलसारंच चतुर्दशकलशासनं स्तपसास्कंधसंस्था
ने अंडकेषु सर्वकामदेषु ५० षट्भिशेमलसारीच अजिताचइतिरंगाच सहितासागरातथा
कालिकाकुंडलीकाश्च स्वरूपात्रूपसुंदरी ५१ चित्राविचित्रा[illegible]चित्रास्या तालचिरातथा
निद्राचसर्वरीरेषा सर्वचंद्राचताराउलि ५३ मंजरीबधिरादुर्गा रिद्धिदासिधिदायका
धनदाराघवरदा मोक्षदापंचविंशति ५४ अजितावृतिमाकारा त्रिखंडाइतिरंगणी ७८
सहिताचतुखंडाच्च पंचखंडाचसागरा ५५ षट्खंडाभवेनाम उच्छ्रयायुक्तिसंकुला संयु
तस्कंधसंकीर्णं संक्षेपापंचविंशति ५६ त्रिखंडेकलशषट् चतुखंडेद्विकूस्तथा लिषि ७०

८

कलापंचखंडे नषट्खंडेकविंशति ५७ तथाममूयप्राकारेण तत्रभेदअंतशृणु त्रिखंडादिक
तपूर्वं अर्द्धभागंवतोधिकं ५८ त्रिखंडेनचतुसार्द्ध चतुखंडेमतिस्तथा चतुखंडद्विभागंस्य षट्सा
र्द्धत्रयोदश ५९ तथातेनप्रकारेण आदिमध्येवसानिकं तद्विचारप्रयत्नेन संक्षेपापंचविंशति
६० पुनस्तेनांविभक्तेन नम्नासृणितोरिखि जयविजयमेकैकं नामपूर्वाभिभाषितं ६१ जय
अजितादिपूर्वं रतिरंचितयस्मृतं जयसहितातृतीयाच चतुर्थाविजयसागर ६२ जयोविजय
प्रकारेच संक्षेया।पंचविंशति अन्योन्यकथितांश्चेव शुकनाशंअतशृणु ६३ छद्योर्द्धस्कंधपर्यं
तं विभक्तेत्वेकविंशति नंदत्रयोदशोमध्ये प्रमाणंपंचधामतं ६४ कुमारंकविलधंच निर्घंटो
द्विविंशभ्र चंद्रघोषंचविज्ञेयं शुकनाशंपंचधामतं ६५ षणमेकंकुमारंच त्रिषुणंकविलद्वकं
पंचसप्तनवंचेव द्विषणंतंपकालिकं ६६ विमानोकारवर्तते कक्षेमूर्तंचनासिकं अष्टधादशधा
चैव शिष्टकर्णविसेयेत ६७ नष्टकर्णयदामध्ये नवादिपारिभ्रमिको सेवेसिहयमायुक्ता कलशा
ग्रविशेषतः ६८ तथाभद्रविचारेण शृंगस्यात्रयमेवच द्वयशृंगविचारेण शृंगमेकंविचक्ष
णः ६९ विनाशिकंपंचकंप्रोक्तं समानंअतश्शृणु अष्टमांशेनवांशेन दशमांशेविशेषतः
७० कृत्वात्रिनाशिकंरिक्तं चतुर्थेसेवनिर्गमं शृंगमेकंतदूर्द्धंच द्वयोमानंअतश्शृणु ७१
द्वात्रिंशपदंकृत्वा द्विभागंमूलनासिकं त्रिभागंद्वितीयंप्रोक्तं तृतीयंयुगसंख्यया ७२ शेष
भद्रविस्तारं निष्क्रांतंचतदार्द्धता उरुशृंगंद्वितीयंकार्यं रथकामध्यपादये ७३ तथासर्वप्र
माणंच द्विभागंचअतश्शृणु द्वयालिसितभागानि द्विभागमूलनासिकं ७४ त्रिभागं
द्वितीयंचैव तृतीयंद्वयमेवच चतुर्थंत्रिभागानि पंचमंचतुमेवच ७५ शेषंभद्रस्यवि
स्तारं निर्गमंचतदार्द्धतः सिध्यतेसप्तनास्यानि चतुरस्राणिसप्तके ७६ कूटंचअथ
सार्धंच रथिकामध्यसंभवं चतुकूटसमायुक्तं उरुशृंगतदूर्धकं ७७ तथावा

७८ लंजरंप्राज्ञ भागभेदं विशेषतः द्वाविंशपदं कार्यं चातुष्किमूलनासिकं ७८ प्रतिरथं त्रयो
भागं द्वितीयं द्वयमेव च द्विभागं च भद्रार्धं भागभागं च निर्गमं ७९ स्कंधं द्वं त्रयो दशांशोसांगे
कर्तव्यं च प्रयत्नेतः त्रिधा कर्णविभक्तं च द्विभागं उर्ध्वकर्णकं ८० तथा प्रभेदेन शेषं भद्र
भागं प्रकीर्तितं बालंजरेच रजनीकं रेखाभेदं स्थयं तथा ८१ स्तनखंडे कलशस्तत्र अमलसारं त
तो भवेत् ग्रीवांडकं भवेत्तत्र तपसानां विशेषतः ८२ भारश्च सकलं कृत्वा पद्मोमलसंयुतं
शृंगकूटविमानं च भूमिकासर्वकामदा ८३ तथा कलसस्य यत्नं द्रव्यं प्रासादस्याष्टमांशकं
विस्तारं च कृते प्राज्ञ उदयं च सार्द्धगुणं भवेत् ८४ ततो नवधाविभक्तं च पडथी भागमेव च
अंडकं च त्रयो भागं ग्रीवाया भागमेव च ८५ पानडी च कर्णीयुक्तं भागमेकं च कारयेत् कल
शाग्रे त्रयो भागं भागेकं मरलकोपरि ८६ ग्रीवा क्षोभवेत्प्राज्ञ द्विभागं च विचक्षणे पनडीपन
अं चैव चतुर्भागानि मध्यते ८७ इति श्रीविश्वकर्माकृते वृक्षार्णवे शताग्रे द्वात्रिंशमोध्यायः
३० नारदसंहिताश्चैव स्तानदिव्यासपृच्छति नारदोवाच शृणुतादय दः प्रश्नो मेकाग्रे
ममसंनिधौ नवग्रहादिकदेवा प्रसादकीदृशो भवेत् १ कोदिशिके ग्रहाणां वर्णा मोनाकार
मेव च कथितं मम सांप्रत्ये निर्दोषायत्र मुत्तमं २ श्रीविश्वकर्मा उवाच यत्त्वया पृच्छती पुत्री
दाश्रमं च ग्रहोत्तमा प्रथमं च भास्करस्थानं शृणु तेकाग्रनंदिके क्षितिः क्षेत्रं चतुरस्रं च
दिशिमेकं विधीयते ब्रह्मांडसदृशं यत्र देवतासर्वपूरिता ४ ब्रह्मविष्णुश्च शंकरायैस वे
ब्रह्मांडसादृशं विद्याधरादिय था देवा पुनर्षेत्रादिपालको ५ तत्सर्वे रेकरश्चित्राच उक्ता ब्रह्मांड ७८
संनिधौ यदातेजाधिपतेश्च पुनर्मासाशगामिनो ६ नवग्रहाविना पुत्री दिशि ब्रह्मांड
मेव च देव्यायद्वासर्वे योगिन्यगर्भसंभवा ७ प्रगताश्चयोगिनीनां योगिन्या गुह्यमे
व च देवीनां समस्तोस्तेषु दिशि ब्रह्मांडसंकुलं खंतालाद्याय था देवा पत्रगापक्षमेव च

१

जिनाश्च जिनिउक्ताच तां ब्रह्मांडसंकुलं ९ दशावतारसहिताश्च भेदमूर्तिरनेकदा रामत्र
ययुतासर्वा दिशि ब्रह्मांडतोत्तम १० देवतास्थानमानं च शृणु ऐकाग्रनंदिके सीतासारसंगे
न मेरं च पूर्वतो दिशि ११ तत्रैव स्यागते भानु प्रासादं दक्षिणीमुखं तदाचलयति यदा सूर्य भ्रमं
तं च प्रदक्षिणे १२ पुनः शृंगता सूर्य हिमाच लायसागर तथा पूज्ये पतंगाश्च नैकस्यां भिमुखा
स्मृता १३ येप्यभुवनं यत्र आगतार्णवि संगमे भरतक्षेत्रश्च संस्थाने पश्चिमाभिमुखाशु
भौ १४ हिमश्च सागमस्थाने कितेनक्षेत्रे भास्करा प्रासादं वृत्तिमाकारं कृत्वाव यमुखेशुभ
१५ तस्यांग्रेच प्रदातव्या सातोदासागरं यथा यथावृत्त क्षेत्रं च संस्थाप्य दासास्वयोत्तरामुख
शं १६ क्लिष्टमाग्रे प्रदातव्या वरः सागरसंगमे १७ कर्तव्या भास्करस्थानं दिशिमीसानागोचरे
तत्रैव भास्कर वंद्या प्रासादं पूर्वसन्मुखे तथा ऐरावतस्से
ऐरावती यद्यपस्तत्रे ईषकोर्यत्र सागर शिखरशागरं यत्र प्रासादस्य तत्सन्मुखे १९ अष्टौ दशोवाथ शोडशों शौ क्षे
त्रे पूर्वोत्तरमध्यते प्रासादस्य कथितापुत्री विवक्षां च अतः शृणु २० पूर्व आगता सूर्य मुखं दक्ष
तयुद्दं यदा भवेत् प्रासादं नैऋत्यसादृशं २१ दक्षिणं च य अर्द्धं मुखपश्चिमतो दि
णमेसदा अग्नेच याभागप्रासाद वाय्यस्तद्वारसन्मुखे २२ पश्चिमे च पतंगानि प्रासादस्योत्तरामुख ईशा
शं नैऋत्यं च यदा पुत्री इशान्यायदारविः तथा द्वत मयं
न्यमुखे कृत्वा यदा वायव्ये समागतः २३ यत्तमुखं च प्रासादं दिशिश्च कथितं यत्र
चतुरस्रं च भवेदस्तु यथा दिशं भवक्ष्यते महातेजं सुतेजाख्य प्रासादं
वास्तु कर्तव्यं वनसंज्ञायः २४ भास्करं च जयं प्रोक्तं विजयं किरणोद्भवं
प्रासादं च अतः शृणु २५ चतुरश्रीकृते क्षेत्रे अष्टधा प्रतिभाजिते इच्छते यद्वषेन तस्यार्द्धं कर्णवि
षद्विधो नमं २६ चतुरश्री कृते क्षेत्रे अष्टधा प्रतिभाजिते इच्छते यद्व षेन तस्यार्द्धं कर्ण वि
स्तरं २७ कर्णस्यार्द्धं प्रकर्तव्यं निर्गमं भद्रमेव च निभ्रमसभ्रमाकारं शिखरश्च कलशोद्
वं २८ कर्णश्च रुचकाद्यं च चतुर्दक्षविचस्थिता भद्रेगवाक्षमाकारं सवर्णस्तत्रसोभि

२

८० ता २९ विमानं तिलकैर्युक्तं पुष्पैर्युक्तं विशेषतः कर्णे कर्णे कृते तिलकं अंडकं कंचमूर्द्धतः ३० इ
ती श्री भास्कर प्रासाद भाग ८ अंडक १००० अंडक १ भास्कर २ श्च संस्थाने कर्तव्याच जयानिचे
यदा तिलक रूलदा पुष्पसिद्धांत यमयंययो ३१ कृते पुष्प विमानंच शतमेक विराजिते पुष्पवाद्य
कसिहानी पुण्यं तस्याधिकं भवेत् ३२ स्कंधे पंच शाखाच्च प्रतिशाखा रनेकधा तादृशा वास्तु सं
योगे अंगकृत्वा मुने कदा ३३ इति विजय प्रासाद भाग ८ पुष्प विमान १०० अंडक १ चतुरश्री
कृत क्षेत्रे ततो वृत्तं च भ्रामिते द्वात्रिंश पदं कार्यं परिधौ नात्र संशय ३४ भाग भाग दलं कार्यं भ
द्रं कुर्यात् तत्समं अष्ट भद्रं विजानीयात् चतुर्विंश दलानिच ३५ चतुरस्रं च सर्वांगं भद्रं पुष्पं तु।
मेवच चतुरश्रं वर्तयेत् प्राज्ञ गर्भगृहं च विशेषत ३६ भद्रे वाच पुनः भद्रे गर्भसूत्रे विशेषतः
अष्टांशं पालयेत्तत्र दलं तत्र जायते ३७ अर्ध भद्र गते मध्ये अर्द्धवात्ये प्रशस्यते तत्र साद्द
ये प्राज्ञ आम्रतक्ष निरंतरं ३८ निक्रम केत्र म संयुक्ता रष्टांशो वसर्वतः नोपि कुर्यात्सष्टांशो तत्र
दोषमहद्भयं ३९ श्रीवत्स शिखरंच छिशाश्च तावार्कमंडले यावन्तू किरणसंख्याच शृंगतत्र
प्रशस्यते ४० सर्वतो भद्र सर्वांगे सपरेवा विशेषत उपरेस्त्वष्ट्रिजन्ताला शृंगंच नष्ट कलिका
४१ सर्वते सर्वतो भद्र वर्द्धमाने स्वस्थे वच सरलंचसर्वांगे शृंगसंख्याच पूजिते ४२ कर्णत्रय
विशेषेण प्रत्याग परमं शुभं उरुशृंग त्रयं कार्यं स्तपासर तरोद्भवं ४३ पदे रवद्या ताश्र कर्मशृं
गानि कारयेत् शेषाच्च क्रियते मूर्द्द सरतरं सर्वतो भवेत् ४४ इत्येवं शाखरस्या वृत्त क्षेत्रं च भा
स्करे कर्ण कर्ण भवेच्छृंग सहस्राण्डकमुत्तमा ४५ कलिस्थाने विमानेन कर्तव्यं माडमुत्त
मं शुक नामडिकाद्यानि सिद्धिश्च विकृता मुखैः ४६ किरणोद्भव प्रासादं अष्टत्सिहेवि।
हितं सासता भास्करे भ्योर्द्ध न महाबाण धराकृते ४७ पश्चिमाभिमुखा यत्र बाणा ८०

८

पतिमुनेकधा यथा विकृतायोति कर्तकारात्तथापिवा ४८ सर्वेषामेव यंत्राणां ग्रहरं दलसं
त्रिधा पल्लवं दलसमं कार्यं छादिका निर्गमे शुभं ४९ किरणोद्भव संस्थाने महातेजो महोदर ५०
चतुर्विंश विमानोक्तं पुष्पंशाला महातले महातेजं विजानीयात् प्रासादं पुण्य हेतवे ५१ सतेजं ति
लकैर्युक्तं चतुर्विंशति मिश्रकं शृंग संख्या भवेत्तंच सतेजं नाम सो भवेत् ५२ इति षट् प्रासादे
द्वोक्ता दत्वा जागेश्वरे शिवे महामहोत्सवांते अलिकर्थे विशेषतः ५३ पूर्वोत्तर मध्येच सिधि
रसागरं यदि तदार्कं भवनं वृत्त प्रासादं अग्निसमुखं ५४ तथात्तु पश्च संस्थानं शृणु पुत्री विशे
षत प्रथमं मेघरूपंच नगस्यं भद्रिकर्णिके ५५ प्रदक्षणा भवेत्सर्वं नवभागवधस्थितं शिष्टि
सूत्रे प्रदातव्या शेषं नारादि संभव ५६ पुनः पीठोत्तरे रचिता सस्या उक्तानि सर्वतः जंघादि गु
पालरूपाश्वे किरणमेकेकधारिता ५७ द्विकुपाली रथे दद्यात् स्वाभायुधं किर्णसंयुतं यहरूपं
करेरक्षे किरणं धायते शुभं ५८ शेषायुध समायुक्तं सोमाद्यंच प्रदक्षणे वारिभागे मुनिंद्राश्च
कर्तव्या सर्वतो दिशि ५९ पुनर्जंघा महायोधे चापबाण संधिते शब्दवेधा मुनेकाश्च पुनर्जं
घनिरंतरे ६० अथ ऊर्द्ध्व यदा पुत्री भद्रस्थाने विषत प्रादक्षिण पृष्टे भद्रे धातादं प्रवर्तत्ते
६१ प्रादक्षणा पयदा श्रंते गर्भक्षेत्रे वनर्दने चंद्रार्क पितामहाग्न तदास्थाने निवेशयेत् ६२
कूणाचार्योदिभवेयत्र बाणाधिपति देवता उपर्युपरि स्थाप्य सर्वभद्रे बधामता ६३ अन्ये
षां यत्र यत्राणा येके कुर्यात् भास्करे वृत्तकर्णद्वयो जंघा कर्तव्या सर्वकामदा ६४ द्वयाजं
घा विना यत्र दिसि वंद्या प्रभास्करा संतानं नोपि वर्धंति कर्तकारापकाबभो ६५ संभ्रा
ममध्ये संस्थाने यदा रूपं श्रुत [illegible]ः शृणु हरिहर पितामहाश्च वामभागे प्रदक्षणे ६६
तस्याग्रे ग्रहं दद्यात् सोमाद्यंच प्रदक्षणे समुखश्च त्रिमूर्तिश्च हरणपगर्भोचि भवेत् ६७

८२

चंद्रार्कौ वहणं च पूषाकेश्च विशेषतः भद्रस्थाने प्रदातव्या भद्रत्रखाने प्रदक्षिणे ६८ सरस्वती
यदा गंगा लक्ष्मी उमयोश्च तथैव च भद्रे मूर्तिं नभूपक्षे कर्तव्यात् सर्वकामदा ६९ पुनः प्रासाद शिवदत्त
पृथिवी स्थिरतो भवा कृते ऐरावते क्षेत्रे पूर्वादि मुखं शुभं ७० महानदी भवेत् सीता यदा सागरसं
मे तस्थाने भास्करी अर्चा प्रासादं दक्षिणामुखं ७१ भरतक्षेत्रे मध्ये च प्रासादं पुण्यहेतवे
चतुरस्रं वृत्ताकारं प्रासादं पश्चिमामुखं ७२ सीतोदा नदितीरे प्रासादं उत्तरामुखं रुद्रभास्कर
संस्थाने महापुण्यप्रदायकं ७३ ऐरावते अष्टधा क्षेत्रे शीतांकटे च षोडश भरथे च तु विंशश्च
द्वात्रिंशोत्तरामुखे ७४ रविकिरणचतुर्भिकं शृंगमादाय कृषणं द्विशतं सार्धयुक्तं च अष्टधा
शिखरोत्तमं ७५ पुनः पंचशतं शृंगं क्षेत्रे षोडशोत्तरे सार्धसप्तशतं चैव शिखं तं पश्चिमामुखं ७६
सहस्रांडकोपैते श्वरविकिरणसमो भवेत् किरणाक्षोत्तदानाम सीतोदासंगमो सदा ७७ तत्रैवा
यने पुत्री भरथाद्यं प्रदक्षिणे अग्निकोणादि देवाश्च गुणोदशं अतः शृणु ७८ क्रमेणैव स्वको
णे च वायव्ये शक्तिमुत्तमुत्तम ईशाने दद्यात् ईश्वरं दद्यात् संचयनं च सिद्धिते ७९ संक्रमे यदि
प्रासादे देवताश्च अतः शृणु दत्वा प्रासाद दक्षिणे स्थाने सोमादिग्रहवामके ८० कर्णादिदक्ष
णेभागे रविरूपं प्रदक्षिणे चंद्रकं पितामहाश्च भद्रे सीघ्रसमागतः ८१ नवायतनं यदि प्रोक्तं
दक्षिणे ब्रह्मस्त्रीभिः त्रयोदशाशो रविकुर्यात् रेवंतो पृष्टिसंगमे ८२ तृतीयं ब्रह्मसूत्रं च धर्मराज
प्रदीयते त्रिमूर्तहिरण्यगर्भं च कवल्या दक्षवामके ८३ तथा आयतने धाम ज्येष्ठभौनां तु क
न्यसां ज्येष्ठकनिष्ठयोर्मध्ये प्रमाणं च उत्तमं ८४ प्रासादे द्विगुणं कृत्वा त्रिगुणं तत्तमा भवेत्
चतुर्गुणी युक्तिमसा हसा भवे पुण्यवर्धिनी विशति त्रिधा भाति क्षेत्रे निस्तारे च विशेषते ष
भागयत्तं कार्यं भद्रार्धयुगं भवेत् ८६ तस्य पंचदशभागानि उभयोर्वाम दक्षिणे निर्कां
तेभाग भागं च कर्तव्यं च विचक्षण ८७ प्रासादे यभव सीटं कपोतात्यं तकं थरं तस्य मा ८१

ने गृहीत्वा च पंडं सार्धगुणं भवेत् ८८ तस्योर्ध्वे कर्तव्यं वेदिकासनपट्टक उन्नतं मूलमानेन
गर्भोदिनवथा पुन ८९ राजसेनं भवेत् भागं वेदिकाद्विभागतः कक्षासन भवेत् सार्धं सर्वसौभार
लंकृते ९० तद्दशान्म ध्यसंस्थाने पंचायनततो भवेत् सप्तायतनं च कर्तव्यं नवायतनं च विशे
षतः ९१ वरंचैकादशायतनं वर्जयत्वा त्रयोदश दशपंचायतने श्रेष्ठं पुनस्सप्तादशोत्तमं ९२
एतत्प्रासादकथितं च क्रमतं च प्रदक्षिणे मूलप्रासाद मूर्धे च कन्यसं कन्यसात्मकं ९३ ज्येष्ठपदे
नमानं तं गर्भकुर्यात् दक्षिणे कंदस्थाने यदा अंगं अंगे कं वर्जितायते ९४ पुनः पुनस्तु यतेवा
कं देवतात्तवसंनिधौ भास्करे नयको दाउक्ता ते देवासु मुखदः यका ९५ गणेशं अग्निकोणं च
नैऋत्ये ति क्रमं चंडिका स्वाप्यथ त्वाव्ये ईशाने रुद्रमेव च ९६ सर्वालंकारसंयुक्तं पंचायतनं सि
ध्यते पुनः भद्रस्य संस्थाने जेउक्ता दिशि मा श्रिता ९७ चंद्रार्क पितामहश्च दक्षिणे च विभूषि
ता सर्वाभरण संयुक्ता पश्चमे वरुण भास्कर ९८ तस्याग्र प्रकर्तव्या पूषा सा उत्तरमुखा प्रोसा
दां निक्रमे तं च संक्रमं च अतः शृणु ९९ प्रासाद दक्षिणे यदा वामे अलयात् सर्वकामदा सोमादि
ग्रहा सर्वे क्रमतं च प्रदक्षिणे १०० स्तदाकवल्यां स्थापये मूर्तीनां अतः शृणु हरिहरत्रयो देवी
दक्षिणी दीयते शुभा १ वामे हरेत पगर्भेश सप्तयस्य अतः श्रेणु गणेशाग्रे प्रदीयतु उमामाहे
श्वरं तथा २ उमासन्मुखं दद्यात् हनुमंतो महाबले नवायत्ने यक्षमूर्ति शृणु पुत्री विशेषतः
३ रुद्रभास्कर दक्षे शृंगार्कं तथोत्तरे प्रासादस्य बभ्रुपक्षे उभयोर्वाम दक्षिणे ४ एकादशा
यतनं वक्ष्ये आदित्या पृष्टतो दिशं लक्ष्मीहरिसंयुक्तं हनुमंतस्य दक्षिणे ५ त्रिपुरे के शाश्वताय
त्र स्वयं कुर्यान्महीतले शुभदा तत्र संस्थाने सर्वकल्याणकारकं ६ अस्यास्थाने कृते सूर्य क्षे
त्रसंकरः भेदमूर्तिं प्रदातव्या रामत्रयं च भास्करे ७ स्वयं सूर्य भवेत् विष्णु शिवश्चेव वि
शेषता पितामहस्वयं ज्ञात्वा नारदं च कदाचन ८ श्रीनारद उवाच यत्त्वयकथितं तात कुत्र
स्थाने च शाश्वत यत्र कत्रास्थिता देवा कथितं मम सांप्रति ९ विश्वकर्मा उवाच शाश्व

ने
८२ तं च यदा वनखा शृणुत्वेकाग्रतो मुनिम अत्राग्रं यदा कथितं शाश्वते मेरुमंडले १० सुभद्रं स
र्वक्षेत्राणि स्वल्पाकारं प्रवर्तते बहुकारश्च शृणुपुत्री शाश्वतं सूर्यमंडले ११ महालेन महतेन या
संपुता सर्वदेवता प्रासादं तलकर्णं च भ्रमं तपश्चिमामुखं १२ भास्करादिग्रहा सर्वे चामुंडा शक्ति
सर्वता भेदमूर्तिश्च सर्वाणि द्विभुश्च द्वादशोत्तम १३ रुद्रश्चैकादशोक्ताच षड्विधा स्वपिता
महा नारदादि ऋषी सर्वे इंद्राचैव चतुर्दश १४ गणेशर विष्णुश्च यथालिंग सुनेकिधा जगति
स्थाने स्तथापीठे मेघ तु पाणि सर्वतः १५ शिघरे रूपमालाच शृणुपुत्री विशेषत नक्षत्रास
र्वरूपश्चा ताराल पंचविंशितं १६ मंडपा मध्यसंस्थाने अंगनादेवता हता रागभाषानिसर्वा
णि नाटका विविधानिच १७ नारदोवाच कथिताचदेवतासर्वे स्थानकं नोपिकथ्यते यद्यस्थ
ने जयंति स्वं कथितं मम सांप्रति १८ श्री विश्वकर्मा उवाच देवतास्थानमानंच शृणुत्वेकाग्र
तो मुनि अथातसंप्रवक्ष्यामि पीठप्रासादमानतः १९ जाड्य कुंभं च विज्ञेय ससभागं तु उ
यं १ कर्णभागद्वयं कार्यं शेषं स्कंद मुत्तमं चतुर्दश्य कनलीच षड्भाग कर्णकं भवेत् २ गजपी
ठ द्वादशभागं मध्ये श्रष्ट गलेस्तथा अश्वाश्व ग्रहसत्ययाम् मध्येषट श्वाश्विनो स्तथा वसुभि
भाग नरपीठंचे मध्ये पंचमालरः उदयं पंचधा उक्तं द्वयभागं पीठ निर्गम ४ भागमेकं कपोताली
मध्येचांतरपत्रकं विपिना भागमेकेन तदर्ह स्कंधमुत्तमं ५ खुरकं पीठ मध्येच द्विभागंच
समुछ्रयं कुंभकं सार्द्ध विज्ञेयं कलसं भागसंयुतं ६ त्रिभागं स्थिता जंघा विभक्तं षटमेवच
द्वौ द्वौ पत्रं कज्ञेयं चैकैकबंधकसच ७ उद्गमं च प्रयत्नेन सपादं सर्वकामदं विभक्तं स भ
भागानि छाद्यके पदमेवच ८ शृंगं च चतुः सार्द्धं ग्रासपट्टी च सार्द्धतः भरणी भागमेकेन वि
भक्तं च त्रिधा पुनः ९ कनकं भागमेकेन भागैकं स्कंध मुत्तमं कर्णं चैव पदमात्रेण सिंहांते
न द्रसिका १० शिरावटीलदप्रोक्ता द्विधा भुक्तं तकारयेत् कर्णिचार्द्ध भागानि शेषं षट्प्र
कीर्तितं ११ कपोताली पदमात्रेण त्रिधा भक्तं तु कारयेत् कर्णिचार्द्ध भागानि शेषं षट् ८२

८
प्रकीर्तितं ११२ षट्चाद्यं सपादोनि विदविज्ञान भाजिते पदमेकं तु कर्तव्य कपोताली च मध्य
तर १३ मरणिको द्वे भवेत् मंची पादमेकं च पूर्वतः जंघोछेधदकर्तव्यं कलपूर्वेन भाजिते १४ उद्गमं पद
मेकेन विचारं पूर्वतोपरि १५ भरणिकाच कपोताली मात्रा वै पूर्वसंज्ञक १५ छुटछाद्ये च कर्तव्यं पूर्वमा
नेन कारणे छाद्योर्द्ध न भवेन्मंची तु नक्रमेण पृथुक् १६ षड्विधं छुटछाद्यं च जंघा वै द्वादशोत्तम
त्रिषु स्थानी शिरापट्टी शेषं कुर्यात् पुनः पुनः १७ एकभूम्यादियोभूमी यावत् द्वादशभूमिकं
अनुक्रमेणो कर्तव्यं न्यूनं वदशामांसकं १८ विद्यतंगारकश्चैव सपक्षस्य मनोहरे नंदावर्तं प्रयं
गश्च प्रहारो नवषड्विधं १९ उपर्युछाद्यकं युक्तं सपक्षं सर्वकामदं मनोहरं पल्लवे युक्तं नंदावर्त
विपठिका २० त्रिपदं वाथ कर्तव्यं प्रयंगं सर्वकामदं स्वप्रसादहे स्वर्थ अन्यजासो परिस्थिते
२१ षड्चाद्यं मधुसूत्रेन रपीठस्य मध्यतं शृंगं चतुष्कं तथा लिल्लकं मिश्रकं च पुनः पुनः २२
उदयास्त प्रवेशेन प्राचंद्रार्कमेदिनी सत्यादो प्रासादो कर्तव्या सर्वकामदा २३ माहेश्वरश्च
विष्णुश्च ब्रह्मणश्च यदा भवेत् अन्येषां सर्वदेवानां सत्यादि सर्वकामदं २४ चतुरश्रीकृते
क्षेत्रे अष्टाविंशति भाजिते कर्णं तु सार्द्ध चत्वारि प्रतिकर्णं तथैवच २५ निवसंति मयं सलिलां
तर संयुतं चंद्रार्धपंच भिः प्रोक्तं निर्क्रांतं च चतुःपदं २६ कर्णकर्म क्षयं कार्यं प्रतिकर्णं त
थैवच शृंगमिश्रं ततः कार्यं स्वरूपालक्षणान्वितं २७ भद्रे वा मुख भद्रं च शृंगत्रयं ततोप
रि प्रत्यंगाट कर्तव्या उरुशृंगा वामदक्षिणे २८ पीठोपपीट जंघाच मेखला षुटचाद्यकं स
कर्णे छिता दोषा सार्द्ध वापि दिदक्षणः २९ इति बुधप्रासाद भाग २८ अंक ५७ तद्रूपे
तत्प्रमाणं च प्रहारं च सपक्षतं पंच भूमुल रेखा च कुर्याद्विमान संकुलं ३० भद्रे ज्येष्ठकनि
ष्ठे कद्रांक भूषितं मध्ये शृंगाच प्रत्यांगे चतुर्भूम्यश्चैको त्तमा ३१ इति बुध संकाश प्रा
साद भाग २८ अंक १२१ परा तलछंद मूर्द्धवै प्रहारं च मनोहरं मध्ये शृंगे च प्रत्यां
८

८३

गेष्वष्टके श्रृंगरलत मे ३२ इति कुंभक प्रासाद भाग २८ अंडिक १८५ श्रीकुंभकसंस्थाने वि
छिन्नशेखरोत्तम वसुभू मूलरेखाच प्रतिरेखास्तथैवच ३३ श्रृंगं रुचके युक्तं कर्तव्यं सर्वकाम
दं इलिकातोरणः चाद्ये भूषणाद्यपि दृश्यते ३४ इति शालिसंभर प्रासाद भाग २८ अंडिक २४९
शिवसंभरसंस्थाने कर्तव्या शिवसंभर मूलरेखा प्रतिरेखा चलके मिश्रयोत्तमं ३५ शालिसं
भरसंस्थानो कर्तव्या ब्रह्मसंभर सर्वतोभद्रकर्णेषु प्रतिकर्णे च केसरी ३६ इति शिवसंभर
प्रासाद भाग २८ अंडिके ३१७ प्रासादषट् विज्ञेया पूजिता ब्राह्मणोत्तमा इति संकुलतेय
स्तु ब्रह्मलोकं स गच्छति ३७ इति ब्रह्मसंभर प्रासाद भाग २८ अंडिक ३७७ चतुरश्रीकृते क्षेत्रे
वसुयुग्मे विभाजिते कर्णभाग चतुष्कार्यं उदकांतर भूषित नंदीभागद्वयं वत्स निर्गमे सह संयु
तं प्रतिकर्णे चतुर्भागं निवेशेन प्रकीर्तितं २ भद्रनंदी भागानि परिहीप्रकीर्तिता भद्रार्द्ध सप्तभि
र्भागे विशेषेन प्रकीर्तितं ३ भागं तद्वानि निर्गमं २ सर्वांग परिणाहं च भागत्रिसोत्तरशतं तेन
भेदं च मारख्यातं शिखरं कथितं पुनः ४ नंदावर्तप्रहारं च शिखरं सर्वकामदं मध्यश्रृंगद्वयं कु
र्यात् केसरिश्च तथैवच ५ कर्णकं मंत्रयं कार्यं स्वरूपलक्षणान्वितं प्रतिकर्णे च कर्तव्यं तिल
केकं मध्यश्रकद्वयं ६ रथकर्णे दलभद्रे च सिंहविक्रांतेर्मुखं नंदीकाच कर्तव्या रुचिका सर्वकाम
दा ७ इलिकातोरणैर्युक्तं भद्रं गवाक्षभूषितं तद्रूपी चतुरस्त्रीणी प्रत्यंगावामदक्षणे ८ त्रि
गुणोछेद कर्तव्यं द्विगुणं वा विचक्षण सर्वलक्षणसंयुक्तं शिखरं विमानोद्भवेः ९ इति रविसं
भर प्रासाद भाग २८ अंडिक ६५ रविसंभरप्रासाद संस्थाने कारयेत् गुणसंभर वसुभू
मूलरेखाच प्रतिरेखा तथैवच १० वसुश्रृंगे च कर्तव्यं तिलकाचैकांतरः प्रति ध्वजदंड
प्रकर्तव्यं पताका मर्करीयुतं ११ इति गुणसंभरः प्रासाद भाग २८ अंडिक १२९ गुण
संभरसंस्थाने रुद्रसंभर शिवप्रिय प्रतिरेखा उरुश्रृंगं वसुश्रृंग समाकुलं १२ रुद्र

८५

संभर प्रासादे यः करोति शिवालयं स याति परमं स्थानं शिवलोकैः स गच्छति १३ इति रु
द्रसंभर प्रासाद भाग २८ अंडिक १३ पुरातलछंद मूर्द्धे तद्रूपं तत्प्रमाणकं तिलकं त्रिएकविंश
त्यं कर्णे कुर्यात् क्रमत्रयं १४ प्रतिकर्णे कर्तव्यं तिलकं चत्रयविंशति नंदिका च प्रयत्नेन रुचकं
वै सर्वकामदं १५ इलिकातोरणैर्युक्तं भद्रं गवाक्षभूषितं षड्भूमुलरेखाच पंचभिः प्रतिरे
खयो १६ सप्ताविंशतिश्रृंगानि उरुश्रृंगे प्रकीर्तिता प्रत्यांगे यदि प्रत्यांगा श्रृंगं कुर्यात् त्रयो
दश १७ सप्ताविंशतिश्रृंगानि उरुश्रृंगे प्रकीर्तिता प्रत्यांगा यदि प्रत्यांगा श्रृंगं कुर्यात् सर्व
बंधे च प्रकर्तव्या पद्मो सल्ल विभूषितं १८ पुष्पमाला प्रकर्तव्या बकुलिका सर्वतिष्ठति
इंद्रिसं कुलतेयस्तु विष्णुलोके स गच्छति १९ इति विश्वरूप प्रासादः भाग २८ अंडिक २५१
विश्वरूपाश्व संस्थाने विश्वंभर क्रतेपुनः मूलरेखा प्रतिरेखाच श्रृंगं दद्यात् षोडश २० च
तुर्विंशति प्रत्यांगे उरुश्रृंगे तथैवच सर्वलक्षणसंयुक्ते सवालंकारसोभिते २१ इति विश्वं
भर प्रासाद भाग २८ अंडिक ३२१ विश्वंभरसंस्थाने हरिसंभ हरिप्रियः चतुर्विंश मूलरे
खा श्रृंगं दद्याद्विचक्षणः २२ चतुर्विंशति प्रत्यांगेश्वेष्ट उरुश्रृंगेश्च व्योमवेदैव श्रृंगयो पं
चाशीति शतं कार्यं हरिसंभर उच्यते २३ माहेश्वरश्च विष्णोश्च ब्राह्मणश्च यदा भ
वेत् प्रासाद द्वादशोकाच कर्तव्या सर्वकामदा २४ इति श्री विश्वकर्मा कृते क्षीरार्णवे नारद
पृछते शल्यादि प्रासाद पद प्रथमोन्मतः ३१ अथ सूत्रसंप्रारंभः श्रीविश्वकर्मउवा ल
च सामंधारात तोदृक्ष्ये प्रासादार्पतोपमा सिषरैर्विविधाकारैरनेकांडकभूषिता १ आद्य
पंचाउक्तो ज्ञेय केसरीनाम नामतः तावतं चतुरोत्तरधी यावदेकोत्तरं सत २ केसरी सर्वतो
भद्र नंदनं नंदिसालक नंदिसो मंदिरश्चैव श्रीवृक्षो अमृतो भवा ३ हेमवान हेमकूट

८४ श्री कैलासपृथिवीजय इंद्रनीलो महानील भूधरो रत्नकूटक ४ वैडूर्यपद्मरागश्च वज्र
को मुकुटोज्वल ऐरावतो राजहंसश्च गरुडो वृषभस्तथा ५ मेरुप्रासादराजोना देवानामलयो सही
संयोगेनं च साधारा कथयामी यथार्थतः ६ दसहस्ता दधोनास्ती प्रासादो भ्रमसंयुत षडवीसती
नरं धारा षडुलिंगे चतुरोदय ७ पंचवीसती साध परा प्रयुक्ता वास्तु वेदिभी अत्र महीनास्त्रय
अर्ध सुपास्वं नरंगगरा ८ चतुरश्रीकृते क्षेत्रे अष्टधा प्रविभाजते पदं चत्वारिसंयुक्तं ग्र
भकोष्टं विधायते ९ कर्णभागद्वयं कार्यं सालान्वेव चतुस्पदा कोणस्त्रंगमेकैकं केसरी स
र्वकामद १० चतुरश्रीकृते क्षेत्रे दसधा प्रतिभाजिते कर्णश्चैव तमायुक्त भागद्वयं स
मन्वितं ११ भागत्रयं च विज्ञेयं रथीका तत्र कारयेत् प्रतिरथस्य कर्तव्यं विस्तारं सार्ध
भागिकं १२ निर्गमं भागमेकेन प्रतीकर्णं तु कारयेत् रथीका तत्र श्रीक्रांता हस्तांगुल
मानयो १३ कलांतरकं कार्यं क्षोभक भद्रमानत पंचभागयुतं गर्भं शोभा भीति प्रकीर्ति
ता १४ कोणस्त्रंगद्वयं कार्यं भद्रस्त्रंग विवर्जयेत् सर्वतोभद्र अक्षाता प्रासाद सुरभू
षणं १५ तद्रूपे तत्प्रमाणे च भद्रे स्त्रंगं च दापयेत् नंदनस्तु विज्ञेय शुसलोलक्षणान्वि
तं १६ चतुरश्रीकृते क्षेत्रे द्वादससविभाजिते कोणभागद्वयं कार्यं प्रतीकर्णं तथैव च १७
भागमेकेन निक्रांता सालान्वेव चतुष्पदा विस्तारेणं समाख्याता निर्गमं प्रतिकर्णयो १८
सलीलांतरकं कार्यं पदार्धेन समन्वितं तथा षट्भाग विस्तारणं गर्भकोष्टं विधीयते
१९ तद्रूपे तत्प्रमाणे च कोणस्त्रंगद्वयं समन्वितं नंदीसंसस्तु विज्ञेयं सुरूपो लक्षणान्वितं २०
नंदीशास्यास्तु संस्थाने भद्रस्त्रंगद्वयं स्मृतं प्रसाद कारयेत् तत्र मंदिर सर्वकामदं २१
चतुरश्रीकृते क्षेत्रे चतुर्दशांशभाजिते कर्णतस्य तु विस्तारेणं भागद्वयं समानीतां २२ ८४

शालाचैव प्रकर्तव्या विस्तारेण चतुष्पदा प्रतीकर्णसमाख्यातं विस्तारेण द्विभागकं २३ नि
र्गमं रूपतमास्य कार्यो नंदिकाभागमेव च भद्रं च भाग निक्रांत नंदिकाभागमेव च २४ भागार्धं च
तुर्भागं च कर्तव्यं शालीलंतरं प्रासादार्धेन गर्भं तु लिंगस्यार्धेन कार्येत् २५ पदं विभक्तौ समा
ख्याता उर्ध्वं च कथयन् शृणु कोणे शृंगत्रयं कार्यं भद्रे स्त्रंगद्वयं स्मृतं २६ प्रतीकर्णे तु मेकै
कं साषाकुटा प्रकीर्तिता श्रीवृक्षश्च समाख्याता ख्यातो प्रासादो सुरभूषण २७ कोणे शृंगत्रयं
कुर्यात् प्रतीरथं पूर्वकल्पितं अमृतोद्भवस्तादा नाम प्रासादासुरपूजितं २८ अमृतोद्भवस्त
दानाम प्रासादसुरपूजितं अमृतोद्भवसंस्थाने तद्रूपे च समन्वितं भद्रस्त्रंग परित्याज्यं प्र
तीकोणे च तपेत् २९ प्रासाद कारयेत् तत्र हेमवान सर्वकामद हेमवांश्च समाख्याता स्वरूपो
लक्षणान्विता ३० चतुश्रीकृते क्षेत्रे षोडशांश विभाजिते कर्णद्विभागं कार्यं च प्रतीक
र्णं तथैव च निर्गमं तत्समं कार्यं प्रतीकोणे तु कारयेत् नंदिका भागमेकेन सालाचैव चतुष्प
दा ३२ परिसीरं च नीक्रांतं भागभागं विधीयते कर्णप्रतीकर्णयोर्मध्ये कोणीका भागमेव च
३३ भागार्धं च त्रिभागं च पादेनैवार्धं कारयेत् हस्तांगुलेश्च मानेन सलीलंतर विधीयते
३४ अष्टाष्टकपदं ज्ञात्वा देवकोष्टं च कारयेत् तत्र मध्ये तु कर्तव्यं चतुर्भागस्य विन्यसेत्
३५ कोणे शृंगद्वयं कार्यं प्रतीकार्यं तथैव च भद्रे शृंगद्वयं देव प्रत्यंगे कारयेत् तत ३६ कुणी
कास्येस माख्यात कुटादेया निरंतरं हेमकूट समाख्यातो कारयेत् सुरुषोत्तम ३७ तद्रूपे तत्प्र
माणे च भद्रे स्त्रंगद्वयं स्मृतं कैलाशस्य तु संस्थाने तद्रूपे च समान्वितं ३८ कैलाशस्य तु सं
स्थाने तद्रूपे च समान्विते कोणे स्त्रंग पुर्वनस्या भद्राने च प्रपातयेत् ३९ सर्वदेवालयं
तत्र कारयेत् पृथिवीजय इति विज्ञेयः प्रासाद सुरभूषणं ४० चतुरश्रीकृते क्षेत्रे अ
ष्टदशांस भाजिते कर्णद्विभागिकं कार्यं पृथ्वीकर्णं तथैव च ४१ अस्य मध्ये तु कर्तव्यं

८५ कोणीका भागमेवच परिसीरेचनिक्रांतं भागभागं विधीयते ४२ सिवक्षेत्रेतु कर्तव्यं एका
सीतिपदंयुतं अस्यार्द्धेन तु कर्तव्यं सिवलिंग पुजीते सदा ४३ सिवरं कारयेतत्र कर्तव्यंचवि
चक्षण कर्णस्त्रंगद्वयं कार्यं उपकर्णत्रियमेवच ४४ त्रीणिस्त्रंगाणिभद्रंतु भद्रप्रत्यंगकार
येत् तदासेषानु कर्तव्या द्वादसभागेन निर्गमं ४५ इंद्रनीलस्तदानाम प्रासादकारयेतदा वल
भसर्वदेवानां सिवस्यांतुविसेषत ४६ इंद्रनीलस्यसंस्थाने कर्णशृंगेचदापयेत् माहानीलो
विज्ञानीया प्रासादसुरवल्लभं ४७ तद्रुपेतत्प्रमाणेच भद्रेस्त्रंगेचदापयेत् प्रासादं कारयेत्रा
ज्ञो भूधरंश्रवकामद ४८ भूधरस्यतुसंस्थाने भद्रेसंगंपरित्यजेत् प्रथीरथेच कर्तव्यं शृं
गंवसच उतपता ४९ रत्नकुंदस्तदानाम शिवलिंगेषु कामदं अश्रयसर्व देवानां प्रासादसु
रवल्लभ ५० चतुरश्रीकृते क्षेत्रे भागविंशतिभाजिते चतुरभागयुतं भद्रं नंदिकाभागमे
वच ५१ भागद्वयेन निक्रांतं नंदिकाभागसंयुतं कर्णद्विभागिका कार्य प्रतिकर्णंतथैवच
५२ कर्णंतिकर्णयोर्मध्ये सार्धभागेन नंदिका पथ्थद्वये प्रकर्तव्या नंदिकाच सुसोभिता
५३ अंगप्रत्यंगविस्तारं निरगमंतस्यकारयेत् शालीलंतरिकं कार्यं भागार्द्धेन समान्वितं
५४ मद्धेचज्ञपदोगभ्रो तस्यार्द्धे लिंगकल्पना तस्यचोपरिकर्तव्यं कर्णशृंगद्वयंतथा ५५
उपकर्णत्रियानांच भद्रेचवयमेवही प्रथमेशृंगलतीनंतत्र शर्वइतिसमृत ५६ तद्रुपे
तत्प्रमाणेच कर्णशृंगं प्रदापयेत् पद्मरागस्तदानाम सर्वदेवेषु सुखावह ५७ पद्मराग
स्यसंस्थाने तद्रुपेसप्रवास्थिते भद्रेशृंगाणिचत्वारि वज्रकश्चमनोहरं ५८ भद्रशृं
गपरित्याज्य नंदिकाया प्रदापयेत् प्रासादकारयेतत्र मुकुटोज्वललक्षणं ५९ चतु
रश्रीकृते क्षेत्रे द्वाविंशतिविभाजिते कर्णद्विभागिकंकार्यं प्रतिकर्णद्वयंतथा ६० भद्रं ८५

टो

चतुष्पदंकार्यं नंदीकाभागमेवच विस्तारेतत्समं कार्यं प्रत्यंगेकारयेतत ६१ प्रासादेनचगर्भतु त
स्यार्द्धेमेरलिंगकल्पना द्वादसहस्तपरीष्ठांतु क्रमणीकारयेतत ६२ अर्थसात्रांतुप्रासादो ल
तीनाकारयेत् सुभा कर्णस्त्रंगद्वयं कार्यं उपकर्णत्रयमेवच ६३ श्रीणीभद्राणिशृंगानी नंदीका
द्वयमेवच ऐरावतशविज्ञेयो प्रासादोलक्षणान्वितो ६४ तद्रुपेतत्प्रमाणेच भद्रेस्त्रंगेचदाप
येत् प्रासादंकारयेत्तत्र राजहंससकृत्सोभित ६५ कर्णशृंगंतथातस्य प्रासादोगरुडोपमा सुंद
रपक्षराजस्या कर्तव्योगरुडोभिथ ६६ तद्रुपेतुतत्प्रमाणेच कर्णशृंगविवर्जयेत् भद्रांते नंदिका
कार्या स्त्रंगदेयंचतुष्टकं ६७ सप्तनवपांडुवैर्युक्तो कर्तव्यंलक्षणान्वित वृषभोनामवीख्यातो
इश्वरसासदाप्रिय ६८ कर्णशृंगेयदातस्य चैकोत्तरसतांडक पद्मसश्चापीसमाख्यातो कर्त
व्यास्त्रिषुमूर्तिषु ६९ सर्वकांचनमयोमेरु यत्पुण्यत्रिप्रदक्षणो शैल्यपसैष्टकेचैव लभ्यते
पुण्यशमाधिकं ७० हरिर्हिरण्यगर्भश्च हरोदिनकरस्तथा ते देवास्थितामेरु नान्येषांच ए
कदाचन ७१ इतिश्रीसूत्रसंतानगुणकीर्तिप्रकाससम्प्रध्योक्तारे श्रीभुवनदेवाचार्योक्ते अप
राजितपृच्छायां केसरादिसांधारपंचविसी प्रासादनिर्णयाधीकारसतात्रे ऐकोनघष्टीतम
सुत्रसमाप्तं न्ह अथातःसंप्रवक्षामी जगत्यलक्षणंबुध अस्यांगुलंदिशाभागं नतो
स्यसर्वतोभूवा १ प्रासादलिंगमित्युक्त जगतीपीटमंडनात् प्रतिहारदेवकुलोका विभागातन
तपरं २ प्रथमंचगुणाज्ञेया द्वितीयाश्चचतुर्गुण त्रतीयोत्रीगुणप्रोक्ता अधममध्यमजेष्ट
का ३ प्रासादवृद्धमानेन त्रिगुणाश्चेश्रमास्तिता मध्यमाचत्रुगुणाच कन्यसापंचगुणे
च्यते ४ साशाद्वीगुणख्याता युक्तापर्ययशास्थिता जिनेंद्रत्रिपुरुषेवा द्वारिकायामथोच्य
ते ५ समस्तपादसार्धया द्विगुणंवासुखायते अपरेरनुकर्णदया पूर्वमंडपनोत्तमे ६
द्वादशाकर्मसार्द्धस्यात् साल्लात्रीसेद्वाविकेनतु द्वात्रीसतीचतुस्त्रीस भृतांस्यतुशतार्द्धके ७
एकहस्तेतुप्रासादो जगतीशमोदचं द्वीहस्तेहस्तसार्द्धंतु त्रीहस्तेद्विहस्तके ८ सार्द्धद्विमत

स्तेषां प्रासादेचतुर्हस्तके चतुर्हस्तपरिशिष्टाच्च यावत्द्वादशहस्तकं ९ प्रासादार्द्धेनमानेन त्रीभा
गेनततःपरं चतुर्विंसहस्तपर्यंतं कारयेच्चविचक्षणः १० पादेनयोजयेकार्यं जावत्पंचनहस्त
कं इंद्रमानचकर्तव्यं जगतीनांसमुछ्रियं ११ तदुछ्रयंविभाजेत् प्राज्ञाअष्टाविंसपदंबुद्धजा
ड्यकुंभत्रिपदंप्रोक्तं द्विपदंकर्णकंभवेत् पद्मपत्रसमायुक्ता त्रीपदोसईपत्रिका खुरकंद्विप
दंप्रोक्तं कुंभकंसप्तमेवच १३ त्रिपदंकलसंचैव पदेकांतरपत्रकं कपोतालीत्रीपदाच पुष्प
कंयुगासंरम्या १४ पुष्पकंठंचजाड्याभ्यां निर्गतंचपदाष्टकं कर्णदीद्दिक्पालाश्च प्राच्या
दौचप्रदक्षिणे १५ जगत्यांपश्चिमेभद्रे राथिकेकंत्रिभिस्तदा पंचसप्तत्रयंश्चैव कर्तव्यावाम
दक्षिणे १६ जलनीकासमाकारो मुखेश्चव्यक्तशोभनै जतानपादान्तताश्च वहस्तेहस्ते
श्चेतुर्यथा १७ प्रासादेनसमस्तया जगतीभद्रनिर्गमं पादोनंवायकर्तव्यं प्रासादस्यसमं
तत १८ भद्रनिर्गमंतुल्यंच जगतीमंडनीगमं द्वितीयंतत्समाकार्य प्रतिहारास्तदाग्रत १९
आदिमूर्तिपदस्थाना प्रतिहारायामदक्षिणे राजसेनचतुर्भागं सप्तभागंतुवेदिका २० द्वि
भागंपासपदंतु कन्यकेसमकोतमरं दंडाग्रेसंडिकाग्रेच प्रतोल्याथीलथ्थेवच २१ तोरणं
चसमाक्षेयं ज्येष्ठमध्यमकन्यसं जगत्याविस्तरमानेना तदूर्ध्वत्रविगद्यत २२ अधिकं षोड
शांश्च विज्ञक्षं नवधा पुनः त्रिषुज्येष्ठमितिख्यातं मध्यमात्रिषुकन्यसं २३ स्तंभस्यार्द्धभितिग
र्भ तेषांमध्येविचक्षणः तोरणस्याभवस्तंभ ब्रह्मगर्भसुसंस्थितं २४ पीठस्थंचसमाकुंभा भर
णंचासिरस्तुलं प्रासादस्यप्रमाणेन पदचैवतुकारयेत् २५ पीठंचद्वयपादोनं भागमेकेनकुं
भिका पंचभागभवेस्तंभा भागार्द्धभरणंभवेत् २७ शीरंचभागमेकेन गउदीपीटमानतः
शीरंचपूर्वमानेन भागेकंपटमेवच २७ तदूर्द्धंघुंटस्याद्यंतु तिलकंवैस्तंभमस्तके त्रिपंच ८६
सप्तनवभः इलिकातल्लनैर्युता २८ सदाशिवंमध्यदेशे ब्रह्माविष्णुर्यथोत्तरे तस्यदक्ष

णोद्भवंकार्यं इलिकाशिरस्तंभकं २९ स्तंभद्वयेनउत्तंगं युग्मस्तंभैर्मालाधरं चतुरस्रंचतुःस्तंभः
विचित्रंपरिकीर्तितं ३० उभयपक्षस्तंभस्यं वेदीविचित्ररूपका षट्स्तंभेश्चशोभाढ्यं मकरध्व
जतद्वयमले ३१ व्योमवृषभंसिंहश्च गजउहंसमेवच एकद्वित्रीयतःपंच षट्सप्तपदांतरे ३ इति
विश्वकर्माकृतेवास्तुशास्त्रे जगतीतोरणाधिकारः द्वीतीयोध्यायसमाप्तः २ अतःपरंप्रवक्ष्यामि पी
ठप्रासादमानतः एकहस्तेतुप्रासादे भिट्टंवेदगुलंस्मृतं १ हस्तादिपंचपर्यंतं वृद्धिमेकैकमंगुलं
दशार्द्धविंशमपर्यंतं हस्तेरध्धार्द्धमंगुलं विंशाद्यार्द्धशतार्द्धेषु चतुर्हस्तेकमंगुलं ३ पीत्तिवपुष्प
कंश्चैव हस्त्वोचतुर्माशोन्यतः तृतीयंचतदंशोद्धैन पीठंचैवतदूर्द्धतः ४ एकहस्तेतुप्रासादे पी
ठंवेद्वादशांगुलं हस्तादिपंचपर्यंतं हस्तेहस्तेपंचांगुलं ५ पंचोर्द्धतुदशांयावत् त्रिद्विवेदांगुलं
भवेत् दशोर्द्धवंसपर्यंतं वृद्धिश्चैवांगुलत्रयं ६ विंशोर्द्धषट्विंशांतं करवृद्धांगुलद्वयं अंगुलै
कंततोवृद्धायावत् पंचाशहस्तके ७ पंचमासेततेहीनं कन्यसंभुसंलक्षणं ज्येष्ठंद्रवेपी ९७
दा ठंपंचमासेतथाधिकं ८ द्राविडप्रासादेषु वैराटंचतथाशृणु मंडोवरंविंशभागं षड्भागंपीठ
मेवच ९ तदुद्विविभाजेत्सा त भागैःस्यस्थुकूपृथुकू वसुभिजाड्यकुंभंच चतुर्दशंकरणा
लिकं १० अश्वस्तजाड्यकुंभंच चतुर्दशकरणालिकं गजपीठंद्वादशभागं वसुभिर्नरपीठकं
११ द्विभागनरपीठंतु गजनिर्गमत्रिभागतः कर्णालिकाषड्भाग सप्तभिर्जाड्यकुंभकं १२
तृतीयंचप्रवक्ष्यामि अष्टभिजाड्यकुंभकं चतुर्दशकणालीच त्रयोदशांगजस्तथा १३ नवे
भिरश्वपीठंतु वसुभिर्नरपीठकं निर्गमंपूर्वमानेन चतुर्थंतुलमःशृणु १४ वसुभिजाड्य
कुंभंच चतुर्दशकर्णालिका त्रयोदशगजाश्चैव अश्वपीठंग्रहसंरम्या १५ नवभिर्मानरा
श्चैववसुभिर्नरपीठकं हीनाधिकंनकर्तव्यं यदिच्छेत्श्रियमात्मनः १६ अश्वपीठरवेः
कार्या राजकारितधामजे तथावेवप्रकर्तव्यं गजपीठंचंडिकादिषु १७ इतिश्रीविश्व

कर्मविनारे अउथरपीठाधिकारे तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ३ अथातः संप्रवक्ष्यामि मंडोव
रस्य लक्षणं प्रासादस्य प्रमाणं च ज्ञातव्यं मूलनासिके १ रथोपरथा नंदी च भद्रापभद्रमेव
च एते घूबात्यतोऽस्तथा निर्गमहीनसाधिकं २ भूमिजानां विमानानां लतीना द्राविडा तथा
नागराश्चैव समाख्याता वैराटाश्चैव मिश्रका ३ एतेश्च जातिषु ज्ञेया वीमरा परिवर्जयेत्
द्वचिकाचतुर्थांशो न सोवर्णसप्रमांसतः ४ रजतानां तथा कार्यं भीतीनां तु प्रमाणकं ५ सा
वधारेषु सर्वेषु भित्तीनां गर्भश्चमंतिका अष्टमांशेन कर्तव्या भीतीनां पृथक् पृथक् ६ हस्ता
दि पंचपर्यंतं विस्तरात्समुच्छ्रियं द्वादशांगुलितो वृद्धि यावत् हस्तत्रयोदश ७ हस्ते हस्ते का दे
वसंशोऽत्र हस्तकं अतो ऊर्ध्व समभ्यस्त वर्जयेच्छास्त्रपारगे ८ अंगुलैर्द्वित्रिकं वापी कुर्यान्नृहि
नंतत्याधिकं आयुर्दोषाविशुध्यार्थं हस्वावृधीन दूषयेत् १० खुरकं चतुर्भागं च कुंभकं दशप
चकं प्रावशं चतुर्भागं स्कंधपत्रपत्रैर्युतं ११ कलशं षट्भागं च त्रिभागं वांतरपत्रकं कपोता
लीषड्भागं मंचिकार्धतुभागतः १२ द्वात्रिंशत् सहोच्छ्रियो जंघा वापी विचक्षण उद्गमैकादश
भागं भरणी वट्कमेव च १३ कपोतालीषड्भागं तु त्रिभागं चांतरपत्रकं षट्छाद्यं दिकू
कलशं दशसार्द्धकं १५ अंतरपत्रं चतुर्भागं नवसार्द्ध कपोलिकं मंचिका दशसार्द्धस्तु जंघा च
तुश्चत्वारिंशत् १६ सार्द्धएकोनविंशत्या उद्गमं चैव कारयेत् भरणी द्वादशभागं दशभागक
पोलिका १७ अंतपत्रं चतुर्भागं षोडशोच्छ्रच्छाद्यकं निर्गमं दशभागेश्च ज्ञेयमेतच्छसिलिपि
कि: १८ तृतीयं च प्रवक्ष्यामि नागरादि विशेषतः खुरकं पंचभागं तु विंशति कुंभकस्तथा १९
प्राच्यमध्याह्ने परे च ब्रह्मा विष्णु रुद्रादयः संध्यायां भद्रशालाढ्यं विचित्रपरिकरैस्तथा
२० नासिके रूपसंजंघा जळगर्भ रथिकोत्तमा पत्रमृणाल शोभाढ्य स्तंभिकातोरणं

संचासहस्तके २३ द्राविडे द्वारस्थानां तु प्रयुक्तं वास्तुवेदिभिः प्रासादसदृशं द्वारं कंसाकारेषु द्राविडं
२५ धातुजं रत्नजं चैव दारुजं च तथा तु हि प्रासादसदृशं छंद प्रमाणं द्वादशसस्मृतं २५ स्मरकीर्तिसुप्र ए
भाच सुभगं द्वारिका तथा नंदिनी मलिनी चैव मुकुटी हंसनी तथा २६ पद्मिनी नवशा बाबु कायाः सु
प्रकीर्तिता एकशाखं तु कर्तव्यं शुद्धा वेश्यध्वजे स्मृतं २७ नवशाखं देवदेवानां सप्तमं सर्वदैवयो पंचमं चक्र
वर्तीनां त्रिशाखं मंगुलेश्वरं १८ चतुर्भागी चिनक्रका त्रिवाखं वर्तते नरः मध्ये द्विभागिके स्तंभ भागमे
कनी निर्गमं १९ पत्रशाखा च कर्तव्या वल्लशाखा तथैव च स्त्रीसंज्ञा तु भवेत् शाखा रूपस्तंभा द्विभा
गिकं २० पत्रशाखा च कर्तव्या बिल्वशाखा तथैव च गंधर्वा तत्पत्तृतीयकं चतुर्थी खल्व शाखा च सि रवा
हशाखा च पंचमी २१ शाखाविस्तरयन्मानं वसुभागविभाजितं पत्रशाखा च गंधर्वा रूपशाखां
तृतीयकं २२ चतुर्थी स्तंभशाखा च रूपशाखा च पंचमी षष्टितु खल्वशाखा च सिंहशाखा च
सप्तमी २३ नवशाखा प्रवक्ष्यामि देवानां दुर्लभा सदा तत्र विश्रम तेत्ततं त्रिदशै सहसंयतं २४
शाखाविस्तरन्मानं रुद्रभागविभाजितं पत्रशाखा च गंधर्वं रूपस्तंभ तृतीयकं २५ चतुर्थी खल्व
शाखा च गंधर्वं चैव पंचमी षष्टं तु रूपस्तंभं च रूपशाखा च सप्तमी २६ अष्टमी खल्वशाखा
च सिंहशाखा तस्याशक पदकीधिस्तारं कार्यं प्रवेशो चतुर्थांशके २७ पंचमांशेन कर्तव्यं चतु
सार्द्धमथोच्यते पत्रं च नवशाखं तु निर्मितं विश्वकर्मणा २८ वेदांशे द्वारपालाश्च गंगार्यमातदुन
तः ततः परं च मराधारी ऊर्ध्व मृणालभूषितं २९ रथिकाद्वारवक्ष्यामि विस्ताराई उदुंबर श्चं उत्से
धं त्रिधा भक्तं तु कारयेत् ३० पीठमेकेन भागेन सिद्धीं गरथिका भवेत् कोणके द्वे च कर्तव्या वामद भा
क्षिणयोस्तथा भागं भागं भवेन्न्यासः कोणिकाश्च मध्यतः उदंबरं समाख्यातं पद्ममृणालसंयु
तं ३२ शाखाविस्तरयन्मानं षट्सार्द्धं च विभाजितं रथिद्वै भागमित्युक्तं भागेकं खल्वशा
खया ३३ भागेकं फालनाच्चैव उभयो परिपक्षमे सार्द्धभागं तु पत्रशाखा एवं विभाजये
त्सदा ३४ उदुंबरसपादेन उत्तरंगं विनिर्दिशेत् तदुच्छ्रयं तु विभजेत् भागे रथिक विंशति

३५ पत्रशाखाचिशारवंच द्विसार्द्धंतुकारयेत् मालाधःरत्रिभागंच कर्तव्यंनात्रसंशयः ३६ पट्टि
का द्वंच पादोन पादोनाफालनातथा रथिकासप्तभागेश्च भागेकभाजकंभवेत् ३७ षड्भागस्तु
मुत्सेधं उद्गमंच प्रशस्यते तद्दशांकारयेत्प्राज्ञ सर्वयज्ञफलंलभेत् ३८ इति विश्वकर्माऽवता
रे द्वारशाखाधिकारे पंचमोध्यायः ५ यन्मुखंयस्यदेवस्य सस्यतेनप्रशस्यते नोलशाभिमु
खा देव ले देवा दक्षिणमुखः १ पूर्वदिशाभिमुखंच आदिदेवदिवाकरं चतुर्द्वारंतुब्रह्माणं कुर्या
त्पूर्वादिग्मुखं २ स्वयंबाणतथाब्धोद्यं मुखंलिंगसतातलं व्यक्ताव्यक्तस्वरूपेण सर्वेशंसर्वदिग्मु
खं ३ सर्वतःसर्वगभद्रंच चतुर्द्वारं शिवालयं मूर्तिभेदेनजानीयात् चतुर्द्वारंशिवालयं ४ होमशाली
चकर्तव्या चतुर्द्वारोपशोभिता यज्ञमंडपवेदीषु चतुर्द्वारंप्रकीर्तितं ५ द्विजा राज्ञं रेवतंच विदिशा
णादिदिग्मुखं पूर्वपराङ्मुखायास्च वक्ष्तेचयथाक्रमात् ६ ब्रह्माविष्णुशिवःसूर्य इंद्रस्कंदाकुतास
त्रं पूर्वापरमुखात्येते वास्तुशास्त्रेषुदीयते ७ गणेशश्चात्रनागेंद्र क्षेत्राध्यसंचभैरवं धनाध्यक्ष
चगंधर्वं ग्रहमातृगणस्तथा ८ नकुलीशंचंडीशा मुखादक्षिणतोमुखः एवंविदिग्मुखाकार्याः
नान्यचैवदिवौकसः ९ नैरत्याभिमुखंस्याप्पं हनुमंतंबालिपुष्टिदं रौद्रेकात्शारौद्र राक्षसा
नोभयंकुरं १० उद्धमुलंचमध्येतु विलोमासाकुपादिका वलणोत्तरपूर्वेण नभुक्षाचैवशास्त्र
तः ११ दक्षिणोत्तरमुखाश्च प्राच्यांचैवतुपश्चिमे वीतरागस्यप्रासादा पूरमध्येसुखावहा १२
प्रशस्ताश्चसमुत्सेधा ग्रहस्याद्वस्तरगिका शेयशांतिभिक्षीलंच कर्तकारापकंस्मृतः १३ इति
श्रीविश्वकर्मा वितारे देवतादिशाधिकारे षष्ठोध्यायः ६ द्वात्रिंशद्धारमुत्सेधं उत्तमंजेष्ठी
चतुर्दशमानतरादेवी षोडशोयसमेकंच २ अष्टांशोनुकर्तव्या उमातद्रंश्रियाहरे ब्रह्मायुग्मंच
कर्तव्यं अतःउर्द्धमथोश्टणु ३ एकद्विकयुद्धश्चेव लेपाचशाणिकारयेत् विंशतिभिदूर्य
श्चेव आगस्सनारदस्तथा ४ एकविंशाधिकंश्चेव लक्ष्मीश्रीजिनमेवच चतुर्विंशति

भवेत् २१ कलशंवसुभागंतु द्विसार्द्धंचांतरपत्रकं वसुभिश्चकपोतालि मंचिकानवमेवच २२
पंचत्रिंशोछिता कार्या जंघाचैवविचक्षणैः भ्रमनिर्वाणितेस्तंभेनासिकोपांगथालना २३ मूलनासि
कसवैषु स्तंभेस्यात्तचतुर्लका गजेसिंहवराहैश्च मकरैसमलंकृतं २४ कर्णेषुदिक्पालोश्च प्रा
च्यादिषुप्रदक्षिणानां देश्वरं पश्चिमेभागे अंधसहदक्षिणे २५ चंडिगियातितोदेवि दंष्ट्रा विकृतांना
नाशुभा प्रतिरथेतत्रदेव्या कर्तव्या यदिशांपति २६ धारिमार्गेतुमुनींद्राः प्रलीनातपसासनेगया
क्षाकारभद्रेषु कुर्यान्निर्गमभूषिता २७ नागराचतथालाटी विराटी द्राविडातथा शुद्धातुना
गराजंघा व्यापरिकर्मविवर्जिता २८ स्त्रीयुग्मसंयुतालीला वेराटीपत्रसंकुल मंजरीबद्धकार्या
च जंघावेद्राविडीसदा २९ नागरीमध्यदेशेतु लाटीलाटेप्रकीर्तिता द्राविडीदक्षिणेभागे वैराटीस
र्वदेशजा ३० उद्गमंपंचदशभागे कपिशामेरलंकृतं भरणीवसुभागंतु शिरावटीपंचमेवच ३१
तदुर्द्धंपंचभिःकादि कपोताल्याचसुःस्मृता द्विसार्द्धवान्तज्ञेयं त्रयोदशांखुरबाधका ३२ निर्गतं
सुभागंतु मेर्वादीनांपृथक्श्टणु भरणीकोर्द्धभवेसंच अष्टभागसमुष्ठिता ३३ पंचविंशतिस्त
थाजंघा उद्गमांचत्रयोदशा अष्टभागोछिता भरणी शेषंपूर्वप्रकल्पितं ३४ खट्छाद्यंतारकु
र्यात् मंचिकासप्तभागतः षोडशैवपुनर्जंघा भरणीसप्तभागतः ३५ शिरावटीचतुर्भा
गं पंचभागंतुपादकं खुरछाद्यंद्वादशांसा कर्तव्यंसर्वकामदं ३६ विस्ताराद्धसमुत्सेधं
याचलत्थमभूमिका श्टंगकूटोदयंत्यक्त्वा शेषंस्याच्चमुंडोवरं ३७ विमानभूमिकोचैव वै
राटचतथैवच वलभीनांसमेस्तेषु प्रासादपरमोदयं ३८ खुरकंपीटमध्येतु संपदाभागकुंभ
कं भागसार्द्धघटकार्यं तस्यार्द्धंतरपत्रकं ३९ भागार्द्धतुकपोतालि मंचिकाचसमाभवेत् जं
घा भागद्वयंकार्यं भरणीसार्द्धभागत ४० शिरावटीसार्द्धभागं पदंचैवतथैवहि खुरछा
द्यभागपादूनं निर्गमंचपदद्वयं ४१ सिहावलोकनसर्व सिंहकर्णविभूषिता विस्तरार्द्ध

८८ समुत्सेधं पर्यंते पृथकछादकं ४२ लतिनासंधारमिश्रै विमानै नागरैस्तथा विमानपुष्पकै
श्चैव कुर्याल्लिंगरजोदयं ४३ धातुजे रत्नजे चैव दारुजे च तथालहे नागरछंदमित्युक्तं प्रासा
देपरमोदयं ४४ द्राविडे च समुत्सेधं यावत्पाटोर्द्ध मस्तकं कर्णमानसमुत्सेधं घंटातं च प्रक
ल्पयेत् ४५ एकभूम्यादिद्वयोर्वृद्धि यावत् द्वादशभूमया जंघावृद्धिक्रमेयोगे लक्षणा भास्करां
तकैः ४६ इत्युक्तमानमुद्दिष्टं वस्तुवद्भिरुदाहृतं धर्मार्थकाममोक्षाणाम् प्राप्तिहेतुमनीषितं
४७ सर्वफलमवाप्नोति दृष्टेशांयस्तु कारयेत् अन्यं च कुरुते यस्तु त्रिल्पिदोषं महद्भवेत् ४८
द्वेसषोडशांसेन विस्तारलीस्कालरं प्रयत्नेच चतुर्भागं उदकांतरमेवच ४९ प्रथकर्ण जिनां
शोस्तु विस्तृतंसलिलांतरं उदकांतरं च तुर्भागं प्रवेसमेव भागतः ५० इतिविश्वकर्माकृते स
मासम डोवराधिकारे चतुर्थोध्यायः ४ अथातः संप्रवक्ष्यामि द्वारं प्रासादमानतः एकहस्ते तु
प्रासादे द्वारं तु षोडशांगुलं १ षोडशावृध्या वेदातव्यं पर्जंतं चतुर्हस्तकं गुणांगुलं न वेद्वृद्धि या
वत्संचाशहस्तकं २ नागरद्वारमाख्यातं प्रयुक्तं वास्तुवेदके ३ पानजंपर्यक द्वारं प्रासादस्य प्र
मानं तथा दीर्घद्वे न पृथुर्च तु शुभस्याच्चैकलाधिकं ४ अंगुलं द्वित्रिकं वापि कुर्यात् हीनं त
थाधिकं आयुदोषविशुद्ध्यर्थं हस्तवृद्धि न दूषयेत् ५ मिश्रके लतिने चैव तथा वैमाननागरे
गरे दसहस्तांसरं पंच सावंधारेषु कामदं ६ विमाने पुष्पके चैव तथा सिंहावलोकान प्रश
स्ता नागरछंद कर्तव्यं शास्त्रपारगैः ७ एकहस्ते तु प्रासादे द्वारं सूर्यांगुलोदयं हस्तहस्ते सूर्य
वृद्धी यावत्पंचासहस्तकं ८ पंचांगुलाभवद्वृद्धिं नवहस्तान्तसंशयः ९ अतार्द्धंगुलावृधि
यावत्संचाशहस्तके भूमिजे द्वारमानं तु प्रयुक्तं वास्तुवेदिभिः १० बालभ्यां चैव वैराटे विमा
नं भूमितं स्मृतं अन्यथा च न कर्तव्यं यदिछेत् श्रियमात्मनः ११ एकहस्ते तु प्रासादो द्वा
रं चैव दशांगुलं दशांगुलो भवेद्वृद्धि यावच्च दश हस्तकं १२ चांगुला च ततो वृद्धि याव ८८
४ यावत्स्यात् सप्तहस्तकं वेदांगुला भवेद्वृद्धि

समुत्सेधं सरस्वति गणनायकं ५ षड्विंशामादित्य कत्वा वामनश्चं उमे वच ब्रह्मा विष्णुस्तथा रुद्र
सूर्यस्तु सप्तविंशति ६ गौरवी चंडिका चैव एकोनविंशतां शकैः तद्वंगौरवं कार्यं नास
ते षंत्र कदाचन ७ द्वारे च प्रमस्य भागांतं ऊर्ध्वं भागं परित्यजेत् सप्तमात्सप्तमे भागसादिस्तश्चे
नना ८ इस्तश्च विंशाति शो युगत्रयि शार्द्ध भागतः ९ प्रथमे तु त्रिविस्तार्ध्या किं चिदीत्रण नमाश्रितं
१ कर्णपिप्पलिकास्तु जंत्र नागत्रेषु संस्थितं पद्मं प्रभाग मस्तत्रे पादगात्रेषु देवता १० द्वितीय दिरएप
गुर्भे न कुलीशं तृतीयकं चतुर्थे चैव सावित्री रुद्रं स्यात्तश्चैव पंचमे ११ षट्के चैव वर्षद्रूकं सप्त
मे च पितामहं अष्टमे च सकदेवं नवमे च जनार्द्दनं १२ द्वादशमे विश्वरूपं च अग्निदेवत्रयोकादश
१३ चतुर्दिशे विघ्नराजं प्रयदाश्च त्रापंचमे षोडशे भवेन्मा पुगणः सप्तदशं शके १४ नैरवा
मष्टदशे तु क्षेत्रपालं तथाधिके विंशातिमेय रुद्राजं हनुमंतं तथाधिकं १५ द्वात्रिंशाते च चतुर्विंश
रं च पदाधिके चतुर्विंशतिदे दैत्यराजहंसापदाधिके १६ पैशाच षट्विंशात्याच च रुतानां च तथा पु
रं तस्याधिपदैरश्च संक्रमेण तथा कीर्तितं १७ विष्णुस्थाने कुमारे वी विष्णुस्थाने सरस्वती सावित्री
मध्यदेशे तु लक्ष्मी सर्वत्र स्थापयेत् १८ नीतरागं विघ्नराजं येउत्ताजिनशासने मातृमंडलमध्येषु
देवीनां च समस्तका १९ पर्यंकासनउत्तम्बे विष्णुरूपां च कल्पयेत् विष्णुस्थाने जलसायी वराहं तत्स्य
दस्थितं २० विष्णुरूपाणि सर्वाणि मत्स्यादीन्यचमे पदे हरिस्कंधाघामर्ति विष्णुस्थाने प्रकल्पयेत् २१ अर्ध
नारीश्वरं देवं सप्तस्थाने प्रकल्पयेत् सप्तमे तु स्थादिरएपगर्भस्तथा भवेत् २२ इतिश्री विश्वकर्मा वतारे इष्टि
स्थाधिकारे सप्तमोध्यायः ७ अथातः संप्रवक्ष्यामि भद्रादि शिषरस्तथा भद्रांधे तु ततो वक्ष्यामि त
कांम्सलनासिके १ भद्रे द्वात्रिंशति भागं कर्तव्यं च विचक्षणे मसलनासिकं द्विभागं त्रिभागं द्वितीयं तथा
ध्वे रथागं तृतीयं तु चतुर्थे भद्रमेव च पंचमी फालना कार्या तु उपांगं सदृशी भवेत् ३ यावत्स्तप
८१

९०

माणेनविस्तारंक्रियतेकर्णो।तावदंगुलपादैस्त्रफलनाशुल्पनिर्गमैः॥४॥सप्तनासिकंप्रवक्ष्यामि।मद्रार्द्धषष्टमेव
च॥प्रथमावसुभिर्नागंद्वितीयारुद्रसंख्यया॥५॥तृतीयावसुभिर्नागंचतुर्थाद्धेस्तलनासिके॥षष्टमंसप्तमंचैव
फलनानामनामतः॥६॥रेखाविस्तरयन्मानंतन्मानं॥विनाजितं॥द्विनागकर्णमित्युक्तंभद्रंनागत्रयंभवेत्॥७॥
प्रतिरथंसार्द्धनागंउभयोरपिपक्षयोः॥रेखाविस्तरयन्मानंतेनसपादेनततोव्रयेत्॥८॥त्रिनागसहिताश्चैवसा
र्द्धरूत्वाविचक्षणः॥एकद्वित्रीयप्रकर्त्तव्याज्येष्टमध्यमकन्यसा॥९॥षट्पंचमेध्येतुस्कंधंसार्द्धनागेनजिनांकितं॥
विभक्तिस्तत्रभवेत्स्कंधक्रमेणपंचविंशति॥१०॥चतुर्हस्तादितःकृत्वायावत्पंचाशद्धस्तकं॥चतुर्विंशतिवंशेनस्कं
धंवैसारयेद्बुध॥११॥तस्योर्द्धेनवभागैस्तुकर्त्तव्यंचविचक्षणैः॥कोणंतुभागचत्वारिप्रतिरथेत्रीणिकारयेत्॥१२॥भद्रं
गार्द्धंचद्विनागंतुततःस्कंधसाधयेत्कलां॥रेखामानंमयाख्यातंबालंजरमथोश्रणु॥१३॥रेखाविस्तरयन्मानं॥ष
ट्विंशपदभाजितं॥कोणंचनागचत्वारिप्रतिस्थेत्रीणिकारयेत्॥१४॥बालंजरतथाकार्यंद्दशार्थं — —गलनुदयं
सर्वमानेनकर्त्तव्यंत्रिशिल्पिनासता॥१५॥स्कंधेषोडशभिर्नागैकर्त्तव्यंचसदाबुधैः॥स्कंधहीनंनकर्त्तव्यंकिंच
दधिकंतुकारयेत्॥१६॥स्कंधोर्द्धेमेकादशभागैकर्त्तव्यंतुसदाबुधैः॥कोणंतुभागचत्वारिप्रतिरथेत्रीणिकारये
त्॥१७॥सार्द्धद्विनागेविजयंबालंजरंशुभोभनं॥भद्रार्द्धंसार्द्धभागंतुकीर्तंषामयस्पसोम्पतःशिवं॥१८॥सर्वत्रैकश्रियादं
स्यात्द्दवय्येस्वस्तिकंयथा॥सर्वद्वीपक्षणेवैकोटिद्दस्तत्वश्रीधरंमतं॥१९॥इतिश्रीविश्वकर्मावतारेश्रीभुवनदेवाचार्योक्त
अपराजितपृच्छायांभद्देरेषाधिकारेसत्तावेषष्टसप्तमंतमस्तसमाप्तं॥॥॥अथदीपार्णवमतः॥श्रीविश्वकर्मोउ
वाच॥अथातःसंप्रवक्ष्यामिआयानंचविशेषतः॥अक्षोयस्यभवेन्आयुपुरुषप्रसदेहनं॥१॥२
सचक्षआयुविजानीयात्अन्यथानिफलंभवेत्॥नक्षत्रंदेवगं ज्ञात्वाअंसकैसमदशमुनी॥२॥स
रयाचसमायुक्तानक्षत्रंगदशमध्यमे॥एकांतरेषुपदातव्यं॥ध्वजादीनायथाक्रमं॥३॥२
कडसंख्याकृतेस्केत्रेभक्तनागविनाजिते॥मन्यसेस्तत्रवेदेवा॥एभिराशुविलक्षयेत्॥४॥ ९०

८२

रुद्रश्चप्रथमेभागे नक्षत्राणिद्वितीयके तृतीयंलोचनंज्ञेयं चतुर्थंरविस्तथा ५ पंचमेषुतिथि
प्रोक्ताचसुषष्टे विनियोजयेत् सप्तनेबुधयेदाश्च लोकाश्चैवाष्टमेमुनि ६ आनंतेनवमेप्रोक्तं दश
मेचरश्मी एकादशाभवेश्चरुद्राणि मुनिपुंगवश्च अंकोद्दे सर्वकोष्टेषुमाविकानियोजयेत् ७ त
पुस्कंविसर्जंच तत्सुसंभोगभक्षरं गृहादिपतिउर्जनाम तेतस्यपरिज्ञायते ८ कलाचसुश्चभागे
श्वाष्टमेश्चसनधरेत् ततोविज्ञायतेआयु आयुर्देहस्यसाक्षिता ९ योयःश्चेवाप्युमग्रेच सांते
नेनचभक्षयेत् अन्यअन्यातमंदद्यात् भस्तस्यानाविसर्जयेत् १० ज्ञायतेचशुभेतत्र कर्त
कार्याप्रकाशयेत् इतिश्रीविश्वकर्मावतारेज्ञानप्रकाशेदीपार्णवेपुरुषआयाधिकारे द्वितीयो
ध्यायः २ श्रीविश्वकर्माउवाच जेनदंसहस्रलोकांतं त्रैलोक्यंसचराचरं तस्मैमायनित्याचन
मश्रीविश्वकर्मणे १ अविर्क्तंव्यक्ततानीतं येनविश्वंचराचरं ज्ञानविश्वंभगचरं तस्मैशायनि
त्याचनमश्रीविश्वकर्मणे २ ध्वजोधूमोसिंथंधूस्यस्वानोवृषखरोगजः द्वाक्षंचैवसमुध्दिष्टा आ
याष्टौसमुदाहिता ३ पुर्वेचध्वजंदद्यात् धूमंदद्यात्अग्निसंस्थितं याम्यायांशघदद्यात् नै
रत्यांस्वानमेवच ४ पश्चिमायांवृषंदद्यात् ताभ्यांखरमुत्पमे उत्तरेचगजंदद्यात् ईशान्यां
द्वांक्षमेवच ५ कृतायुगेध्वजंदद्यात् त्रेतायांसिंघमेवचं द्वापारेचवृषंदद्यात् गजंदद्यात्क
लौयुगे ६ चत्वारोब्राह्मणज्ञेयं क्षत्रियत्रयमेवच द्वौवैश्यविज्ञेयोचैव एकंशूद्रप्रकीर्तिता ७
प्रतिमाग्रे ... [illegible]
सविताब्राह्मणोचैव कार्तिकेयचहुताशने इंद्रश्चापिऋषीणांच ध्वजंतत्रनिवेशयेत् ८ प
ताकाचामरंछत्रं कुंडदेवीचतोरणं व्यागृहेमंडपविप्राणां ध्वजंतत्रप्रदापयेत् ९ सुचिस
विलातथाकुंडे दानशाला विशेषतः वेदामंडपस्थानेषु ध्वजंतत्रनियोजयेत् १० हेमका
रकाराणां तथाअल्पजीविता अग्निशालाग्निकुंडेषु धूमंतेषुप्रदापयेत् ११ एकह
स्तेषुकुंडेषु द्विहस्तेषुचलक्षरे नवहस्तेषुकुंडेषु धूमयोनिमुखेतया १२ राजवेश्मे

८२

८१ संस्थाने छुरिधा षड्गमहायुधैः सिंघद्वारेषु सर्वेषु त्रिशंतो षु प्रदापयेत् १५ अंकेषले
पत्रेषु मारणे युध मेवच स्मशानं चैव विज्ञेयो राज प्रतोल्यां सिंघमेवच १६ राजकार संस्था
संस्थाने गूढस्थाने विशेषतः सिद्धि निग्रहस्थानेषु श्रीगरणे शिंघमेवच १७ स्तंभने मो
हने चैव उच्चाटने मारणे तथा पीठमंडल सर्वेषु षुद्रस्थानेषु केसरी १८ यमगरण योनि संस्था
ने षुढडी स्थलिलथैवच डीकली यंत्र स्त्रीच मारणे शुभकेसरी १९ स्मशान चतुक मेषु अ
मेध्याय विशेषतः गोरिस्थानेषु सर्वेषु स्नानं म्लेछादिजातिषु २० श्रृंगीयाणां गृहीश्चैव ग्रहे
पार्थिव वासिने अजाकुंडि संस्थाने सुने गुहाय मेवच २१ तानिकादि ग्रहेश्चैव ग्रहे पार्थिव
वासिनी स्थंडिल ग्राहिरं लेषु अजितानं स्थाननिश्चलं २२ निपातादि ग्रहे चैव ग्रहे कोलि
कमछके प्रक्रांतीवाणां विशेषेण स्थानं गुहाइमेवच २३ कोष्टेगोकलाकोष्टेच नियोगीमंत्रि
णस्तथा सचिचीणां विशेषेण वंशपात्रे र षमेवच २४ गोष्टागारगवास्थाने पात्रे वे भोजनस्त
था शिवलिंगेषु सर्वेषु विपत्ति वृषमेवच २५ ऋषिवालिज्य लोकानां देवरस्थरणे सुषमं
डपे घृततैल कणमापेषु वृषं वैश्य प्रदापयेत् २६ पर्णशाला भोजनशाला आर्यपात्रे षु
दर्पणे शाला दूषणलिंगेषु वृष वैश्य प्रदापयेत् २७ वीणावंश मृदंगेषु घंटिका झलरीषु
च नटवेश्य गृहेश्चैव षुरं तत्र प्रदापयेत् २८ कुलाल रंजकादीनां अन्योन्य गर्दजीविनां सर्व
वाजिसिलादीनां नटानां षरनिश्चलं २९ कुंभकार लोहकारश्च गायणा भंडमेवच द
लल दल वाटेषु स्थउवालेषु गर्दभ ३० वेदपराश्च शिरिषि वेदशिवेधाश्च वास्तु दोषा ८१
श्च वर्जिता ३१ कन्या तुलादि वृश्चिके भास्करो यदि संस्थिते तदृक्षेन कर्तव्यं वास्तु
कर्मेषु प्रवर्तते ३२ व्याधि घोरं भयं शोकं पुत्रनाशं तथैवच कुंभे मकरे धने चस्ते भा

स्करो यदि संस्थितं ३३ तदृक्षेन कव्यत वास्तु कर्मेच दक्षणे दारिद्रं चोत्तरं चक्रे रिणदोषेण पीड्य
ते ३४ राशिरोधा समाख्याता प्रासादस्य ह वारणे मागिद्या शिशिर मिर्मासा पूर्वदिक्षा नू वर्जिता ३५ फा
ल्गुन्या दो त्रिभिर्मासैं वर्जनीयान्च दक्षणा ज्येष्टादि पश्चमायांच वर्जनीया प्रयत्नतः ३६ भाद्रपदादौ
त्रिभिर्मासैं उत्तरस्यं च वर्जयेत् तस्करात्ति च सर्वाणि पराद्वलं पराभवं ३७ राजदंड भय नित्यं वसु
राहं च निर्जयेत् पूर्वाद्युत्तथा याम्या इशान्यां पश्चिमादिशि ३८ आजेय उत्तरांश्चैव नैऋत्यां च
दिशा चतुः गृहचक्र संस्थानं वर्जनीया सर्वतो बुधः ३९ सन्मुखं वर्जयेत् प्राज्ञः प्रासादे मठ मंदिरे शो
क संतापकर्तव्यं निर्धनं कारयेद्बुधः ४० इति राहुचक्रं अश्वानं मंगलेयुक्तं मूलं बुधश्च मेवच
कृत्यकायां गुरुर्युक्ता रोहिणी शुक्रे शनौ तथा ४१ हस्तयोश्च निनाडेष्टा यमघंटादि वर्जिता भरणी रवि
उष्टाच चित्रा सोम शशि संस्थिता ४२ मंगले उत्तराषाढा धनिष्ठा बुधमेवच गुरु उत्तरा फाल्गु
नी ज्येष्टा सुक्रमेवच ४३ रेवतीशनिना इष्टा जन्मरक्षादि वर्जिता क्रूराक्रोध मुखा निष्टा विपरी
तादि वर्जिता ४४ नर्क नक्र हरिकुंभ गते रवौ पूर्वपश्चिम मुखा गृहाणि तुल मेष वृष वृश्चिक जा
ता दक्षिणोत्तर प्रशस्ता ४५ कुर्याध नमीने मिथुनांगतां गतने करोति गृहा भास्करं अन्यथाय
दिकरोति दुर्मती व्याधिशोक धनक्षयं च मस्तके ४६ धनमीने च कन्यानां राहु उत्तर पूर्वकं
न एतां थापयल्लिंगं न एव व्याधि पूर्वकं ४७ नच प्रवासनं गृहं न सुरालयं विवाहं च वेदिकां
नेवक र्तव्यं न यो कुंड क्रियादिकं ४८ एताश्चरोहिणी ज्ञेया ध्वजश्चं द्वजलं पिण बालार्क सर्क
सद्योति सर्व लक्षण संयुतं ४९ एता ध्वजसर्पाधिकधरो वन्हि धूम श्च धूम्र महाहन नीलकंठ तथा
नगानि सर्वाभरण भूषिता ५० इति धूमा शिंघ सिंघसमारूढो बहुहस्तोसमायुक्ति श्री
उकुंडल समायुक्तं हेमवर्ण भयंकर ५१ इति शिंघं स्वानं स्वानसमारूढो सर्वफणिवा प
फल्ल कर्णवर्णभवेज्ञेया कपालभरण भूषिता ५२ इतिभ्वान वृषश्च वृषभारूढो बा ८२

९२ णचापंचसुहस्त शितशांतिकरंनित्यं नानाभरणभूषिता ५३ इतिश्वान षरश्चषरमारूढो शृं
गीडमरुकपाणिश्च धूम्रवर्णसुविज्ञेया रक्ताभरणभूषिता ५४ इतिखर गजश्चगजमारूढो
गङ्गाइववरप्रदा सोमवर्णसविज्ञेया हिमाद्रिशुद्धिशोपमा ५५ इतिगज हासंसपसिमारूढो वक्र
विरालसदृशोपमा मल्लकर्पूरसंयुक्ता कपिलकद्दमलोचना ५५ इतिहासं अवरसंसमा
रव्याता वपीरूपचतीम्यहं यक्षश्चमंडपारूढं कुंडीपानलविन्यस ५६ चरिविचर मारव्यादि
सर्वाभरणभूषिता ५६ इतियक्ष राक्षसमहिषारूढो आशिपात्रांच पाणिनो दृश्यास्पस
शाचिज्ञेयो कद्दमवर्णविलोचना ५७ इतिराक्षस पिशाचव्याघ्रमारूढो महिमायासमाहि
तसांतश्चखट्वकापाली दंतराभासुरानिच ५८ सुरतरीतथादुर्गा कर्तव्याचमनोरमा वाहनीराहि
तेयुक्ता नानाभरणभूषिता ५९ इतिपिशाच अंशका त्रिविधाज्ञेयो गजोमहिषवाहिनो इंद्रशंगे
जसमारूढो वज्रहस्तोमहाबलं ६० हेमवर्णसविज्ञेयो दिव्याभरणभूषितो इतिइंद्र यमश्चम
हिषारूढो दंडहस्तोचपाणिनो श्रीउकुंडलिसंयुक्तो सर्वाभरणभूषिता ६१ इतिराजाशक अंशक
कथिताश्चैव ताराश्चैव अतःशृणु श्रीविश्वकर्माउवाच आयुतंचपृथुत्वेन गुणयेदायकारणं तु अ
ष्टभिश्चहरेत्भागं यच्छेषं आयमादिशेत् ६२ आयामंयदिक्षेत्रं विस्तारंयदिगुणयेषुचस
प्तविंशतिहरेत् भागाच्छेषं शांतिफलंनिश्चयं ६३ फलेचाष्टगुणेतस्मिन् सप्तविंशति
भाजिते यत्सेषंतत्फलेतत्र नक्षत्रंतद्गृहस्यच ६४ नक्षत्रंवसुभिभुक्तं तत्सेषंवयोभवेत्
समध्ययदिसात्यस्य राक्षसोचवयाधिकं ६५ वयोनूनोतरोयक्षधनधान्यकरस्मृत ९२
६६ शांतपूरिभद्योतिश्च श्रियानंदमनोहरा ६७ श्रीवत्सविभवश्चैव चिंतात्मकध्य
यस्थिता मूलराशिव्ययक्षिप्य ग्रहनामाक्षराणिच ६८ त्रिभिरेचहरेद्भागं तेहेषां

९

अ

तदांशकं इंद्रोयमश्चराजावै अंसकात्रिभिरेवच ६९ त्रिप्रमाणत्रिधोक्तव्यं ज्येष्ठमध्य
मकन्यसं अतिअंसक गुणयेस्वामिनक्षत्रं यावत्नक्षत्रंग्रहस्यच नवभिश्चहरेद्भागं शेषा
ताराप्रकीर्तिता ७० शांतामनोरमाक्रूरा विजयाकलिकोद्भवा पद्मिनीराक्षसीवीरा आनंदा
नवमिस्मृता ७१ त्रिपंचसप्तभिश्चैव एभिताराप्रकीर्तिता क्रूराबलहूराक्षसीच वर्जयेसुभ
कर्मसु ७२ हनेदष्टभिक्षेत्रं फलंषष्ट्याविभाजितं लब्धंदृष्टे गुणंजीवमृत्युदोषांकभाजिते
७३ मूलराशिपुनस्थाप्य षष्ट्याष्टभागमोहरेत् यत्सेषंतिष्टतेतत्र तत्रतत्वेषुदोषजं
७४ पृथव्यायस्तथाप्यातेजोवायुरेकासमेवच पंचतत्वेभवेस्थाने मृत्युअंतकालप्रभेदतः
७५ पृथिव्यांपततीभूमी आपेतजलदोषजं तेजेनअग्निदाहश्च वायनेपतनेषुच
५६ आकाशेउद्वंशेशून्यं पंचतत्वेमुदाहृतं एतसंसोधयेस्थाने विश्वकर्मासमंततः ५७
रक्षतत्वंतथाचैव नंदापभाथोचाष्टमः ७७ सर्वतोमयतेतोरा षडष्टनवस्तथा एतेस्ताला
प्रयत्नेन स्वयंसंचालयेगृहं तथाष्टायुयुनभ्यांच लवमायुग्रहमादिशेत् सप्तोद्वेस्थापये
द्वेस्था पयद्वेषापुनःकिन्यातीसप्तभिः ७९ रेषाग्रेचरक्षाणि तश्चंद्रमुदीरयेत् ८० क
लिकाद्याचमीशाने रेषश्चप्रदक्षणक्रम रेषाग्रेचरक्षाणी अभिचष्टाचविंशति ८१ उदय
विस्तरंध्र चाष्टभुक्तेशेषंव्ययमिश्रंच आयक्षसंवसुभुक्तंभागे शेषंअद्दिष्टायकं ८२ विकृते
कर्णकश्चैव धूमधोवितथेश्वर विरालदोधिभवश्चैव दंतोकंतेश्रद्धिष्टायकं ८३ अयश्रेष्ठं
विषमं अंषकंविषमेवचअद्दृष्टाव्ययसमंमतं व्ययक्षतुक्षताईत ८४ सर्वक्षत्रफलंचासा
दिरुंसत विभाजिते यत्सषंस्वेकएवास्ति सूक्ष्मचेतेषुनंदनं ८४ एतेएकगुणास्वस्ता
आयामेश्वततोऽष्ठयो विस्तरतोतदभावस्यस्वन्यो नितुतथाशुभा ८६ वियोनिनासुभा

८

८३ स्फराजितेकुत्रचित् विजोनिजेस्वमीश्वरो अनिलामिवसद्रव ८७ ईश्यायनयतोपायकथिता
विस्तरात् पुनः उद्धयंगणिते क्षेत्रं राशिवसुभिर्भाजिते अधिपत्यं भवेत्तेषं रुभिवसुभिर्भाजिते
अधिपत्यंभवेत्तेषां फलंनामानुसारतः ८८ अक्षरसंख्ययेतारा मंसकंस्वामिमेवच प्रस्यमार्केविभ
केशानल ग्रंक्षेत्रफलंयतेत् ८९ नंदाद्यातिथयोतुल्ल्प्या नामतुल्याफलास्मिता तिथोनवगुणा
यंच द्विगुणेभागेचसप्ताभि ९० प्रथपराजिताशेषं कार्बालोस्तर्यादिबुधः तदंस्तेषांयुक्तांलदेले
षांभावतत्सकाथितेश्वण इतित्रयोदशांगानिक्षिजलं विश्वंकर्मोति आयाराशी भवेत्तस्यय
मंशाकनारकान् ९१ तत्वचंद्रअधिष्टाच अधिपत्यंविशेषतः लग्नंतिलिथिसृभूपंलेवासरणविशे
षतः ९२ एतेतेकाथिताश्चैव पश्चात्लग्नंविशेषयेत् लग्नेतिथिसृभूपंले वासरेणविशेषतः
९३ गुरुलग्नंजलेभुक्रे स्मरेन्यंसहजेकुलं रिपुर्भानयदावर्षे शतायुस्यात्गृहेभवत् त्रेयश
तायुशतलग्ने स्तंसूर्यराशिभंभवेत् ९४ प्रारंभसद्मेयस्य तस्यगृहशताद्वयं व्योमचंद्रवषे
जीवे लाभेभृशनीश्वसे ९५ यशवेन्मसमासीते तत्राग्रहशास्यताश्रियं स्वोवस्थेलग्नगेभुक्रे
हिबुधस्थेयदागुरौ ९६ सोत्रैमदयुवाल्लाभे धाम्नसश्रीशतांताश्रियं सुतंलग्नेगुरुकेंद्रेषे बुधश
शांगति ९७ नवमंशतशास्याह तत्रायहशताश्रिय राहोद्गतिस्थिरेलग्ने शुभकर्मविलो
क्यते ९८ नीचादिशंभुसंस्थाने निर्द्दनंव्योमचारिषि इतिग्रहप्रासादआयलग्नविचार अ
श्वन्यादित्रयंमेष शेषप्रोक्तंमघात्रयं मूलादित्रितयंचापि शेषेभुनवराशिस्तथ ९९ न
चाष्टयमंकुर्यात् द्वितीयंअंशाकंक्वचित् व्ययंनीमाधिकंक्वापि नक्षत्रंचविरोधचे १००
अंबनक्षंत्रसंख्याचे राशियोतेचक्वचित् धनशंषस्तथामेव देवमनुष्यराक्षसा १०१ ८३
वृषमिथुननामाश्च देवमानवास्मिता मन्यावृषश्चकर्कश्च तुलामकरकंडिका १०२ २
त्रिपंचसप्तमीचेव ताराचंद्रेननष्टशा नवैरणागृहाक्वापी नरास्यावर्णमाहतः १०३

आद्यवस्यास्थितांहंन्य धूजिताधूजयंतिच प्रासादसर्वदेवानां नगराणांप्रवेशयो १०४ जोजस्य
भवनेआयु तस्यद्वारेनियोजयेत् कंकाकोअलूकश्च गृधश्वानमंजारकीटवित् १०५ नरवाकेशा
मिनवाच्च कुंजमंडारजभ्रुल्ला छत्रभिन्नांगपुंगश्च कर्करोकपिलोभुवि १०६ एततत्व्यंसत्यदं
किंचित् द्वारलंघयेक्वचित् श्रीवतोनिर्धनंतोयां तिःभुक्रश्चनापिदिति १०७ क्षेत्रेचैवचतुस्त्रचे भु
जर्णविशोधनं क्षेत्रेषुबुतमानाय विस्तरगणितंचयत् १०८ करमानक्वतेस्त्रे हस्तमानविकल्प
येत् तदंगुल्लाभेदांगुली कायापदेस्तेवामलाभत १०९ पदलामेप्य चैकार्यो ततावेत्रानुसारतः
आपबंधस्तथावद्ध शास्त्रोक्तफलदायक ११० क्षेत्रंचद्विविधंकार्यं प्रक्षेयाचवंशके अष्टोआय
संपूज्य मध्यस्थेतस्मीसवी १११ क्वतेचदीर्घमानंच विस्तारेगणितंचयत् अष्टभिर्भाजितं
मेषं ध्वजादायप्रदायकं ११२ एकांग ध्वजंदद्यात् द्वितीयंयःप्रदापयत् सच आयुविजानीया
त् अन्यथाचिंतितेनहि ११३ श्रायामंयदिक्षेत्रं विस्तारंगुणयेषुच ससचिंशतिहरेत्भाग
शेषंस्यात्फलनिश्चयं ११४ फलेमष्टधागुणवेत्नं सप्तविंशतिभाजिते शेषांकेसुतवतुवद्ध
नक्षत्रस्यप्रदापयेत् ११५ अश्वन्याउत्तराफाल्गुन्यो भरण्योस्वात्योतथैवच उत्तराषाढरोहि
ण्यो हस्तचित्रार्द्रयोस्तथा ११६ पुनर्वसुश्रवणयो चैवतथाज्येष्ठविशाषयो अश्लेषपुष
योचेव तत्रैद्वैरद्वयोभवेत् ११७ अन्येषांसमताज्ञेया नारीक्षणमहाबुधः शशंक्षत्वविरो
धनक्षत्र प्रासादसुरवेश्मसु ११८ सत्यासद्वासनेछत्रे यानासनक्रवचेषुच एतेष्वेवस
ह्यज्ञेया वैरतानिविवर्जयेत् ११९ इतिश्रीविश्वकर्मावतारेशास्त्रेप्रकाशितेदीपार्णवमतेः
आपराजितप्रच्छायांप्रथमोध्यायः १ अथप्रसादमंडणमत श्रीविश्वकर्मा उवाच ग
णेशायनमस्तस्मै निर्विघ्नंसिद्धिहेतवे आदगवरीसमद्भुता तेजसेसंभुवाप्यवे १ महाम
इतिजागीता स्विन्नईमुनिसुतमैकरोतिवाणविलासे जीसं सारस्वती २ श्रेष्ठादसूत्रधार

९४

स्य प्रासादविश्वकर्मणा प्रासादमंडणंकुले सुत्रधारेणमंडणं ३ श्लोक ईशी वेदको सिवस्या
स्य ग्रेशिवंकुर्या ब्रह्मणो ब्रह्मणोग्रतं विष्णु । रग्रेभवेविष्णु जैनजैनो शिरोरवी ४ ब्रह्माविष्णुरे
कनाकिं द्वाभ्यां दोषोनदीयते सिवस्याग्रेण देवस्य दृष्टिवेधमहद्भयं ५ श्री विश्वकर्मा उवाच
शिलोपरि भवेद्भीट मेकहस्तेयुगांगुल्ला अर्ध्दांगुला भवेद्वृद्धी जावत्हस्तशतार्द्धकं ६ टीका
प्रासादगज १ भटअंगुल ४ प्रसादगज २ भटअंगुल ४।। प्रसादगज ३ भटअंगुल ५ प्रसादगज
६ भटअंगुल ६।। प्रसादगज १० भटअंगुल ८।। प्रसादगज ५० सुदी अर्धअंगुलरी वृधीदीजे श्लोकं
एकद्वीत्रीणि भिट्टानी हीनहीनानिकारयेत् प्रस्वयोदयप्रमाणस्य चतुर्थंसेण निर्गमं ७ टीका
इतिभिट भटकीटीका प्रथमभट थाद्वया २ या ३ भटजउाई अर्द्ध अंगुलनीनगप्रतं चउउता
र करणं भटकेजउाईकेचोथे भागनीकासेकरनो इतिभट प्रमाणजाणवा श्लोक पीठरो पीट
मर्धत्रिपादांसे रेकद्वीत्रीग्रहेचतु हस्तेत्रिसार्धपंचाशा पादांसो पंचहस्तके ८ टीका प्रसादगज
१ पीट उदेअंगुल १२ प्रसादगज २ पीट उदयअंगुल १६ प्रसादगज ३ पीठउदयअंगुल २४ प्र
सादगज ४ पीटउदयअंगुल २७ प्रसादगज ५ पीटउदअंगुल ३० प्रसादगज १० दसलगेआर्खअं
गुलरी वृधीदीजे प्रसादगज २० लगेअंगुलतीनरी वृधीदीजे प्रसादगज ३६ लगेअंगुल २ वृधी
दीजे प्रसादगज ५० लगेअंगुल १री वृधीदीजे श्लोक नवांशोजाउयकुंभस्य सप्तांशो कर्णकं
भवेत् संतरं सकपोताली सप्तांशा ग्रासपट्टिका ९ सूर्यादिकवसुभागेश्च गजवाजिनर
क्रमात् वजेस्यानेस्यवाकार्या सस्येदेवस्यवाहनं १० टीका कणपीटको प्रमाण कणपीटका
उदाभाग २३ करणा जाडंबो भाग ९ कणीभाग ७ ग्रासपटीभाग ७ कणीग्रासोमाहे थीभा
गदोयदोपलने भागस्योरकीगलतो करणी।। जमेभाग २३ तेवीस पेसाराकीविगत जाणवी
पेसारे भाग ८ कणीपेसारेभाग च्यार ४ ग्रासपट्टी पेसारे भाग ४ रो भतो पेसारोकरणे ९४

तो कणीग्रासेरीयणदलसुं कमजादाकरणी जणीको दोश नही इतिकणपीट प्रमाणजाणवो
गजपीटको श्लोक नवअंगजाड्यकुंभस्यै सप्तअंसीकणकं भवेत् सात्रासकपोताली सप्तअंस
ग्रासपटिका ७ सुर्येदिकवसुभागेस्य गजवाजेनराक्रमात् वजेस्यानेस्यवाकार्या सस्यदेवस्य
वाहनं ८ गजपीटकी टीका जाडंबो भाग ९ कणीभाग ७ ग्रासपटीभाग ७ गजथरभाग १२ अ
स्वथरभाग १० नरथरभाग ८ गजथरनुदेयभाग १२ अश्वथरउदेयभाग १० नरथरउदेय
भाग ८ गजपीटकीउदाका भागजमे ५३ पेसीराकीविगत गजथरपेसाराभाग ४ अश्वथर
पेसारेभाग ३ नरथरपेसारेभाग २ इतिउदो पेसारो जाणवो उदाभाग ५३ कीजे जणीमहा
लिभाग पेसारामेदेणा श्लोक मंडोवराको हस्तादिपंचपर्यंतं विस्तारोणदयंशमं शक्रमा
गावशाद्देशु रामचंद्रगुलाधिकं ९ टीका मंडोवराकी प्रसादपीटगज १ मंडोवरोगज १ प्रसा
दपीठगज २ मंडोवरोउदेगज २ प्रसादपीटगज ३ मंडोवरोउदेगज ३ प्रसादगज ५ मंडो
वरोउदेगज ५ प्रसादगज १० लगीमंडोवरो अंगुल १४ चवदारी वृधीदीजे प्रसादगज २० लगी
अंगुल ९ नवरी व्रधीदीजे प्रसादगज ३० प्रमैलगेसात अंगुलरी वृधीदीजे प्रसादगज ५० लगे
अंगुल ३ तीनरी वृधीदीजे श्लोक एकहस्तादिपंचालं प्रथुत्वेनदयंशमं हस्तेसूर्यांगुलाव्रधी या
वत्त्रींस्तकरावधी द्वीअंगुलाप्रतिहस्तेच जावत्हस्तशतार्धकं १० टीका प्रसादगज १ पीटगज १
मंडोवरोगज १ प्रसादगज ५ लगेचतुरश्रमकीजे प्रसादगज ३० लगें अंगुल १२ बारारी वृधी
कीजे प्रसादगज ५० लगे अंगुल २ दोनरी वृधीकीजे श्लोक मंडोवराकीथरवाडीको स्यादेकवे
दसार्धार्धस्यार्धार्ध अष्टभी त्रिभिः स्याद्वस्याद्ध अर्धभागश्च स्यार्धधुनुषद्विनिर्गम ११ इ
तिप्राकारत्रं मंडोवरोटीका षुरो भाग १ कुंभो भाग ४ कलसो भाग १।। अन्तावदी भाग १।। कपो
तालि भाग १।। माची भाग १।। जांघ भाग ८ उडयो भाग ३ भरणी भाग १।। कपोतालि भाग १।।

अंत्रावरीभाग ।। छाजो भाग २।। छाजो निर्गम भाग २ जंमा भाग २७ श्लोक मंडोवराको वेदवेदें
९५ ईंदु भक्तं तु छाद्यपीठमस्तकान् ११ षुरकं पंचभाग स्यात् व्यसलिकुंभकस्तथा १२ कलसो द्वसार्द्ध
तु कर्त्तव्यं मंतरालकं कपोतीकाष्ट मंचीच कर्तव्या नवभागिका १३ पंचत्रीसपदा जंघा तिथ्या सिलैः
गतो भवेत् वसु भीभरणी कार्या सिरावटी दिसांशका १४ आष्टांशो हकिपोताली द्विसार्द्धमंतरा
लकं छाद्यत्रयं दसंशोमं दसभागो विनिर्गमं १५ टीका मंडोवराकी षुरो भाग ५ कुंभो भाग २० कलसो भा
ग ८ अंत्रावरी भाग २।। कपोताली भाग ८ मंची भाग ९ जंघा भाग ३५ ऊडो भाग १५ भरणी भाग ८ सि
रावटी भाग १० मालाके वाल भाग ८ अंत्रावटी भाग २।। छाजो भाग १३ छाजो निर्गमि भाग १० जं
मा भाग १४४ की जाणवा पेसारा को श्लोक कुंभकस्य युगं सेण स्थावणं प्रवेशका १६ टी
का कुंभो उदे जणीके चोथे भाग थरवाडीका पेसारो कीजे थराका पेसारी की विगत जाणवा संषाबी
रतकी सलाको श्लोक षुरेकनी समं कुर्यो दर्दचंद्रस्य चोछिति द्वारव्यास प्रमं दीर्घं निर्गमं चत
दर्धत १७ द्विभागे अर्धचंद्रं च भागेन द्विंगकौ गारक इसंष पत्रसमायुक्ता पद्मारेरस्य कृते १८
इति अरदचंद्र टीका संषाव्रकी सीलाकी टीका षुराका मथाला बरोबर संरवावृत की सीला का
१ मथालो कीजे साढ़नी वसुवार चोडो वेजणी प्रमाणे संखा व्रतकी सीला राषणी लाबिके अडे
दे चोडि राखणी संषाव्रतका की सीलका भाग ३ करणा जणी मध्ये भाग दोय दोयको अर्धचं
करणो अर्ध अर्धको भाग गगारा करणा गगारा का माहे सुनी कलता थकां संख कमलका
फुलदाडिसयुक्त करणा षुराके अधें डे संषाव्रतकी चोषो भणे देणी इति अर्धचंद्र जाणवा
दुमर को श्लोक कुंभस्याद्र्ध त्रिभागे वा पादही नेतु दंबरे नदकेणाकं मध्ये पीठंतेयाजंभोमि ९५
का उदमं रस्येपा रस्येच साखा पास्त लरूपकं १९ टीका कुंभाके अधें डे नुमर जाडी थिणी
या त्रिजे भाग जाडि राषणी या कुंभका भाग ४ करे णे भाग १ जाडी करणी भाग एक चे

२

रो कीजे उदुंबर के तले चें जाडो उपरें कणी सो भत्ती कीजे उदुंबरको श्लोक उदुंबरं च पात्री व
च साखायास्तल रूपक वीरतं मृदाकियात् कीर्तिबिगत्रद्वयंस्तथा २० टीका द्वारका भाग करणं वे
स्तारकी बरते मंदार भाग ३ठ मरे केगर भकरणो ग्रासडा भाग रा दोही बाजु करणा ग्रासडाके भे
बेले साखा का तलउवने पत्रणा द्वार उदा का श्लोक लिषते प्रासादे एकहस्ते तु द्वारस्या नु सोड
स अंगुले षोडस अंगलका वृद्धी यावत् हस्तचतुर्थकं अष्टहस्तकं जावतु दर्धे वृधी गुणें गुले
द्वी अंगुला प्रति हस्तं च यावत् हस्त शतार्द्धकं २१ अदुनवाहनेपर्यक द्वारंप्रासाद सुमें धामनं
दीर्घं अर्धन प्रचुला स्य शो भितं तु लेक लाधिकं २ एतीउर प्रमाण द्वारका लदो विस्तारकी टी
का प्रासाद हस्त १ दुवार उदेय आंगुला १६ प्रासाद गज २ द्वार उदेय अंगुल ३२ प्रासाद गज ३
द्वार उदेय अंगुल ४८ प्रासाद गज ४ द्वार उदेय अंगुल ६४ प्रासाद गज ५ द्वार उदेय अंगुल
६७ प्रासाद गज ६ चार सुमाउने गज ८ सुदी आंगुल तीन तीनकी उदेय व्रद्धी हीजे प्रासाद
गजे आसु माउने गज पचास ताही आंगुल दोयकी व्रद्धी उदेय द्वार उदाके अडे मे चोडो राष
णो भाग १६ करणा जणी माहे सु सोलसो भाग चोडाई माहे अधिक मेलरागे नागर नाम प्रा
साद का द्वार श्लोक द्वारपालको द्वार दीर्घं चतुरारव्यो स्ये द्वारपालो विदीयते सथंभसी ।
बाटिकं सषत्री भागे व्रदीभाज एते व्रदद्वरीवे दत्रीयुगमद्रक संख्यासाउं गली क्रमात् २३ द्वारपा
लकी टिका द्वारका उदाका भाग करणा ४ जणी माहे यी पोल्यो भाग १ पोल्या उपरे रुपसथे भ कर
णो लथा साध दीराषणी साइती द्वार साषायको पर की नामे संख्या श्लोक पत्रसाषाच गं
दर्वा रुयसंभ त्रिती अकच तु चविल्य वसाषा च संध साख्या च पंचमी २४ इति पंचसाषाकी
टीका साषाका नामकी प्रथम द्वार साषाके भडे प्रत्रसाषा करणी प्रत्रसाषाके भेडे गांद्रवा सा
ष करणी गांद्रवा साषके भेडे रुपसथंभ करणो रुपसथंभके भेडे बल्यवसाषा करणी बल्य
वसाषाके भेडे वसिहथ साषा करणी इति पंच साषा जाणवी पत्र साष मेंचीपकेली तथा

९८ रुपकाग तथासादी दुजीसाखा गाद्वा मेरुपग तथासादी रुपगसथां भमे थां भारो घाटकर णे
अटवाचोरसोराषाजे अटवासस्सोलावास गोलकसउपरेः चोरस्यो समधोले छाजलीमेसरोत
थाभरणो इतिपाचरणो इतिरुपसाथाभकरणो सीघसाखा मेरुपग तथासादी इति पंचसाखा
उणीके भेदे साभनीकरणी तथा मल्लतीकरणी चोतरकद्वारलुकरणी सीहासणकी कटीका
सिंहासणमे अव्या इतोथा दसारी तथा बाराही का तलकरणो जणीमोहथरवाडीदेणी भट
जाउमो कणी ग्रासटीकेवाल माचीजंघा करणी दुजोमान भटकुंभा कलसोकेवालजंघक
रणी दोयमान सीघासणकाजाजाणवी द्रथरवाडी उदामाहे कसोभताकरणा अथ प्रा
साद्का उवाकोश्लोक चतुरश्रीक्रतेयंत्रे दसभागविभाजतेयत् भीतिद्विभागं गर्भ तव्या
टीका घटभागग्रमंदिरं २५ प्रासादकाउमरीकी देई कुणकी प्रसादकी पीटकाभाग १० दसकरणा
जणीमध्येभागदोयका आसारकरणा जणीमधेभाग दोयको ओवरो राखणो जमे भाग १० उव
राअसारसुदी श्लोक कत्रीनी आसेन ग्रमस्ये प्रासाद प्रतिमोत्तमा अमास्योव दसांसानापंचा
गसोनाकमयसी २६ टीका प्रतमाकी प्रसादको उपरोजणीके तीजे भाग प्रतमानुदेयकर
णी प्रत्रमाका भाग दसकरणा जणीमाहेसुंभाग १साबलराषणा भागएकपरोकरणो सोतो प्रत्र
मामध्येमानकहीजे प्रतमाकाभाग पांचकरणा जणीमध्येभाग एकपरोकरणो सोतो प्रतमा
कनीष्टकहीये मान ओवराकेतांजे भाग प्रतमा उदेयहोवे जणीको नाम ज्येष्ट मान कहीजे
इतीतीनीमानक प्रतप्रतमाद्वारमान सिंगासणप्रतमाको श्लोक द्वोयेछुरीयो अनदया भा
गमेकं प्रीतीजतु सप्तत्रीसेद्विभागोभ र्चा त्रीसोनाद्वातो तथा २७ टीका द्वारउदेयहो
वै टीका भागनवकरणा जणीमाहेथी भाग भागयेक दुरकरणो आठमेभाग प्रत
माकी द्रष्ट राषणा असीफलावणकारेने सिहासनउदयकीजे नुभीप्रतमांको प्रमाण ९६
जाणीवा श्लोक प्रासादमे प्रतमास्थापनकणी कोजणीको मधोजसे भतो

८

घायराग्रे सर्वदेवता नहभाग्रे विष्णु ब्रह्मामधे लींगस्वसेवच २७ टीका प्राटभीतीयानीचे प्रतिमा
बुधीवजनहीपाटकीभेफेटवीरेपायणतथा अस्तु आदतस प्रतमास्थापनकीजीये पाटनी
चे प्रतमाबेठेतो अनुत्रजक्षेसमानकीजे गुरुडकी प्रतमाको श्लोक प्रासीदवाहनकणी चतुकी
का गुजनाभीसयनिलंबा गरुडकी द्रष्टी प्रतमाकाबीवा बरोबर राषजे दुजोमानना भीबरोब
रराषजेः तीजोमान गुजबरोबर टनीजररा षणी एतीनमान बिचारेने गरुडको रछायनकी बो
कीकीजे कवलीको श्लोक द्वारस्येदीघणेवा मेकपीली घटवेदा मतो नदुअधर्वे सुषनासस्येस
हीयासादनाप्रासादनासीका २८ प्रासादर्थेन पादेन त्रीभागेवं प्रसादनासिका २९ टीका कव
लीकी प्रासादकी पीटकाभाग दसकरणा प्रथमभार्गतो १० मांहेथी कवलीभाग २ लांबीक
रणी तथा तीजेमानभाग १० माहेथी भाग ४ कीकवलीबीकरणी चोथोमान प्रासादकाभागत्रैके
रणो १० मांहेथीभाग पांचकी कवलीलांबीकरणी प्रासादकाभागत्रकरणा जमाहेभाग १ रीकव
लीकरणीः तथाप्रासादके चोथे भाग कवलीलांबीकरणी प्रासादकामानदंकधाहे जणीमो
हे सुकवलीसोभतीराषणी कवलीको कुणको सुत्र प्रमाण बारलीफेटमे लीबकरणी देव
राका आसार बरोबर कवलीको असारकीजे अथ मंडप कोथाबाकीलगको श्लोक कुंभकेन
समाकुंभी अर्थप्रभप्राणतो उदगमसपाभरणपा भरणंसीरकंगकपोतात्यास मर्भवत्
३० पीठकेकुंटछाद्यस्यकुरज्यानुपेटकं सेघउास्येसयादास्ये सा अर्धेगर्भस्योवीस्रामा ३१
टीका थाबाकी कुंभाकोणर उदयरोवेयहोवे जणीप्रमाणे तलगटोसुधा कुंभीउदयको
जे कुंभीकी चोटजणीसीवायसोभनीकीजे जणीनुपरीथांभोडो उथाकातथा त्योवरोबरथा
भोराखजे भरणीकाथरबरोबर थाभाको भरणोकीजे कोकेवालकाथर बरोबरसीरो
कीजाउोकीजे छाजोमंछामंडोवराको होवे जणीजणीबरोबर पाटजाडोकीजे इतिथांबा

८

९२ कमलगउदेजीकोप्रमाणजाणजे थांबाकी अउाईर्द्का सीलोक प्रासादतद्रा अरकभागेन थंबबी सतासरेतु वेदाअष्टरवींसताख्या कर्णेचमस्तकपंचधा ३२ टीकाथांभाजाडोहकी प्रासाद कदसमेभागथाबोजाडोकीजे इतिथांबाकोमाणजाणी मां हेसोबतोमानजाडोकीजे इतिथां बामान मंडपकोश्लोक पसमंगसीपादंग्रप्रासीदा अरदंसारदपादोन तद्वयंहीगुणंवा पक्षत्र्यंमंडपंपंचधामते ३३ टीका मंडपकी मंडपकापाचमानकहीजे प्रथमतोप्रासादकेअदेढ ज्यारथाभाकीचोकीकीजे १ कोज तथासवायोमंडपकीजे तथाप्रसादथीपुणडुणोमंडपकी जे तथाडुणोकीजे इतिमंडपमान जाणजे ८ श्लोक पालवापरषेडमुंडलीपाहाडको गर्भग्रहप्रमाणांच कथितंचमहामुनी अष्टाअष्टपर्कनव्या चतुर्भागसीवीकृता ३४ एकहस्ते तुप्रासादो तातरंचसा ईजवृदसहस्ते वृधीकर्तव्या एकअर्द्धजवांतिका ३५ रुद्रहस्तेप्रकर्भव्यहस्तेचंजवमानकं तत्रमानसतद्वंच चंद्रतेविश्वकर्मणे ३६ छाद्यवभागद्वयसार्द्ध सार्द्धभागं चपालव मुंडलीवंभागमेक भागद्वयंतीलकंतथा ३७ टीका पालवापाउडंकी तथामुंडलीमीस्ली पाउकी छाजाकाभागतजणीमाहेथी पायचापाउभाग १॥ मुंडलीपाउभाग १ तीलकभाग २ इतिपालवा पाडमुंडलीपाउ तिलककी टिका छजोकसीवरको अधेंपंचांउकोणन्या केसरीनामनंमनन्चरणंक्रमातो वहिजावतदे कुत्रंस्ते ३८ टीका सिघरकीप्रसादकेनामसंषप्रथमेरुपथेइंडक ५ नामकेसरीप्रासाद श्लोक प्रासादकीनामसख्याको केसरीसर्वतोभद्रनंदिनोनंदसालक नंदिसोमंद्रसचैव श्रीवृक्षअमृतोद्रव ३९ हेमवानहेमकस्या केलासप्रथवीजय इंद्रनीलोमहानीलो भुधरोरत्नकूटक ४० बदर्यपदसरोगसा व्रजत्रणेकोभकुटेबल अेरावतोराजहंसो गरुडोदेषकेध्वज ४१ टीका प्रासादकानामकी प्रथमरुपपेलो इंडक ५ नाम केसराजडुजोरुपः प्रासाद २ अंडक ९ नामसर्वतोभद्ररुप ३ इंडक १३ नाम नंदिनोरुप ४ इंडक १७ नामानंदिशालाकारुप ५ इंडक २१ नामनंदिसोम ९२

डुसेबरुप ७ इंडक २९ नामश्रीवृषेरुप ८ इंडक ३३ नामसामृतोद्रवरुप ९ इंडक ३७ नामहेमवानरुप १० इंडक ४१ नामहेमकुटस्यरुप ११ सीरकसीघकासथाधभकोछाद्योतसकंदपर्जत एकवीसतीभाज्यतीअकदीकुलद्रसुवीस्वास्येरुनस्याज्योछनी ४१ टीका सीघकीछाजाकामथालासुमांडनेकनडीकोमथालासुवीभाग २१ इकवीसकरणा भागइकवीसमाहेथीप्रसादकाछाजाकामथाला उपरेभाग नवउपरेसीघकास्थानककीपाटडीदीजे प्रासादप्रासादआगेगुमटी १६ जणीकाभागबवउपरेमेसघमेलनो प्रासादकेआगेगुमय २ हुजणीभागजेतथा १० तथा ११ तथातीनमरपामुभराकोउदोदेषेनेविचारकर संघकोसथापणाकरणो इंडकनेसेघलोपनीकरणोपा २ डीटेकामथालासुनरासीघकामाथादलासुदा टीका सीवरकीप्रथमषीषरी १ तथा २ तीनपुरमीपाजइ पालवापाउदेनोजणउपरेषीषरीडोडीउदेयकीजे पालवापाहउसुजणीषेषरीकेमथालेग्रभउपरेषेषरीदुजीकीनासकउपरेपायचाकोनासक बगणजेषीषरीकापावा २ येचासुंषीषरीडोडीउदेयकीजे दोददोईषीषरीप्रासादका आसार उपरेचडावजे उवरामेपउवानदीजे हुमीषीषरीकगर्भउपरे मुलरेषकोपाथचोटेरावजे मुलरेषकापायचासुओडीमुलरेखाउदेयकीजे मुलरेषकीमथालाकाभाग १० दसकीजेजणीमेभागसाडापाच मध्येसाबतराषजे भागसदादोकोपाउदोहीबाजुकीजे श्लोक रेषाको रेषामुलचदीगभागं अग्रेलत्रनवअेसके सारधासकोरथेकुणे द्वीबेथांभद्रमंस्यते ४३ रेषाकोमुडलीपाउकातलेचाकाभाग १० दसकीजे कनोडीकेतलेचेसंकुदकाभाग ९ नवकीजे जणीमोहथीभागडोउडोउवोकुणभाग १ पडरोभाग १ भद्रभाग ३ पडरो १ कुणभाग १ जमेभाग ९ श्लोक आमलसाराको रथयोरुभयोमध्येवृतआमलस्याकं उछेयेवीसतारा अर्धेनाचत्रभागे इ वीभागत्रयतु ४४ टीका आमलसाराकी कनडीकेमथालेप्रथिरथतथापउराकानासकजाटीपउराकाजणथीवरतो आमलसाराकी फेटकोवरतोपनरजो अमलसाराकावरताका टीका

९८ उदेकाडोडा भाग कीजे कंट उदे भाग १ अमलसारो उदे भाग १ चंद्रस भाग १ उपलोअ मलसा
रो भाग १ जमे भाग ४ प्रासादकी कलसको श्लोक प्रासादस्य घटमांसेना प्रथुलवा कलसाउके
त्रिभाग उघे कलसो द्विभाग विस्तार ४५ कलसकी प्रासादके आठमे भाग कलसजाडु कीजे सी
सीसुदाडोडु कीजे उदे भाग २ कलस भाग १ सीसीजसे भाग ३ इति कलस प्रमाण जाणजे ध्वजा
दंडको श्लोक प्रासादप्रष्ट देसोत दक्षिणे तु प्रतीरथे ध्वजाधर स्तु कर्तव्या इसाने तु निरतो तथा
टीका प्रासादके पछाडे जीमणी भुजाके पडेरी माहे ध्वजाकाम रवोमेलजे इति ध्वजा दंडको।
श्लोक प्रसिपीठमानेन दंडो ज्पेष्ठ प्रकीर्तितो मध्ये हनो दसासेना पंचागसेना कनस्योक ४७
टीका ध्वजादंडकी प्रासादकी पीटप्रमाणे ध्वजा दंड लांबो राषणो जणीकी भवाईका भाग १०
करणः भाग १ लवाइ राषणो सो मधमाण जाणिजे तथा ध्वजा दंडकी भाईका भाग ५ करणा
जणीमाहे थी भाग ४ तो साबन राषणा भाग १ दुर करणो सो तो कनिष्ट मान कहीजे जाणवा
पीट प्रमाणे लंबो ध्वजा दंड राषणो तो जणीको जेष्ठ मान कहीये जाणवो ई तनी ध्वजा दंड
का मान जाणवा इति ध्वजा दंडकी ध्वजाको प्रमाण ध्वजा दंड प्रमाणे नादीर्घ वस्यो नावीतारा नो
नावीस्तिक्वीत्रा धात्री पंचाग्र सुषोतपुमा ४८ टीका ध्वजाको प्रासादकी ध्वजा दंड प्रमाणे
नै ध्वजा लांबी कीजे ध्वजा सवाका भाग ८ कीजे जणीमाहे थी भाग १ ध्वजा चोडी राषणी
नानाप्रकारकी स्वत्रकी ध्वजा कीजे इति ध्वजा प्रमाण जाणजे ध्वजा दंडको पाटलीको श्लोक ध्व
जा दंड दीर्घ षडस्येना मर्कटता अर्धनची विस्तारा अर्धद्र वेद्वीगंगरवा नुधराउछनके
लसस्तथा ४८ टीका ध्वजा दंडके छट भागे पाटडी लांबी कीजे पाटडी लांबी वेजणी अ
दे उ चोडी कीजे लंबाईका भाग ४ कीजे जणीमाहे थी आर दचंद्र भाग २ गगारा भा ९८
ग १ जमे भाग ४ ध्वजा दंडकी पाटली लांबी ढ्वजणका भाग छै कीजे जणीमाहे थी भा ९९

ग १ पाटडी जाडी कीजे पाटडी मान जाणिवा ध्वजा दंड जाडो वे जणीके प्रमाण श्लोक एक
हस्ते तु प्रासादे दंड गपादोन मंगल अर्धअंगुल प्रती हस्ते च जावत हस्त सताईकं ५०
टीका ध्वजा दंड जाडो होवे जणीकी प्रासाद गज १ दंड अंगल १ प्रसाद गज २ डंड अंगुल २
प्रासाद गज ३ दंड अंगल ३ प्रासाद गज ४ डंड अंगुल ३ अर्द्ध आंगुल की क बीरधी गज प
चीस लग दीजे इति प्रासाद पुरुषको सिरको श्लोक प्रमाणं पुरसे आर्द्ध आगुल कुर्या
तकरप्रती अर्द्ध अंगुले भवेत व्रीर्द्ध जावत हस लस ताद्वके ५० घ्रतपात्रेन सोत्त मधे त्रुली
व्रज्यं कसायनं प्रमाणं पुरषस्ये अर्द्ध अंगुलं त्रीत्रीपकताको करवा मेरदी स्तदाक्षीणे रभु ५१
टीका प्रासाद गज १ पुरस अंगुल प्रासाद गज २ पुरस अंगुल १ प्रासाद गज ३ पुरस अंगुल
२ प्रासाद गज ४ पुरस अंगुल २ प्रासाद गज ५ पुरस अंगुल २ अर्द्ध अंगुलकी व्रदी गज ५०
सुदी जाणवी लांबा मुरत भाग १ पेट भाग ॥ कीजे इति प्रासाद पुरुस मान जाणवा प्रासाद पु
रसके जिमणो हाथे कमल हाथै तलीया पेट उपरे राषणो डावा हाथमे ध्वजा दंड ध्वजा सुदा राष
णो प्रासाद पुरस मुरत हेमरी कीजे चंदणको पलंग मुरत सु सवायो लांबो कीजे चीसता रसयो
कीजे मसुरुकी सीरषन्न किया ताबाकी लोटी घ्रतसु भरी पोत्या इमनको स्नान मुरतने करावीजे
पछे गंगाजलसु सनान करावीजे चंदणकेसरसु पुजन करणे पछे मीसरीको नवेद करावजे
प्रासादका मध्य पर्इंड कनेचे मेलणो मुरततो लगज प्रततोला सवा तथा मासा सवा कीजे एक
गज सुलगाय गज १० ताईद स सुलगाय गज ५० ताइ सवा रतीकी व्रधी दीया जाणो इति प्रासा
द पुरस प्रमाण जाणवा कीरतस्तंभकी टीका थंभ हाथ २५ तथा २१ तथा २१ कीजे प्रासादके
डावी बाजु थंभ रोपीजे आट मै अंस भोमी मणो धातीजे तथा छटे अंस भोमी मधे गाडजे
सवाय चोत्रो कीजे अथ प्रासादको मंडप आटबासको जणीको श्लोक तथा सोलवास तथा

गोलवास कायेराको श्लोक षेत्राईस्यै षडासोना क[illegible]सरास । मुद्धे ने तला श्री षेत्र षलभाग
त्व प्रषडासेन संकुल ५२ तीका मंडप ऋअरद्वास तथा [illegible] वास तथा गोलवास की मंडप कीचोर
साई वेज णीका गर्भका अरदेडाको भाग ६ करणा जणमाहे थी भाग एक परो करणो भाग पांच
साबतराषणा जणीमाहि भाग पांचको अठ वासको पषआयो दुजो मामान सोलवासको टी
का आवीचोरसाई जणीकी एकबाजुका भाग ६ कीजे जणीम धे भाग १ परो कीजे भाग पांच रो
अर्धकीजे तेअठीसे वास आवे ~~[illegible]~~ सोळवास श्री विश्वकर्मडियाच प्रास
दे देवतान्यासं स्थावरे सुपृथकू पृथकू खरशिलायवाराहं पौत्यनागकुलानिच १ प्रकुंभे ज
लदेवास्य पुष्पके किसुरास्तथा नंदिनं जाडकुंभश्च कणि ल्पस्थापयेत् हरि २ गणेशं गज पी
टेच अश्वपीटे तथाश्विनौ नरपीटे नराश्चैव क्षेमाचषुरकं जपेत् ३ भद्रे संध्यात्रयं कुंभे पार्व
तीकलसे स्थितां कपोतास्येच गंधर्वा मंचिकायां सरस्वती ४ जंघायांच दिशापाला निंद्र मुद्गम
संस्थिता सावित्री भरणी देशे शिरावट्यांच देशिका ५ विद्याधरीच कपोताली मंतराले सुर
स्तथा पर्जन्यं कुटछाद्येच ततो मध्ये प्रतिष्टयेत् ६ चारवयोश्चंद्र सूर्यश्च त्रिमूर्तिश्चोतरांग
के उदुंबरे स्थितो यक्षः मस्विनामर्द्धचंद्रके ७ कोलिकायांधराधारं क्षितिश्चोत्तेन पटके स्तं
भतेइ पुलिकांभडे[illegible]सांचकरोदके ८ मध्ये प्रतिष्टयेदेव मकरे जान्हिवितेथा शिखर
स्योरुश्रृंगेषू पंचपंच प्रतिष्टयेत् ९ ब्रह्मा च[illegible]
रदेवं शिखायां तु सुराधिपं १० ग्रवयाम मरदेव मंडपे च निशाकरं पद्माक्षं पद्मपत्रे च
कलसे च सदाशिवः ११ सद्यो वामस्तथाघोर तत्पुरुष इस मे वच कर्णादिकाद्र पर्यंतं पं ९८
चगोतिन् प्रतिष्टयेत् १२ इति स्थावरप्रतिष्टा ॥ ॥विश्वकर्मा चतुर्बाहुः अक्षमालाच

१०१

पुस्तकं कांबा कमंडलुध[illegible] ध्यानं जयश्च विजयश्चैव सि
द्धार्थश्च अपराजितं चतुर्थ विश्वपु[illegible]न लिंभवेत् २ ढुलिडसति दक्षणे
देशविख्यातो क्षेत्रस्य त्रींबकेश्वरं त[illegible]थानमाणेरा[illegible]स्य अत्मजं केशवं भवेत् ३ गोड
ज्ञाते जयवंशश्च गोत्रयं टटवाडक [illegible]थानिमत्[illegible]र्थंच विश्वकर्मा प्रसादत ४ कर्मः
संध्यात्रय प्रकुर्वंति स्नान ध्यानादि तर्पणं वैश्वदे[illegible] बलिदानं षटकर्मस्य शिल्पिनं ५
शिवार्चनरतो नित्यं जपहोमादि कर्मसु एवं विधा केयाख्याता शिल्पिनाश्च वंशकरे ६
विश्वकर्मा परायष्टो तद्दामादौच शिल्पिणं बुधिदाश्रीणि संजाता ब्रह्मा विष्णु शिवात्मकः ७
इति श्री विश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारदपृच्छते संपूर्णसमाप्तं यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं
लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा ममदोषो न दीयते ८ शास्त्राणां व्यासवक्तानां लेखकोग
णनायक तस्या पिचलिता दृष्टि मानसानां चका कथा ९ भग्नपृष्टिकटिग्रीवा स्तब्धदृष्टि
रधोमुखं कष्टेन लिखितं ग्रंथं यत्नेन परिपालितं १० जलाद्रक्षे स्थलाद्रक्षे रक्षे शीतल
बंधनात् मूर्खहस्ते न दातव्यं एवं वदति पुस्तकः ११ निर्वैर कुलवानश्च शांतिश्च बु
धि निर्मलं गुरुभक्तिरता नित्यं तस्य विद्याच दियते १२ शाके १७ १८ नळनाम संवत्स
र माहे श्रावण शुद्ध ७ बुधवासरे तद्दिने समाप्तं ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ ॥

१०० श्रीविश्वकर्माउवाच आनंदयोगणेशाको ... पसौख्यं मारोग्यलं गृहेसदा १
देवंनमामिगिरिजात्मजमेकदंतं सिंदूरचर्चि ... ...द्रमदिततनूनमसिद्धिबुद्धि सेव्यसुरोर
नं२ गरैसकलार्थसिद्धिः २ याब्रह्मादेरल ... मुन... ब्रह्मपुत्री शिवाद्या ब्रह्माविष्णुश्चतस्रः प्रणम
तिबहुशोयः सदानंदरूपी वाणीचेतन्यरू ... ...तेचसर ... प्राणनिद्रा ...धात्रिदूसा नित्यंसुप्रसन्नविते
रतिविभवंविश्वरूपाचलोके ३ कंबासू ... ...त्रंच हस्तकरतले पुस्तकं ज्ञानसूत्रं हंसारूढ त्रिनेत्रो शु
भमुकुटशिरः सर्वतोवृद्धिकाया त्रैलोक्य ... ...त्रेष्टः सकल---गृहं राजहर्म्यादिहर्म्यं देविसोसूत्र धोरा
जगद्खिलहितं पालयोविश्वकर्मा ४ अर्थः तेसूत्रधारदेवये विश्वकर्माते पानुवकहेताजेलमनिरक्षाक
रो तेकेहवाछे एकहाथनेविषेकांबिगजसूत्रदोरी धरताछे बीजेहाथेजलपात्रधरताछे त्रीजाहाथ
नीविषेपुस्तकधरताछें त्रीणनेत्रछे रूडोमाथेमुगुटछे सदूथकीमोथटोसरीरछे सर्वदेवानोघरमा
गैराजगृह देवभूमिनोघरतथा त्रिलोक्यजेतेसर्ज्यूछे जगनेनोहितकारि विश्वकर्मारक्षाकरो ४
श्लोक स्त्रीपुत्रादिकभोगसौख्यजननंधर्मार्थकामप्रदं जंजूनामजनंसुखास्पदमिदं शीतांबुधर्माप
हं वापीदेवगृहादिपुण्यमखिलंगेहात्समुत्पद्यते गेहंपूर्वसुशंतितेनविबुधाश्री विश्वकर्मादयः ५
अर्थः विश्वकर्माआदिदेईनेविबुधजेपंडित तेकारणमाटि प्रथमघरकरवालेकहेछे प्रथम
देवग्रहप्रसादए सर्वतोउपजे पणजेघरहोइजे घरकेहबूं स्त्रीपुत्रादिकभोगसौख्यउपजावे धर्मअर्थ
कामनीआपीप्राप्तिनेविश्रामथानकहे सकलसुखनुस्थानकछे एहवुपेहलुंघरकहेछें ५ श्लोक
सिद्धौगृहारंभमुशंतिवृद्धा यथोक्तितेमासविलक्षपक्षे सशांकवीर्येसुदिनेनिमित्ते सुभेरवौसौम्य
गतेप्रवेशं ६ अर्थः वृद्धजेआचार्य तेउचितमासनीबीचैघरनोआरंभ सिद्धिनेंअर्थकहेछें मासश्र १००
ग्रेकहीसुं शुक्लपक्षमाहेंचंद्रमानुबलहोई शुभदिनेशुभशकुनीग्रहारंभकीजे सूर्यउत्तरा
यणनोहोई ताहरिमुहूर्तवीजे ६ चैत्रेशोककरंगृहादिरचितंस्यात्माधवेर्थप्रदं ज्येष्टे

श्लोक

...मृत्युकरोरक्तवीपशुघ ... ...दिश्विनकिलकच्चतुस्त्रयंकार्तिके
धान्यमार्गसहस्यपो... ...अर्थः॥ चैत्रमहिनेघरकरेतोसोक
उपजें॥ वैशाखमास कर ... ...मासेकरेतोमृत्युहोए॥ आषाढमाकरे
तोपशुनोनाशकरे॥ श्रावे ... ...थाये॥ भाद्रवामांकरेतोशून्यरहे॥ आ
श्विनमाकरेतोकंकाशउपजे॥ का... ...भाईसेवकनोनासथाए॥ मार्गशीरमाकरेतो
अग्निधयापोषमांकरेतोधनधान्यनाशहोए॥ माघमासेअग्निथकीभयउपज॥ फाल्गुनमां
करेतोलक्ष्मीनीवृद्धिहोय श्रेयउत्तमः॥ ७॥ श्लोक॥ ... दिसिदुरि कर्कमकरघटेगोखदी
इंशत्रयं... कत्तिमंतुलमेषवृश्चिकवृषेयाम्योत्तरास्यंतथा॥ द्वारंचिन्तयाकरोतिक्रम
तोऽन्यथामरणस्तदा॥ कंन्यामीनधनुर्गतेमिथुनगेवास्यिन्नकार्यंगृह॥ ८॥ अर्थः॥ आदि
त्यजेसूर्यतेहवारमाहवीपश्चिमबारणानुघरनकीजे॥ अ...नेतुल१मेषरवृश्चिक३वृषभ४ ए
रासेंसूर्यहोएतेवारेदक्षणउत्तरबारणानुघरकीजें। अनेएकसाप्रमाणनचालितोध
ननोनासकरें॥ अनेकंन्या१मीनरधन३मिथुन४॥ एसंक्रांतीमांहीधरहारेनहोए नहे॥ ट
॥ श्लोक॥ कन्या दित्रिषुपूर्वतोयमदिशात्माउपचचापादिने॥ द्वारंपश्चिमनहसकेजलच
रात्सोम्यारवीयुग्मत॥ युग्माधेसमुखंदिशाः स्तव्वनंद्वादीश्चकंशानिस्तत॥ सिंहेचापिष्ट
षेचूरश्चिकघटेयातोदितंसंचित॥ ९॥ अर्थ॥ कंन्या१तुलरवृश्चिक३एसंक्रांतिमाहे
पूर्वेवत्सनुमुखहोए॥ धन१मकररकुंभ३॥ एसंक्रांतिमांहे दक्षणदिशावत्सनुमुखहो
ए॥ मीन१मेषरवृषभ३॥ एसंक्रांतिमांहे पश्चिमदिशावत्सनुमुखहोए॥ मिथुन१कर्कर सिं
ह३ एसंक्रांतिमाहे उत्तरदिशावत्सनुमुखहोए॥ वत्ससन्मुखघरद्वारनकीजे॥ अनेव

१०१ सपीर कोहोएतो आयुक्षयकरे [illegible] आरसं कांतीमां आस
दिशा द्वारकीजे ॥९॥ श्लोकः ॥ [illegible] धोद्भवैवन्दिन्दे ॥ चित्रा
स्वातिन मध्यगा निगदिता प्राची [illegible] ति नयैमरं दिग्भुजमर्थ
क्षयं ॥ हर्म्ये देवगृहे पुरेषु नगरे मा [illegible] ॥ विबुधजे पंडिते गि
पांचप्राची उगमली दिशा कहीछे ॥ तेकोण [illegible] सूर्य आवे ते दिवसे जे दिशाइं उगे
ते प्राची ॥ १ ॥ अथवा उगतो सूर्य आवे जे दिशाए सूर्य उगे ते प्राची ॥ २ ॥ अने श्रवण नक्षत्रे जे
गाम उगे ते प्राची ॥ ३ ॥ अने कृत्तिका नक्षत्रे जिहां उगे ते प्राची ॥ ४ ॥ अने चित्रा स्वाती नक्षत्र मां
जे दिशा उगे ते प्राची ॥ ५ ॥ ए पांच प्राची कह्या ॥ प्रासाद घर नगर एत्लाकाममां ॥ ए दिशा मुख की
जे तो अर्थ क्षय होए ॥ अने देवग्रह ए दिशा उपर होए तो धननी आउषानी हानी होए ॥ १० ॥ म
॥ श्लोकः ॥ तारे मर्कटि ते ध्रुवस्य समतेनि ते बलंबे नते ॥ दिग्भागे ए तदेकलस्य कथितं सू
त्रेण सौम्या दिशा ॥ शंकुनेत्रगुणेन मंडलवरे छाया त्रयन्मुर्डयो ॥ याताय त्रयुती स्वशंकुत
लते तारस्फुस्फुटिकदयं ॥ ११ ॥ अर्थः ॥ ध्रुव कि मार्कटि तारा ते ध्रुवध्रुव उपर आवे त
यारे ठलआवि ॥ ताहरि बीजु तारा उपर लंब जालीए ॥ वलता अलगा दक्षिण दिशा दि
पके करीने तां लंब विधीये ॥ ते बिंदु गामे दिवाने गामे दक्षिण जाणवी ॥ अने लंबनी गमे उत्त
रजाणवी ॥ तिहां हाथ पूरे रस्त कीजें ॥ ते हवे संपाने सर्वे पश्चिम जाणवी ॥ अथवा सो लआं २१२
गुलनुं वृत कीजे ते मध्ये बार आंगुल नो शंकु थापीजें ॥ ते शंकुनी छाया हेत मांहे जिहां
पेसे ते पश्चिम जाणवी ॥ अनी शंकुनी छाया जीहां नीसरी ते प्राची जाणवी ॥ ते छाया थवे
रानी गामी झोलो राषी मध्य कीजे ॥ ते दक्षिण उत्तर जाणवी ॥ ११ ॥ श्लोकः ॥ रासीनाम लि

मीनसिंह वृषवने श्रुवे घु [illegible] एयाम्पानन मंदिरं ॥ रासेधन्यकु
लोयुगस्य सदनं सत्तपती [illegible] कं म्पानन स्पाछदं ॥ १२ ॥ अर्थः ॥
वृश्चिक मीन सिंह एत [illegible] कन्या कर्क मकर एतीन राशीकुंद
क्षिण धुर द्वार उत्तम ॥ धे [illegible] रुजगोषु [illegible] म द्वार उत्तम ॥ वृषकुंभ मेष एतीन
राशीकुं उत्तर दिशा द्वार उत्तम ॥ १२ ॥ श्लो [illegible] नए भूमि काव घृतवरुधा शुनस्वा
दिनी ॥ रक्ताम्रोणितगंधनी चन्द्रपती भूस्व [illegible] सा ॥ स्वादीग्नातिले ते लगंधदादिता पीता
चवैत्र पामदी ॥ कृष्णाम्र सस्तगंधनी च कटुका शूद्रे ति भूलक्षणं ॥ १३ ॥ अर्थः ॥ धोलीधरती
होए घृत सरीषो गंध होय ॥ स्वडो स्वाद होए ॥ ते ब्राह्मणनी भूमी कही जें ॥ रातीधरती होए लोही स
रीषो गंध होए ॥ कसायलो स्वाद होए ते क्षत्रीनी भूमी जांणवी ॥ जे भूमी पीली होए ते तेल सरषो गंध
घहोए ॥ स्वाद षाटो होए ते वैश्यनी भूमी जाणवी ॥ जे भूमी काली होये माछला नो गंध कडवी होये ते
शूद्रनी भूमी जाणवी ॥ ए भूमी लक्षण जांणवुं ॥ १३ ॥ श्लोकः ॥ स्वादे च वेद्या मधुरा शिलाना ॥
चतुर्थवर्ण सुमदि प्रशस्ता ॥ सर्वान्विता सुवनजेगयो यौस [illegible] द्वितीयास्तु विडाल योषी ॥ १४
॥ अर्थः ॥ जे भूमि स्वादे मधुर होए ॥ वली उजली होए ते भूमी चार वर्णनी [illegible] क्षत्री
२ वैश्य ३ शूद्र ४ ए च्यारे वर्णने उत्तम ॥ गृहाय गृपं ॥ तथा जे भू [illegible] विषे [illegible] क्रह
ता किलीयो अने सर्प ॥ ए देवी स्ने ह होए तो उत्तम ॥ जे भूमी विषे मुषक [illegible] मांजार [illegible]
हहोए तो भूमी मध्य श्रेष्ट ॥ १४ ॥ श्लोकः ॥ परिहृताया [illegible] वर्णसमं
वंडि कयासमेतं ॥ देवाधिपं चाष्ट दिशाधिनाथं ॥ सपुष्प धूपे [illegible] मुखाया ॥
॥ अर्थः ॥ भूमिनी परिहृता कीधा पछि ते भूमी ने विषे अधिका सहित गणेश नी स

१०२

जाकीजें॥ पछेक्षेत्रपालनीस्त्राक … इंद्र अग्नेयमराक्षसव
ण वायु सोमईशानस्त्रा करवी॥ … करीस्त्रा करवी सबने
आरख्ये॥१५॥श्लोकः॥ स्वातेश्रं … ॥हीनदीनफलंस
मसमफलंतान्योरजोवर्धितो॥ … सके १६ स्वोपरिक्षुंपुनः॥ पादो
नहीविहीनकेयानिश्रतेमध्यंचम … मीपरिक्षाकरवी॥ एकहाथ
ऊंडुंबवेखणिए॥ पछेमाटीमध्येस्त्र देव … ओछीथायतोमाठुकहेवुं॥ संपूर्णथायतोम
ध्यमफल॥ वधेतोघणुंउत्तमफलजाणवुं॥ पछितेहनेपाणीएभरीए॥ पछेशत१००
पगलांजईपाछाआविए॥ वीयोआगमथवा ऊंगुळजसोस्युंहोयेतोमध्यमफल॥ अ
नेबार१२अंगुळसोस्युंहोएतथाअस्युंजरहेतोईष्टफलहोए॥ १६॥ श्लोकः॥ अग्नेःज्व
लनंवशंकरकफुपसोम्याश्रितेराक्षसो॥ देवक्षेत्रयदंयमेयमरणंचौराक्षयंराक्षसे
वायव्येभ्रवनंनधामरुरणंस्फासोदकंवारुणं॥ विप्रादिरनुपर्णैनस्पसुखदंस्वष्टिकं
मासौम्यतः॥१७॥ अर्थः॥ महिलानीभूमीनोपाणीजलहवेदिशानेउत्तरेकहे॥ अ
ग्निकोणजलपाणीनोहोयेतोअग्निभयकरे॥ दक्षिणदिशामरणकरे॥ नैऋत्यकोणे
चोरभयकरे॥ वायव्यकोणेधनधान्यनोनासकरे॥ पश्चिमेसोककरे॥ इंविब्राह्मणनीउत्तर
जलकहे॥ क्षत्रीनेउगमणेजलकहे॥ वैश्यनेदक्षिणजलकहे॥ शूद्रनेपश्चिमजलक
ह्यो॥१७॥ श्लोकः॥ अग्नेयराक्षसवायुऋंकरदिशास्थापयेक्रमात॥ लतिकाअस्पस्पास्वि
दिशाशरीषकंकनामृषाक्रमेणद्विजा॥ वर्णीनांकुसुमंजकांशाशाणंजेस्तक्रमातस्तृ
णे॥ निम्नांम्रःस्फुटितोषराविवेलेतास्वल्पेयुतानोशुभा॥१८॥ अर्थः॥ बीला४अ १०२

ग्निकोणे॥ नैऋत्यकोण … रषीलायापवा॥ पछेच्यारव
र्णनाच्यारषीलाका … त्रीनेखेरना२॥ वैश्यनेसरस
डाना३॥ शूद्रनेब्र … इत्यादिनीदोरीकरवी॥ क्ष
त्रीनीमुंजनीदोरी॥ वैश्यनीकपासनीदोर … स्तत्रणकरतांखीलादोरीकरे
इ वेनीचीनमेंहोय॥ तथाशल्पसुरूकहोए … नोविघ्नंघरनकरवा॥१८॥ सोकः॥
प्रसस्त्रयंवापयरुधिपेन॥ देवस्यहृषस्यफ … वापी॥ वाकंदिकोष्टेषडंतत्तेन॥ श्रिम
स्यावलोकनवनेसुस्ट्श्रु॥१९॥ अर्थः॥ घरनाधणीपेदेवनुनाम॥ तथाहष्टदेवनुतथाफ
लनुनामलेवराविए॥ पछेजेनामलेतेविचारअर्थेकहेछे॥ कोठानवकरवा॥ तेमांदिशा
स्पजोवु॥१९॥ सोकः॥ बाकाचाजयरुसापायवर्णो॥ प्राच्यादिशोकोष्टकेशाल्पमुक्तोके
शगमराकाष्टलोहास्थिकार्थं॥ तस्माकायसोधनंभूमिकाया॥२०॥ अर्थः॥ उगमणकोठ
ार्थीशाल्पलखवुं॥ आठवर्ग लिखिनीनवमोवर्गवचेलखवो॥ तेवर्गकहेछे॥ अइउए१॥
कखगघङ२॥ चछजझञ३॥ टठडढण४॥ तथदधन५॥ पफबभम६॥ यरलव७॥ सष
सह८॥ एऐओऔ९॥ एनववर्गनवकोठामांलखवा॥ पछेनामलेव
राविए॥ जेअक्षरजेकोठामांआवेतेठामशाल्पजाणवुं॥ केसला
कडुलोढुंहाडकुंइत्यादिकशाल्पजेहोएतेकाढवुंतेवारेभूमिशो
धनथाय॥२०॥ श्लोकः॥ शाल्पंजयेन्तुयगवांरुयानां॥ स्तजोस्तनो
त्रोकलरुपणसो॥ खरोष्ट्रयोर्हानिमयत्सनानां॥ लणमजस्य
कलयंतनोति॥२१॥ अर्थः॥ घरमांगायनहाडहोयेतोतेनका

१०४

१०३ ठेतोराजानोभयउपजे॥ श्लो क [illegible] स्थारु तथाउंभ्रुसेन
काढितोलक्ष्मीनीहाएए करे [illegible] होए॥ नकरानुन
काढितोअगनीनुंभयउपजे [illegible] संपवी दिसदष्टिक्रमात्
खातंवास्तुचपुदिशाप्रजगतो [illegible] स्य मुखं स्थादि भयदं उ[illegible]
सौख्यदं॥ सर्वथाग्रखननंसिरो देव [illegible] स्करवं स्पार्श्वयो॥ [illegible]॥ अर्थः॥ कंन्या१ तु
ल२ वृश्चिक३॥ एत्रणसंक्रांतिमानाग [illegible] उगमणुहोए॥ तारे ति नदिशाभ्रगरहे॥ ई
शानेशिर॥ अगनिकोणेपीठ॥ नैरूत्येपुछ॥ वायकोणेस्थन्य॥ धनमकरकुंभ॥ एतीनसंक्रांति
मांअग्निकोणेशिर॥ नैरूत्येपेट॥ वायव्यकूणेपुछ॥ ईशानेस्थन्य॥ ईशानेस्थन्य॥ मीन१॥ मेष२॥
वृषभ३॥ नैरूत्येशिर॥ वायव्यकूणेपेट॥ ईशानेपुछ॥ अगनीकोणेस्थन्य॥ मीथुन१॥ कर्क२॥ सिंह३॥
वायव्यकूणेशिर॥ ईशानेपेट॥ अगनीकोणेपुछ॥ नैरूत्येस्थन्य॥ तिवारेनागसन्मुखघरद्वार
नकीजे॥ भयउपजे॥ शिरअगलखातकीजे॥ तोदुःखउपजे॥ पेटेपणनकीजे॥ पूछेपणनकी
जे॥ अनेंदडीएकुषेषातसुषउपजाविं॥ २२॥ श्लोकः॥ भाद्यानागमुखेंबुध्धे निर्गदिताश्व
श्विनेकार्तिकेमार्गेत्फाल्गुनशुक्रतः क्रमतया याम्योजलेदोत्तरे॥ क्षेत्रेष्टरविनाजितेदि
नकराद्धाराल्लिखेत्कोष्टगात्॥ शम्यंगारतयोश्चतत्रफणिनःशरीरकंनोखनेत्॥ २३॥ अर्थः॥
भाद्रपद१॥ आश्विन२॥ कार्तिक३॥ एतीनमासेनागनुमुखपूर्वदिशाहोए॥ मार्गशिर१॥ पोषर
माघ३॥ एतीनमासेनागमुखदक्षिणदीशाहोए॥ फालगुण१॥ चैत्र२॥ वैशाख३॥ एतीनमासेप १०३
श्चिममुखहोए॥ ज्येष्ट१॥ आषाढ२॥ श्रावण३॥ एतीनमासेउत्तरदीशामुखहोए॥ तेनागनुश
रीरकहे॥ क्षेत्रजेअसीतेदनाआगेआवे दृष्ठतेदनाकोगकीजे॥ उपरसर्पनोआकारकी

जेतमाहिमे [illegible] ष्ट पुछहोएतेदिशोमूर्कनि
अखरादिशारखा [illegible] क॥ शिर्षमात्रिपित्रहृय
प्रथमतोखातोस्जं [illegible] पुत्रधान्यादिके॥ सवीसेनीलखा
तनंयसन्मुखकीतं [illegible] नेसौम्येखनेनैरूते॥ २४॥ अर्थः
शिरउपरखातखए [illegible] तो पितामाता [illegible] तारुएपधाय॥ पुछेकीजेतोरोग
थांय॥ अनेकुषेखातकीजेतो॥ पुत्रपुत्री [illegible] थाय॥ उगमणुसुखहोयतोरेखावो
रवीलीथापीए॥ दक्षिणेमुखईशानकोणेखात॥ प [illegible] ममुख अग्निकोणेखात॥ उत्तरेमुखनैरूत्ये
खात॥ २४॥ श्लोकः॥ दक्षिणकोणेस्थवेविनामेसुजिनंदवेशिलासमर्प्य॥ स्थाप्यानेषशिलादक्षि
णंस्तंनसमर्प्यविधिनान्पेत॥ २५॥ अर्थः॥ अग्निकोणेस्जाशिलानिकरीक्षेत्रपालनीपुजाकरी
समीचोरिशिलास्थापिये॥ अनेबीजीशिलादक्षणमार्गेथापवी॥ स्तंभपणएमजथापिये॥ २५॥ श्लो
कः॥ नीतेमूलंस्थापनीयंजलांतेपाषाणेवादेमरत्नंचगर्भे॥ शीर्षेउर्वलेपदीनाधिकंवा॥ संधिःश्रे
णीपादहीनायताने॥ २६॥ अर्थः॥ नीतीनोपायोजलमादे॥ अथवापाषाणनीविषेथापियेति
हांस्कवणपंचरत्नसहितसुवर्णमुकीउपरशिलाथापिये॥ तेउपरबीजीशीला अथकीमोटीथापवी॥ च
नायीसंयुक्तथापवी॥ २६॥ श्लोकः॥ भुवनपुरसुराणांसूत्रणेसर्वमुक्तं॥ कथितहृष्टपिस्वांचगे
धनेचद्वितीये॥ तवनुमुखनिवेशेस्तंभसंरोपणेस्य॥ कूवनवसनकालेपंचधावस्तुयत्ना॥ २७॥ अर्थः
घरतथानगरदेवालयएहनीसूत्रनाकरतावास्तुस्जाकरवी॥ एबीजोवास्तुभूमीशोधनकीजे
तिहारपछीद्वारचारवामांडतआजीजो वास्तुकीजे३॥ पछेस्तंभरोपतांचोथोवास्तुपुजवो॥ वली
उदयाभुनकरतापांचमोवास्तुपुजवो॥ एपांचवेकाणेपांचवास्तुपुजाकरवी॥ २७॥ श्लोकः॥ ॥ १०४

१०४ रुहा दुग्धस कंटका अफलि [illegible] तीतथा केतकी
जायादूर्षीमत्रोगकरुहसरूजा [illegible] जे चंडा कृत्रि
त। २८॥ अर्थ॥ एटला रुह [illegible] तथा दुधालो म
होए। वडपीपलोपीपर जे सर्व [illegible] ध्या येलेनराषीए
रुवे वा पोपाडल के वडो जाय के [illegible] रूपरुह उपरां [illegible] रुनीतथा ब्रसाग
नीछायाघर उपर पडी ते मध्यम ति [illegible] ब्रह्मा नारदरुतातथा विष्णु। तथा सूर्य ना
तथा महादेवका तथा जैनना। [illegible] प्रसाद समीपे घरन कीजे ॥२८॥ श्लोक॥ स्म
दुग्धरुहाद्विएस्पनाथ्यं ऊर्वं तिते कंटकीनो रत्री तं॥ हजाविनाशं कलिनं [illegible] पी पे रुहस्य व
र्ज्यांकूलधौतपुष्पा॥२९॥ अर्थ॥ घर आगलि रुह दुधाला होए ते द्रव्यनो नास करे॥ अने
घरपासि पीला फूलना रुहवर्जवा॥ अनेफल होए ते संतान नो नास करे। २९॥ श्लोक॥ दुष्टे
स्तत्समाश्रितो पि विटपी नो छिद्यते शक्तितः॥ सल्लिंच वसमी मत्रोग कबकुलो पुन्नागसा
चंपको॥ कम्हापुष्पयमंडपंचतिलकानकंधपाचजे हाडिमी॥ सौम्पा दक्षनरोक पीनन च
टावौ दुंबराश्वेतको॥ ३०॥ अर्थ॥ दुधहरूहे स्त्री सेवी तहोए। एह वे जे रुहते बलात्
कारि काढणा नहीं॥ खेजडो आसोपालव बोरसडी। देवदार चंपो॥ एह रुह घर आगल थी म
वीचारी काढणा॥ बलीघरे रुह द्राष श्वेत फूलनारुह। तिलक रुह वावी इंपीपरी हाडीम वावी
इं॥ घरथकी उत्तरा धो रुह कवीनो वावीये। उगमणे वड वावीए॥ दक्षिणे उबरो वावीए १०
३०॥ श्लोक॥ असंगनामा त्रिमुखप्रवेशः स्या त्सष्टिरंगो भवनस्य चष्टान॥ विनाशहेतु कथितो
पि सव्यस्तष्ट प्रशस्तो भवने विलस्यै॥ ३१॥ अर्थ॥ घरसाहमो प्रवेशने उआंगप्रवेश क

हियेउ [illegible]
अप्रवेश [illegible] म॥ अपशयप्रवेशते विनाश करे। स
नाम्यावर्त [illegible] ने काय को वहएए दक्ष व को अवे शरष्टितो
प्रागवके [illegible] नर वारुनाम्नि वदनः स्पष्टः पथानि र्मित
होएते [illegible] तव। यकाहिए॥ अने [illegible] ॥ अर्थ॥ घर नो आश्रम ए मुखे प्रवेश
होये [illegible] मे ए मुखे प्रवेश ते हवे वाह्य कह [illegible] वाम वर्त कहीइं। तेह नु नाम हीनवाह्यक
को [illegible] नी विषे नगर ने विषे प्रवेश करा करा कहीं छे। [illegible] षवेशते अन्तर वाह्य कहीइं॥ एम्मारख
तः पर्वे [illegible] कं त्रि मात्रं। मात्रा एंषए यवामामुस्या [illegible] मलितानि स्त्व हा मुत्तमानं॥ पुष्पे चत्वारि स
र्वत स्नु च वित्त वोदंगु लेः स्वर्व पुष्पे॥ निर्यंथिर रुक काष्टमधुरा अदित खादिरो वंशाधातो॥ ३३॥
॥ अर्थ॥ हाथ जे गजते मध्ये आठ पर्व कीजीये। एह बुं मुन्ति वरे कह्यु छे॥ एक पर्वमाही त्रिण
मात्रा करवी॥ मात्रा ते लवहि [illegible] दित उत्तम कहे ते॥ मोटा इयव ने उदरे थाए॥ प्रथमसार रुह पुष्पे
गजवे रुहे॥ पछी ते मध्ये आठ पर्वे पुष्प कीजे॥ इम चोवीस पुष्प करवा॥ तेगजर तांजणीनो॥ त
थामहूडा नो॥ षेरनो। वासनो। धाउनो॥ सोना १ रूपा २ त्रां बा ३ पीतल ४। एगज बोल्या छे॥ म
३३॥ श्लोक॥ ज्येष्टोऽष्टाभिरथो दरेरस्तु मुनिभि मध्यस्तु षड्कन्य सेः। याम्या चोत्तम के न याम
वेनवयन स्त्राणा नाम्ना दिकं जो अनं॥ प्रासादं प्रतिमेन्द्र पस्य भवने मध्ये नवम्यादिकं। जानं षड् जव संच
संच्चंगु लथाय। ते जेष्ट हस्त जाणवो॥ मुनि कहेतां सात यवे अंगुल थाय। तेहवा चोवी १०५
स्यां गुलथाय। तेजेष्ट हस्त जाणवो॥ मुनि कहेतां सात यवे अंगुल थाय। तेह वा चोवी

१०५ सत्रांगुलथायतेमध्येश तरुस्तजाणव ... ग्रुल
थायंतिकनिष्टजाणवो॥ रु वेज्येष्टगज ... त्रैमाप
वा॥ ग्रासादस्तातिभारा जयरु इत्यादिम ... उत्तम्मा
युध एल घुरु स्तेभापवा॥ २४॥ श्लोक ... ॥ विपयः
सोम विष्णुः पुष्पैर्देवा मूलतो स्मि ... त्पश्माग्नि वो दो वेमजे॥ २५ ... सूर्यः
मूलथकीमांडीनिष्मा ठ कलनादेव ... नो॥ एनव देवते ... नुक्र
दिवता॥ पिहलाहलनो वायु १ बीजाम ... विश्वकर्मा २ त्रीजानो ... चोथा नो ब्रह्मा
४॥ पांचमानो काल ५॥ छठानो वरुण ६ ... सातमानो सोम ७॥ आठमानो विष्णुः ८॥ बलीमध्ये
पर्वथकी पांच अंगुल आठ अंगुल बार अंगुल अंगुले ते दोन भागे तिन भागे चार भागे विंचवा॥ २५॥ श्लो
कः॥ इत्रोग्नि मारुत विश्वकर्म विधय सूर्य ब्रह्म यमो वैरूपो वसवो ष्टं तिवरुणो षट्‌च
क इन्द्रा क्रिया॥ त्यानं वित्तपति निशाकर जया श्री वासुदेवो हलि॥ कामे विष्णु रिति क्रमेण
महतो हस्तोत्रयो विंशाति॥ २६॥ अर्थ॥ हाथ ने त्रेवीश अंश काढे॥ तेहुना त्रेवीश देवता
कहेछे॥ इंद्र तेम रुद्र देव १ वायु २ विश्वदेव ३ अग्नि ४ ब्रह्मा ५ सूर्य ६ रुद्र ७ यम ८ वीश्वकर्मा ९
वसु १० गलोत्रम ११ वरुण १२॥ स्वामी कार्तिक १३ इन्द्र १४ क्रिया १५॥ राम १६ कुबेर १७ चंद्रमा
१८॥ जय १९ श्री वासुदेव २० बलभद्र २१ काम २२ श्री विष्णु २३॥ एत्रेवीश देवतानि स्वजाक १०५
रवी॥ २६॥ श्लोकः॥ उच्चाटनं रोग भयं च दुःखं बान ज्ञयं पीडनकं प्रजा वा। मृत्युर्विनाशो
पि धनक्षयं च स्यान्मो हक्रमात् देवतपीडनेन॥ २७॥ अर्थ॥ प्रथम हलथकेनवदेवताघु

मनाकरछे ... तो उच्चाटन १ शोक २॥ भय ३ दुःख
४ अरिजय ... त्यु ८ धनक्षय ९॥ एनवदेवतानां पा
तेनाफलक ... रंतराले॥ त्वामाधार्यो मंदिरादौ निवेशे
हस्ताङ्गमेप ... क–सो॥ व ... विक रोति॥ २८॥ अर्थ॥ घरना सूत्र
नाकरेसो ... र पृ विचिगज ... अकस्मात जो हाथकर मध्ये तिन्ह मि
उपरप ... लोय॥ तथा दुः ... माटे यत्न गजकालवो॥ २९॥ श्लोकः॥
तालो द्वादशमात्र का परिमतीतालद्वयं ... पादोन ब्रिकरो तिकिष्कुरु दितस्माय
ध्वजु त्रिः करैः॥ क्रोशो दंड सहस्र युग्ममथु दक्ष ... कं चग भूतिका॥ तास्यां योजनमेवम्
प्रिरखलकोटि सतं योजनैः॥ ३०॥ अर्थ॥ बार अंगुले ताल थाये॥ दोन ताले हस्त
थाय॥ अनिहरणे दो हस्ते एक विबुथाए॥ अनेक रहस्ते एक धनुषक ह्रु॥ धनुषते दंड
ते दोन रस सहस्र दंडे क्रोश थाए॥ दोन क्रो शोग व्याप्य॥ दोन रगा ब्रस्ते एक योजन था
ए॥ योजनो चार गाउनो॥ एमसर्व भूमि शतकोटि जोजन बाहिर मांहे गो लपणे कहीछे
३१॥ श्लोकः॥ सूत्राष्टकं दृष्टिनर हस्त मौ ञ्जं कार्पासकं स्यादवलंबसंज्ञं॥ काष्टं च सृष्टाक्र
मतोपि लेखमित्यष्ट सूत्राणि वदंति तज्ज्ञा॥ ४०॥ अर्थ॥ घरप्रसाद करता आठ उपकरण
साधन करे॥ एकतो दृष्टि सूत्र १ हस्त २ मंजुनी दोरी ३॥ सूत्र दोरो ४॥ लंबासूत्र ५॥ साध
लीद॥ काष्ठ ७॥ लोल ८॥ एआठ पदार्थ करी सूत्र लागे ए॥ ४०॥ इति श्री सूत्रधार
मंडण विरचिते वास्तुशास्त्रे राजवल्लभमंडने मिश्रकलक्षणं प्रथमोऽध्यायः॥ १॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१०६

B. 9.
No 82

याहे
रचय५
नकल्या
पात

१०६

अईउऋएऐगरुडा१करवगघङम
सरय५ यफबलमम्तुबवकुद

मेष१ वृष२ मिथुन३ कर्क४ सिं
स्त्री वैत्रप शौड वीज ह्

क्रौड वीज

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

वकादीप्रसाद २१ केसरादीप्रसा
रुचकादीप्रसाद ५४ वीमानादी
द ३० ऋषीमेकादीप्रसाद २१ मेरुप्र
मानादीप्रसाद ५४ श्री-रादीप्र
द २६ कुंभक ... पुष्पकादीप्रसाद १०८ सुरत्न
दीप्रसाद ४५ ... दीप्रसाद ८४ लघुविमानादि
रत्न[illegible]दीप्रसाद ८६ मुद्द[illegible]प्रसाद ५४ कमलादीप्रसाद २६ वी
प्रसाद [illegible] वराटादी १७२ श्रीमुखादिप्रसाद ५० मिश्रकादीप्रसाद ५४
प्रसाद ८६ व्यंतरादीप्रसाद १०५ नपुस्यकादीप्रसाद २५ कीरलादीप्र
कादीप्रसाद १६ शेषरादीप्रसाद ३७ घर्पदीप्रसाद २६ चीत्रघंटादी
विडादीप्रसाद १६ कुंदनादीप्रसाद १६ अनंतादीप्रसाद ५४ सु
साद ३६ ईश्वरादिप्रसाद ३७ एवंत्र्यादी ४२ प्रसादानांचसंस्याणी
लक्षकंत्रीसपंचसहस्रागणीवीस्वकरमावचोयथा १८२५००० २